

LBSNAA
L.B.S. National Academy of Administration

मसूरी
MUSSOORIE

पुस्तकालय
LIBRARY

अवाप्ति संख्या
Accession No.

— 121882

15162

वर्ग संख्या
Class No.

CLH

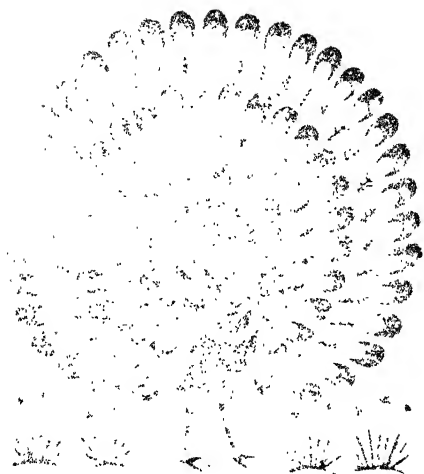
398.2

पुस्तक संख्या
Book No.

देखा

DET

भाग 3



बातां री फुलवाड़ी

भाग ३

प्रकासक :

**रूपायन संस्थान
बोहंदा**

संपादक :

कोमल कोठारी

कीमत :

**बारै रिपिया
जन्मास्टमी २०२०**

मुद्रक :

**सीताराम कांटीवाल
रूपायन प्रेस, बोहंदा**

बातां री फुलवाड़ी

भाग ३

राजस्थान री कदीमी लोक कथावां

विजयदाँन देथा

रूपायन संस्थान, बोरुन्दा

देस री आजादी अर पंचायती राज रै कारण गांवां में माली विकास करण री मौकौ हाथ आयी । पैला म्हारै गांव में पीवण रै पांणी रा ई पूरा जांदा पड़ता हा , वो आज पांणी में तिरै । ऊंडा ऊंडा बेरां सूं पैला पीवण सारू ई पांणी काढ़णी दोरी ही , आज बिजली री ताकत बां बेरां सूं अखूट पांणी काढ़ै , जाणै नहरां चालू व्ही है । पांच सौ घरां रा छोटा सा गांव में आज खेती करण सारू पच्चीस ट्रेक्टर है , बिजली सूं चालण वाला अतूट पांणी रा दस बेरा है , घर घर पांणी रा नळ अर बिजली है । गांव में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय , सफाखानी अर जच्चाघर है । पैला दूजै तीजै बरस काळ सूं बाथेड़ी करणौ पड़ती , जठै पैला बाजरी अर जवार रै अलावा ऊनाळू साख री दांणी ई को निपजती नीं , आज अठै हजारूं मण गऊं सिरसूं , राई , बिराळी , जीरौ , आलू , मिरचां , कांदा , टमाटर , साग सब्जी अर जरदौ व्ही । गांव रा विकास सूं प्रेरित होयनै भारत सरकार 'माटी बन गई सोना' रा नांव सूं म्हारै गांव री अेक फिलम ई बणाई ।

गांव में माली हालत री तरक्की रै साथै साथै जाग्रति आई । म्है पगां माथै ऊभा ब्हिया , दुनियां री ढंग - ढाळौ ओळखियौ , ग्यांन री कीमत आंकी अर बिग्यांन माथै भरोसौ करियौ । सेवट गुणतां गुणतां म्हारै आ समझ बैठी के माली विकास री सारथकता इणी बात में है के उणरै बिना मानसिक अर आध्यात्मिक विकास नीं व्ही सकै । कोरी माली विकास मिनख रै वास्तै अधूरी विकास है , घांटी रै नीचै री

विकास है । कला , साहित्य अर संस्कृति रै विकास री अभाव म्हानै अखरियो । गांवां में ग्यांन विग्यांन री चानणी व्हियां ई देस री मूढ़ता री अंधारी लोपैला । गांवा में साहित्य , कला अर संस्कृति री चेतना वापरै इण ख्याल सूं म्हारै गांव में 'रूपायन संस्थान' री थापना करी । गांव में ई संस्थान री छापाखानो लगायो । कदीमी लोक साहित्य अर आधुनिक नवा साहित्य नै प्रकासित करणो ओ संस्थान री मोटो ध्येय है । संस्थान री तरफ सूं लोक कथावां रै प्रकासण सारू 'वांणी' नांव री मासिक छापौ चालू करियो । आज दिन तक करीब छ सौ लोक कथावां अर चार उपन्यास संस्थान सूं प्रकासित व्हिया है । 'बातां री फुलवाड़ी' री ओ तीजौ भाग काढ़तां म्हानै अणूंतौ हरख व्हे । पण वगत परवाण वैया सूं वैया अैड़ा बीस भाग प्रकासित करण री योजना जिण दिन संपूरण व्हेला उण दिन आज री ओ हरख पूरण रूप सूं सारथक व्हेला ।

इण संस्थान री थापना सूं गांवां में कलात्मक चेतना पनपैला , म्हनै सोळै आंना भरोसो है । अेक सरपंच री हैसियत सूं म्है राजस्थान री पंचायतां नै अरज करूं के अपां भौतिक विकास रै साथै कला अर संस्कृति रै मारफत मानसिक विकास री ई ख्याल राखां तो घणी सिरै बात व्हेला । लोक साहित्य री अखूट खजांनो सेवट अपारै उबारणा सूं ई उबरैला ।

चंडीदांन देया

अध्यक्ष

रूपायन संस्थान , बोहंदा

दो आखर

लोक कथावां रा वांणी रूप नै लिखावट में ढालती वगत केई केई समस्यावां सांमी आवै । लोकगीतां रै बोलां री कदीमी रूप तौ घणकरी निश्चित ई व्है । याददास्ती री कमी - बेसी रै कारण लोक-गीतां रा कदीमी रूप में कमी - बेसी अवस प्रकट व्है, पण गीतां री कड़ियां नै हिया में राखण री मादौ सुणावणिया री व्है । पण कदीमी बातां नै सुणावणा री बात अकदम सू न्यारी है । बात में घटना री बीज - रूप खास बात है । पछै बातपोस री उपज, उणरी कल्पना, उणरी कैवत, उणरी अकल अर उणरी याददास्त रा मेळ सू घटना री बीज-रूप संवरै अर निखार पावै । बात री मिठास अर उणरी कला बात-पोस री कैणी अर उपज लारै है । केई सुणावणिया तौ अँड़ा नांढ़ व्है के वैं बात री पोखाळी करदैं अर केई बातपोस तौ बातां नै अँड़ी फूठरी संवारै के सुणियां ई वणै । जद हर बातपोस आं कदीमी बातां नै आपरी उपज रै परवांण न्यारा न्यारा ढंग सू सुणावै तद सुणियोड़ी बात नै हूबोहूब उणी रूप में लिखणा सू ई पार नीं पड़ै । लोक कथा नै लिखण सारू फगत भासा री खामी - भली जाणकारी सू काम नीं सरै, उण वास्तै भासा री जाणकारी रै साथै बात कैवण री कला री जाण-कारी मूळ चोज है ।

बात नै सुणावती वगत बातपोस सांप्रत सांमी रैवै, उणरी अर हुंकारिया री परतख मोहमाया रैवै । जीवती जागती बातपोस जद बात सुणावै तौ जीभ रै समचै उणरै मूंडा रा भाव, उणरा हाथ, उणरी आंख्यां अै सगळा साथै काम करै, इणसू बात में लोच, मिठास, अर प्रांणां री पुट लग जावै । पण बात लिखती वगत लिखणियो अदीठ रैवै, इण कारण लेखक अर पाठक में मोहमाया री तांती को रैवै नीं । लेखक नै सांप्रत बातपोस रै मूंडा रा भाव, उणरा हाथ अर उणरी आंख्यां रा भाव आपरी लिखावट में पूरा करणा पड़ै । इण बातै फगत भासा लिखणी जाणणा सू ई बात री पेटी नीं

भरीजै । इण सारू दूजी बातां री जाणकारी जरूरी है । पुराणी बातां री जाणकारी, समाज री रीत-रिवाजां री जाणकारी, इतिहास नै समाज-विग्यांन री जाणकारी अर सबसूं लांठी बात है — बात लिखण री कला अर उणरी रफत । मोटा रूप सूं आं बातां री बिना लिखियोड़ी बात में घणी कमियां रै जावै ।

राजस्थानी रै कथा-साहित्य नै बधावण वास्तै सीधा अर सिरै मारग दो है । अेक तौ पुराणी बातां न नवी रूप दियौ जावै अर दूजी नवी बातां अर तथ्यां नै बात कैवण रा पुराणा रूपां में ढाळ्या जावै । पंछी जिनावरां रै प्रतीकां में कथ्योड़ी बात मन माथै घणौ असर करै । आज री दुनियां री नवी कथा-साहित्य ई आं प्रतीकां री आसरी खोजै है । इणरी नवी मोड़ आं प्रतीकां री दिसा सांमी ई आगै बधै है ।

वेद, उपनिषद, पुराण, महाभारत, रामायण, जातक, पंचतंत्र कथा-सरित्सागर इत्याद ग्रंथां रा अखूट खजांना सूं राजस्थानी में कथावां प्रकासित करणी ई घणी जरूरी है । पुराणी परंपरा नै जाणणा सूं ई भारत री बाळक भारतवासी बण सकै । नींतर वी आपरा मुलक में ई परदेसी बणियौ रैवैला । आज अपानै पुराणा भारत री नीवां माथै ई नवी भारत खडौ करणौ है । हवा में अघर-मैल रा सपना साव कूड़ा है । जे अपां सावळ पूरण रूप सूं अपारी परंपरा नै नीं जाणो तौ भावी री विकास अपानै नीं जाणैला ।

अै सगळी बातां म्हैँ म्हारा गांव बोहंदा सूं ई भेली करी हूं । लोक-गीतां री भांत आं लोक कथावां री खजांनो ई लुगायां कनै अखूट लाधै । खुद सुणियां बिना म्हैँ किणी बात नै लिखावट री रूप नीं दियो । बातां रा कदीमी घटना-रूप नै म्हैँ कला अर कल्पना री बणाव करायी हूं । आं कथावां नै लिखण वास्तै म्हारा मित जगरांम सिंघजी री घणौ आभारी हूं । वै म्हनै नित नवी बातां भेली करने सुणावता ।

विजयदांन देधा

क्रम

| | |
|----------------------|----------|
| साची वारता | ... १३ |
| चरू बोले | ... ६२ |
| जीभ रो रस झरै | ... ६७ |
| बाड़ा री मरजादा | ... ७१ |
| तिणकलिये घर बोयी | ... ७८ |
| काजीजी आळी कुत्ती | ... ८२ |
| म्है गळी वढ़ावै | ... ८४ |
| भांवी री वेगार | ८७ |
| बाजरी लेसी के आटी | ... ८९ |
| सपट सधी रे आंधळा | ... ९६ |
| अब काग भया परधान | ... १०१ |
| स्याळ री मुकाती | ... १०४ |
| भावै ई अंगूर खाटा | ... १०६ |
| कांमा जिणरा ई धांमा | ... १०७ |
| लकु बांदरी | ... १०९ |
| भांय थोड़ी भाड़ी घणौ | ... ११२ |
| जवांनी री भूख | ... ११५ |
| थूं म्हनै मारी | ... ११७ |
| अचपळी ऊंदरी | ... १२० |
| पांन अर ढगळी | १२२ |
| चक्को मक्को नै हमसाब | ... १२४ |
| कुटळाई रा मांडणा | ... १२५ |
| अेक चिड़ी री अटकळ | ... १३१ |
| गंगारांम स्याळियी | ... १३५ |
| सेखीजी उमराव | १३९ |

क्रम

आठ राजकंवर (उपन्यास)

| | | |
|------------------|------|-----|
| चिड़ी रा बिचिया | | १४३ |
| नवी रांणी | ... | १५७ |
| रांणी छल्लगारी | ... | १६६ |
| देस निकाळी | ... | १८१ |
| सुगन चिड़ी | ... | १९७ |
| तपसी रौ आदेस | ... | २०६ |
| पैली राजकंवर | ... | २१३ |
| दूजौ राजकंवर | | २५४ |
| तीजौ राजकंवर | | २७४ |
| चौथौ राजकंवर | ... | २९२ |
| पांचवौ राजकंवर | ... | ३१७ |
| छठौ राजकंवर | | ३५५ |
| सातवौ राजकंवर | ... | ३९५ |
| आठवौ राजकंवर | ... | ४३४ |
| गिरस्ती रौ आस्रम | ... | ४६१ |

बातां री फुलवाड़ी

साची वारता

बात भली दिन पाघरा, पेंडे पाकी बोर,
घर भींडळ घोड़ा जिणै, लाडू मारै चोर ।
केई नर सूता, केई नर जागै,
जागतड़ां री पागड़ियां ढोल्यां रै पागै,
सूतौड़ां री पागड़ियां जागतड़ा ले भागै,
फोरा पतळां री डाव नीं लागै ।
बातां हन्दा मांमला, दरियां हन्दा फेर,
नदियां बहै उतावळी दे दे घूमर घेर ।
अेक तिल वी ई कांणौ,
नित उठ कंथ करावै घांणौ ।
कठा री तेलण कठा री पळौ,
पाडोसण मांगै खळ री डळौ ।
अेक गवूं वी ई फीदौ,
नित उठ कंथ करावै सीदौ ।
देखली सीदा री सोय,
लेणा अेक न देणा दोय ।
लाई उधारौ करगी गटकौ,
मांग्यां बतायौ ताळी री तटकौ ।
तद भागौ बवार,
पींजण घालौ खाक में
झूपड़ी करौ जवार ।
सासू आगली बहू आई,

गवू देयनै चिणौ लाई ।
 थोथौ चिणौ बाजै घणौ,
 बात करे जणौ जणौ —
 खेजड़ी रौ कांटौ साढ़ी सोळै हाथ,
 भागै तौ बचै नहीं, नींतर राजा रामचंदर रै हाथ ।
 जिणरा ब्हिया तीन पाट —
 दो सुळियोड़ा नै अक चढ़ै ई नीं ।
 ज्यांमें थपिया तीन गांव —
 दो ऊजड़ नै अक बसै ई नीं ।
 ज्यांमें बसिया तीन कुमार —
 दो ठोटी नै अक घड़ जाणै ई नीं ।
 ज्यां घड़ी तीन हांडियां —
 दो फूटोड़ी नै अक चढ़ै ई नीं ।
 ज्यांमें रांधिया तीन चावल —
 दो कटकटा नै अक सीजै ई नीं ।
 ज्यांमें निवतिया तीन बिरांमण —
 दो इग्यारसिया नै अक जीमै ई नीं
 ज्यांनै दीनी तीन गायं —
 दो बांमड़ी नै अक ब्यावै ई नीं ।
 ज्यांरै ब्हिया तीन बिछिया —
 दो माठा नै अक चालै ई नीं
 ज्यांरा बटिया तीन रिपिया —
 दो खोटा नै अक बाजै ई नीं ।
 ज्यांनै परखिया तीन सोनार —

रात रा रातिदौ नै दिन रा दोसै ई नीं ।

ज्यांरै मारी तीन थाप —

दो टळगी नै अेक लागी ई नीं ।

सार बाबा सार ,

पल में लिंगार ,

थाकोड़ा सा टारड़ा ,

नै दूबळा असवार ।

फौज में नगारी , बात में हुंकारो ।

हुंकारै बात प्यारी लागै ,

बात सुणियां भाग जागै ।

जीवै बात री कहणवाळ

जीवै हुंकारा री देणवाळ

तौ रांमजी भला दिन देवै — मोटी घड़ो, धड़ा तळै ढांणी ।
जठै रैवती कीड़ी कांणी । पीवती समदां री पांणी । जिणनै
मिळियौ आंचौ ओठो । बएगी बात भाग सूं खोटी । कीड़ी ब्याई
अर किरियो लाई । कीड़ी ब्याई वा ऊभी ऊभी । जिणसूं उण
किरिया री कड़ियां तूटी । इण कारण किरिया सूं नीं हालीजै
नीं ऊठीजै । बौ तौ अेकण ठोड़ बैठो बैठो ई चरण री जुगत
विचारी । चारूं दिस सांमी घांटी घुमाय घुमायनै चारा री
सोय करणी चाही । ऊनाळू बायरो उणनै अएचींती सौरम री
समचो दियो । मिनकी रै भाग री जाणै छींको तूटी । मंडोवर
रै बेजोड़ बाग री सौरम पवन रा रेसां माथै शोला खावती
ठेट बीकानेर रा धोरां में भभरोळां छितराय दी । किरियो तौ
सौरम रा चार सरड़ाटा खांचिया अर मस्त ब्रैगौ । मस्ताई में

मंडोवर रा बगीचा री सोय में सौरम रै समचे आपरी घांटी बधावण लागी । घांटी तो सरणाटे बधती ई गी । जाणें आभा सूं तारी तूटो । बनमाळी नै ढळतो रात रा सौरम रै धूपटां अर ठाडा लैरकां सूं ऊंघ आय जाती, उण वगत वो किरियो तो बीकानेर सूं घांटी री फटकारो देतो अर अकण ठोड़ बैठो ई नित मंडोवर री सुरंगी बाड़ी चर जातो । बन-माळी घणी ई सावचेतो अर घणी ई जाव्तो राखतो पण चोरां री तो खुड़को व्हियो नीं कोई खोज । राजा री खीझ रा डर सूं उणरो जीव तो सौरकां चढ़ण लागी । अबे करै तौं कांई करै । ओ कोई चोर है के कोई भूत-पलीत है । कोई मिनख री जायौ तो आं ऊंची भीतां अर आं दरवाजां सूं मांय आवणो तो अळगो, बाड़ी रे मांय झांक ई नीं सकै । सूरज ई घणी तपै जद इण बाड़ी री झांकी ले सकै । पण अबे इण चोर नै कीकर जरू करियो जावे । राजाजी नै ठा पड़गी तो रांम जाणें घांणी में पीलावेला के तेल रा उकळता कड़ाव में थरकावेला के जमीं में आधो गाड़नै कुत्तां कना सूं तुड़ावेला के सिंघ रा पींजरा में छोडैला के सांप, बिच्छुवां रा भंवारा में पटकैला के मतवाळी हाथी माथे छोडैला के माथा रै वाद बंधायनै मारैला । ठा पड़तां ई मरणी तो निस्चै है, पण मोत री रूप कांई व्हेला, इण सोच में बनमाळी तो आधो बावळी व्हेगी । मंडोवर री आ सुरंगो बाड़ी तो मुलकां चावी है । राजाजी इणने आपरा प्रांण सस्तै जाणें । इण भांत रै उजाड़ री खुड़को ई वाने व्हेगी तो पछै जाणें जम रूठो है ।

बाड़ी में नीं नीं व्हे जंडा फल, नीं नीं व्हे जंडा फूल

अर नीं नीं व्है जैड़ा खंख सोभा बघावता हा । नवरंग नारंगी
 आंब , अंगूर , अंजीर , जामुन , जामफळ , सीताफळ , केळा ,
 दाड़म , सेंव , इरंडकाकड़ी , बिदांम , अखरोट , पिस्ता , खिरणी
 खिजूर , गूदी , पीलू , आवळा , बोर , कदंब , नींबू , सोपारी
 अेलची , गूगळ , चन्नण , रोईड़ी , चंपौ , केवड़ी , केतकी ,
 मोगरी , जुई , कंवळ , गुलाब , रातरांगी , कणेर , गुलमीर ,
 मरवौ , तुळसी , केसर , नागकेसर अर चमेली सरब इत्याद
 सुरंगी बनस्पति रा अनोखा थाट हा । बाड़ी में ठोड़ ठोड़
 कळकळ करता झरणा अर हिलोळा खाता निरमळ ताळाब झोला
 खावता हा । भांत भांत रा रळियावणा रूड़ा पंखेरू रळियां
 करता हा — हंस , कळहंस , राजहंस , सारस , बुगला , सूवटा ,
 मोर , कोयलां , कबूड़ा , कमेड़ी , टींटोड़ी , तीतर , तिलोर ,
 बाटबड़ , मैना , कूकड़ा , फूंदियां , मंवरा , खातीचिड़ा , सुगन-
 चिड़ी , काबर , कोचर , गोगू , कुरज , जळकाग , बटेर अर
 सोवनचिड़ी सरब इत्याद पंछी मीठा बोल सुणावता हा । पण
 ओ डकरेल चोर तौ बाड़ी री सोभा रौ जाणै मुळगौ मठ ई
 मार दियौ । बनमाळी तौ चितबंगियो व्हियोड़ी आठ पौर बाड़ी
 में चकारा देवै , पण चोर रा तौ बावड़ ई नीं व्हिया । बाग
 में खोज कठै ई नीं अर इण सागै चोरी रौ नेम कदैई टळै
 नीं । चोर तो पांन , फळ अर फूल सगळा साथै ई सुंतै ।
 देखतां देखतां सुरंगी बाड़ी झांकरी दीखण लागी । बाड़ी रौ
 ओ ढंग-ढाळी देखनै बनमाळी रौ डील सूखण लागी । मौत
 रै पैला ई उणरी औती आयगी । अर जद उणनै इण बात
 री सोय वही के कालै कस्मीर रा राजाजी रै सागै खुद अंदाता

बाड़ी जोवण ने आबैला तो उणरो तो जाणै अंस ई निकळग्यो ।

अर अंदाता तो साकळें घड़ी दिन चढ़्यां कस्मीर राजाजी रें साथै बाग निरखण सारू आया । अठीनै बाग री फाटक में राजाजी री पग धरणी व्हियो अर उठीनै बनमाळी तो तड़ाच खायनं जमीं माथै हेटे पड़ग्यो ।

राजाजी इण झांकरा बाग नै देख्यो तो देखता ई रहग्या । सुरंगी बाड़ी री ओ कांई खाको बिगड़ियो । कांई गुमेज सूं वै कस्मीर दरबार नै सागै लाया हा अर बाग में आतां ई कांई गत बिगड़ी । बनमाळी आ कांई घात करी । राजाजी री आंख्यां खीरा जगै ज्यूं जगण लागी । रीस रें पांण फुर-णियां सूं बाफां निकळण लागी । राजाजी किड़किड़ियां चाबता पग पटकता बोल्या—हरामखोर बनमाळी म्हारा बाग री आ कांई गत करी । सिझ्या रा उणरा डील नै ई इणी भांत छंगाणौ पड़ैला । घणा दिन व्हिया उणनै लूणहरामी करता नै ।

राजाजी री खोझ सुणतां ई बनमाळी पड़ियो पड़ियो ई डाडियो—अंदाता, इणमें म्हारो कीं कसूर कोनीं । दिन रात जागती चकारा देवूं, तो ई चोर रा तो खोज ई नीं मिळिया । राज री बाड़ी में अवस भूतां री चाळौ व्हेगो है । म्हनै राज रें दाय पड़ै ज्यूं वाढी छूनी, पण अेकर चोर री पतो लगाय लू, तो मरियां ई मुगातर पावूं ।

राजाजी ई देखियो के इण भांत बाड़ी नै सूतणी तो चोरों रें बस री बात कोनीं । इणमें अवस कीं न कीं रासो है । ओ बनमाळी आज पैली कदैई ओड़ो नीं खायो । बापड़ा रें बस परबारी कीं रचना व्हेगी है । इणनै मारियां ई ओ उजाड़

नीं मिटियो तो पछे काई कारी लागेला । अकर असलियत री थाग तो लेवणी चाहीजे । वे आदेस करियो—जे तोजी रात चोर रा बावड़ नीं व्हिया तो इगमें जाणै जैड़ी करुंला । साची बात परगट करण रौ ओ मौको है ।

बनमाळी कैतां पांण तुरत आ बात कबूल करली । सौ मए घांन री मूठी बांनगी । कस्मीर रा दरबार सूंतिघोड़ी बाड़ी नै देखनै ई अंदाज कर लियो के आ बाड़ी काई चीज है ।

राजाजी बाड़ी सूं पाछा वळिया तो बनमाळी ई गोडां रें हाथ देयनै नीठ पगां व्हियौ । मन में सोचण लागौ के जे तीन दिनां में चोर रा बावड़ व्हेगा तो हाथां लगायोड़ी सुरंगो बाड़ी नै ऊमर भर ताईं घणा कोड सूं निरखांला अर जे चोर री पतौ नीं लागी तो अे रुंख , अे फळ , अे फूल अर अे सगळा पंछी म्हारै वास्तै लोप व्हे जावैला । बनमाळी नै आज पैली वार इण बात री ठा पड़ी के आंख्यां सूं बाड़ी री सुरंगी छिब निरखणी अर कानां सूं पंछियां रा मीठा बोल सुणणा कित्ता अमोलक है !

बनमाळी मन में निस्चै करियो के वो तीन दिन अर तीन रात आंख्यां में कस ई नीं लेवैला । आपरा टाबर नै घरै भेजने वो दीवटिया में मई बांटियोड़ी मिरचां मंगाई । दोनू टंकां री सिरावण वो उठे बाड़ी में ई लावण री कट्ठौ । समंचार मिळतां ई मालण खुद दीवटिया में बांटियोड़ी मिरचां लाई । साथै सिरावण वास्तै अेक मोटी कोथळी में सिकियोड़ी तिल्ली अर तिलिया लाडू भरने लाई ।

कोथळी खोलने बनमाळी पूछ्यो—सिरावण वास्तै आज फगत तिलिया लाडू इज लाई, फेर कीं नीं ?

मालण कह्यो—थानै बाड़ी रै सिवाय इण दुनियां री फेर ई कीं ध्यान है के नीं । आज सकरायत रै कारण फगत तिलिया लाडू अर सेकियोड़ी तिल्ली लाई हूं । खायने देखी के कंड़ाक ठावका बणिया है लाडू ।

बनमाळी कह्यो—तिलिया लाडुवां रै ठावका स्वाद पैली आंखियां नै बांटियोड़ी मिरचां री स्वाद चखायदूं तो तीन दिनां पछे ई जीवणौ व्हे सकै, नींतर तोजै दिन बाड़ी री चोर नीं पकड़ीजियो तो राजाजी भूंडे ढाळै मौत सूं बाधेड़ी करावैला । म्हने तो इण खातर थारै लाडुवां सूं घणौ वत्तो स्वाद आं बांटियोड़ी मिरचां में लागै । घड़ी घड़ी सूं आज दोनूं आंख्यां में मिरचां री काजळ साखंला, तिण सूं नींद बाड़ी रा पर-कोटा रै बारै ई तड़फा तोड़ती रैवै । म्हने सोळे आंना उम्मेद है के अं मिरचां अवस चोर रा बावड़ करावैला । थूं नित दोनूं वगत थारै हाथां म्हारै सिरावण लाया कर । सिरावण लायां पछे ई थूं अठै बाड़ी में ई चोर री टोय में म्हारै साथे रै । बाड़ी में ओ सगळी चाळी रात रा लारली पोर व्हिया करै । उण वगत पूरी सावचेती राखणी । किणी दूजा माथै भरोसो नीं करियो जा सकै । चोर री पत्ती पड़ियां म्हें अठी-उठी उणरो हेरो करूं तो थूं लारै राजाजी नै साची बात तो बता सकै ।

मालण तो तुरत कैतां पांण सगळी बात मानगी । बन-माळी लाडुवां रा मीठा स्वाद रै पैली आंगळी भरने हींगळ

री जात राती चुट्ट मिरचां आंख्यां में सारली । आंख्यां घणी ई बळी पण मोत रा विचार आगं तो वं ई ठाडी लागी ।

मालण कह्यौ—हाल तो रात घणी आंतरै है , अबारुं ई फालतू क्यूं आंख्यां बाळी ।

बनमाळी आंख्यां मींच्योड़ी ई पडूतर दियो—वगत पैला चार पांच बार मिरचां री मुरमो सारलूं तो आंख्यां पैला सूं ई हेवा व्है जावै । अंकर तो बळत लागणी इज है । इण झांकरी बाड़ी ने देख्यां राजाजी नै जकी रीस आई , थनै उगरी जाच कोनीं । जगजगाती आंख्यां री वा खीझ म्है दीठी हूं , इण कारण उण खीझ री डर म्है जाणूं हूं ।

दोनूं जणा सावळ जाब्तो विचारता बाड़ी री रुखाळी करण लागा । लाडुवां री कोथळी बनमाळी री कड़ियां रं बाधी ही । बाड़ी रं चारुं खुणा वं चकारा देवता , चोर नै पकड़ण री जुगत विचारण लागा ।

दिन आथमियां पछै वं अणूता चौकस ब्हिया । दसम री चानणी री मधरो उजास हौ । बनमाळी रं जचियां री बात ही के वो मन करतो जणा ई दीवटिया मांय सूं आंगळी भरनै दोनूं आंख्यां में बांटियोड़ी मिरचां सार लेतो । मोत बिचै मोत री डर मिनख ने अणूतो दुखदाई व्है ।

रात आधीक ढळी के मालण नै अचाणचक परकोटा री भींडी रं माथा कर कीं चीज मांय वड़ती निगै आई । वा आपरा घणी ने होळै सूं हाथ री इसारो करनै कह्यौ—देखो भींडी रं माथा कर म्हनै वो कांई तोतक दीसै ।

मालण रं कैतां ई वो झिझकनै हळफळियो उठीनै जोयो—
फा. २

भींडी रें माथा कर उणनै कीं काळूटी चीज आगै बधती निगै आई । पछे वा तो सळवळती आगै बधती ई गी । हे राम ! ओ काईं अणूतौ तोतक है । आ तो निस्चै भूतां री माया है । बनमाळी थर थर घूजण लागी । पण घूजतां घूजतां ईं वौ उठीनै भाळती रह्यौ ।

आंख्यां री दीठ रें उनमान ई वा चीज तो बाड़ी रा खूखड़ां नै , बगळ बगळ खावण लागी । थोड़ा थोड़ा फूल , फळ अर पांनड़ां में मूंडी घालनै वा चीज तो आगै अठी उठी बधती ई जावती ।

मालण कह्यौ—आ तो ऊंट री घांटी ज्यूं कोई चीज निगै आवै ।

बनमाळी कह्यौ—ऊंट री घांटी ज्यूं दोसै काईं , आ तो साचांणी ई ऊंट री गाबड़ इज है । ऊंट रें दूजा डील री तो कीं पत्तौ नीं , पण भींडी रें माथाकर बधती वा गाबड़ तो बाड़ी रें चारूं खुणा ठेट मथारा लग सगळै फिरगी । खायो कम पण उजाड़ घणो करियौ ।

मालण निस्कारो न्हाकतां पूछ्यौ—आ कोई गाबड़ है के कोई बजराक है । सी ऊंटों री गाबड़ां जोड़ां तो ई इण गत लांबी नीं व्हे । जे उणरी गाबड़ री ओ माप है तो पछे उणारा डील री काईं हवाल व्हेला । आ तो अवस किणी भूत री माया है , संकर भगवान री नांव लेवौ , तिणसूं ओ अपारै घात नीं कर सकं ।

ऊंट तो आपरा चरणा में मस्त ही । वां दोनों री सुरपुर वौ सुणी ई कोनीं । भांत भांत रा फळां में मूंडी

मारनै वी पाक्योड़ी गूदियां नै बगळ बगळ खावण लागी । बनमाळी मन में सोच्यो—जे चोर नै सावळ नीं पकड़ूं तो राजाजी रै फरमांण सूं काळ है अर जे इण मायावी ऊंट नै छेड़ूं तो परतख इण जम रै हाथां मौत है । हर सूरत में मरणा री सराजांम तो है । पण डंड रा मरणा बिचै करतब री मरणी घणी सिरै है । वी होळे होळे अठी उठी चापळती सुथराई सूं गूंदी रा डाळा माथै चढ़चो । मालण पालापूली करी तो ई वी नीं मान्यो । ऊंट री गाबड़ रै पाखती आतां ई वी तुरत बाथ भरी । परस व्हेतां ई गाबड़ चिमकी । चिम-कणा रे सागै वा उणी वगत संवटीजणी सरू व्ही । बनमाळी रै काठी बालाजोड़ी मारियोड़ी ही । वी खुद लट्ठमती घांटी रै समचै हालण ठूको । मालण कूकारोळी मचायी—भूत, भूत, म्हारा घणी नै भूत ले जावै ।

हाकी सुणतां ई मेल रा रुखाळा बाड़ी में आया । वांनै ई थोड़ी घणी लट्ठमता माळी री झबकी पड़ियो । पछे मालण री कूका रोळी तो ढबियो ई नीं ।

मेल रै पसवाड़ै हाका हाक सुणी तो राजाजी ई कोडाया बाडी में आया । मालण डाडती हाथ जोड़ने कहाँ—अंदाता, म्हारो घणी तो घांटी रै साथे ई लट्ठमती गियो परो, भूत उणनै मारियां बिना नीं छोडैला । अब म्हारै टाबरां री कांई दोन व्हेला ।

राजाजी थावस देयनै उणनै सगळी बात पूछी । वा मांडनै सगळी बात बताई । बात राजाजी रै मानण में नीं आई । पण रुखाळा लट्ठमता माळी रै झबका री बात करी तो राजाजी

ने ई मानणौ पड़ियौ । पछे वै कह्यौ—ऊंट बाड़ी रै परकोटा सूं थोड़ौक अळगौ व्हेला, उणरा खोज देखौ । माळी उठै ई पड़ियौ लाधेला । ऊंट कोई सौ कोस तो अळगौ व्हेणा सूं रह्यौ ।

मालण रोवती कह्यौ—अंदाता, साचैला ऊंट री गाबड़ तौ भींडी रै आधेटे ई लागै, पण वा गाबड़ तौ सळवळ करती इण छेड़ा सूं उण छेड़ा लग घूमती ही । औ तौ अवस किणी भूत-पलीत री चाळी है ।

राजाजी रै ई बात पूरी जचगी ही, पण वे दरसौई कोनीं । कह्यौ—बाड़ी रै चारुं कूटां सावळ तपास करौ, माळी कठै ई नीं जावैला ।

पण राजाजी रै मूंडा सूं अं बोल निकळियां पैली ई बाड़ी री बनमाळी तौ ठेट बीकानेर रै गोरवै, जठे कड़ियां तूटोड़ी किरियौ बंठी हौ उठै चांद अर सूरज री किरणां रै वेग लढ़ देती री आय पड़्यौ । घोरा माथे दो अेक गुट्टा खायनै वो धूळ झाड़तौ ऊभौ व्हेगौ । माटौ औ किरियौ तौ जबरी करी । गाबड़ रै बालाजोड़ी मारियोड़ी वो चित्तवंगियो होयनै सोच्यो के औ काईं ब्हियौ—जित्ते तौ तूटता तारा रै वेग वो सूंसाड़ बजावतौ हांकरतां मंडोवर सूं बीकानेर आय पूगौ । पण तीन दिनां में राजाजी नै इण बात री कीकर समची देवणी आवै । मालण कदास बात करैला तौ ई इण अजोगती बात माथे कुण पतियारौ करैला । वो घोरा माथे बैठनै निरांत सूं कीं जुगत विचारण लागौ ।

अर उठीनै किरियौ बनमाळी रा परस सूं चिमकनै गाबड़

संवट ली , पण उणरो पेट पूरो भराणौ नीं हो । वो तो घोरा माथै बैठा बनमाळी रें देखतां देखतां फेर पाछी गाबड़ बघावणी चालू करदी । बाड़ी रो रसाळां सूं हिलियोड़ौ वो तो सीधी उणीज गूंदी में बगळ बगळ मूंडा मारण ठूकौ । रुखाळा अर राजाजी सगळा परतख आपरी आंख्यां ओ रासौ देखियो । मालण फेर कूकी—अंदाता , सागै आ इज गाबड़ ही । म्हारा घणी रो सोय सेवट म्है इज करूंला ।

आ कैयनै वा बनमाळी रें उनमान उणी भांत गूंदी रा डाळा माथै चढ़ी अर अजेज गाबड़ रें बालाजोड़ी मारनै टिरगी । परस व्हेतां ईं गाबड़ चिमकी अर मालण तो सगळां रें देखतां देखतां भींडी लांघती हांकरतां अदीठ व्हेगी ।

सगळा लोग बाड़ी में ऊभा ऊभा ई हाकौ करियो—जावं , जावै—जित्तै तो मालण उणीज घोरा माथै माळी रें पसवाड़ै आयनै ऊभगी , जाणै विमाण सूं हेटै उतरी व्हे । बनमाळी बैठी बैठी सोचती ई हो के म्हारें बिछड़्यां मालण रो कांई गत बिगड़ी व्हेला के मालण तो परतख सांमी ई आयगी । बनमाळी इंचरज सूं पूछ्यौ—थूं अठै ?

मालण थोड़ी डरती , थोड़ी मुळकती जबाब दियो—जठै थें , उठै म्है । आज तो नांमी सैल व्ही ।

माळी पूछ्यौ—थनं कीं जाच है के अपां कठै आयग्या ? मालण कह्यौ—कोई दस बोस खेतड़ा अळगा , कोई हेमाळी तो लांघणा सूं रह्या ।

माळी कह्यौ—बावळी व्हो है ! अबारूं अपां बीकाणै रा घोरां माथै बैठा हां । म्है तो सगळा मुलकां रो धरती बिना

देख्यां ई ओळखूं हूं । माळी री बेटो हूं, छूळ अर बूटी देखनै थरती री ठा पटकूं । थूं ई जात री मालण है, दिन ऊग्यां थनै ई ठा पड़ जावैला के अपां बीकानेर रें गोरवें ऊभा हां ।

बात सुणतां ई मालण री तो इचरज सूं आंख्यां फाटी री फाटी रेंगी । हे राम ! ओ कांई खिलकौ व्हियौ । अबे कीकर इण माया सूं फंद कटैला । ओ कामणगारी किरियो कांई चाळी बतावैला ? ओ कोई जमदूत है के कोई भूत पलीत है । सकरांयत रें नवें दिन आ कांई अजोगती बौत बणी । मालण इण भांत मन में कळपती ही के माळी कह्यो—
अबे सोच करियां कांई सांधो लागे, बणी सौ भाग री ।

दोनूं धणी लुगाई कड़ियां तूटोड़ा किरिया नै उठे ई बैठो छोडनै आपरें मारग ढळिया । मारग चालता जावता अर मन में डरता जावता के कठैई किरियो चाळी करनै अपांरो केड़ी नीं करे । किरियो तो आपरी ठोड़ सूं चुळियो ई कोनीं । दसेक खेतड़ा अळगा गियां पछें वारें जीव में जीव आयो । प्रांण बचणा री खुसी में वै हरख मनावता खाथा खाथा आपरें गेलें चालण ठूका ।

सगळी रात वै मारग चालता रह्या । तड़के वानें मारग माथें अेक बावड़ी दोसी । माथें बड़ला री जाडी छींयां ही । वै बिसाई खावण री बिचारो । बनमाळी री कड़ियां रें तिलिया लाडुवां री कोथळी बाधी ही । भूख ई दोनां नै कड़का करती लागगी ही । बावड़ी री पाज माथें दोनूं जणा निरांत सूं बैठो लाडुवां री कोथळी खोलनै लाडू खावण ठूका । खावतां खावतां

तिल्ली रा थोड़ा घणा भोरा बावड़ी रै मांय पड़ग्या । भोरां री मांय खिरणौ व्हियो अर बावड़ी रै तळा सूं सरर सरर तिलां रा बूटा ऊंचा उठता गया । अर वै हांकरतां बावड़ी सूं दोय बांस ऊपर बधग्या ।

तिलां रा कंवळा कंवळा लीला पांन अर लीली सांगणियां री तो जाणै गंगाट मचग्यौ । अर देखतां देखतां लीला पांन पीळा पड़नै झड़ण लागा । सांगणियां पीळी पड़नै तिड़ण लागी । इणी बिचाळै अेक जोग री बात अैड़ी बणी के अेक मतवाळी हाथी तिरसां मरतौ बावड़ी माथै आयौ । काळी गोटी व्हे ज्यूं वो दौड़तौ चिंघाड़तौ आयौ अर पगोतियां पगोतियां उतरनै वो धापनै बावड़ी में पांणी पीयौ । पांणी पीयां पछै उरणै मस्ताई छूटी । पाज माथै ऊभनै वो तिलां रा गोड सूं खसण लागौ ।

अठिनै तो पूरा करार सूं हाथी री खसणौ व्हियो अर उठिनै भरणाटी खावतौ अेक जबरदस्त वतूळियौ आयौ । वतूळियौ तिलां रा बूटां नै आपरी झपेट में ले लिया । पछै काई पूछणौ ! हाथी रै खसणा अर वतूळिया री झपेट सूं बावड़ी में तो धोळी तिल्ली री जाणै बिरखा ई ओसरगौ । खिरती तिल्ली री हरड़ाटी सुणियी तो दोनूं जणा उठा सूं सोकड़ मनाई । पचासेक पावंडा आंतरे वै खिरणी री छींयां में जायनै ऊभग्या ।

अर मतवाळी हाथी तो आपरी मस्ती में खसतौ ई गियौ । बावड़ी तो तिल्ली सूं भरीजी जकौ तो भरीजो ई पण दोय बांस ऊपर तळा कर तिल्ली री ढिगलौ व्हेगौ ।

पाज माथै ऊभौ हाथी तिल्ली सूं बूरीझगौ ।

सगळी तिल्ली झडतां ईं जोर सूं आथूणौ बायरी छूटी ।
तिल्ली रा गोड घरणाटी चढ़िया के बावड़ी मांयली तिल्ली
पीलीजण लागी ।

औ कांई ! बावड़ी री तेल तौ ओटै व्हेण लागौ । हाथी
री रोक सूं अक कांनी तौ तिल्लो री ढिगलौ है ज्यूं पड़ियौ
रह्यौ, पण तीनूं कांनी सूं तौ तेल रा जाणै घोरा ई चालू
व्हेगा ।

पांणी भरण री वेळा व्ही तौ पिणियारियां रा झूलरा
माथै बेवड़ा उखणियां बावड़ी माथै पांणी लेवण सारू आवण
ढूका । पण आज तौ पांणी री ठोड़ ओटै व्हेता तेल नै
देखतां ईं वै खुसी में बावळी व्हेगी । सोना री बीटी रै उन-
मान धोळी तिल्ली री तेल अर वौ ई अपटां, लेजावणियो थाकै
पण तेल नीं खूटै, पछै राजी कुरा नीं व्हे ।

आखती पाखती रै गांवां री मांनखौ तेल रा घड़ा अर कूड़िया
भरण सारू वौ उलटियौ के बात छोडी । बावड़ी थपियां पछै
ई अँड़ी जबर मेळौ नीं मचियौ व्हेला । घर घर में तेल री
मूणा भरगी तौ पछै जायनै लोग लुगायां माठ झेली । बनमाळी
अर मालण औ खिलकौ देखियौ तौ देखता ई रह्या । अक
पाज माथै हाथी तिल्ली सूं बूरीजियोड़ी पड़्यौ हौ अर बाकी
चौतरफ सूं तेल री दुरड़ियां छूटती ही । लोगां री मन भर-
य्यौ तौ ई तेल री ओटी बंद नीं व्हियौ ।

थोड़ी ताळ पछै अक मल्ल झूमतौ बावड़ी माथै आयौ । तिरस
रै कारण उणरा कंठ सूखता हा । बावड़ी रै पाखती आता

ई वो पांगी रं बदलै तेल ओटै होवती देख्यो । पण तिरस रं कारण वो तो पांगी अर तेल री भेद ई पांतरग्यो । मूंडी टेकनै तेल री चुस्की इण भांत खांचणी सरू करी के देखतां देखतां बावड़ी री तेल पींदे बैठग्यो । तीन चार डकारां लेयनै वो ऊभो व्हियो । ऊभो व्हेतां ई उणनं पाज माथे तिल्ली री ढिगली निगं आयो । वो आपरा खांधा सूं खेसलौ उतारनै उणमें ढिगलौ सूंतणौ चालू करियो । सौ मण तिल्ली री पोट बांधनै वो आपरै माथे उखणी । चिमटी सूं हाथी नै ऊंचो उठायनै वो आपरी अंटी में जाब्ता सूं खोस लियो ।

पछै मस्ताई सूं आपरै मारग वहीर व्हियो । बड़बड़ाटा करती बोल्यो—पांगी री तिस तो पांगी सूं ई बुझै, इत्तो तेल पीयो तो ई हाल कंठ सूखणा बंद नीं व्हिया ।

बनमाळी अर मालण ई आपरी निजरां ओ रासो देखियां पछै आपरै मारग वहीर व्हिया ।

मल्ल बड़बड़ाटा करती बीसेक खेतड़ा पूगी के मारग में अेक ढाणी आई । ग्वाड़ी री फिळौ खोलनै वो मांय वड़ियो तो उणनै अेक डोकरी नींबड़ा री छींयां में बंठी अरटियो कातती निगं आई । वो पाखती आयनै खाथो पड़ती बोल्यो—डोकर-मां तिरस अणूती लागी, म्हनै पांगी पा ।

डोकरी कह्यो—म्है अरटियो कातू, वो सांमी टांको रह्यो, थूं खुद आपरा हाथ सूं कमोद व्हे जैड़ी ठाडो पांगी पीले ।

मल्ल कह्यो—म्हारै माथे अबकाई है, थोड़ी तकलीफ तो व्हेला मां, इत्ती मेहरबांनी तो थूं ई करदे ।

डोकरी अरटियो कातती ई बोली—अबकाई है तो म्हारै

अरटिया रा ताकळा में टेर दै, म्हारे अबारुं ऊठणा री खण लियोड़ी है ।

मल्ल तिरसां मरतो ही । कायो होयनै माथा री पोट अर अंटी में खुसियोड़ी हाथी अरटिया रा ताकळा में टेर दियो । पछे डोली डोली पांणी पीवण ठूकौ तो सगळो टांकौ खाली खणक कर दियो ।

टांकौ खाली करने वी डोकरी कने आयने कह्यो—पांणी तो म्हैं हाथां पी लियो, अबे डोकर-मां चिलम जगावूं, थोड़ी बासदी तो घाल ।

डोकरी अक ऊंडी निस्कारो न्हाकने बोली—बेटा, चूला में वासदी जगायां ने चार मईना व्हिया । म्हारो बेटो सांभर लूण लेवण सारू गियो है । बेटा रे बिनां खांणी-पीणो कीं आछौ लागे नीं । चार मईना व्हिया म्हने कीं खायां पीयां अर सूतां ने । चार मईना सूं बैठी इणी ठोड़ अरटियो कातूं हूं । बेटा रे आयां ई आ ठोड़ छोड़ूला ।

मल्ल कह्यो—म्हैं थारा बेटा सूं मिळणी चावूं । म्हने उणरी निसांण-पतांण बता ।

डोकरी कह्यो—लूण सूं भरियोड़ी साढ़ा सात बीसी गाडियां उणरी कड़ियां रे बाघोड़ी व्हेला । वी गाडियां कड़ियां रे बांघनें मारग चाले जणा आभा में खंख रा गोट ऊठे । खुद सूरज भगवान ई म्हारा बेटा री करार देख नीं सके । वाने ई उडती खंख सूं मूंडी ढाकणौ पड़े ।

मल्ल कह्यो—डोकर-मां, थूं साव साची है के थारे बेटा री करार खुद सूरज भगवान ई नीं देख सके, पण म्हैं

अवस थारै जाया री करार देखणी चावूं । म्हारा सूं गोरी जिणनै पोळिया री रोग । इए धरती माथे म्हारा सूं वत्तौ ई किणी में करार व्है सकै, आ बात तो म्हैं सपना में ई नीं मानूं ।

डोकरी अरटियौ कातती ई बोली — तौ बेटा, इण में क्यूं ओछी ताकै, गाल थाप रै कितीक छेती । थारा मन में हूस व्है तौ सांमी जायनै तूमार जोयलै ।

मल्ल कह्यौ — औ तूमार तौ जोवणौ ई पड़सी । बात सुणियां तौ जाणै म्हारा पगां रै कीड़ियां चेंटी । म्हारा बूकिया कुळै, म्हैं जावूं ।

डोकरी रै जबाब दियां पेली ई मल्ल तौ उठा सूं वहीर व्हैगौ । आंचाआंच में फिळौ ई बंद नीं करियो । दो दो खेतड़ां रा पावंडा भरतौ वौ हचां हचां हालण हूकौ । मगरौ लांघतां ईं उणनै आभा में खंख रा गोटा ऊठता निगै आया । मन में थावस व्हियौ के काटी आवै तौ है । वौ उणनै अण-चींत्यौ वकारणी चावतौ हौ । मारग सूं टळ परी नै वौ छेली गाडी रै लारै आयी । साढ़ा सात बीसी गाडा लूण सूं ताळां-छेक भरिया हा । सगळा गाडा साचांणी उणरी कड़ियां रै बाधा हा । अर वौ भरणाटे दीड़तौ जावतौ हौ । मल्ल आपरै डावा पग री फुणौ लारली गाडो माथै टेकियो । गाडियां तौ सगळी चरर करती उणी ठोड़ ठमगी । कड़ियां रै अेक मामूली सो झटको लागी । डोकरी री बेटौ ई लखग्यौ के कोई माई री लाल म्हनै वकारण री सांनी करी है । वौ जोर सूं हाक करतौ बोल्थो — अैड़ौ ई दो माथां री धणो व्है तौ सांमी आव ।

स्याळिया री औती आवै जणा वो गांव सांमी दौड़ै । कठैई धरवाळां सूं लड़नै तो नीं आयो है । म्हनै इण बात री खुसो है के इण धरती माथे म्हारी जोड़ री कोई मल्ल है तो खरी ।

मल्ल मुळकतो थको उणरै सांमी आयो । बोल्यो—म्हें ई हेर हेरनै कायो व्हेगो पण म्हने ई आज पैली कोई जोड़ री काटी नीं मिळियो । आज मन रो बाफ काढूला ।

दोनू जणा बूकिया ठेरता अक दूजा नै वकारण लागा । उण सांयत मल्ल कह्यो—अपां बाथियां तो आवां पण हार-जीत री साखो कुण रैवैला । कीं बात पजगी तो उणरो निवेड़ो कुण करैला । पैला किणी नै पंच तो थापी ।

डोकरी री बेटो कह्यो—भाया, बात तो थूं साव साची कही । पण पंच थापां तो ई किणनै थापां, नेड़ो अळगो कोई दीसं ई तो नीं ।

के इत्ता में अक राईकांणी वानै आवती दीसी । उणरै माथे ओडी ही । वै दोनू ई उणनै पंच थापरणो कबूल करियो । पाखती आतां ई कह्यो—डोकर-मां, म्हांरो अक घांदो तो निवेड़तो जा ।

राईकांणी कह्यो—घांदो निवेड़ं जित्ती म्हने वेळा कठै ! म्हारे तो आगे ई अबेळो व्हेगो । बेटो तो म्हारी कणाकलो बाट जोवतो व्हेला । म्हें उण सारू इण ओडी में भाती लेयनै जावूं । बीनणी रै साजमांद होवणा सूं आगे ई खासी मोड़ो व्हेगो ।

अरटिया वाळी डोकरी री बेटो कह्यो—म्है दोनू बाथियां आवांला । हार जीत सारू म्है दोनू जणा थने पंच थरपी

हां । वगत माथे मिनख ई मिनख रै काम आया करे ।

राईकांणी कह्यो—थाने तौ भला आदमियां बाधियां री पड़ी, पण म्हारो बेटो कणाकलौ खेत में हळ खड़े है । वो म्हारै सारू घड़ी घड़ी गांव सांमी भाळतौ व्हेला । वो भूख री काचो अंत इज घणो है । अबे थे कैवो ज्यूं करूं ।

मल्ल कह्यो—डोकर-मां घड़ी आध घड़ी भूखो रेवण सूं उणरो डील ढोळें नीं बेटे । थने म्हारो ओ घांदो तौ निवेड़णो पड़सी ।

राईकांणी कह्यो—इत्ती बात पजगो है तौ म्हने ई पंच बणणो पड़सी । म्हें ई खोटी नीं व्हूं अर थारो ई घांदो निवेड़दूं तौ थाने कीं अबकाई तौ कोनीं ।

मल्ल कह्यो—थारै दाय पड़े ज्यूं कर, पण म्हारो हार जीत री साखी थूं है ।

डोकरी हालती हालती ई कैवण लागी । म्हारी ओडी में राब री पारी है । पारी माथे दियोड़ा ढकणा रा टुचकणा माथे ऊभने थे निरांत सूं बाधियां आवौ । सूरज भगवानं पूठ लारे है, जिणसूं टुचकणा माथे लड़तां री छीयां म्हें सुभट हालती हालती ई देख सकूं । छीयां देखने म्हें पतौ पाड़ लेवूला के कुण पड़ियौ अर कुण पटकियौ ।

दोनूं जणा राईकांणी री बात मानग्या । डोकरी माथा माथे ओडी उखणियां हालती री अर मल्ल मलापने ढकणी रा टुचकणा माथे चढ़ग्या । चढ़तां ई बूकिया ठोरनें भिड़ग्या । राई-कांणी रै हालणा में किणी भांत री भंज नीं पड़ियौ । ढकणी रा टुचकणा माथे लड़ता मल्लां री छीयां में मीट गडावती वा अणूतो

खाथी हालती ही । दोनूं मल्ल लगैगै हा । अक दूजा नै पटकण सारू घणा ई आफळिया पण बख नीं लागौ ।

इत्ता में डोकरी रौ खेत आयग्यौ । मां रै माठ माथै आवतां ई बेटौ तो हळ फिटौ करियो । पाखती आयनै कैवण लागी—म्हारा तो भूखां मरता रा पाहळा भागण लागा , आंख्यां आडो अंधारी आयगी । उडीक उडीकनै सेवट कायौ व्हैगौ । आज इत्तौ अबेळौ कीकर करियो ?

डोकरो कह्यौ—थारी घरवाळी री सरधा कोनीं , इरा सूं मोड़ौ व्हैगौ ।

पछे वा आंख्यां ऊंची चढ़ावती कह्यौ—भायां , अबे हेटा उतरौ । पारी सूं म्हनै राब लेवणी है ।

आ बात सुणतां ई डोकरी रौ बेटौ ऊंचौ देखियो । हंसतौ थकौ बोल्यौ—औ फेर कांई नवौ तोतक है ? थनै ई कीं न कीं खिलकौ करियां बिनां आवड़ै कोनीं ।

पछे मां आपरा बेटा नै सगळी बात मांडने बताई के कीकर वां मल्लां री हारजीत देखण सारू पंच बणी । सगळी बात सुणियां पछे उणरौ बेटौ कह्यौ—अबे म्हने फुरती सूं टुकड़ा घालं जकी बात कर । आं मल्लां रौ निवेड़ौ म्हें करूं ।

आ कैयनै वौ दोनूं मल्लां नै आपरी डावी खाक हेट दाब लिया । मल्ल तो बापड़ा चुस्कारौ ई नीं कर सकिया । रोटी खायनै ऊठ्यौ जित्तै वांनै खाक में दाबियोड़ा ई राख्या । चळू करियां पछे वांनै खाक सूं हेट पटकिया । दोनां नै ई बूझ आयगी ही । हेट पड़तां ई आंख्यां खोली । पछे राई-कांणी रौ डोकरी मसखरी करती बोल्यौ—थारो हारजीत रौ

निवेड़ी व्हियौ के नीं ।

दोनूं मल्लां रा मूंडा में तौ जाणें गुळ दियो । बोल्या नीं कोई चाल्या । पाछो आंख्यां बंद करनै बोला बोला सूता रह्या । वारें करार री तौ जाणें सत ई निकळग्यो व्है ज्यूं । थोड़ी ताळ पछै वै नीठ धरत्यां हाथ टेकता ऊभा व्हिया । कैवण लागा — खाक सूं छूट्यां पछै म्हानें तौ अंडी लखावै जाणें दोय बरसां री मांदगी सूं ऊठ्यां हां । अबकाई लेवणी तौ अळगी खुद पगां पगां चालणौ ई दोरी है ।

डोकरी नै थोड़ी घणी दया आयगी । बोलो — रांमजी नाक री डांडी माथें बैठी है । करार री घणौ गुमेज करणौ आछौ कोनीं । बोलौ थारी काई अबकाई है । म्हैं पूगती कर देवूला ।

अरटिया वाळी डोकरी री बेटी कह्यौ — म्हारी अबकाई किणी सू पूगती नीं व्है । साढ़ा सात बीसी गाडा लूण सूं ताळांछेक भरियोड़ा है ।

दूजोड़ी मल्ल कह्यौ — म्हारें गोडें सौ मण तिलां री पोट अर अंक हाथी है ।

राईकांणी बोली — आ ई फेर अबकाई में गिणीजै काई ! थारी अं चोजां म्हारी ओडी में खूर्ण-खचूर्ण पड़ी रंवेला । थें कैवौ जठें ठाणें कर देवूला ।

डोकरी तौ कह्यौ ज्यूं ईं करियो । अेकौअेक गाडा , सौ मण तिल्ली अर हाथी ओडी में उड़क-धुड़क पटकनै इण भांत ओडी माथें उखणी जाणें कोई थेपड़ी माथें धरी व्है ।

ओडी माथें उखणनै वहीर व्ही जणा वा आपरा बेटा नै

कह्यो — भूँ ऐ रमेकड़ा पुगायनं दिन आथमियां पैकी पैली ढांगो आय जावूला । अबै थूं वांणी देवणी माठ करने थोड़ी टोळा री साळ-संभाळ कर । फगत हाळियां रै भरोसं नेखम रैवणी ठीक कोनीं । आजकालै सगळा ई ओठारू थाक्या थाक्या जावै है । पतो तो पाड़ के बात काई है ?

मां रै कैतां ई सेठ कान में कलम खसोलै ज्यूं वौ हळ कान में खसोल लियो अर बोरिया री नाकी में दोनूं बळदां नै टेर वौ सांमला मगरा रै तळै टोळा री साळ-संभाळ करण सारू वहीर ब्हियो । उणरै हजार ओठरुवां री टोळी हौ ।

मगरा री परली ढाळ में जायनं वौ टोळा रै चरणा री रंगत देखी तो देखतो ई रंग्यो । हाळी तो माटी जाळकी री ठाडी छीयां में गोडा माथै पग धरनै नेखम सूतो हौ । हजार ई ओठरुवां रा टोळा नै वौ मेखळी में घालनै पाखती री खेजड़ी रा ढाळा में टेर दियो । ओठारू भूख रै मारघा अरड़ाटा करण लागा । अंक ऊंट घणौ तड़फड़ियो ती मेखळी थोड़ी सो पिसगी । ऊंट मेखळी सू मूंडी बारै काढ़नै मार अरड़ाटा करतो हौ अर हाळी कानां में आंगळियां घालनै ऊंची ढाळ में तेजौ गावतो हौ ।

आभा में उडती कंवळी ऊंट री अरड़ाटी सुणियो । मेखळी में अरड़ावता ऊंट माथै उणरी निजर पड़ी । निजर पड़तां जेज लागी अर वा मेखळी माथै झपटी मारियो । मेखळी में घाल्योड़ा हजार ओठरुवां रा टोळा नै वा आपरी चूच में घातनै उडगी । राईकौ घणा ई हाका करिया पण कंवळी तो आभा नै नैड़ी लियो । हाळी सू अणूतो ई लड़ियो,

पण अबे लड़ियां काई सांघी लागे । कंवळी माथे नीं चोरी री बजौ लागे अर नीं धाड़ा री ।

अबे नीं तौ ओठारू रेंवैला , नीं वारे थाकण री नौबत आवैला अर नीं वाने चरावण सारू किणी हाळी री जरूरत पड़ैला । हाळी किणी नै कद कमायनै घाल सकै । वो हाळी सूं घणौ ई कजियौ करियौ के भूखा तिरसा ओठारूवां नै मेखळी में जरू करने कीकर उणनै तेजौ गावणी आयौ !

हाळी कह्यौ—तेजा री काई , थें कैवौ तौ तीखी ढाळ में फेर गाय दूं ।

अबकी देवासी नै अणूती रीस आयगी । ओटाळ , टोळी गमियां पछै ई तेजौ गावणी चावै । हाळी रा माथा में छ सातेक लिंगतरा जंतराया ।

वा कंवळी तौ मेखळी उचकायनै अदीठ व्हेगी । आपरै बिचियां री आंख्यां खोलण सारू वा सोना री भाळ में उडी ही , पण बिचाळै ई मेखळी माथे झपट करली । अबे उण सूं नीं तौ मेखळी खाईजै अर नीं पटकीजै । वा तौ अळगी भांय लग मेखळी लटकायां उडती ई गी ।

उडतां उडतां कंवळी नै छात माथे अक सोना री बोर पड़ियौ निगै आयौ । वा तौ उठा सूं ई ताचकी । मेखळी थर-कायनै वा तौ बोर माथे झपटी ।

छात माथे ठकराणीसा ऊंचो मूंडौ करियां नायण कना सूं माथौ गुंथावता हा के अचाणचक वारी डावो आंख में कीं चीज पड़गी । ठकराणीसा आंख मसळता कह्यौ—आंख में कीं फूस-फांटौ पड़्यौ दीसै । नायण आंख सूं फूस-फांटौ

काढ़ण लागी जित्तै कंवळी ठकराणीसा री बोर उचकाय लियो ।

ठकराणीसा री आंख सूं जकी चीज लाधी वा नायण आपरी चोण में खोसली । माथी गूंथ्यां पछे बोर नै छात माथे घणौ ई सोध्यौ, पण वो तौ लाधतौ ई कीकर ! दोनूं ई सेवट कायी होयनै लखगी के कंवळी बोर वास्तै ई झपटी ही ।

नायण घरै आयनै चीण मांय सूं वा मेखळी काढ़नै खोली तौ अरड़ाता, गाजता ओठारू तड़ाचां वावता बारै निक-
ळिया । छोटा मोटा पूरा हजार ओठारू हा । नायण नै बालाजी री इस्ट ही । वा मन में सोच्यो के उणनै निस्चै बजरंग बली तूठो है । इण चाळा में उणनै कीं अजोगतो बात नीं लखाई । मन में कैवण लागी—बजरंग बली री अणचींती मया व्हेगी दीसे । देवता तूठै तौ इण विध ई तूठ्या करे । ठकराणीसा री आंख में फूस रै मिस हजार ओठारू बजरंग बली भेज दिया । फूस पड़णा सूं आंख तौ ठकरा-
णीसा री खड़की अर वारो ई बोर गमियो, पण म्हारै तौ सात पीढ़ी री दाळिदर अळगो व्हेगौ ।

सगळा ओठारूवां नै वा लारला बाड़ा में बाड़ दिया । सिझ्या रा खवासजी घरै आया तौ वा मुळकती वारै सांमी गी । बोली—म्है बजरंग बली री इस्ट करूं जकौ यूं ई करूं काई ! आज थानै हाथीहाथ परचो बतावूला ।

खवास कहाँ—अपारा भाग में अँटवाड़ा बासण मांजणा लिखिया है सौ मांजां हां अर हड्डुमानजी नै सिवरां ई हां । थारो परचो थारं कने ई राख ।

पण नायण हाथ झालनै जद खवासजी नै बाड़ा में लैगी तो खवासजी हाक्या बाक्या व्हेगा । बाकी फाड़ता पूछ्यौ— ओ कठै घाड़ौ करियो ? बडभागण म्हनै बता तो खरी ।

नायण मांडनै सगळी बात बताई । खवासजी बगना व्हियोड़ा सगळी बात सुणी । पछै नायण फेर पूछ्यौ— अबै बतावौ , म्है बालाजी री माळा फेरूं जकौ यूँ ईं फेरूं हूं काईं ।

खवासजी कह्यौ— पण कुण ठालौ - भूली कैवं के थूं यूँ ईं माळा फेरें । थूं तो खुद आधी - दूधी देवी है ।

खवास ओठारूवां री नांमी पारखू हो । वो टोळा नै निरांत सूं देखियो तो देखतौ ईं रंग्यौ । टोळा में नांमी सिरै टाळका ओठारू हा — खास बागड़ी , जाळीरी जैसळमेरी अर बीकानेरी । छोटा न मोटा सै बरसां रा ओठारू हा — किरिया , तोडिया , दुआंणा , वांणी अर ढागा ।

आंवळियां भांत रेसमी रूवाळी रा केई सुरंगा ओठारू हा — मजीठिया , कागड़ी , लसणी , काळा , भूरा , पीळा , तेलिया घोळू , बुगली , सेळो अर वगूळी । अक अक सूं इदका रूपाळा ओठारू ज्यांनै देख्यां निजर लागै जैड़ा — कोकरिया कांतां रा , फरफरिया होठां रा , लांबी गाबड़ रा , हिरण गट्टी आंख्यां रा , गोळमिया गोडां रा , सूतमी नळियां रा , झाबरी पूंछां रा , तीखी थुइयां रा , तिछुणी ईडरां रा अर नैनी तळियां रा । भांत भांत री सांडियां — सुब्बर , सुवाड़ी , बाखड़ी अर फिरड़ी । भांत भांत री बोलियां सूं बाड़ी गूंजण लागो । कठैई किरिया अर तोडिया घिरणावै , कठैई सांडियां रिगै , कठैई गागै , कठैई करावै , अर कठैई घुरै , कठैई ऊंट अरड़ावै अर

कठई ढागा गाजे । ओठारुवां री दरबार तो जुड़ियौ पण जुड़ियौ ।

खवासजी रै ओ ऊंटां री टोळी हाथै कांई लागी, वारै तो जाणै पांखां लागगी । वै जमीं सूं अघर उडता चालण हूका । संपत्त री मद अँड़ी इज ब्हिया करै । लोगां री खिज-मतां सारू अबै घणी परवा ई को करती नीं । खुद ऊंटां रा टोळा नै चरावण नै खपती । दिन ऊगियां पैला कांकड़ में चरावण नै जावती अर दिन आथमियां पाछौ वळती । कुंदई खास खिजमतां री अड़ाव व्हेतौ जद वो आपरा मोबी बेटा नै घणी घणी भुळावण देयनै कांकड़ में टोळा रै साथै भेजती । पण उणरौ मन नीं मानती ।

आंती आयोड़ा लोग केई बार खवासजी नै कंवता—खवासजी ! आजकालै परां घणी लांबी बधगी है । आज खिजमतां करता तो इत्ता दौरा व्हौ, पण पछै आयत रा धान सारू मन मत डुळाजौ ।

खवासजी जबाब देवता—महँ अबै बजरंग बली री मेहर-बांनी सूं आयत रै सारै कोनीं, पुरांणी मोहमाया सूं धान नीं मिळै तो ई महँ खिजमतां तो बणावणी पड़सी ।

लोग परपूठ बातां करता—नाईड़ा री माथी सूजियौ पण सूजियौ । अबै इणरी बादी कीकर झड़ै ।

सेवट लोगां री मंसावां पूरण व्ही । भादवा री महीनौ हो । अक दिन जरूरी खिजमतां रै कारण खवासजी तो गांव में ई रह्या अर मोबी बेटा नै टोळी चरावण सारू कांकड़ में भेजियौ । यूं तो बाप री भुळावण ई अणूती दियोड़ी ही । अर बेटौ

ई छक्कै-पंजै पूरौ सावचेत हौ , पण तो ई ध्यांन राखतां राखतां बाजरी रा खेत में टोळी बड़ियो जको सिझ्या ताई पाछी नीं निकलियो । खेत तो घणो खुद री ई हौ , तो ई बेटा री जीव जागा छोड दो । ठा पड़तां ई बाप भूंडौ माजनौ पाड़ैला ।

बाजरी ताळां-छेक ऊभी ही । ओठो समेत ऊंट मांय बड़ जावै तो ई पतौ नीं लागे । ढेरा रो घायां व्हे जैड़ी , सांयड री पूंछ सरीखी हाथ हाथ लांबी सिट्टियां री झोला खावती बाजरी में हाथियां रै टोळा री ई पतौ नीं लागतौ , पछे ऊंटों री तो गिणती ई काई !

बेटो टोळा नै जोवण सारू घणा ई ताखड़ा तोड़िया पण टोळा री तो पाछी बुड़को ई नीं व्हियो । खेत रै चारुं खुणा बीसूं चकारा देयनै सेवट मूंडो उतारनै वो अकलौ ई आपरै घरै आयो ।

टोळा रा धड़िंगा नीं सुणिया तो खवासजी रै खलवल माची । पूछ्यो — थूं अकलौ इज कीकर आयो, टोळी कठे ?

बेटो तो मूंडो ढेरियोड़ी ऊभी रह्यो । खवासजी आखतो पड़ने फेर पूछ्यो — बेटो रा बाप, कीं बोल तो खरी । बात काई व्ही ? कोई धाड़ी पाड़ियो के कोई थन खोस लियो । बोले तो कीं जाच ई पड़े ।

अबकी बेटो होळें सूं बोल्यो — नीं तो कोई धाड़ी करियो अर नीं कोई खोसा लूटी । अपारा खेत में ई टोळी वड़ियो जको पाछी घड़ी रात ढळियां तक नीं निकलियो ।

खवासजी उगाने लाड सूं झिड़कतां कह्यो — वाह रै गूंगा ढेरा , बाजरी रा खेत में वड़ियोड़ी टोळी कठे जा सकै ?

नायण बीच में टोकती बोली—थें इण भरोसं मत रैजो । ठकरांणीसा री आंख में हजार ओठारुवां री टोळी रै सकें तो पछें बाजरी री खेत तो घणी बात है । अबारूं रा अबारूं जावौ अर दोनूं बाप बेटा सगळी रात खेत रै चारूं कांनी फेरो देवो । तड़कें दिन ऊगियां बूटो री बूटो हेरनं टोळा री पतौ लगावो । कठई सैल में सगळी पूंजी रा पतासा कर न्हाकोला ।

घरवाळी री बात सुणतां ई खवासजी री काळजो ऊंचो चढ़ग्यो । दोनूं बाप बेटा हाथां में गेडियां लेयनं दड़बड़ें न्हाटा । सगळी रात खेत रै चारूं मेर फेरो दियो, पण टोळा री तो सुरपुर ई नीं सुणीजी । खवासजी घड़ी घड़ी फगत ओ इज सोच करण लागा के जे टोळी नीं लाधो तो जीवणी हरांम न्है जावैला । फेरां रै सागें वै सगळी रात हड्डमानजी री माळा फेरता रह्या । खवासजी मन में अके अजोगती बात सोचण लागा के आ रात आज आगला पल में ई ढळ जावें अर वगत पंला ई दिन ऊग जावें तो कंड़ी सांतरी रेंवें । खवासजी घणा ई कळपिया पण रात तो आपरा वगत माथै ई ढळी । तो ई खवासजी नें अंडो लखायो के जाणें सौ रातां अकेण सागें भेळी न्हैगी है । आज वांनं सूरज रें उजास री कीमत ठा पड़ी । मन में सोच्यो—आं काळी बोळी रातां नें कुण मांगी ? ओ सूरज नीं ढळें तो दुनियां री कित्ती भलो न्है ।

दुनियां री भलो न्है के नीं, पण सूरज रें ऊगणा सूं ई खवासजी री भलो नीं न्हियो । बाजरी री बूटो बूटो पगां सूं चीथ न्हाकियो पण टोळा रा तो झांवळा ई निगें नीं

आया । आ बात काई व्ही ? खेत में वड़तां खोज तो सुभट लाधै , परण पाछा निकळतां रा खोज कठे ई कोनीं । काई टोळा नै जमीं गिटगी ? काई आभा में ऊंचा उडने गिया परा ! काई पाताळ रें तळं जायनै लोप व्हेगा ? कीं पती तो पड़े ! आ तो कुजरबी जग-हंसाई व्ही । लोग आयत सूं हाथ खेंच लियौ तो टाबर पाळणा दूभर व्हे जावैला ।

घड़ी दिन चढ्यां ई कीं समंचार नीं बिह्या तो नायण खुद उठै खेत में ई पूगगी । नायण घणी हठ झेल्यौ तो अेकर वळें टोळी सोधण सारू बाजरी री बूंटो बूंटो हेरियौ । परण टोळा री तो पाछो झबको ई नीं पड़्यो । दोनूं घणी लुगायां रा मूंडा कली रा जात धोळा व्हेगा । पण नायण तो ई हीमत नीं हारी । वा आपरा घणी माथे चिड़ती थकी कैवण लागी — थारें इत्ती गुमेज नीं व्हेतौ तो आ आफत क्यूं आवती ? म्हनै म्हारी भगती री भरोसो है । ओ टोळी अवस लाधैला । अेक ऊंट रा मोल में बाजरी आवे जावै , म्हारौ कंणौ मानौ , आं सिट्टियां नै काची ई खूंटायलौ । खारियो वाढियां पछे ओठारू कठे जावैला । थें नित बाप-बेटौ खेत री रुखाळी राखी । लोगां नै अपारौ सुख इवै कोनीं । कोई दोखी टोळा नै तगड़ देवैला ।

खवासजी कह्यौ — थूं तो साव बावळी व्ही है , टोळा री झुरणौ छोड । वो तो अेक सपनी हौ जको तूटग्यौ । उण सपना रें भरोसै साज-सरीखी बाजरी री पोखाळी करूं , म्हैं अँड़ी काली कोनीं । आ तो थारा हड्डुमानजी अेक लीला बताई हौ । अबे माठ झालनै पाधरा पाधरा घरें चालौ ।

दोनू ई आपरी जिद माथै सेंठा रह्या । खवासजी तो किणी भाव ई काची सिट्टियां तोड़ण नीं दी अर नायण दोनू बाप बेटां नै रुखाळी वास्तै उठे ई अड़ीजंत तैनात कर दिया । वा नित दोनू टंक उठे ई सिरावण लै आवती ।

वगत माथै सिट्टियां पाकी अर वै खूंटणी आई । सगळा घरवाळा आपरें हाथां अेक अेक सिट्टी खूटी, तो ई टोळी तो नीं लाधौ । पछे नायण कह्यो—खारियो वाढ़ियां पछे तो लाधैला ई ।

खारियो ई सगळो वाढ़ लियो पण तो ई टोळा री तो छीयां ई नीं भेंटीजी । तद नायण कह्यो—पूळा बांधतां वै कठे जावैला । म्हारी जीव केवै अपां हीमत मत हारो । टोळी लाधियां सरैला ।

अेक अेक पूळो हाथ सूं बांधियो पण टोळी तो नीं लाधौ जको नीं इज लाधौ । नायण खुद हाथ सूं पूळा भेळा करिया, खुद आपरा हाथां सूं ढूंगरियां दी पण तो ई टोळा रा पाछा बावड़ नीं व्हिया । नायण आपरी बात माथै डिढ़ री ।

खवासजी कह्यो—अबे टोळा रं लारै क्यूं तल्ला तोड़े । थारा हड्डुमानजी रौ सत अबै फिटौ कर अर घर रा काम रै हल्लै लाग ।

नायण जबाब दियो—थें नीं मानो उणरो म्है ई काई करूं, पण म्हारो जीव तो केवै के अेकर टोळी फेर अपारा बाड़ा में गाजैला । थें म्हनै बरजो मती, म्हारै दाय पड़े ज्यूं करण दो । थानै हाथ जोड़ूं, थारै पगां पड़ूं । टोळी खारिया में

नों लाधौ तो कोई बात नीं । सिट्टियां रा गाईटा में अवस लाधैला ।

सिट्टियां री गाईटौ गाहियौ तो ई टोळा री तो खुड़ ब्हियौ नीं कोई खुड़कौ । नायण आपरै हाथां सूं सगळी माद उफणी पण ओठारुवां री तो बुड़ ब्हियौ नीं कोई बुड़कौ । अक अक तूंतड़ा अर अक अक डूंखळी नै दस दस वार संभा-
ळली तो ई टोळा री पतौ नीं लागौ । पण तो ई उणरो मन जागतौ हौ के टोळी लाधैला अर अवस लाधैला । वा आपरा हाथां सूं दूं करी, भरणां, गाडियां भरी अर खुद भखारी में गाडियां खाली करी तो ई टोळा री तो सळवळ ई नीं सुणीजी ।

सेवट काथी होयने वा तो भखारी री बाजरी नै बिना तिड़चियां अर सळी करियां ई धम्मड़ धम्मड़ पोसण लागी । अबे कठे जावैला ? पोसणा रै धकै तो टोळा नै अरड़ावणी ई पड़ैला ।

आंगणा में आटा री अणमाप ढिगलौ देख्यौ तो खवास जी कह्यौ—भली आदमण थने आ कांई ऊंधो सूझो । दो तीन दिनां में ई बाजरी री आटौ बाड़ी पड़ जावै, जको थूं बारें महीना री बाजरी पोस न्हाको । अ ओठारू कांई भाव पड़ैला ।

नायण कह्यौ—अक ऊंट रा मोल में ओ आटौ आवै जावै, म्हने थें मरजी व्है ज्यूं करण दौ ।

खवासजी डोढ़ में कह्यौ—ऊंट री मोल तो रांस जाणै व्हैला के नीं व्हैला, पण ओ आटौ तो जावतौ दीस ई है ।
फा. ५

थूं खुद घर री धिणियांणी है, थनै काई कैवूं । थारै ज्यूं जचै त्यूं कर ।

अर नायण आपरै जचै ज्यूं करती गी । सगळा आटा नै वा तीन वार खेरणी बारै काढ़ियो पण टोळा री तौ रूं ई हाथ नीं लागी । अबै उणरा मन में ई वेम जागण लागी के सता टोळौ हाथ नीं आयी तौ कैड़ी भूंडी बीतैला ! पण तौ ई वा नीचै नीं न्हाकी । परात में आटी ओसण परो नै लसड़का देवण ढूकी, कदास हाथ रै हेटै टोळी रड़कणा में आ जावै । वा तौ सोगरा पोय पोयनै ढिग लगाय दियो ।

खवासजी ओ खिलकौ देख्यो तौ कह्यो—निरभागण ओ काई काम करियो । सोगरां रा पिडारा खिड़क न्हाकिया । अबै आंरो चूरमो करने थारा हड्डमानजी नै खवाड़ दे । आ तौ थूं भूंडी कळा करी ।

पण नायण तौ धणी रै कैणा री गिनरत ई नीं करी । वा तौ ओसणियोड़ा लोया री छेली सोगरौ पोय न्हाकियो । केलड़ी सूं उतारनै खीरां माथे धरियो तौ वो सोगरौ अणूतौ उफसियो । अचांणक फड़िद करती रो पापड़ी फूटी । पापड़ी री फूटणौ ब्हियो अर ध ध करता, गुला काढ़ता, गाजता अरड़ावता ओठारू सोगरा सूं बारै निकलण लागा ।

अबै नायण रै हरख रो काई छेह । खवास छान में बैठी ऊंटां रो गाजणो सुणियो तौ वो ई दौड़तौ उठै आयो ।

देखतां देखतां बाड़ी ओठारूवां सूं भरयो । मचियोड़ा ऊंट खीझण लागा तौ आभा नै माथे ले लियो । खवासजी घड़ी घड़ी आंख्यां मसलनै अर घड़ी घड़ी ठाडा पांणी सूं आंख्यां

छांटनै टोळा सांमी देखता—काईं ओ सपनो तो नीं है !

नायण गुमेज में मटका करती बोली—देख्यो म्हारा बजरंग बली री परचो ! म्हें बांनै रात दिन सिवरू जको यूँ इज सिवरू काईं । म्हारो इक्कीस आंना मन जागती हो के आ बात व्हेणी इज है । म्हनै कोई चिगावण सारू तो बालाजी पैला वो टोळो को भेजियो हो नीं ।

पछे तो खवासजी अक पलक रै वास्तै ई टोळा नै सूनी नीं छोडियो । थोड़ाक दिन आडा पड़ियां पछे अक दिन नायण बाव ढोळती कह्यो—ओठारुवां री ओ धन तो देवासियां सूं ईं बण आवै । अपां इण री सावळ साल-संभाळ नीं कर सकां । बिके ज्यूँ ईं आं ओठारुवां नै मूँघा सूँघा बेच दो । अबकी गमियां हाथ नीं आया तो ऊमर भर पिछतावांला । आ तो म्हें ईं तिथ नीं छोडी, नींतर आज अपां काईं बांध लेता ।

खवासजी राजी होयनै कह्यो—थूं तो म्हारा हिड़दा री बात बांचली । म्हारो तो खुद री ओ इज मतौ है ।

धरणी लुगायां रै जचियां पछे वाने बरजण वाळो कुण ! सगळा ओठारू अक देवासी नै बेच दिया । अक लाख रिपियां री बटत व्ही ।

रिपियां री बटत ब्हियां नायण फेर कह्यो—अपां नाई री जात इत्ता लांठा जोखा नै कीकर रुखाळ सकां । म्हारो कैरां मांनो तो अपां दोनूं सोना री पूरी गैणी-गांठो घड़ा-यलां, मोतियां रा नग जड़ायलां, थारी रचोड़ी अर राच-पीच सगळा सोना रा करायलां । सगळो धन अपांरी निजरां सांमी रैवेला । ठाकरसा री माथे हाथ है जित्तै कोई अपांरै

सांमी ई नीं देख सकेला ।

खवासजी रै ई आ बात सोळें आंना हीयै हूकगो ।
बौ सराफ कर्न जायने सगळा रिपियां री झाड़साही मोहरां
खरीद करली । पछे दोनूं लोग लुगाई सोनार नै घर में
ओलै बिठाणनै भांत भांत री गैणी घड़ाय लियो ।

खवासजी तौ घणा मोद सूं आपरै सिरपेच, मुगट, कांनां
में तुंगल, मुरकियां, गुड़दा, भंवरियो, गळा में कंठी, डोरी,
जीनेऊ अर हड्डमानजी रा फूल, सोना रा बटण, हाथां में
माठियां अर आंगळियां में बीटियां घड़ाई, सोना री होकौ अर
सोना री चिलम ई घड़ाई । रचोड़ी सोना री अर पट्टी
धुराधुर सोना री । पाचणी, कतरणो, नेअणी, नखचुट्टी, कळी,
बाटकी अर गुटली धुराधुर सोना री । सोना में मंढियोड़ी
आरसी । कांम में नीं आवण वाळी चीजां ईं वौ कोडायो होयनै
सोना री बणाई—सोना री सिल्ली, सोना री चकमौ अर सोना
री ई चीमोटो ।

सोनार कह्यौ—खवासजी, थें इत्तौ गंणी घड़ावो तो हौ,
पण ठाकरसा पंरण री मया नीं दी तो पछे अं सगळा अका-
रथ जावैला ।

खवासजी पङ्कत्तर दियो—इण घरती माथै सबसूं लांठो
ठाकर सोनो है । उणरी मया ब्हियां, सै कांम फतै है । थूं
थारो कांम नेखम करियां जा ।

नायण ई घणा कोड सूं आपरै वास्तै गैणी घड़ायो ।
माथा में जड़ावू राखड़ी, पात, टीडी-पळकौ, सांकळियां,
झोला, सकरपारा, टोटोडोरा, कांनां में टोटियां, ओगनिया,

कुड़कां, झूमरा, कनफूल, दांतां में चूपां, गळा में तीमणियौ, तेवटौ, आड, पटियौ, हांस, हांयली, बाळलौ, कंठी, टुस्सो, कांठलौ, मादळिया अर कठपूतियां रौ हार, हड्डुमांनजी रा फूल, कड़ियां में सतलड़ी कंदोरो — कूपलौ अर सुरमादांनी समेत, बांहां में बाजूबंद, टड्डौ, मादळिया, सोना रै पातां रौ चूड़ी अर बिलिया, कांकणिया, कातरिया, गोखरू, बंगड़ियां, गूजरियां, पुर्णचियां, आंवळा, गजरा, हथफूल, बींटी-दांवणा, पगां में बोकना भांत कड़ला, टणका, आंवळा, नेवरियां, पायल, छड़ा, तोड़ा, साटां, रिमजोळां, चूड़ियां, हीरानमी जोड़, पगपांन, बिछिया, बीछूड़ियां, अंगूठियां अर गोळिया ।

तीब री तीब सगळी गैणी-गांठी घड़ीजियां पछे खवास अक हजार झाड़साही मोहरां लेयनें ठाकरसा कनें गियो । मोहरां निजर करनें हाथ जोड़तौ कह्यौ—अंदाता, आपरी पीढ़ियां रौ चाकर हूं, अं नाकुछ मोहरां कबूल करौ अर म्हारै माथै अक मया करौ ।

हजार मोहरां रा पळका सूं ठाकरसा री ई आंख्यां चूंधीजगी । मोसा मारता कह्यौ—नाईड़ा, अँड़ी कठे धाड़ी करियो ? बता थूं कैणी मया मांगै ?

खवास कह्यौ—घरवाळी रै बजरंग बली रौ इस्ट है, सेवट उणरा इस्ट आगे वाने तूठणौ ई पड़्यो । म्हैं तौ फगत आप कना सूं गैणी पैरण री मया चावूं । पैरियां पछे डंड भरूं उण पैली म्हैं अक हजार मोहरां आपरै निजर करूं हूं ।

ठाकरसा मन में सोच्यो के हजार मोहरां तौ घणी बात फगत कोई दस मोहरां निजर करै तौ म्है गधा नै सोनौ

पैरण री मया दे सकूं । आपरी मरजी सूं ईं जद खवास
 अक हजार मोहरां ले आयौ तौ म्हैं क्यूं कम-बेसी री चरचा
 करूं । अबै तौ अड़ायां कीं फेर नफौ व्है सकैं । वै बोल्या —
 थूं तौ म्हारै रावळा री खास घरू आदमी है, थनै बिना
 निजर ईं सोनौ बगसीस कर सकूं, पण राज री कायदी नीं
 बिगड़े इण खातर थोड़ी घणौ विचार करणौ पड़ें । नीं तौ
 लोगां कने इत्ती माया व्हैला अर नीं कोई सोनौ पैरण सारू
 इत्ती निजर कर सकैला । आज सूं ईं ठिकाणा में ओ धारो
 व्है जावैला के हजार मोहरां निजर करियां पछै सोनौ बग-
 सीस करण माथे विचार करियो जा सकैं । थूं किसी कमाई
 करने लायौ । बजरंग बली रा इस्ट सूं तौ थनै सोना री
 भाखर भळै मिळ सकैं । म्हारो कैणौ मानै तौ थूं अक हजार
 मोहरां वळै ले आ, म्हैं थनै पग में सोनौ पैरण री मया
 देवूं । सगळी परघें इणसूं अणूंती बेराजी व्हैला, पण म्हैं
 अं घांदा निवेड़ती रेंवूला । थूं लारली बातां री तौ परवा
 ईं मत कर ।

खवास रै इत्ती खटाव कठे ! वो दोड़घो दोड़घो जायनै
 हजार मोहरां वळै ले आयौ । ठाकरसा मन में जाणै जित्तो
 पिछतावो करियो के वे फगत हजार मोहरां री ईं गचळको
 क्यूं काढ़ियो । दोय हजार री बात करता तौ ओ दोय हजार
 ईं ले आवतौ । बैठां-सूतां नुक्सांण कर न्हाकियो । पण ठाक-
 रसा अंतावळ करणी वाजिब नीं समझी । ठार ठारनै खावणो
 सावळ रेंवैला ।

खवास हाथ जोड़नै कह्यो — होकी, चिलम, रचोड़ी,

राच-पीच अर दोनूं जणा रै गैणी-गांठी घड़ायां पछे फगत
अ हजार मोहरां ई वळे बची ही । आपरी हुकम मिळतां ई म्हें
तुरत ले आयी । अबे म्हनै मया दिरावो जकी बात करो ।

ठाकरसा राजी होयनै बोल्या—थनै म्हें कीकर ना कर
सकूं । पग में सोना रै कड़ा री कांई जिनात थूं सोना री
पगरखियां धुराधुर पेर सकै । मूंडो मगदूर किणी री जको थनै
बेजा बोल सकै । थनै सोनो पेरने म्हारी खास कचेड़ियां में
आवण री छूट है । बोल फेर कांई चावै ।

खवास ठाकरसा रा पग झालनै कह्यो—अंदाता री मीर
चाहीजै । आपरी सुभ निजर है तो माटी ई सोना जैड़ी है
अर आपरी कोप व्हे तो सोनो ई धूड़ सस्तै है, म्हें तो फगत
आ बात जाणूं हूं ।

अर ठाकरसा री इत्ती छूट दियां पछे खवासजी री
कांई पूछणो ! वै नवा ओपता गाभा पेरनै माथे तमाम गैणो
ठसाय लियो । लार रेंवण वाली नायण ई नीं ही । वा
तो तड़के ऊठतां ई बणाव करण लागी जको मथारै दिन
चढ़्यां नीठ निवड़ी । सोना गैणा में पीळी जरद व्हेगी, जाणै
सांप्रत लिछमी अवतरी है । दोनूं अके दूजा नै थुथकियां न्हाकी ।
पछे खवासजी तो खड़ां खड़ां कचेड़ियां वहीर ब्हिया अर नायण
झमाझम करतो रावळै पूगी । ठकरांगीसा रै जोड़े जायने ऊभो
तो वै उणारै सांभी डावड़ी सस्तै लागा । नायण रा डील
माथे पळपळातो सोनो देखनै वारें काळजै झाल झाल ऊठी ।
वानै अकेअके तो विस्वास ई नीं ब्हियो । पैला तो जाणियो
के कोई रांगीजी पधारचा है । पण जद नायण लुळने बंदगी

करी जद वानै ठा पड़ी के आ तो नायण है । ठकरांणीसा तो नीठ उणसूं माडांणी हंस हंसनै बातां करी ।

रात रा ठाकरसा मैलां पधारिया तो ठकरांणीसा रूठघोड़ा आटी-पाटी लेयनै आंगणै सूता हा । ठाकरसा घणा दपूचा लिया तो ठकरांणीसा डुसक्या भरता कैवण लागा—म्हारा ई ठिकांणा में म्हारी ई नायण ओडियां रै मूंडे सोना-गैणो पैरनै आवै अर म्हारै गोडे उण जोड़ री अेक तीब ई कोनीं, जद आप ई बतावी के अँड़ा जीवणा में काई सार ! आपघात नूँ करणी चावूं, आप खुद आपरा हाथ सूं संखियो देदौ तो पिंड छूटे ।

ठाकरसा थावस देवता कह्यौ—थें इत्ता समझणा होयनै कैड़ी बावली बातां करी । निजरां बतायां बिना इत्ता गैणा री ठा ई काई पड़ती । बापड़ी कालै तो दोय हजार मोहरां दी जद सोनौ पैरण री म्हैं वानै मया करी ।

ठाकरांणीसा कह्यौ—आपनै दोय हजार मोहरां वळै देवै तो आप उणनै राज री ठकरांणी बरण री मया दे दौ । म्हारै कनै उण जित्तौ गैणो कोनीं, म्हने इण बात री दुख नीं है, पण उणरे इत्तौ सोना-गैणो क्यूं है, म्हारै काळजै तो आ बळत लागोड़ी है । म्हैं हजार मोहरां री सोना-गैणो वळै घडाय लूं तो इणसूं उणरौ गैणो तो कम नीं व्हेला । लोगां ने अणूता दुखी देखूं जद ई म्हारा मन में सुख उपजै । दूजां री सुख ई म्हारै वास्तै दुख री कारण है । चोबीस गांवां रा धणी होयनै थें रैयत नै दुखी नीं कर सकौ तो पछे ठाकर क्यूं बणिया ।

ठाकर नरमाई सूं कह्यौ—म्हारा कांम रो म्हनै पूरो ध्यान है, थानै भुळावण देवण री जरूरत कोनीं । अपारा पट्टा में किणी कनै कोई चोखी चीज व्हेला उणनै अपारै कोठार तालके व्हेणी पड़ेला, थें नेठाव तौ राखौ । लुगायां वाळी अंतावळ अर समझ सूं राज रा कांम नीं चालै । म्हारी समझ माथै भरोसो करनै थें रियाणौ छोडौ ।

समझावण सूं ठकरांगीसा नै ठाकर री समझ माथै पूरो भरोसो व्हेगो ।

सोना-गैणौ पैरणा सूं तौ लोगां री निजरां में वारां जात ई पलटीजगी । गांव में ठाकर सूं दूजें आंक खवासजी री आव-आदर व्हेण लागौ । आदर रौ ऊमायो खवास तौ जस भेळौ करण सारू हाथ नै अणूंतौ खोळी कर दियो । हाथ पोलौ तौ जगत गोलौ । नायण ई गांव री लुगायां में अणूंतौ जस कमायौ । किणी रें ई अड़ियै-वड़ियै अर विखा में वै तुरत कांम आवता ।

परपूठ तौ लोग खवासजी नै ठाकर सूं ई सवाया मानण लागगा । ठाकरसा अणूता चात्रंग हा । गांव में सगळी बातां री सोय राखता । अणूता जस अर आव-आदर रें कारण खवास रौ बदळतौ सुभाव ई वारा सूं छांनी नीं रह्यौ । वै खुद डोढ़ में उणनै खवास ठाकर कैयनै बतळावता ।

अक दिन वै खवासजी नै कह्यौ—खवास ठाकर म्हैं थनै नित नित फोड़ा तौ घालूं, पण थूं कीं ध्यान मत करजें । थारी कांम थनै भुळाणौ ई पड़े । कालें थूं तड़कै रचोड़ी लेयने म्हारी खिजमत बणावण नै आजै । लोग थारे सोना रा होका

अर चिलम री तारीफां घणी करे , भला आदमो म्हनै ई निजरां तौ बता ।

खवासजी नै मन परबारौ माडांणी कैवणौ पड़्यौ—आप आ काई बात फरमावौ ! आप तौ म्हारा घणी हौ । आपरी हाजरी सूं म्हें छोटी थोड़ी ई व्हूं । आपनै केई वार होकौ अर चिलम बताई , पण आपनै वांरी खास ध्यान को रह्यौ नीं । आप राजा हौ , म्हां गरीबां री चीजां आप लोगां रै निजर ई नीं आवे । आप फरमावौ तौ काले फेर लायनै हाजर करुंला ।

सोना-गैणौ तौ दोनूं लोग लुगाई पूरौ पूरौ हरदम ठसा-योड़ी राखता । सोना री रचोड़ी ई खवासजी रै खांधे लट-कियोड़ी रैवती । ठाकरसा रै सिवाय वे दूजा लोगां री खिजमतां करणी होळै होळै छोड दी ही । अँटवाड़ा वासण मांजणा री तौ वे मनां-ग्यांना खण ई ले लियौ हौ । अर लोग ई वांनै ओ काम भुळावतां अबे संकौ करण लागगा हा ।

दिन ऊगतां पांण खवासजी सोना री रचोड़ी , सोना री होकौ , सोना री चिलम अर डील माथे पूरौ सोना-गैणौ ठसायां रावळै आया । ठाकरसा पाट माथे बैठा उणरें आवण री बाट न्हाळता इज हा । पाखती आवतां ईं वे उणनै आदर सूं खवास-ठाकर कैयनै बतळायौ ।

ठाकर खवासजी री सगळी चीजां सावळ देखी । अेक अेक चीज निगोट सोना री बणियोड़ी ही । ठाकरसा रचोड़ी सूं निका-ळनै सगळी चीजां ध्यान सूं परखी । चीमोटौ , सिल्ली अर सोना री चकमौ हाथ में लेयनै ठाकरसा कह्यौ—भाया , जीव री दलाल तौ

थूं अंत इज घणौ है । अ चीजां कांम में नीं आवे तौ ई थूं सोभा री खातर सोना री बणायली । बता तौ खरी चीमोटा , चकमा अर सिल्लियां भळं कदैई इण दुनियां में सोना री व्ही है । पण थने तौ कोई मिस लाघणौ चाहीजे । के तौ बड़ा ठाकरसा री जीव थारे जँड़ी हो के वारे पछे म्हें थारो जीव इत्तौ विलालो देखियो ।

खवासजी तौ मोदीजनै अणूता छोदा पड़ग्या । इण विध री बातां-विगतां व्हेती री अर खवासजी ठाकरसा री खिज-मत बणायनै नखचुट्टा सूं नवाळ लेवता हा के ठाकरसा होळें सूं डरड़ाटो खांचियो अर खांचतां ई खवास रें हाथ सूं नख-चुट्टी छूटनै फुरणियां रें मारग सीधो ऊंची चढ़नै पाधरो ठाकरसा रा पेट में गियो परी । पछे तौ ठाकरसा जोर जोर सूं डरड़ाटा खांचता ई रह्या अर डरड़ाटां रें सागें बारो बारी सूं खवासजी रौ होकी , चिलम , रचोड़ी , सिल्ली , चीमोटी अर चकमौ सगळा ई फुरणियां रें मांयकर ठाकरसा री धौलक में वड़ग्या ।

खवास तौ देखतौ ई रंग्यो । वो तौ ओ खिलकौ देखनै चित्तबंगियो व्हेगौ । तूंबी री गिर रें उनमान उणरौ मूंडो धोळी बरुड़ व्हेगौ । उणरी आंख्यां जळजळी व्हेगी । ठाकरसा खिखरां करता कैवण लागा—जीव रौ इत्तौ दलाल होयने थूं यूं कांई मूंडो उतारियो है ।

खवास हाथ जोड़नै कह्यौ—अंदाता , यूं कांई करी , म्हें तौ रावळी हाजरियो हूं । खुसी सूं दोय हजार मोहरां आपरै निजर करी । आपरी मया लियां पछे ई म्हें ओ गेणो-

गांठी अर अँ राच-पीच घड़ाया हूं । म्हारै माथँ थोड़ी-घणी
तो दया विचारो ।

आ कैयनै खवासजी फेर खुणियां सूधा हाथ जोड़िया ।

ठाकरसा फेर डोढ़ में कह्यो—आज तो घणा दिना सूं
हाथ जोड़िया, इत्ता दिन तो साव ई पांतरग्यो हौ ।

खवासजी गळगळा कंठ सूं रिरियावता फेर कह्यो—
अंदाता, म्हारो कीं कसूर तो बतावो, राज म्हारै माथँ इतो
कोप क्यूं करियो ?

ठाकरसा मुळकता थका कह्यो—बावळा इण में कसूर अर
कोप री कांई बात ! म्हैं तो थारो गाढ़ देखतो हौ । संपत्त
बधी तो कांई, सुभाव तो हाल थारो सागै इज है । फालतू
कळप मती, थूं खुद पेट रै मांय जायनै थारी सगळी चीजां
पाछी ले आव । म्हैं रचोड़ी अर थारै राच-पीचां री कांई
करूं । अेक चिलमड़ी थोड़ी आछी लागी, थारै दाय पड़ै तो
निजर कर दीजै, नींतर थारी मरजो ।

खवास बोल्यो—म्हैं तो चिलम अर होकौ दोनूं आपरै
निजर कर देवूंला । बाकी चीजां राज री मया व्है तो पाछी
बगसाय दिरावो ।

ठाकर कह्यो—थारै गळे हाथ, इण में अेक घांदो है ।
पेट में चीजां जावण री तो मारग है पण पाछी आवण री
मारग कोनीं । थूं राजी-खुसी मांय जायनै थारी चीजां री
सावळ संभाळ करलै, जान्ता सूं खुद बारै ले आव । म्हैं थनै
पालूं थोड़ी ई हूं । घणी ताळ रह्यां अँ चीजां म्हारा पेट
में अपचो करैला ।

खवास ठाकरसा री बातां सूं पूरौ धीजग्यौ । मांय जावण नै राजी ब्हियो ई ही के जोग री बात थाळ अरोगण री अबेळी व्हेतां देख खुद नायण आपरा धणी नै बुलावण सारू आई । वा निसंक झम्मर झम्मर चालती ठाकरसा रें पाखती आई ही के ठाकरसा जोर सूं डरड़ाटी खांचियो । नायण रें देखतां देखतां खवास-ठाकर ती मांय घोलक में वड़ता इज निगं आया । नायण औ रासी देखियो तौ भूडें ढाळें कूका-रोळी मचायो । अरड़ां अरड़ां रोवण ढूकी । ठाकरसा कह्यौ—
वाल्हा, रो मती । खवास आपरी चीजां लावण सारू इंदरलोक में गियो है । अबारूं पाछौ आवतौ इज व्हेला । थनं जित्तं खटाव नीं व्हे तौ थूं खुद मांय जायनं आपरा धणी री हाथ झालनं बारें लिया । होकौ, चिलम अर थारी रचोड़ी नै ई बारें लेती आजैं ।

नायण नै ई पतियारौ व्हेगौ । मांय जावण री उणरी मंसा व्हेतां ई ठाकरसा वळें जोर सूं डरड़ाटी खांचियो । अर डरड़ाटी खांचतां ई सोना में पोळी जरद ब्हियोड़ी नायण ई फुरणियां रें मारग ठाकरसा री घोलक में समायगी ।

नायण ठेट पूगी जित्तं उणरें अर उणरा धणी बिचाळें अधकोस री छेती पड़गी ही । वा डाडती डाडती यूं ई अठी-उठी भंवती फिरी, पण खवासजी रा तौ कठैई बावड़ नीं ब्हिया । वा घोलक रें मांय सूं ई हाको करियो—ठाकरसा, म्हनं तौ बारें काढ़ौ, म्हारौ जीव अमूंझैं ।

जबाब में उणनं फगत ठाकरसा रें डग डग हंसणा री आवाज सुणीजी ।

दोनू जणा नौ दिना ताईं अठी उठी भटकता रह्या । भंवतां भंवतां खवासजी नै अेक माळी सांमी धकियौ । दोनां में जवारड़ा व्हिया । माळी पूछ्यो—आप किजात्या अर किसा गांव रा हौ । खवास आपरौ नांव-धांव बतायौ । पछै मूंडौ ढेरनै कैवण लागौ—म्हारौ सोना रौ नखचुट्टी, सोना रौ होकौ, सोना री चिलम अर सोना री रचोड़ी ठाकरसा रा पेट में वड़गी, वानै सोधण सारू आयौ हूं ।

पड़ुत्तर में माळी जोर सूं हंसियौ । बोलयौ—काला थूं नौ दिनां में ई थारी गमयोड़ी चीजां सोधणी चावै । अर वै ई ठाकरसा री धौलक में । अठै होका, चिलम अर रचोड़ियां रा काईं थाग लागे ! म्हैं लारला सतरे बरसां सूं रातदिन म्हारा गमियोड़ा बेरा सोध रह्यौ हूं । जिण धौलक में इक्कीस बेरां रै तीन हजार बीघा जाव रौ ई पतौ नीं लागौ उठै थारी रचोड़ियां रौ काईं पतौ लागे । अबै तौ फगत सबूरो झेल अर बाकी सगळी बातां भूलजा ।

पण खवासजी नै तौ ई साच नीं आयौ । भंवतां भंवतां उणनै अेक राईकौ सांमी धकियौ । उणरै मूंडा सूं सगळी बात सुणनै हंसी करतौ कैवण लागौ—थारी गळाई थोड़ा दिनां ताईं म्हैं जाणतौ हौ के म्हारौ अेवड़ पाछौ लाध जावैला । सात बरसां में ई म्हारौ दस हजार लरड़ियां रौ ठाकरसा रै पेट में गियां पछै पतौ नीं पड़ियौ, भलां उण ठोड़ थारी रचोड़ी, होका, चिलम अर नखचुट्टा रौ काईं पतौ लागे ।

खवासजी नै तौ ई धीजी नीं व्ह्यौ । वो फेर आंगे हालियौ । हालतां हालतां उणनै अेक बूढ़ौ चौधरी सांमी

धकियो । खवासजी री बात सुणनै वो ऊंडो निस्कारो न्हाकतो कह्यो—सेवट थू ई ठाकरसा री आंटी में पजग्यो । अबै फगत गोतां रे थारै कीं हाथ नीं आ सकैं । आयैसाल पांच हजार मण गहुवां री तालियां रा कूड़ा ठाकरसा डकार जावै, जिणरी पाछो दाणो ई हाथ लागणो कैंडो व्हे ! म्हैं ई पाछा हाथ आवण रा धोखा में अठे आयग्यो । इग्यारा बरसां सू अठी-उठी भंवतो फिरूं, पण हाथां लटायोड़ी तालियां री पाछो दांणो ई देखणा में नीं आयौ ।

इण भांत खवासजी नै केई भिनख मिळिया अर वें उणनै आप आपरै दुखां री बातां बताई । ओ कोई ठाकरसा री पेट है के बिना पींदा री कोई पाताळ है । निजरां देखै जकी अर मंसा करै जकी चीजां ई इण में लोप व्हे जावै !

डोलतां डोलतां खवासजी नै अक कोठार में कांमदार बैठा निगै आया । वें नीची धूण करियां हिसाब करता हा ! खवासजी नै देखतां ई ओळख लियो । पूछचौ—थें अठे कीकर !

खवासजी मांडनै सगळी बात बताई । तद कांमदार हंसतो थकी कैंवण लागौ—बावळा, कठई थारो मगज तो नीं भंव-ग्यो, ठाकरसा रा पेट में गियोड़ी चीजां री पाछो आस करै ! अं बहियां री अणगिण थपियां देखै है—आं में थारै जेड़ी अलेखूं चीजां जमा व्हियोड़ी है । थारो होकौ, चिलम, रचोड़ी इत्याद सरब सोना री निगोट चीजां म्हैं अबारूं इण बही में जमा करी हूं । जमा व्हियां पछें थनै अबै मुळगी ई वारो तिथ छोड़ देवणी चाहीजै ।

कांमदार अर खवास में बातां व्हेतो ई ही के अरड़ां
अरड़ां रोवती नायण उठै आई । नायण नै देखतां ईं खवासजी
इचरज सूं पूछ्यो — थूं अठै कीकर ?

नायण कह्यो — थानै सोधण सारू आई हूं । फिरतां
फिरतां पगां में पांणी पड़्यो । बड़ा आदमियां अठै लुकियोड़ा
बैठा हो । हाका कर करनें म्हारौ तो गळौ बैठ्यो । बोलौ
अबै कांई करां ?

खवासजी कह्यो — अबै करणौ कराणौ तो ठाकरसा रै
हाथ है । अठै आयां पछै किणी रौ कीं बख नीं लागे ।

इत्ती बात इत्ती चींत,
पाछला घर री पछीत ।
पछीत बंध्या घोड़ा,
घोड़ां कीनी लीद,
लीद लेग्या कुमार,
कुमार घड़िया हांडा,
हांडा मेल्या नाडी री तीर ।
आती जाती गायां फोड़ै ।
क्यूं रै गवाळिया आडी गेडी क्यूं नीं दे ?
कांई करूं मां रोटी नीं दे ।
क्यूं अे मां रोटी क्यूं नीं दे ?
बेटा री बहुवां पीसै कोनीं ज्यूं ।

क्यूं ओ बहुवां थें पीसौ क्यूं नीं ओ ?
 के घरटी कनै पावणा बैठा ज्यूं ।
 पावणा थें ऊठौ क्यूं नीं रे ?
 के मेह घणौ बरसै ज्यूं ।
 क्यूं रे मेह घणौ क्यूं बरसै रे ?
 के मोरिया घणा बोले ज्यूं ।
 क्यूं रे मोरियां थें घणा क्यूं बोलौ रे ?
 के बादळा घणा गाजै ज्यूं ।
 क्यूं रे बादळां थें घणा क्यूं गाजौ रे ?
 के बीजळियां घणी चिमकै ज्यूं ।
 क्यूं ओ बीजळियां थें घणी क्यूं चिमकौ ओ ?
 के बातां रा टमरका घणा सुणा ज्यूं !

चरु बोलै

अक भांभण नित रावळा कोट में मोटी हांडी लेयने छाछ लेवण सारू जावती । वा हमेस डोढ़ो रे आळा रे अड़ौअड़ बिलोवणी बहैतौ जित्तै बैठी रैती । ठकरांणीसा री उण माथै मया ही । वै उणसूं केई घर-खानगी अर अठी उठी री बातां करता रैवता । ठाकरसा तौ घणकरा नोहरा में ई बिराजता हा । रावळें खुद अमल रा बंधांणी हा , द्दिणसूं नोहरा में अमलिया सिरदारां री जमघट बणियो रैवती । अमल री मनवारां रे सागै आखें दिन बातां रा फटकारा लागता रैवता पण ठकरांणीसा आपरै मन री आगळ फगत उण भांभण रे सांमी ई खोलता हा ।

अक दिन ठकरांणीसा उण भांभण नै कैवण लागा ठाकरसा तौ अबै ऊंचलें पगोतियै पूगगा है । वाने नीं तौ आपरै डील रो सिंग्या है अर नीं रावळा री दूजौ ई कीं चेतौ है । वांरो घाल्यां अबै म्हैं करूं तौ कांई करूं । आजकालै तौ रात रा सूती नै सावळ नींद ई को आवे नीं । मोटोड़ी बाई नै औ जेठ उतरियां बीसवी बरस लागैला । पण ठाकरसा तौ कांनां में जाणै तेल घाल्यां बैठा है । म्हैं तौ समझाय समझायनै हार थाकी पण वाने तौ अमल रे आगै कीं सूझे ई नीं । म्हारी तौ रात रा अकर आंख खुलियां पछै पलक ई नीं झपे । हाथे व्है तौ कालै सनमन करदूं । बाई नै देखूं तौ म्हारा काळजा में सळीका ऊठै ।

उण ठोढ़ बैठ्यां पछै भांभण नै लखायो के वा आपरा

आपा में नीं है । अरळ-विरळ बोलण लागी—आपनै बाईजी-लाल वास्तै इती चिंता करण री कांई जरूरत । म्हारो मोटोड़ी बेटो कांग्हुड़ा जाणें सांप्रत किसन भगवानं री अवतार है । फूठरो , फबती मोटघार काटी , जिणरै सांमी चांद ई कोजो लागै । म्हारै कांग्हुड़ा रे थकां आप बाईजीलाल वास्तै दूजो वर हेरो ई क्यू ! आ तौ आपरी धापनै भूल है ।

भांबण री आ बात सुणनै ठाकरांणीसा री आंख्यां ऊंची लिलाड़ में चढ़गी । मन में जाण्यो के भांबण कठै ई सीत में तौ नीं आयगी । पछै विचार करियो के बापड़ी भोळी जात है , इणने कांई ओड़ी देवूं । बात करने ई राजी व्हे तौ होवण दो , अपारो इण में कांई कुरब घटै !

पण वा भांबण तौ नित आ इज बात करण लागगी । पछै ठकरांणीसा ई उणरी काली बातां री मुळगी ई तिथ छोड दी । तौ ई अेक दिन वारा मन में बात खटी कोनीं तौ वै ठाकरसा नै कह्यो—आज आपनै अेक अजब बात सुणावूं । सुणियां म्हनै तौ अणूतो हंसी आई , जे आप खीझ नीं करौ तौ आपनै कैवण री हीमत करूं ।

ठाकरसा कह्यो—म्हैं आज पैली कदैई थारो बात माथे खीझ करी है ?

ठाकरांणीसा बोल्या—बात म्हारी नीं , कानिया री मां री है । म्हैं पैला मानती ई नीं हो , आ बात सुणियां तौ म्हनै पूरो विस्वास व्हेगौ के भांबियां री जात साव भोळी व्हिया करै । बापड़ी भोळप में कैड़ी विलळो बात करी । म्हैं उणनै बाई रै सनमन री बात करी जद वा कह्यो के उणरा कांग्हुड़ा

रै साथै बाईजीलाल री ब्याव करदूं । वो तो सांप्रत किसन भगवानं री अवतार है । अँड़ी जोड़ कठैई नीं लाधैला ।

ठकरांणीसा नै औ जाणनै बड़ी इचरज ब्हियो के ठाकरसा नै अँड़ी अजोगती बात सुणनै ई रीस नीं आई । वै तो इण माथै विचार करण लागा । अमल रा बंधांणी व्हैतां थकां ई ठाकरसा थोड़ा घणा चात्रंग अर हुंस्यार हा । थोड़ी ताळ विचार करने वै ठकरांणीसा नै पूछघौ—म्हनै अक बात तो बतावौ के वा भांबण बँठै कठै है ?

ठकरांणीसा पड़ूतर दियो—बँठै फेर कठै । बारेली डोढ़ी में । विलौवणी व्है जित्तै नित उठै ई बैठी रँवे ।

ठाकरसा कह्यौ—ऊं हूं । यूं बात नीं बणै । म्हनै चालनै बैठण री खास ठायौ बतावौ । बापड़ी भांबण री काँई जिनात के वा सपना में ई अँड़ी बात वेल सकै । उण ठोड़ हेटै अवस धन गडियोड़ी है । उण गडियोड़ा धन रा नसा में वा आपरा चेता रँ उपरांत आ बात करी । धन रा आधण बिना किरणी री माथौ अँड़ो नीं सूज सकै । म्है वा ठोड़ खुदावणी चावूं ।

ठकरांणीसा ई आ बात आछी तरै जाणता हा के अँकर जचियां पछै खुद बिरमाजी ठाकरसा नै बात सूं डिगा नीं सकै । वै कह्यौ—आ तो रावळी मरजी, म्है कद पालूं । आप सगळौ काट खुदावौ तो ई म्है बरजण वाली कुण व्हूं ।

ठाकरसा तो पाछो हां ना ई नीं दियो । वै तो पांच सातेक हाजरियां कनासूं डोढ़ी री वा ठोड़ खुदावणी चालू करदी । अर खुदोखुद पाखती ऊभा रह्या ।

सेवट ठाकरसा कह्यो जकी बात साव साची निकळी । झाड़ साही मोहरां रा सात चरू काठा भरियोड़ा निकळिया । मुणियो जकी ई अचंभा में आयग्यो । पण खुद ठाकरसा नै हरख अर इचरज री ठोड़ गुमेज घरणी व्हियो । गुमेज इण बात सूं के वारी बात सोळै आंना साची निकळी । लोग वानें अंगां भोळा अर नादानं जाणता हा । अकल तौ वां में उबरतो पड़ी ही । जे अमल रा नसा में नीं क्षिलता तौ आज किणी देस री राज संभाळता ।

सांतूं चरुवां नै खुद आपरा हाथ सूं ठाणें करायनै वै पाछी उण ठोड़ नै संवी करायदी । पछै ठकरांणीसा नै कह्यो—
महैं तौ थानें पैला ई कह्यो ही के भांबण रा मूंडा सूं धन बोलतो ही । जे इण बात री पतियारी ई लेवणी चावो तो कालें थें खुद चलायने पैला उणसूं आ बात करजो । थानें आपै ई ठा पड़ जावैला ।

दूजें दिन भांबण आयनै उणी ठोड़ बैठी । ठकरांणीसा ई पूरो पतियारी लेवणी चावता हा । वै थोड़ी ताळ तो अठी उठी री आडी-डोढ़ी बातां करता रह्या । पछै केवण लागा—
भांबणजी, महैं अर ठाकरसा दोनूं निरांत मन सूं थारी बात माथे विचार करचो । मोटोड़ी बाई वास्तै थारी बेटी कान्हूड़ी ई इक्कीस आंना जोग वर है । अँडो रूपाळी मोटचार छोडनै महैं कठै मुलकां में रोवता फिरां । रोवता फिरां तौ ई कांई व्है । अँडा टाबर कठै पड़िया है ।

भांबण डर सूं थर थर घूजतो कह्यो—बापजी, आप आज औ कांई फरमावो ! महनै अँडो सपनो ई नोज आवै अर जे

आवे तो ठाकरसा घांणी में पीलायन मार न्हकै । म्हनै कांई आज आप मरावण री तेवड़ी हौ ।

ठकरांणीसा इण आगै फेर कांई बात बधावता । आज ऊमर में पैली वार वै ठाकरसा री अकल आपरा मन में बखांणी । रात रा ठाकरसा रोटी जीमण नै घरै आया तो ठकरांणीसा कह्यौ—आज तौ आप परतख सेंदेवजी वाळी ई बात करी । म्हैं बात करी तौ भांबण म्हारा पग पकड़ण लागी । बात सुणतां ई थर थर धूजण लागी । पछे डुसक्या भरती थर थर धूजण लागी । बापड़ी री जाणं रांम निकळग्यौ हौ ।

ठाकरसा कह्यौ—बापड़ी री रांम निकळियौ कोनीं, सांभी उणमें रांम वड़ग्यौ हौ । म्हैं तो थानें वद वद नै कवतौ के वा भांबण नीं बोली वै सात चरू बोल्या हा । भांबण बोलै तो अबै बोलै । आं सात चरुवां री आंच सूं तौ मुड़दा ई मूंडै बोलण लाग जावै ।

पछे ठाकरसा मसखरी करता थका कैवण लागा—थें तौ म्हनै साव गाफल अर अंगां भोळौ ई जाणता हा । सूतां बैठां सात चरुवां नै तपास कर लिया । सात पीढ़ी खुणचिया भर भरनै अमल पीवै तौ ई को खूटं नीं ।

ठकरांणीसा कह्यौ—थारं कांई आंकस ? थां तौ आं मोहरां री अमल करनै पी जावौला । अकल आप में उबरती पड़ी है तौ पछे थोड़ी घणी उठोनै ई काम में लिरावौ ।



जीभ रौ एस झरै

अक चौधरी जबांन रौ बेड़ी अर फूड़ अंत इज
घणौ हो । मूंडा सू बोल काढ़तौ जका ई अंवळा
अर कावळ । गांव रा लोग तौ होळै होळै उणसूं बात करणा
में ई कांनाटाळो करता हा । कदैई कोई पूछ लेवती के चौधरी
ऊभो है !

तौ वो जबाब देवतौ—थारी सरधा व्है तौ पटक दे ।
कदैई कोई पूछतौ—चौधरी बेठो है कांई !

तौ वो जबाब देवतौ—थनं नीं सुवायौ व्है तौ गुड़ाय दे ।
कदैई कोई पूछतौ—चौधरी सूतौ है कांई !

तौ वो जबाब देवतौ—दिनमांन अर सासा बाकी है जित्तै
तौ यूं ई सूतौ रंबूला , थारं किरणीरं मारघां ईं नीं मरूं ।

अकर उणरी लुगाई यूं ई पूछ लियौ—बेठा हो कांई !

तद वो मुळकनं जबाब दियो—महें बेठो हूं जित्तै ई अं
केसरिया कसूंबल ओढ़ं , नींतर रंडापो भुगतणी पड़ती ।

कदैई कोई पर-गांव रौ पूछतौ—चौधरी कांई वायो ?

“ भाटौ । ”

“ व्हियौ कांई ? ”

“ गुमड़ो । ”

“ निपजियौ कांई ? ”

“ लोई अर राद । ”

रांम जाणं उणरा मगज में कांई आंट अर कांई टणकाई
हो । लोग कैवता के वो तौ बोलें कांई बोवें है ।

अकर वो बलदां री जोड़ी खरीदण सारू मेळें जावती हो । माथे बाजरी री पोट उखणियोड़ी ही । मारग रा अक गांव में वो सिरावण करण सारू ढबियो । अक चौधरण रें झूंपे जायने वो थोड़ी घणी नरमाई सूं बोल्यो—म्हारें जोगी बाजरी देवूं । म्हनै खीच रांधनै घाल दे तो म्हारें गांव आयां म्हें पाछी अंडी ई हाजरी साज देवूला ।

चौधरण सालस अर भली ही । कह्यो—म्हारा गनायत हो, इण में म्हनै कांई जोर पड़े । बाजरी नीं व्हेती तो ई किणी मारगू नै भूखी थोड़ी ई काढ़चो जावै ।

वा खीच री आधण चाढ़ दियो । पछे धम्मड़ धम्मड़ खीच कूटनै हांडी में उराय दियो । खीच थोड़ी सौ खदबदे आयी जणा चौधरी गडाळ में बाधोड़ी अक भेंस देखी । भेंस रा सींगड़ा अणूता फाडा अर लांबा हा । चौधरी नींठ इत्ती ताळ स्यांणी स्यांणी बैठी रह्यो । भेंस नै देखतां ई उणरा मगज में जाणै कीड़ी कळबळियो । बोल्यो—हे ओ माजी ! ओ फाड - सींगो खोरी जे इण गडाळ में मरग्यो तो इणनै बारें कीकर काढोला ।

चौधरण कह्यो—भला आदमी, थूक थारा मूंडा सूं, परभात री पौर क्यूं अंडी कुबांण काढ़े । थनै ओ खोरी दीसे । इग्यारा सेर दूध री गोवणी भरै ।

चौधरी कह्यो—थनै कदास ओ खोरी बेचणी दीसे, पण म्हें अंडी बावळी लेवाळ नीं हूं । थूं तो इग्यारा सेर दूध री बात करै, इण खोरा नै चीरनै लोई काढ़े तो वो ई धड़ी नीं व्हे ।

चौधरण जाण्यो इण अधगैला सूं कुण माथो पचावै ।
वा आपरा कांम में लागगी ।

थोड़ी ताळ पछे उण चौधरण री बेटी आई । हाथां में
पुणचां तांई मूठियो अर खवांखांच चूड़ी देखनै बोल्यो— हाथां
में धोळा धोळा अँ हाडक क्यूं पळेटिया है ।

चौधरण नै आ बात सुणियां थोड़ी रीस आयगी । तड़-
कनै बोली— थारी जीभ डांमूं, असली हाथो दांत री चूड़ी
थनै हाडक ई निगै आयी । पूरा तीन बीसी रिपिया रोकड़
दिया हूं ।

चौधरी कह्यो— रांम, रांम, अँ तीन बीसी रिपिया
पांणी में क्यूं न्हाकिया । जे इणरी मोटचार मरगो तो ओ
चूड़ी कांई कांम आवैला ।

बात किणी रै ई झरै जैड़ी नीं ही । बेटी रा बारा
में आ बात सुणतां ई चौधरण रै ती जाणें झाळ ऊठगी ।
गाळियां काढ़ती कह्यो— लखण तो अँड़ा है के मूंडा में बळ-
बळता खीरा ठूस दूं ।

पछे वा हांडी नै ओरणा रा पल्ला सूं झालनै उणरै
पाखती आई । बोली— लेणी व्हे तो ओ अधसीजियो खीच
खेसला में ले लै, नींतर म्है आंगणें ऊंधावूं ।

चौधरी कह्यो— आंगणें ऊंधावें जकौ थूं म्हारें भेलो
खेती में थुड़ी कोनीं । खेसला री पोट बांध्योड़ी है दोखें कोनीं !
म्हारी धोती में घाल दै, फेर कोई दूजी गवाड़ी देखूंला ।

चौधरण तो बड़का तड़का करती, वो सगळो अधसीजियो
खीच उणरी धोती में ऊंधाय दियो । कह्यो अबै अठा सूं
फा. ८

थारी काळो मूंडी करै जकी बात कर ।

चौधरी तो माथे बाजरी री पोट अर अेक हाथ में
अधसीजिया खीच री पोटली लेयनै उठा सूं बहीर व्हियो ।
पोटली सूं अधसीजिया खीच री पांणी झरतौ हौ । मारग में
लोग मिळिया जकी पूछ्यो—अरे ! चौधरी थारी इण पोटली
सूं काई झरै ?

चौधरी कह्यो—झरै म्हारी जीभ री रस ! चाटण री
मंसा व्है तो संको मत राखजो ।



बाड़ा री मरजादा

अेक स्वाळख रा चौधरी नै फूठरा, फबता नागौरी
बळदां री अणूंतो कोड ही । फगत कांम में परोटण रा
लोभ री खातर नीं, वारी अवेर करण री चाव उण में अंत
इज घणौ ही । बळदां नै आपरै जाया अर भायां सूं ईं
वत्ता जाणतो । बळदां नै इण भांत अपटां चरावतो के पाखती
रा चौखळा में उण चौधरी री मिसालां लागती । घणकरा
लोग उणनें सुणायनें केवता के आगला जलम में राजी खुसी
बळद जमारी अंगेजलां जे बाबा री बाडौ हाथ लागे तो ।
अबारूं ईं जे खोलियो पलटीजतो व्हे तो इणी सायत त्यार
व्हे जावां ।

बळदां सारू पक्की गडाळां, पक्का ठाण अर पांणी पीवण
सारू न्यारी न्यारी कूडियां । तीजै चोथे दिन बैठण सारू
उडांण री मई मुलमुल पलटीजती । ठांणां में ठेलवौ पराळू
चोपटी, दोनू टंक तिल बाजरी री बांटो, चौमासै हळोतिया
रै मूंडे चार पखवाड़ां ताईं गावा घी री घपाऊ नाळां, ऊनाळै
नित संपाडौ—बळद बीजळियां रै उनमान पळकता ।

बळदां री सिणगार ई उणरौ अणूंतो ही । पिचरंगा सूत
री नाथां अर पिचरंगा भळेवड़ा, रेसमी फूंदियां, सूत री
राहडियां, मूंडा रै मोहरा अर माथे चांदी रा घूघरां वाळा
छडा, गळा में रेसमी गळकोड़, नागौरी घूघरमाळ, सींगडा चौप-
डियोडा, अणियां माथे चांदी रा कळसिया, कटाव री झूलां,
पगां रै गुळी रा डोरा, ढेरवाळ सुथराई सूं फूंदीपाड़ कतरि-

योड़ा ।

बलदां रा फेरणा में ई कोई नैड़ी आगौ चौधरी जेड़ी सागड़ी नीं हौ । उणरै फेरियोड़ा बलद हल्लां में हंस हलै ज्युं हालता हा । पैला वो जोड़ै गांथै देयनै ढाण सिखावतौ, पछै डांडै फेरतौ, चौधरी रा बलद मिनखां नै देख्यां दूणै जोस चढ़ता । चौधरी रै हाथां फेरियोड़ा बलद जाजम रै माथा कर निकळ जावता तौ ई सळ नीं पड़ता ।

बलदां री खोड़ां अर वारा गुण सीखण सारू मुळकां रा वोपारी चौधरी रै पाखती आदता । उणरी खासी भलौ लटापोरियां करता जद वो ठीमर बणनै कैवतौ— डील माथै जित्ता रूंगता व्है, उत्ती ई बलदां में खोड़ां व्है, कोई पारखू व्हैणी चाहीजै ।

पछै वो आंगळियां रा पैरवां माथै अंगूठां सूं गिणतौ नीची धूण करियां खोड़ां गिणावतौ ई जावतौ — खुरफाड़ी फाटे, अक खुरो आगे बघ आवै, अेडी में मस, मुरचां कमजोर, फींचां बारूंती फाटे, फींचां पाधरी, वेवणा पगां, टंटा में पोटियां, चूळियौ बँठोड़ी, पूठा माथै मंवरौ, पूठौ तीखौ, पूठौ ढाळू, गो पूंछौ, लांबौ पूंछ, ढाकरण्यौ, टाचणियौ, बीछूड़ी, बांडियौ, कड़तोड़ी, बूंदी, स्यारौ, सपणियौ, ढील अंगौ, जाडौ चामडौ, लांठी रूवाळी, लांठी तारां, बांड पासळियौ, लांठी पेट, लांबौ मूतणी, सांमलौ, आगूं सेवौ, घूबलौ, गाय अंगी थुई रौ, ओछी गाबड़ रौ, खांधा रौ काटलौ, लांठौ कांबळ रौ, लांठा कांनड़ा, मोटा माथा रौ, भेल्ली मथुंडी रौ, कोल्या सींगड़ा, टोरणियौ, दुग्धियौ, बेड़ा फोड़, फुरकण, केरी,

कायरी , चकरियौ , भूरा भोपणा , धोळ जीभौ , सातळियो , मोटी दंतराय , रसीली , जाड़ल , नेवरियो , छिटकियो , बांमलौ , सेंकोळियो , कबली , हंसलौ , काळियो , फूलियो , साडू , माठी , तावड़ियो !

अक सास में इत्ती खोड़ां गिणायनै वो कंवतौ—पेरवां माथै कित्तीक खोड़ां गिरावूं । मौका माथै निजरां देख्यां ध्यांन आवै ।

पण वीपारियां नै तो इत्ती खोड़ां ई याद को रंवतौ नीं । पछे वं कंवता—वा बाबोजी खोड़ां तो इत्ती ई घणी , अबै कीं गुणां री ग्यांन करावौ ।

चौधरी बळदां रे सांमी जोयनै कंवतौ—थारै गुण-खोड़ां लारै म्हारा सूं आंरी सावळ अंवेर ई नीं व्है । अक अक जणा नै म्है कठा तक बतावतौ जावूं । सगळा अक दिन अकरा सागै आयनै सगळी बातां घोखली । पछे वो आपै ई गुण बतावण लाग जावतौ—चारूं धड़ां सरीखौ , लांबं वेले , काठी डील , छोटी तारां , पतळी चांम , मई रूवाळी , पगां माथै डीगौ , अगर चौड़ी , पतळी कांबळ रौ , तीखी अर डावी थुई रौ , भंवरां सुध , कानां छोटी , मूनाळ छोटी , रंग रौ सफेद , कूडळी सींगाड़ी , ओछी अर पतळी पूंछ , छोटी मूतणी , चौड़ी माकड़ी , खुल्ला क्यांरां रौ , जोभ री अणो मारथं घोळी चाटी , नवदंतौ , चारू , छोटी खुरफाड़ो !

के अचाणक चौधरी बळदां रा गुण गिरावतौ ठमतौ अर आपरा बळदां सांमी सांनी करनै कंवतौ—भला आदमियां , म्है ई कंडो बावळी ब्हियौ अर नीं थानै ई कीं चेतौ रह्यौ ।

सिवजी रा नादिया नै ई मात करे जेड़ा बल्लद सांप्रत निजरां ऊभा अर थें म्हने गुणां री लेखी पूछी । अ सगळा बल्लद गुणां री परतख खान ज्यूं ऊभा है । आं में है जका सगळा गुण है अर बाकी री सगळी खोड़ां । सावळ निरांत सूं आनै देखलौ अर गुण पिछांणलौ ।

गिणगोरियां माथै चौधरी अणूंतौ कोडायौ होयनै अकण सागै सात तांगा दौड़ावतौ । आखती-पाखती रै गांवां रा लोग अवस करनै औ मेळौ जोवण आवता ।

चौधरी-बाबो कदैई गुमेज में ठाकरसा नै कंवतौ—आपे हुकम फरमावौ तौ रावळा ऊंट-घोड़ां नै म्हारा बल्लदां सूं लारे राख दूं ।

ठाकरसा मसखरी करता जबाब देवता—चौधरो घणौ गुमेज आछौ कोनीं । भगवान नक री डांडी माथै बैठौ है , कदैई हाथौहाथ परचौ बताय दियो तौ सगळी आंट उतर जावैला ।

सेवट ठाकरसा रा बोल फल्लिया । अकर चौधरी आपरा ब्याही रै अठै रातीजगा में झिलग्यौ । वौ आपरा बल्लदां नें छोड , नीं कठै ई आवतौ अर नीं कोई जावतौ । रात रा नींद ई सावळ को लेवतौ नीं । घड़ी घड़ी सूं ऊठने वारी अवेर करतौ । ब्याही घणौ हठ झेल्यौ तौ सेवट उणने नमणी पड़ियौ । तौ ई वौ अक गळी काढ़ी के उणरै मोटी संगत गिणौ तौ आं बल्लदां री ई है । घड़ी घड़ी सूं बाड़ा में आयनै आपरै बल्लदां री खुद संभाल करैला । ब्याही नै उणरी बात मानणी पड़ी ।

केई बरसां सूं चोरां रै औ ताखौ सजियो हौ । वे ठीक

मोकी देखने चौधरी रै बाड़ा सू चार जोड़ियां उचकाई । उणरा इज तांगा जोतने उठा सू ताचकिया । कौल परवाणं चौधरी संगत सू घड़ी रै उपरांत पाछी आयने संभाळ करी तौ चार जोड़ियां अर चार तांगा ठोड़ माथै निगै नीं आया । चोरां रा खोज बाड़ा में सुभट दीखता हा । चौधरी री आंख्यां सांमी तौ जाणं बीजळियां चिमकण लागी । बलद जावण री जित्तौ सोच नीं उत्तौ गवाड़ी री पत जावण री सोच लागौ । चौधरी तौ सीधौ दौड़तौ दौड़तौ ठाकरसा रै कोट पूगौ । हळफळियौ हांफतौ हांफतौ हाथ जोड़ने कैवण लागौ—अंदाता, गजब व्हेगा ! ब्याही रै हठ करणा सू म्हेँ संगत में बळियौ जित्तौ चोर मोकी देखने चार जोड़ियां तांगा जोतने ले भाग्या । म्हारी गवाड़ी अर ठिकांणा दोनां री पेठ उड जावैला । लारै वार चढ़णी है । चोरां रै खोजां खोजां घोड़ा अर ऊंट दाबणा है । बापजी, फुरती करौ ।

इण वगत ई ठाकरसा मोसी मारता बोल्या—थूं ई काई विलळी बातां करे ! रावळा घोड़ा अर रावळा ऊंटां सू आगं दौड़ण वाळा बलदां नै अबै कीकर न्हावड़ सकां । थूं केई बार मोदीजतौ खुद आपरा मूंडा सू आ बात करो है । अबै तौ सबूरी झेलणी ई सावळ है ।

चौधरी पगां पड़तौ कह्यौ—म्हारा धणी ! ओ मसखरी री मोकी नीं है । आपनं वार चढ़णी ई पड़सी । नींतर म्हेँ तड़कै ई इण ठिकांणा सू उछाळी कर जावूला ।

ठाकरसा नै अेकर खिखरां करणी ही जकौ करली । पछे तौ वार चढ़णी ई हौ । नाचणा रा टोळा रा सात नांमी

टाळका ऊंट अर तीन पीरां रे ताजण थराद री टाळकी घोड़ियां चोरां रे लारे दाबी । ठाकरसा अर चौधरी दोनू ऊंटं माथे चढ़िया । तांगां रे चहिलां ऊंट दाबिया जकौ तीनेक कोस माथे चोरां नै जा न्हावड़िया । ठाकर अर चौधरी रा ऊंट अड़ीअड़ लारी करता हा । चोरां नै बख में आया जाण ठाकरसा चौधरी सू फेर मसखरी करी—अबै तौ थूं वद वदनै मती बोलजै । थारा रिगदियां नै हांकरता दाब लिया ।

ठाकरसा री इत्ती कंगौ व्हियो अर चौधरी रा कानां में तौ जाणें तोप लागी । उणरै काळजै तौ जाणें झाळां ऊठण लागी । मन में सोचण लागी—के तौ आज गवाड़ी री मरजादा रेवंला के बाड़ा री मरजादा । म्हनै तौ इण वगत बाड़ा री मरजादा राखणी है । मोहरी रो तणकारी देयनै ऊंट रे अंड लगाई तौ वो ठाकरसा नै थोड़ा लारे राखनै चोरां रे पाखती पूगग्यो । जोर सू हाकौ करने बोल्यो—बेलियां देखो काई हौ , राहड़ियां खांचनै छिछकारी दो—छिछकारी । म्हारं अ बळद इण विघ ई फेरियोड़ा है । खांची , खांची , छिछकारी दो । म्हारं बाड़ा री मरजादा जावै है । पकड़ीजग्या तौ थांरी गत बिगड़ला अर म्हारी बाड़ी लाजैला ।

चोरां चौधरी री भुळावण सुभट सुगली । पछं काई जेज । राहड़ियां खांचनै छिछकारी देवतां ई बळद तौ पवन रे उनमान भरणाट उडिया । देखतां देखतां छेती पड़गी । अर छेती पड़ती ई गी ।

अबै जावतां चौधरी रा जीव में जीव आयो के अबै किणीरी मां अजमौ नीं खायो के म्हारा बळदां नै पकड़ सकै ।

ठाकरसा पाखती आयनै बोल्या — भोळौ सैण दुस्मण री गरज साजै । बावळा ठेट आवतां आ काई कोगत करी । हाथां आयोड़ा चोर भाग छूटा ।

चौधरी मोद सूं कैवण लागौ — म्हारै बाड़ै पळियोड़ा अर म्हारै हाथां फेरियोड़ा बळद यूं हाथ आय जावै तो म्हारौ मरण व्हे । बळद अर तांगा गया जिणरी परवा नीं, आज म्हारै बाड़ा री मरजादा रैगी । जीवती रह्यौ तो चार री ठोड़ बीस जोड़ियां वळे वपराय लेवूला । पण अेकर गियोड़ी लाज पाछी कीकर बावड़ती । म्हारा धणी, म्हैं वद वदनै बोलतौ जकौ यूं ही बोलतौ हौ काई । आपनै फोड़ा घाल्या पण म्हारौ तो मन अणूंतौ राजी है । आप ई अबे लारौ करण री मन में मत राखजौ ।

ठाकरसा थोड़ा मोळा पड़ने कह्यौ — अबे तो भावै ई मन में रैगी । थूं मोसा देवै जित्ता ई थनै छाजै ।



तिणकलिये घर बोयौ

अक जाट रौ गायां माथे ई गुजराण हो । करसण
वास्तै जमीं री चांम ई नीं ही । बिना चरणौई रै घणौ
वित्त धारणौ ई बस री बात नीं ही , नोळी रौ जोर चाहीजती ।
गिणती री ध्राव हा । कीं तौ सालोसाल टोगड़िया अर नार-
कियां री बटत व्है जाती अर बाकी सगळी खरच-खातौ घी
बेचणा सूं सर जाती ।

माथे निंगळियोड़ी पारियां उखणनै चौधरी पाखती रा नगर
में घी बेच आवतौ । सावळ मजा में घर रौ चेपौ-चापौ व्हैतौ
हौ । चौधरण ई सुथराई सूं धीणौ-घापौ अंवेरती और घर नै
सावळ केवटती ही ।

अकर भाग सूं अंडौ जोग सजियो के घर रौ पासो ई
पलटग्यौ । अक दिन सिझ्या रा पारियां में दूध ठारियोड़ी हौ ।
ठारियां नै खासो ताळ व्हैगी । सगळी पारियां माथे जाडी
थरकण आयोड़ी ही । बायरा रौ खासो भलौ रुळियो बाजण
लागौ हौ । कठे ई फूस-फांटा सूं पारियां नीं पथरीज जावै ,
औ मतौ करने चौधरण पारियां में जावण देवण सारू आई ।
पारियां नै जाळी रा कोठलिया में धरियां पछे वा निरांत सूं
दूजे हल्ले लागेला ।

पण जावण देवती वगत उणनै पारी री थरकण में अक
तिणकलौ रळतळियोड़ी निगै आयौ । वा तिणकला नै बारें काढ़नै
फेंकण रौ मतौ करियो के अणछक उणरौ मन डुळियो — थरकण
लाग्योड़ा तिणका नै चाटनै पछे वगावूं तो कांई हरजो है ।

आ बात मन में आवतां ई आधो मुड़ियोड़ी हाथ मतै ई उणरा मूंडा सांमी आयग्यो । तिणकलौ सावळ चाट परी नै वगायो , पण थरकण रो साव तौ मूडा रो मूंडा में इज रैग्यो । थरकण रो अंडो स्वाद व्हिया करै कांई , आज पैली तौ उणनै इण बात री ठा नीं पड़ी । चौधरण जीव री काठी ही । खुद तौ आज दिन तक दूध री पळी ई नीं चाखियो , घणी अर टाबरां नै आधो दूध अर आधो पांणी घालनै सलटाय देती । इत्तौ धोणौ व्हैतां थकां ई छाछ सूं आगै उणरी जोरावरी नीं ही । चौधरण सुराडी ही परा तिणकला रो स्वाद तौ उणरी काया पलट दी । पछे तौ वा भली सोची नीं कोई भूंडी , लपोलप सगळी पारियां री थरकण उतारनै खायगी ।

उण दिन सूं पछे तौ वा सगळी थरकण उतारनै खावण रो नेम ई कर लियो । कांसी री तासळी में सगळी पारियां सूं थरकण भेळी करनै वा छाने री छाने गटकाय जाती । थरकण उतारियां पछे उत्तौ घी कठे । वा घणी ई झाटां देवती परा पैला सूं आधो ई घी नीं आवतौ ।

चौधरी गायां वास्तै कचर अर कपासियां री बांटो ई चालू करियो , पण घी तौ उतरतौ ई गियो । दूध री गोवणियां में खामी कोनीं , बांटा में कोताई कोनीं , पछे घी कम क्यूं उतरै ।

बांटा रै कारण बांणिया री खातो तौ बघतौ गियो , पण चौधरी रै बटत रौ पाछौ ताखौ नीं सजियो जकौ नीं सजियो । वो तौ दिन दिन बांणिया रा खाता हेटे दबतौ ई

गियौ । अक दिन वौ घरवाळी नै कह्यौ—आ बात काई है ,
गायां रै चारा , बांटा अर दूध में कीं कमी कोनीं , पण घी दिन
दिन घटतौ जावै । कठै ई कोई कांमणगारी स्यारी माखण नै स्यारै
तौ नीं है । म्हैं तौ ले'णा में काठौ कळग्यौ हूं । थोड़ा दिनां में
खातौ नीं वळियौ तौ बोहरी अपारौ सगळौ वित्त आईवाळै मांड
लेवैला , अर पछे उणनै आईवाळा सूं ई रकम नीं पटती दीखी
तौ पछे वरड़ा सूं ई लारी नीं छूटैला । म्हैं तौ सोच सोच में
आधौ व्हैगौ , भली आदमण थोड़ी-घणी सोच तौ थूं ई राख्या
कर , थूं तौ दिनोदिन रांमजाणै कीकर माचै है ।

चौधरण मोळी पड़ती होळै सूं बोली — फगत सोच करियां
काई सांधौ लागै । म्हनै तौ सगळी कुचमाद किणी स्यारी री
लखावै ।

चौधरी आपरै बख पूगतां दो तीन झाड़ागर बुलाया , केई
दूणा-टोटका कराया पण कीं गरज सरी नीं , अमलदार अमल
रौ बंधांणी व्है ज्यू चौधरण तौ थरकण री बंधांणी व्हैगौ । थर-
कण वास्तै उणरी नाड़ां तूटती , आंतां कुरळावती । घणौ ई
गाढ़ राखण री विचार करती , पण मन काबू में नीं रह्यौ ।

सेवट चौधरी कह्यौ जकी ई बात व्है । बोहरा रौ खातौ
उणरौ सगळौ वित्त डकारग्यौ । पछे वरडौ करियां ई नीठ लारी
छूटौ । उण दिन पछे दोनूं घणी लुगाई खलकां रै वड़िया
जावण लागा । चौधरण नै तौ थरकण रा भटका आवता हा ।
जीभ रै थरकण रौ स्वाद अंडौ लागौ के उणनै तौ पछे रोटी-
पांणी कीं आछी लागतौ नीं , जाणै खात मूंडा में घालियौ । क्यूं
तौ उण रूळिया में वौ तिणकलौ पारी में पड़े , अर क्यूं उणनै

अँ दिन देखणा पड़ै । तिणकलौ तौ सगळा घर नँ बूडांणै मेल दियो । वा तौ थोड़ा दिनां में सूई खायोड़ी व्हे ज्यूं व्हेगी । सेवट काठी आंती आयनै वा आपरा धणी नँ कह्यौ—भूंडौ नीं मांनौ तौ अँक बात बतावूं । अपांरा साज-सरीखा घर नँ म्हैं इज हेमाळै मैल्यौ हूं । अँक नाकुछ तिणकलौ घर नँ बोयनै मेल दियो , घर रौ घरकूलियो कर न्हाकियो ।

सगळी बात मांडनै बतायां पछै वा दुसक्या भरती कह्यौ—
अबैं थें म्हारी बोटी बोटी छून न्हाकौ तौ ई म्हारौ अकरम नीं धुपैं । अबैं कदैई दूध रौ छांटौ ई मूंडा में घालूं तौ थारौ रगत पीवूं । थें कीकर ई करनै पाछौ वित्त मोलावौ , म्हैं सगळी बातां सार लेवूंला । वौ तिणकलौ तौ म्हारी मती ई भिस्ट करदौ । म्हारी आंख्यां अबैं उघड़ी है । व्हेणी व्हे सौ व्हियां ई सरैं । अँकर पाछौ म्हारौ तूमार तौ जोवौ । थारै पगां पड़ूं , म्हारौ इत्तौ कैणौ मांनौ । लोगां री वड़ी सू अबैं अपारौ फंद कटावौ ।

चौधरी खरौ हुंकारौ भरियौ जद उणरा जीव में नेहचौ व्हियौ । चौधरी ई आपरा मन में विचार करण लागी के माटौ तिणकलौ तौ जबरी करी ।



काजीजी आळी कुत्ती

इण दुनियां रो चाळी अजब व्हिया करे । जीवे जिते
तौ मिनख ने इणरी सोय नहीं व्हे अर मरियां पछे
सोय करण रो कोई मारग ई नीं व्हे । लोगां रे आव-आदर पूजा-
सनमान अर मोह-परीत में स्वारथ रो भावना कित्ती है इणरो
आसांनी सू कूतो नहीं कियो जा सकै ।

अेक काजीजी रा चौखळा में भाटा तिरता हा । लोग वांरी
हाजरी में अेक पग रे पांण ऊभा रेवता । वांरी निजर रे समचे
लोगां रा काम पटता हा । राजा-पातसा वांरी कदर करता , पछे
रेयत रो तौ कैणी ई कांई । सगळा चौखळा में वांरो रूतबो
छायोड़ी हो । वं ठाट-बाट में राजावां रो खोड़ खुड़ावता । लोगां
ने वांरी केई बातां अखरती पण वं दरसावता कोनीं , क्यूंके गांव
में काम तौ काजीजी सू ई पड़तो । वं मन करता जिणरो
आदर आकासां चढ़ाय देता अर मन करता जिणरो मान धूल में
मिळाय देता । करड़ावण अर आंट में वं राजा ने ई भलो कैव-
ड़ता , पण लोग डर रे कारण मन रो बात परगट नीं करता ।

वां काजीजी रे अेक पाळीकड़ कुत्ती ही । सिंध रो नांमी
टणकेल कुत्ती । काजीजी सू डरता घणकरा लोग उण कुत्ती
रो अणूतो कायदो राखता । उणरी साळ संभाळ करता ।
पण अेक दिन कुजोग अैड़ी ठयी के कुत्ती ने हिड़कियो ऊठचो
अर वा फोट खेलगी । चौखळा रा लोग बैठण ने आया ।
लोग अड़वड़िया तो वं अड़वड़िया के काजीजी रो हवेली आगे
जाण मेळी मचग्यो । काजीजी ने ई आपरे आदर रो इत्ती

भरोसो नीं हौ । ओ मेळौ देखनें वानें अणूंतो मोद अर अंजस
 ब्हियौ । वैं मन में सोचण लागा के वारी कुत्ती मरियां ओ
 हाल है तौ वारें खुद रें मरियां तौ सगळी दुनियां ईं उलट
 पडंला । गिगन रें तारां रो गिणती व्है सकें तौ वारें मरियां
 पछे बैठणियां रो गिणती व्है सकैला ।

पण काजीजी मरिया तौ बैठणियां रा नांव माथे कुत्तौ
 ई नीं आयौ । मरियां पछे वारां सूं कांई गरज ? बात सुणी
 जकी ई अणसुणी करदो ।



म्हैं गळौ वढ़ावै

सोमगरा भाटा री कारीगरी में सबसूं सिरै अर बेजोड़ । सगळा भारत में खुद ई बिरळा बसै , छिड़ा-बिछड़्या लाधै अर वारा हुनर री जोड़ रा तौ बिरळा ई कठै ! भाटा नै घड़े काँई मूँडै बोलावै ! केई बरसां पैली री बात है के अक सोमगरी आपरी जात में सगळां सूँ ऊँची खाँमची हौ । अँड़ी पूतळियां अर मूरतां घड़तौ के साचैली लखावती । लोग घणा ई खपता तौ ई सनागत नीं कर सकता के वा पूतळी है के कोई परतख जीवतौ उणियारी है ।

अेकर वौ हूवौहूव आपरै ई उणियारै री बीस मूरतां बणाई । आपरा रंग सूँ मिळता भाटा री मूरतां जिण दिन बणायनै संपूरण करी तद वौ खुद आपरी कारीगरी माथै अंज-सियौ । उणनै आपरा हुनर माथै अणूतौ मोद म्हियौ । मूर-तियां रै भेळौ भिळ जातौ तौ लोग किरणी भाव सनागत नीं कर सकता के वारै मांय कारीगर कुण है । वौ नित घणी ताळ ताँई मूरतां रै भेळौ ई जमियौ रँवतौ । अळगा अळगा देसां रा लोग आ कारीगरी जीवण नै आवता अर अणूता अचंभा सूँ पाछा जावता । अँडौ कारीगर तौ आज पैली सुणियौ नीं कोई सांभळियौ ।

सेवट जीवण रा दिन पूरा म्हियां जम रा दूत उणनै लेवण सारू आया । पण पूतळियां रै बीच उणनै पिछाणै तौ हाथ घालै ! वै तौ सगळा गताधूम में पड़ग्या । घणी माथौ लड़ायौ पण वै कीं सनागत नीं कर सकिया । हार माननै सगळा

जमराज कने पूगा । जायने सगळी बात बताई । अंकर तो जमराज ई सोच में पड़ग्या । वगत आयां अंक पलक री ई जेज कीकर व्हे सकै ! थोड़ी ताळ विचार करचां वाने अंक उपाव सूझियो । कह्यो—मिनख री तो जिनांत ई कांई, खुद भगवान ई आपरी कीरत री कोडायो व्हे । कीरत री लाळसा मिनख रा रगत में घुळियोड़ी व्हे । थें तुरत पाछा उठे जावो । उरणे सुणावतां कंजो—दुनियां थपियां पछे ई आज दिन तक अंडो कारीगर नीं देख्यो । कांई पूतळियां बणाई है ! खुद बिरमाजी ने ई ठा नीं पड़े के अं पूतळियां भाटा री है के सांप्रत जीवतो है । आने बणावणिया कारीगर रा दरसण करलां तो जमारो सुधरे । थारी आ बात सुणियां वो तुरत कैवला के अं मूरतां म्हें घड़ी । दीखणा में कित्ती ई सजीवण लागे , पण मूरतां तो बोलणा सूं री । इण बात में आख्यां घोखी खा सकै , पण कान घोखी नीं खावला । अबे जावो थें फुरती करो ।

जमराज रं कंतां ई दूत तो दूजे ई पलक उण सोमगरा रं उठे पूगग्या । पूतळियां रं पाखती ऊभने कैवण लागा — घड़णवाळी कांई पूतळियां घड़ी है । खुद बिरमाजी सनागत नीं कर सकै के अं साचेली है के भाटा री । कारीगर रा दरसण व्हे जावे तो जमारो सुफळ मानां । के तो भगवान जाणै के वो कारीगर ई जाणै के आं पूतळियां ने कुरण घड़ी ।

वारी बात सुणियां जमदूतां ने अंक पूतळी मुळकती निगे आई । मुळकणा रं समचे ई वा बोली—अं सगळी पूतळियां म्हें घड़ी । म्हें ई वो कारीगर हूं ।

તદ જમદૂત હંસને કહ્યો—ઓ 'મ્હે' હં તો મિનસ ને
મારે—આપ આં મૂરતિયાં ને ઘડી તો ઘણો ચોલો કામ કરિયો ।
પણ અવે આપરા દિન ચૂટગ્યા, મ્હારે સાથે અબે જમલોક પધારો ।
આપરો મ્હેંપણો પરગટ વિહ્યાં હં મ્હેં થાનેં ઓઢલ સકિયા ।
ચાલો, મ્હે સગઢા થાનેં લેવણ સારુ આયા હાં



भांबी री वेगार

वेठ-वेगार, लाग-बाग, हासल, खरडा अर झूपी
इत्याद लेवणा में ठाकर-ठेठरां री जुलम ती ही
जकी ही इज, पण इण जुलम नै बरदास्त करण वाळी रया
री निबळापणी ई कम नीं ही । जुलम करणी अर जुलम झेलणी
दोनुं ई ढाळमढाळ है ।

अेक गांव रा किणी मोट्यार भांबी नै नित री अं वेठ-
वेगारां खटी कोनीं । उणरी जीव वेगार काढतां घणी घणी
कळपती । ठाकर रै सांमी मूंडैमूंड ना देवणी अर बस पूगतां
उणसूं लड़णी अर पाछी ओड़ी देवणी उणरे बख री बात नीं
ही ।

सेवट नित री वेगारां सूं आंती आयनै वो बेरी वावड़ी
करण री विचारी । अँडा जीवणा बिचें ती मरणी सावळ
है । वो ती घरवाळां सूं सला-सूत करियां बिना ई अेक
बेरा में धेंग देदी । पांणी में घमीड़ी सुणतां ई अेक मींडकी
फुदकनै खोखाल सूं मूंडी काढ़ियो । रोब जमावती वो पूछ्यो—
कुण है रे !

कीं ती पांणी माथें बीस हाथ ऊपर सूं कूदणा रै कारण
भांबी हाबगाब अर डाफाचूक व्हेगी अर कीं मींडका री सवाल
सुणतां ई उणरा ती हीस खत्ता व्हेगा । थर थर धूजती
बोल्यो— बापजी ओ ती म्है रावळी भांबी हूं ।

भांबी री नांव सुणतां ई मींडकी दूणा गुमेज में धाकल
करी— भांबी होयनै म्हनै काची नींद सूं उठाण दियो, कांडै

बाजरी बाड़ी लागै दोसै । खर कीं बात नीं, म्है कियो
 हाजरिया रो बाट जोवतौ ई हो । ठीक मौका माथै आयो ।
 पांणी माथै अंवाळ घणा आयग्या, झट फुरती करने साफ
 करदे । पांणी रै तळै कादौ ई अणमाप जमग्यो, सावळ
 नितारनै कमोद व्हे जेड़ी पांणी करदे । साव नितरियोड़ी
 निरमळ पांणी पियां बिना म्हनै रंगत नीं व्हे । अबे टसकणौ
 छोड अर फुरती सूं म्है कहा जका काम पूरा कर ।

भांबी ई मन में सोच्यो के वेगार रो मार सूं कायौ
 होयनै बेरा में घेंग दी, पण अठे ई वेगार सूं लारो नीं छूटो ।
 आप आपरा करम है ।



बाजरी लेसी के आटौ

अक जाट अंदी अर माठी अंत इज घणौ हो ।

उणरी लुगाई उणनै घणौ घोदती तो बी कीं न कीं आळिया-टोळिया करतो ई रैवती । अक दिन वा काठी कायी होयनै उणनै समझावण लागी— रात दिन घोदावूं, पण थारी तो आख्यां ईं नीं उघड़ै । थोड़ी घणौ तो विचार करो के आ कोकळ कीकर पळैला । के तो थारा हाथां सूं सगळा टाबर-टूबरां नै साठीका बेरा में पटक दो, जिणसूं पाछो बुड़की ई नीं ऊठे । अर म्हनै टूंपी देयनै मार न्हाको, पछे नेखम मछरां करज्यो । अँड़ी ई पौच रा घणौ हा तो चंवरी क्यूं चढ़्या । म्है कांई कसूर करियो जको म्हानै इण विध तळी । थारै अंदीपणा रै कारण म्हां सगळां नै क्यूं नरक-वाड़ी भुगतावी । क्यूं भूखां मारो । जाणणवाळा तो थानै अक आंगळ ई जमीं जोतण सारू सूपै कोनीं । काले ई हळौतिया जोगी बिरखा व्हांगी । पण थारी आळस भागं तो ! जे अबै ई थें हल्ले नीं लागा तो म्है काले ई टाबरां नै लेयने पीयर जाबूला परो, पछे अठे थारी मरजी व्हे तो दस मांचां माथे पोढ़जो अर मछरां करज्यो । म्है तो अबै थारा सूं काठी घापगी ।

चोधरी होळें सूं पूछ्यो— वड़ियो तो म्है किणी रै मरियां ईं नीं जावूं । जमीं म्हारै कनै अक आंगळ ई कोनीं । पछे हळ जोतूं तो कांई म्हारा कालजा माथे जोतूं ।

चोधरण कह्यो—दो बरस सूं जोड़ियां ऊभी चरै है, जिण-

री ई थांनं परवा कोनीं । ओ धीणी म्हें सावळ नीं केवटती तो थांरी सगळी वट निकळ जातो । काले ई सगळा डांगरां नें लग्गड़ देवूला , अबे तो म्हें गळा तक धापगी हूं । बंठा सूं वेगार भली , जायनें मसांणा री भोमका में ई हळ जोती परा जोतो । थुड़णी कदैई अकारथ नीं जावें ।

चौधरी ई मन में जाणली के अंदीपणा री काठी मथारी आयग्यो है , अबे हाथ-पग नीं हिलाया तो सूखनें खेलरा व्हे जावांला ।

तड़के ऊठियां पंली चौधरण कचोळी भरनें दही अर चार सदळा सदळा खाखरा लायनें घोदायो । बोली—ली अबे कलेवो करली अर ठाडे ठाडे काम निवेड़ियावो ।

चौधरी आळस मरोड़नें ऊभो व्हियो । हाथ मूंडा धोयां पछे आज राजी राजी कलेवो करियो । पछे हळ जोतनें भखा-वटे भलावटे ई वहीर व्हेगौ ।

सीधो मसांण भोमका में पूगो । उण भोमका में अण-गिण भूतां रा डेरा हा । चारेक हळायां भरो जिण में ई किणी री आंतड़ियां , किणी री पांसळियां , किणी रा माथा रगदोळीजण लागा । भूत थोड़ी ताळ तो सेंठा रहचा—जाणे अबे ढबं , अबे ढबं । पण चौधरी तो हळ बगडायां ई गियो । भूतां में कूका-रोळी मचियो तो वो मचियो । अक बडेरी कह्यो—जायनें चौधरी नें पालूं , नींतर ओ तो अठा सूं अपांरी मुळगो पापी ई काट न्हाकेला ।

दूजोड़ा भूत डाडता कह्यो—थांरे ज्यूं दाय पड़े ज्यूं करो । म्है तो थांरे लारे हां ।

तो वो अगवांणी बणने चौधरी रै पाखती आयो । पूछ्यो—
चौधरी आज ओ काई रहियारो मचायो है । थनै आ काई
ऊंधी सूझी ।

चौधरी कह्यो—ऊमर में पैली वार काम संभायो अर
थनै वो रहियारो ई निगै आयो । आज सदिये सदिये सगळी
भोमका दोय वार खड़ न्हाकूला । पण थारै काई अड़चल व्हो
जकी म्हने बता ।

भूत मन में सोच्यो के दोय वार में तो ओ सगळी बस्ती
रो खूंटो ई उखेल देवैला । अबै इण मूढ़ नै समझावां तो
समझावां ई कीकर । ओ आडू डरायां सू ई मानैला नीं,
सांमी जिद चढ़्यो तो पछे सगळी बात ई परवार जावैला ।
वो चौधरी नै नरमाई सू पूछ्यो—पण थारी अठे काई हेमांणी
गडियोड़ी है । सगळा गांव रो कांकड़ छोडनै थूं अठे ऊमरा
काढ़ण नै क्यूं आयो, अठे थनै काई इदकाई दीसी । थूं चावै
जकी थने यू ई पूरो करदां, पछे तो हळ जोततो ढबैला ?

चौधरी अंदी व्हेतां थकां ई कुबदी ही । जाण्यो इत्ता
ऊमरां सू ई इत्ती बात सधे तो पछे सगळा मसांण खड़ियां
तो जाणं काई व्हेला । पूछ्यो—थूं कुण है ? कीकर म्हारी
चावना पूरेला, पैला म्हने इणरो सावळ म्यानी दे, पछे म्हें
हळायां लावतो ढबूला ।

भूत डरावण रा मिस सू कह्यो—म्हें भूत हूं । इण
मसांण भोमका में केई बरसां सू म्हांरा डेरा है । थूं हळ
जोत नै म्हांनै खिळविकळ कर दिया । बता थारै कित्ता मण
घान निपजंला ।

चौधरी जाण्यो के डरियां तो बातड़ी परवार जावैला ।
पगां सेंठो रह्यो तो भूतां कना सूं ई कीं न कीं धराय लूंला ।
कह्यो — अठे हळकें हाथ म्हारें सो कळसी बाजरी व्हेला ।

भूत कह्यो — बिना जोत्यां थारें घरें बेंठां सो कळसी
बाजरी पुगाय देवूं तो थूं अठे जमीं फाड़तो ढबे ?

चौधरी कह्यो — म्हारा सूं सावळ वाचा करै तो क्यूं नीं
ढबूं । पूरो कील कर के म्हनै कद तक सो कळसी बाजरी
पुगावैला ।

भूत कह्यो — आगलें पखवाड़ें थारें घरें सो कळसी बाजरी
पूगती कर देवूंला , थूं अबें हळबांणी सूं म्हारी आंतड़ियां
वाढ़णी तो माठ कर ।

चौधरी कह्यो — अबारूं तो थारें केंणा सूं ढबूं हूं पण
कील पूरो नीं व्हियो तो पछें बीस हळबांणियां रो हळ जोतूंला ,
थें थारो सावळ विचार लीजो ।

भूत तो काठो वचना बंधग्यो । माठी बळद बुचकारा रै
हेवा । आज तो नांमी भरै पड़ी । वो तो आयो वां इज
पगां पाछो घरै गियो परी ।

चौधरण उणनै आवतां देख्यो तो बड़का-तड़का करण
लागी , सांमी जायनै उणारी माजनो पाड़ती बोली — डाई रै
हाथ लगायनै पाछा बळग्या । मणाबंद परसेवो व्हे जद दांणा
हाथ लागे । अबें थें थारें मतें अर म्है म्हारें मतें । थानै
समझावण में कीं सार नीं ।

चौधरी कह्यो — भली आदमण पूरी बात सुणियां पेली
क्यूं शुक उछाळै । म्हारी करसण न्यारी भांत री है । आगलें

पखवाड़ें सौ कळसी बाजरी सूं आपै ई भखारियां भरीज जावैला ।
जित्तै थोड़ी घणौ नेहचौ तो राख ।

पछै वो मांडनै सगळी बात बताई । चौधरण नै आधौ
विस्वास व्हियौ अर आधौ नीं व्हियौ । माडांणी अक पखवाड़ा
ताईं चुप रेणौ ई पड़ैला ।

अर उठीनै भूतां रें डेरै खळवळ माची तो वा माची ।
सौ कळसी बाजरी सारू वैं मार कळझळ करण लागा । जोग
री बात के उण पखवाड़ा रें बिचाळै चौखळा रा सगळा भूतां
री उण भोमका में लांठी न्यात व्ही । दूजा भूत बांरी आ
कळझळ देखी तो पूछ्यो—बात काई है, म्हांनै बतावौ तो
खरी, थां सगळां रें कैणी हींगापाई लागो है ।

निरांत सूं सगळी बात सुणियां पछै न्यात री अक
मुखियो कड़कनै बोल्यो—आछा भूत व्हिया । म्हांरो ई नांव
लजायो । अक नाकुछ मिनख सूं हार मानग्या । उठे ई घांटो
मरोड़ देवता तो उण सूं टें ई नीं व्हेती । म्हेँ जावूं अर थांरो
ओ फंद कटायनै आवूं । थोड़ी घणौ तो आपरो बळ पिछांणो ।
आज रात रा ई ओ रांझो सलटाय देवूंला ।

अठीनै भूत आ सला विचारता हा अर उठीनै चौधरी
अक नवा ई कळाप में लाग्योड़ी हो । चार पांच दिनां सूं
घर में अक म्याळमिन्ना अंडी हिलियो के वो दही री जावणियां
तो देख्योड़ी ई नीं छोडती । जाब्तो राखता थकां ई म्हाटो
मिनको तो नित जावणियां चाट जावैं । चौधरण उणरी टोय
में साळ रें बारें ऊभी हो अर चौधरी साळ रें मांय बैठी
म्याळमिन्ना रें आवण री बाट उडोकती हो । वो हाथ में
का. ११

जाड़ी राहड़ी री सरकपासी लियां तक्कोड़ी बैठी हो । आधीक ढलियां भूतां री मुखियो ताक रै मांय कर मूंडी काढ़ियो । चौधरी तो लप सरकपासी गळा में घातनें जोर सूं झटको दियो । टूपी लागतां ईं भूत री तो आंख्यां बारें आवण लागी । जोर सूं बोबाड़ी करियो—ओ तो म्हैं हूं भूत, थारें कांम ईं आयी हूं ।

चौधरी फंदी कीं ढीलौ करियो । कह्यो—अठे कांई खावण नै बलियो ।

फंदी कीं ढीलौ व्हियो तो भूत रा जीव में कीं जीव आयी । डाफाचूक होयनें वो गळगळ कैवण लागी—म्हैं तो थनें पूछण सारू आयी के सौ कळसी बाजरी लेसी के आटी ।

चौधरी मुळकतो थकी बोल्यो—यूं सावळ बोलें नीं । आज म्हारा हाथ सूं थारी मोत ही । बारें उभनें हेलो नीं मारीजें, यूं छानें ताक मांयकर मूंडी काढ़ियो तो बिना मोत मारियो जावैला ।

पछे वो सोच विचार करनें कह्यो—बाजरी री आटी तो चार दिन वासी रै जावै तो बाड़ी पड़ जावै । थूं यूं कर के सगळी बाजरी लायनें म्हारी भखारियां में भरदे ! पछे म्हैं कैवूं जित्तो नित पीस दिया कर । पक्की हुंकारो भरे तो फंदी ढीलौ करूं ।

भूत धूजतो थकी कैवण लागी—म्हैं बात करूं जकी पक्की ईं करूं, थें किणी बात री सोच मत करी ।

भूत तो सरकपासी खोलतां ईं ततैया मनाया । सगळी न्यात उणरें आवण री बाट न्हाळती ही । आतां ईं पूछ्यो—

बाजरी सूं पिंड छुडाय लियो काई ।

तद वो नीची धूण करने होळें सूं बोल्यो—महैं तो अंक वत्ती गळा में ले आयो । बाजरी तो देवणी है इज, पण वो कैवला जित्ती आटी रोजीना पीसने देवणी पड़ला ।

बात सुणतां ई सगळी न्यात रो मूंडो उतरग्यो । तद अंक टणकेल मुखियो कैवण लागी—भला नाजोगा जलमिया रे, थें तो भूतां रो जात ई लजाय दो । यूं निबळा मिनखां रे भरोसं व्हागा तो अपारो जीवणो कीकर व्हाला । महैं खुदो-खुद जायनें अबारुं ओ रांझो सलटाय ने आवूं । चौधरी ने माछर रो गळाई मसळ देवूला ।

आ बात केयने वो भूत पून रे उनमान उठा सूं उडियो । अर अठोने चौधरी म्याळमिन्ना ने पकड़ण सारु उणी भांत सावचेत होयनें ऊभो हो । साळ रे मांय वड़ण सारु उण ताक रे सिवाय कोई दूजो चारो नीं हो । टणकेल मुखियो होळें सूं मूंडी घालियो के घांटी तो झिलती इज निगे आई । जोर रो हचोड़ लागतां ई सरकपासी तणीजी अर भूत रा डोळा बारें आवता इज निगे आया । जोर सूं अरड़ायो—छोड़, छोड़ थारो मींडकी गाय हूं । महैं तो भूतां रे डेरा सूं थारें काम ई आयो हूं ।

चौधरी कीं फंदो ढीलो करियो । भूत रा डोल में तो धूजणी वड़गो । धूजती धूजती बोल्यो—महैं तो आ पूछणनें आयो के सोगरा पोयदां तो कीकर रेवं, इण खातर आपरी दवायती लेवण सारु आयो ।

चौधरी कह्यो—इण में दवायती रो काई जरूरत । सोगरा

पोवणा तो ठीक इज है । अबे फुरती सू बचन पाळी जकी बात करी , घणा दपूचा मत लेवो । नींतर बीस हळबाणियां वाळी हळ लेयने आवूं ।

भूत तो फंदी छूटतां ई उठासूं सोकड़ मनाई । वो तो मसांण भोमका में जातां ई तड़ाच खायने हेटे पड़ग्यो । राहड़ी रो हचीड़ भूंडो घणो लागी ही । थोड़ी ताळ पछे वो बड़-बड़ायो— म्हैं तो सोगरा पोवण री फेर वत्ती गळा में लेयने आयो हूं । ओ चौधरी तो कावळ आदमी है ।

भूतां री सांन रा तो टका व्हेगा । दो वळा माजनी गमायो । अबकी न्यात रो सबसूं ऊंचो मुखियो तड़कने बोल्यो— अबकी म्हैं जावूं । देखूं बापड़ा रो करार ! अं लागां अपाने पोसावे कोनीं । इणी भांत दबता रहचा तो काले माखी ई अपां सू नीं डरैला ।

मसांण भोमका वाळा भूत कह्यो—अबे आप क्यूं तक-लीफ करी । म्हैं म्हारी खांचालां न ओढ़ाला । थे फेर की इदकी करने आवौला ।

मुखियो रीस में भळभट्ट होयने कैवण लागी— थांरी म्हारी कांई न्यारी बात है । ओ सगळी न्यात रो सवाल है । इण में सगळी न्यात रो पोचो लागे । म्हैं अबारूं हाथोहाथ फंसलो निवेड़ने आवूं । आ कैयने वो तो उठा सू गोळो रे वेग उडियो ।

चोधरी नै उण दिन कीकर ई करने म्याळमिन्नो पकड़णो हो । सगळी रात जागणी कबूल परा आज तो इण मिनका री भारणी उतारणो है । वो ताक रे पसवाड़े ऊभो हो ।

रात दो तीन घड़ी बाकी ही के उणनै ताक रं मांय कीं वड़ती निगै आयो । वो तो अजेज फुरती सूं सरकपासो गळा में घालनै दोनूं हाथां सूं खांचण लागो । सिरै मुखियो जाणियो के आज तो मरणा में घाटो नीं । बरजतां बरजतां म्हैं बयूं ओ डाळी गळा में लियो । जोर सूं बोबाड़ी करनै बोल्यो—मरूं मरूं, फंदो कीं खोळी कर । म्हैं तो थारा फायदा सारू ई आयो हूं ।

मांय खांचनै चौधरी फंदो कीं खोळी करियो । बोल्यो—घड़ी घड़ी ओ कांई फायदो है । म्हनं तो काठो कायो कर दियो । बोल बोल, जल्दी कर । थारा बाप नै तो हाल पकड़णी बाकी इज है ।

भूतां री सिरै अगवांणी हाथ जोड़नै गळगळा कंठ सूं कैवण लागो—म्हारा बाप री तो आप नांव ई मत लेजो । म्हैं थारै अणूतो फायदो करूंला । नित सोगरां री गळगच चूरमो अर वो ई सालौसाल वास्तै—आ बात कैडोक रेंवैला । आपरा हुकम री जेज है, आयै साल सो कळसी बाजरी री आटो अर नित सोगरां री झरझरती चूरमो ।

चौधरी बीच में ई बोल्यो—भूतां में अकल री तो लवलेस ई नीं व्हे । इण में पूछण री कांई बात । थें जांणता के म्हैं इण सारू ना देवूंला ।

अबै बातां बणावणी तो छोडो नींतर अंडा झटका मारूंला के याद राखीला ।

आ कैयनं वो जोर सूं हचीड़ दियो । सिरै मुखिया नै तो डाचको आयग्यो । उणरै पगां पड़ती डाडियो—बगसो बगसो,

अबै कदैई पूछण नै नीं आवांला । आपरै हुकम री तामोल काले ई व्हे जावैला ।

मसांण भोमका में सगळा भूत कोडाया होयनै सिरै अगवांणी रै आवण री बाट जोवता हा । कित्ता वेगा आवै अर कित्ती वेगी खुस खबर सुणावै । वे अवस चौधरी री पापौ काटनै आवैला । के इत्ता में सिंग्याहीण व्हियोड़ी अगवांणी मूंडी ढेरियोड़ी उठै आयी । वो तो कीं बोल्यो नीं कोई चाल्यो । माथा रै हाथ देयनै जरड़ देती री हेटे बंठचो । उणरो विलखो अर उतरियोड़ी मूंडी देखनै सगळा समझग्या के कीं नवी गळा में लेयनै आया दीसै ।

किणी री पूछण री ई हीमत नीं व्ही । तद थोड़ी ताळ में अेक ऊंडो निस्कारो न्हाकतां वो बोल्यो—ओ चौधरी तो कावळ है कोई कावळ ! रोजीना री गळगच चूरमौ अर आयै साल सो कळसी बाजरी री हुंकारो भरियो जद जायनै वो म्हारो लारो छोडियो । आज तो करमां री बचग्यो नींतर मौत ही । अबै तो भायां नवो कोल करियो जको सोरो दोरो पार घालणी ई पड़सी ।



सपट सधी रे आंधळा

अक बांणियो बाळूंडा रे टाणै बहू नै तेड़वा सारू
आपरै सासरै गियो । सासरा वाळा घणी ई सरबरा
करी अर घणा ई उच्छब मनाया । पछै घणा कोड सूं जंवाई
नै सीख दीवी । दोहिता रे जरी री आडण टोपियां, गळा
में सोना री हांयली अर पगां में सोना रा जांझरिया घड़ाया ।
बेटी नै ई मोकळी सोना-गैणी दियो अर खीनखाब रा नांमी बेस
कराया । जंवाई नै सीख में पांच मोहरां दी ।

पण होणी रा हाथ लांबा अर अदीठ ब्हिया करै । आदमी
काई चीतै अर काई बीतै । तांगी जोतनै गांव रे गोरवै ढळिया
के धाड़ायती वारै लारै बहैगा । अंधारी रातां ही । धाड़ायती
दसेक खेतड़ा आंतरै खोसण री जुगत विचारता ऊंटां माथे चालता
रह्या अर बांणियो सुख-सांयत सूं आपरै घरै पूगण रा मंसूबा
बांधती रह्यो ।

आघेटा री घाटी ढळंतां ई धाड़ायती ऊंटां रे अंड लगाई ।
तांगा रे आडा फिरने सागड़ी माथे धाकल करी । बळद चिम-
कनै ऊभा ठमग्या । सगळी माल राजीखुसी सूपण री कह्यो
जद सागड़ी अर बांणियो दोनूं आडा-अंवळा बोल्या । वै कोई
अधबेरड़ा हा । बिणियांणी घणी कूकी पण वारो हीयो नीं
पसोजियो । सागड़ी अर बांणिया नै मारनै वै तीब री तीब
खोसनै लेयग्या । उण अंधारी रात में मां-बेटा नै आपरै ताई
छोडनै वै तौ लांबा ई गिया । उण सून्याड़ निंदरोही में बापड़ी
अभ्यागत बिणियांणी भूं भूं रोवणी मांडियो । भगवान सुणण

जोगी व्हेतो तो आ अणचींतो पटकी पडती ई क्यूं ।

बिण्यांणी आपरा करमां नै रोवती ही के भाग री
 अेक आंधो भटकतो भटकतो उठै आय पूगो । रोवणा री
 सोय करतो करतो वो गाडी रै पाखतो आयनं पूछ्यो — इए
 निंदरोही में ओ कुण रोवं । कांई बात व्ही ।

बिण्यांणी डुसक्या भरती उणनै आपरी विपदा सुणाई ।
 तठा उपरांत सूरदास उणनै समझावतां कह्यो — अबे वाला बोली
 रै । थूं ईं सोच , थारै रोवणा सूं कांई कारी लागेला । सांमी
 ओ बाळ पिचियो चिमकेला । अबे बणी सो भाग री ।
 मरिया लारै मरीजै कोनीं । मानै , तो म्हारी अेक सला है ।
 इकलापी आंधो आदमी हूं । संपत म्हारै कने अपारै जोगी है ।
 रोटो करण रा फोडा पडै । थूं अबे कठे जावला । घणी मरियां
 सासरा में कुण पूछेला ? अबे पीवरियां नै ई क्यूं कळपावै ।
 म्हारै साथे चाल । लारली बातां नै झुरियां कीं सांधो लागे
 नीं । म्हारो ई घर मंड जासी अर थारो विखो ई टळ जासो ।
 व्हेगी जको तो व्हेगी ।

बिण्यांणी तो कीं सोच विचार करण री हालत में ई
 नीं ही । सूरदास कह्यो ज्यूं मानगी ।

सूरदास री ओ अणचींत्यो घर मंडणो देखनै गांव रा
 लोग उणसूं खिखरां करता कैवता —

सपट सधी रै निपट आंधळा

आछी आई आडो

बेटा सूधी लाडी आई

बळदां सूधी गाडी

अब काग भया परधान

अक हौ सिंघ । वो वन रौ राजा हौ । उणरें अक हंस परधान हौ—बड़ौ विद्वान, बड़ौ भलौ अर अदल न्याई । सिंघ नै हमेसा बढ़िया सला देवतौ । उणनै कदेई अन्याव अर हिंसा को करण देतौ नीं । जरुरत परवांणें सिकार करतौ पण दूजा हिंसक जिनावरां सूं रिछ्या करतौ । वन रौ सगळी रेंयत उण सूं घणी राजी हौ । सिंघ हंस सूं ग्यान अर सास्तरां रौ बातां सुणतौ । हंस परधान बणियां पछें उण वन में पूरी सुख सांयत हौ ।

अक दिन वो हंस पाखती रा सरवर माथें पांणी पीवण नै गियौ । नाडी रौ पाळ माथें अक बिरामण उणनै बैठौ मिळियो—माथा माथें हाथ दियोड़ौ, दुमनौ अर दिलगीर । हंस रें हिड़दें दया अंत इज घणी हौ । बांमण रें गोड़े जायनै पूछ्यौ—पिंडतजी कांई सोच में पड़्या । इत्ता दुमना क्यूं । म्हनै थारौ दरद बतावौ, कदास कीं उपाव कर सकूं ।

बिरामण अक ऊंडी निसास न्हाकतौ बोल्यौ—म्हारै करमां रौ उपाव तौ वेमाता कनै ई कोनीं, पछें थारी कांई जिनात । हंस कह्यौ—कैनै तौ दरसावौ ।

तद बांमण कह्यौ—आज राखड़ी पूनूं है । घर में आखा लेवण जोगा ई दांणा कोनीं । छोटा मोटा दस मिनखां रौ भारीगरी है । हाल तक कोई जजमान नीं मिळियो । नवें दिन घर में लुगाई टाबर सगळा निरणा रेंवैला । अक टंक रा दांणा ई हाथ लाग जाता तौ ई म्हैं छत्तीस भोग करनै मानतौ । पण

फा. १२

खाली हाथ घरे कीकर जावूं । पग ऊठे कोनीं । कांई करूं
अर कांई नीं करूं ! इणी सोच में दुमनो बैठी हूं ।

हंस कह्यौ—इत्ती सी बात सारू कांई तो वेमाता नै
फोड़ा घालणा अर कांई भगवानं सूं अरदास करणी । आ
विपदा तो म्हैं ईं मेट देस्यूं । चाली म्हारै साथै । यूं हीमत
हारो भलां । कीं तो गाढ़ राखो ।

बांमण तो केतां ईं उणरे साथै दुरग्यो । मारग में धीजो
बंधावण सारू हंस उणनै कह्यौ—म्हैं म्हारै घरमी राजा सिंघ
रै राखड़ो बंधावूला । थें उणनै निरभे जजमानं थापजो ।
वो थाने धन-माल देवैला । बांमण मनांग्यानां विचार करियो—
इण जीवणा बिचै तो मरणी सावळ । सिंघ ईं कीं देवै, मरण
सूं वतो तो जोखी कोनीं । चालण में कोई हरजो कोनीं ।
वो तो बोल्यो नीं कोई चाल्यो । चुपचाप हंस रै साथै साथै
चालतो रह्यो ।

आपरा परधानं रै सागै बांमण नै आवतो देख्यो तो
सिंघ हाथ जोड़ नै कह्यौ—पिंडतजी पायै लागूं । बांमण उणनै
आसीरवचन कहा । पछे हंस सिंघ नै बिरांमण रै विखा री
सगळी बात बताई । बांमण रै हाथां राखड़ो बंधावण सारू
सिंघ नै कह्यौ । सिंघ तो हंस री किणी बात नै टाळतो
कोनीं हो । केतां ईं आपरो पंजो बांमण रै धकै कर दियो ।
बांमण नांमी फूदाळी राखड़ो सिंघ रा पंजा रै बांध दी ।
सिंघ उणनै आपरै खजांना सूं मरजो आवै जितो धन लेवण
री मया देदी । पण बांमण संतोखी हो । बारै मिनां री
बाजरी जोगो सरजांम कर लीनो । वतो लालच नीं करियो ।

इण भांत आयै साल बांमण राखड़ी पूनू रै दिन सिंघ कनै आयनै रखड़ी बांध देवै अर बारै मिनां जोगी बाजरी री चपट करलै । वत्ती बूक नीं मांडै । यूं करतां करतां पांच बरस तक बांमण आपरौ गुजारौ कर लियौ । आगली साल फेर वौ उणी दिन सिंघ रै राखड़ी बांधण सारू वहीर हुवौ ।

वन में जातां ईं अेक कागली कांव कांव करनै सिंघ री थै कानी उडियौ । सिंघ हांकरतां हौ हौ करतौ मलापतौ आयौ । आतां ईं बांमण माथे झपटियौ । पण चौनिज-रियां व्हेतां ईं सिंघ उणनै ओळख लियौ । बांमण रै माथे उबरांगियोड़ी हत्थळ पाछी खींचली ।

अबै हंस री ठोड कागली परधानं हौ । सिंघ हंस नै देस निकाळी दे दियो—निपट बेकसूर व्हेतां थकाईं । पण राजा री खीझ आगै कांई जोर । अबै सिंघ कागला रै हलायोड़ौ हालै । जंगळ में हाय-त्राय मचगी । सगळा जिनावर उठासूं न्हाट छूटा । सिंघ अबै गाय गिणै नीं, बाळक गिणै नीं, मिनख गिणै नीं, बांमण गिणै नीं । मत्तै पड़ै जका नै ईं ढाय लेवै ।

सिंघ कहाँ—पिंडतजी थें म्हारै राखड़ी बांधी हौ, इण खातर थाने बगसूं । आज तौ खजांना सूं ले जाय सकौ जितौ धन-माल लेय जावौ । पण भळै कदेई आया तौ हकनाक मारिया जावोला । वा तौ सगळी हंस री सीख सला हौ । हंस री बातां तौ हंस रै सागे ईं ढळगी ।

हंसा उड सरवर गया, अब काग भया परधानं
विप्र घर पधारौ आपरै, सिंघ किएरा जजमान

स्याळ रौ मुकातौ

अेक हौ स्याळ अर अेक ही लूँकी । स्याळ कुबदी
अर बोछरड़ी घणौ हौ । मन करतौ जका खेत में
चरण सारू जावतौ परौ । खावतौ कम अर बिगाड़ करतौ
घणौ । वा लूँकी दो तीन वेळा स्याळ रौ संडौ करियौ । खेतां
रं घणियां री बखड़ी में आयगी, जाणं जित्ती उणनं जरकाई ।
वा तो पछे स्याळका रौ सांडौ फिटौ करियौ । पण स्याळ जौ
लूँकी नै ठोरो दिरांणी चावतौ हौ । अेकर वो स्याळ हीमत
करनै फेर लूँकी कनै गियौ । बोल्यौ—लूँकी बाई चाली खड़
खावणनै चालां, अेकला रौ म्हारौ तो मन ई को लागै नीं ।

लूँकी कह्यौ—भाया, अबे मार खावण री म्हारौ सरधा
कोनीं । मर जावूं तो ओ खड़ खावणो काई भाव पड़ै ।

स्याळ नेठाव सूँ लूँकी नै समझावतौ केवण लागौ—म्हें
तो खुद ई लुकाछिपी सूँ काठौ आंती आयगौ । खड़ खावां
पण जीव तो सोरका में रँवं । कायो व्हेनै अेक खेत रौ
मुकातौ इज कराय लियौ । रिपिया तो घणा भरणा पड़िया
पण बात सगळी फायदा री व्हेगी । कोई कैवण वाली कोनीं ।

लूँकी स्याळ री बातां में आयगी । दोनूं जणा रात रा
खेत में निसंक वड़िया । चार पांच जंगी कुत्ता खेत री रूखाळी
में चौकस ऊभा हा । लूँकी अर स्याळ नै खेत में वड़तां देखनै
वारै लारै ताचकिया । आगै आगै लूँकी अर स्याळ, तो लारै
लारै कुत्ता । लूँकी तो भली सोची नीं कोई भूँडी । अेक
सांकड़ी दरड़ी देखनै, सोरा रँजौ—मांय वड़ती इज निगै आई ।

वा ओछा डील री कंवळी अर पतळी ही , लप देणी मांय
वड़गी , कठई अड़ी कोनीं । स्याळकौ ई दरड़ा में माथौ खसौ-
लियौ परो । पण डील में जाडौ व्हेणा सूं आवेटे ई पजगी ।
नीं पाछौ निकळीजै अर नीं मांय जाइजै —करे पण कांई करे ।
कुत्ता मत्तै मत्तै उणरी पूंछ खांचण ठूका । तद स्याळ बोल्यौ :

‘ सुण अे म्हारी लूंकी बाई ’

‘ कांई कौ म्हारा स्याळजी नणदोई ’

‘ म्हारी पूंछ खांचै कोई ’

‘ के मुकाता वाळा होई ’



भावै ई अंगूर खाटा

अक ही लूकी । वा चटोकड़ी घणी ही । उणरौ मन
नित दई खावूं मई खावूं करतौ । अकर वा
अंगूरां री बेल माथै गुच्छा ई गुच्छा लूमता देख्या । देखतां
ई उणरौ जीव डुळियौ । वा घणी ई आफळी , घणा ई
कळाप करिया अर घणी ई फदाकां मारी पण अंगूर ऊंचा अंत
घणा हा , उण रै हाथ नीं लागा । सेवट काई होयनै वा
आपरा मन में कह्यौ—आं खाटा अंगूरां सारू कुण झांपळियां
मारं । म्हनै तौ खाटा अंगूरां री मुळगी भावड़ ई कोनीं ।
आप रै हाथै नीं आया जिण सूं भावै ई अंगूर खाटा व्हैगा ।



कांमा जिणरा ई धांमा

अक लखारा रै दोय पाळतू जिनावर हा । अक गधौ
नै बीजो कुत्तो । गधौ दिन रा माल मत्तो उखणतो ।
इण गांव सू उण गांव में मिणियारी माल पुगावतो । भलाई
तावड़ा री लाय पड़ती व्है, पांणी बरसती व्है, लू चालती
व्है, अर भलाई सी पड़तो व्है गधा नै तो माल ढोवणी ई
पड़तो । ढूवा माथे कदेई दो च्यार डंडा पड़ जाता जका इद-
काई में ।

कुत्तो दिन रा नींद लेवतो । रात रा पोरो देवतो ।
आपरी चोकसी में खांमी को राखतो नीं । बिना जरूरत भुसतो
कोनीं । मौका माथे चोरां रा पग छुडाय देतो । गधौ मना-
ग्यानां विचार करियो के ओ रात निगरांणी वाळी कांम तो
साव सैल है । म्है ई करलूं । वो रात कुत्ता नै कह्यो—
आज सू म्है थारौ कांम करूंला, थूं म्हारौ कांम करजं ।
अंडी चोकसी राखूं के थूं ई कांई जाणै ।

कुत्तो कह्यो—अ तो आप आपरा कांम है । थूं विरथा
गळा में डाळी मत ले । पण गधौ मानियो कोनीं । वो तो
काठी जिद पकड़ली । थोड़ी रात ढळी के वो तो चीभौं चीभौं
करण लागी । घणी री नींद खुलगी । जाणियो मते ई ढब
जासी । पण गधा नै तो कुमत सूझियोड़ी ही । वो तो फेर
चीभौं चीभौं करण लागी । वो जाण्यो भोंकणा में ई सीधार्ई
है । घणी री नींद हरांम व्हैगी । सोच्यो आज इण गधा नै ओ
कांई हिड़कियो सूझियो । नीचो आयने गधा नै सावळ जंत-

रावण सारू कीं जोवण लागौ के सांमी ऊखळ कनै मूसळ पड़्यौ
निगै आयौ । आंचाआंच में वो मूसळ नै ई हाथ घालियौ ।
बाड़ा में आयनै गधा नै धमीड़ धमीड़ मूसळ सूं घमकावण
लागौ । नांमी जंतरायौ । पछै जायनै सेवट गधौ बोलौ रह्यौ ।

जद कुत्तौ उणनै कह्यौ—भाई, म्है तौ थनै पेलौ ई
समझायौ । पण थूं किरारी मानै । अँ तौ आप आपरा
कांम है ।

कांमा जिणरा ई धांमा, करै जिणनै छाजै
देखा देखी होड वं, अंत मूसळ बाजै



लकू बांदरी

अक ही डोकरी नै अक हौ डोकरी । अकर डोकरी
री बेटो दिसावर कमाई करण सारू गियो तौ
वो आपरी मां रै वास्तै अक घण-दूधाळ सांचोरी गाय लायनै
बांध दी, चीणी अर चावळां री अक अक बोरी लायनै घरदी ।
जावती वगत मां नै कह्यो—मां, म्है दिसावर जावूं, थने किणी
बात रा फोड़ा नीं पड़ै, इण सारू सगळौ अकट सराजाम कर
दियो । अकल जीव है, रोटियां करण में आंगळियां मत बाळजै ।
दोनू टेम खीर बणाजै अर रांमजी री माळा फेरजै । किणी
बात री कोताई करजै मती । आ रिपियां री कोथळी देवूं,
निठे तौ फेर दाय पड़ै जकौ चीज-बुस्त मंगाय लेजै ।

बेटो राजी खुसी विदा व्ह्यो । मां उएनै राजी खुसी
सीख दीवी । दूजै दिन डोकरी खीर बणायनै थाळी में ठारी के
आंगणा में अक बांदरी फदाक करती कूदनै आई । डोकरी माथै
दांत काढ़ती बोली—दोनू वगत म्हारै सारू खीर बणायनै राखजै
नींतर चीरनै खाय जावूला । म्हारो नांव लकू बांदरी है ।
डोकरी री आसंग बीत्योड़ी ही । कांई जोर करती । बांदरी रा
डर सूं उएरो जीव सोरका में जावै । दोनू वगत खीर रड़ायनै
बांदरी नै हेलौ पाड़ै :

लकू बांदरी आज्ञा, खीर नै खांड खाजा

लकू बांदरी तौ जाणै इणी सोय में रैवै, टप देणी आयनै
लपालप खीर चाट जावै । डोकरी भूखां मरै नै बांदरी री
डर न्यारी । सूख नै कांटो व्हैगी । दोनू वगत रांमजी रै नांव
फा. १३

री माळा फेरणी तौ अळगी री—वा तौ आठूं पौर बांदरी बांदरी करै ।

सेवट अेक दिन उणरी बेटौ दिसावर सूं पाछौ आयौ । मां री ढंग ढाळी देखियो तौ देखतौ ई रैग्यौ । बोल्यौ—मां, यूं काई ? थारौ सास तौ आंख्यां में आयौ, थाकनै खंखर व्हेगौ । कठैई मांदगी तौ नीं काढ़ी । मां उणनै डरतां डरतां लकू बांदरी री सगळी बात बताई । बेटा रै चढ़े नै उतरे । मां नै कह्यौ—आज सिझ्या रा म्हनै उणरी सावळ सरबरा करण दे । थूं हेलौ पाड़नै अेकर उणनै फगत बुलाय तौ दे ।

सिझ्या व्हेतां ई लकू बांदरी तौ वगत माथै हेलौ सुणार री बाट न्हाळती इज ही । मां कांसी री मोटी थाळी में खीर ठारनै आंगणा में धरी । हमेसां री गळाई हेलौ मारियो :

लकू बांदरी आजा, खीर नै खांड खाजा

के हेलौ रै समचे लकू बांदरी तौ टप देगी आंगणा में कूदती इज निगै आई । आवती ई हिलियोड़ी फट थाळी में मूंडौ घालियो । बेटौ तिबारी में लुक्योड़ी बैठी । राती चुट हळबांणी रा डील माथै डाम ई डाम दे दिया । बांदरी तौ सबड़कौ पूरौ गिटियो अर नीं गिटियो, उठा सूं ततैया मनाया । हळबांणी रा हाथ हाथ लांबा डाम उघड़ ग्या । लारली सगळी खीर री फारगती व्हेगी । दूजे दिन तड़कै डोकरी मां तौ खीर ठारनै बोली :

लकू बांदरी आजा, खीर नै खांड खाजा

लकू बांदरी नै खीर रा तौ घणा भटका आवता । नित री चाट भूंडी व्हे । पण हळबांणी रा चटीड़ा हाल बळता हा ।

नींबड़ा माथै बैठी ई बोली :

अबै नीं आऊं मावड़ी

थारै बेटै बाळी चांमड़ी



भांय थोड़ी भाड़ी घणौ

अक ही मिन्नी । वा ऊंदरा खावतो खावती बूढ़ी डेण
व्हेगी । अबे ऊंदरा मारण री सरघा नीं री । घणा ई भटका
आवता , पण जोर काई करे । ऊंदरा उण सूं रोळियां अर
कुबदां करनै दौड़ जाता । अक ई बखड़ी में नीं आवती ।
भूखां मरती रा पाहळा भागण लागा । जद वा ऊंदरा मारण
रौ अक नवौ उपाव सोचियौ ।

अक मिणियारा री हाट सूं रुदराछ रा मिणियां री मोटी
माळा लाई । ऊंदरां रे बिलां कनै बंठ , आख्यां मींचनै माळा
सुरङ्गण लागी । कठीनै ई ध्यान नीं फंटावै ।

ऊंदरा मिन्नी रौ औ खिलकौ देखियौ तो उणनै पूछ्यौ —
मिन्नी मासी औ काई नवौ तोतक रचायौ । मिन्नी मासी थोड़ी
ताळ तौ बोली ई कोनीं । बोली बोली माळा फेरती री । पछै
भगती भाव सूं होळै होळै कैवण लागी — बुढ़ापा में रामजी री
माळा फेरूं । सगळी ऊमर अकरम करिया । अबे नांव लूं जित्तै
ई सावळ । नांव री कमाई साथै चालैला । जीव हत्या री
तलाक ले ली । माळा में दिन पूरा करूं । ऊंदरा उणरी बात
माथै पतियारी कर लियौ ।

वा मिन्नी नित ऊंदरां नै ग्यांन अर सीख री बातां
बतावै । संगत करे । घरम री चरचा सुणावै । ऊंदरा उणरै
ओळा-दोळा बैठा भगती भाव सूं उणरा आदेस सुणै । मिन्नी
मासी तौ संत व्ही सौ व्ही । सगळा ऊंदरा उणरी घणौ ई
मान राखै ।

मिन्नी काई छळ करे के सबसूं लारै रियोड़ा ऊंदरा नै भच होळें सूं झांप लेवै । चुस्कारो ई नीं करण दे । यूं रांमजी रौ नांव लेतां लेतां वा मौकळा ऊंदरां रौ पापो काट न्हाकियो । सेवट ऊंदरां रौ अगवांणी मासी रा छळछंद नै लखग्यो । वो बाकी बचियोड़ा सगळा ऊंदरां नै पूरी पूरी भुछा-वण देदी के आपरो जीव वाल्हो लागे तौ मासी रौ फिटक में नीं आवै ।

मिन्नी री भळै दुरगत व्हेण लागी । भूखां मरती री जीव जावै । माळा रा मिणियां फिरांणा दोरा व्हेगा । ऊंदरा पूरा छक्कै पंजै सावचेत हा । उणरी छीयां ई को भेटता नीं ।

सेवट मरतां मरतां मिन्नी भळै अेक उपाव सोचियो । सराफा री हाट सूं अकबरसाई मोरां लाई । ऊंदरां रै बिलां कनै बैठनै वानै बतावै , कदास इण लालच सूं ई फिटक में आवै । ऊंदरा नै चमचमाता सोना री मोहर बतायनै कह्यो :

उरला दर रा ऊंदरा , परला दर में आव

लाख मोर दू गांठ री , सूतौ बैठी खाव

ऊंदरां री अगवांणी बिल सूं थोड़ी सौ मूंडी बारै काढ़नै पाछो पङ्तर दियो :

भां थोड़ी भाड़ी घणो , किण विघ करां विसास

मासी मूसा चेतग्या , थूं अजै न छोडी आस

मिन्नी माळा जपती जपती बिना आंख्यां खोल्यां कंवण लागी — मरती वगत कीं पुन्न काढ़णी चावूं । हजारूं ऊंदरा खाया । पाछो वानै ई धरम कर जावूं तौ मरियां मुगती पावूं । चढ़ियोड़ा फरज री मरियां पैली म्हारै हाथ सूं फारगती

करणी चावूं । थें डरो मती । पण ऊंदरा तो पछै बखड़ी में
 आया इज कोनीं अर मिन्नी मासी अक हाथ सूं माळा सुर-
 इती घणा ई कळाप करिया पण ऊंदरा री तो मन में ई
 री । सेवट माळा फेरती फेरती भूखां मरती मरगी ।



जवांनी री भूख

अक हौ बांदरो । अकर उणनै जोर सूं तिरस
लागी तौ वौ पांणी री सोय में अठी उठी निगं
करी । सोधतां सोधतां उणनै अक खंधेड़ी मिलियौ ।
खंधेड़ी आधौ भरियोड़ी हौ । तिरस आगै बांदरा नै कीं
चेतौ नीं रह्यौ । वौ हळफलियौ फट खंधेड़ा में कूदग्यौ
घापनै पांणी पीयां पछे बारै निकळणी चायी । घणी ई
छलागां मारी पण उणसूं बारै को निकळीजियौ नीं । खंधेड़ी
सांकड़ौ हौ । उणरौ बख को लागौ नीं । अबै करै तौ कांई
करै । पांणी में तिरतौ रह्यौ ।

सताजोग अक बकरो उठै आयौ । पांणी पीवण नै खंधेड़ा
में झांकियौ तौ पांणी ऊंडौ । मूंडौ पूगै नीं । बांदरा नै
मांय तिरतौ देखनै वौ उणनै पूछ्यौ—बांदर भाई, पांणी कोकर
है । जद बांदरो कह्यौ—पांणी तौ इमरत जंडौ मोठौ है ।
पण इण पांणी में अक तासीर भळै है । मांय संपाड़ौ करतां
ई बूढ़ापी मिट जावै । म्हैं साव बूढ़ौ खंजर व्हे ज्युं हौ ।
इण पांणी में खंखोळी खातां ई भर मोट्यार व्हेगौ । थूं देखै
इज है ।

बकरो खुद बूढ़ौ हौ । उणनै ई जवांनी री हर आई ।
बांदरा नै कैतां जेज लागी, पण बकरा नै खंधेड़ा में कूदतां
जेज नीं लागी । जवांनी री भूखी वौ आंचे आंचे दोय
भळाका खाया । चिमकियां मारनै खंखोळियां खाई । पण
बकरो तौ सागै हौ जंडौ इज रह्यौ । बांदरो तौ आपरो

बख लेयनै बकरा रै माथै ऊभौ व्हेगौ अर झट छलांग मारनै
 बारै आयगौ । बकरो अबे बांदरा री चालाकी पिछांणी, पण
 सांधौ कांई लागै । बकरो कह्यौ—अबै म्हैं, म्हैं.....

बांदरौ कह्यौ—जवांनी पाछी नीं वळै जितै मांय खंखो-
 लियां खाती रै । जे यूं करतां ईं मरगयो तो थनै नवौ
 जमारौ मिळसी । फिकर क्यूं करै । आ कैयनै वो तौ आपरै
 ठाणै गियो । जवानो रो भूखौ बकरो सेवट आपरो जीव
 गमायो ।



थूं म्हनै मारी

अेक ही ऊंदरी नै अेक ही ऊंदरी । ऊंदरी ती ही
सालस, धीमा सभाव री । ऊंदरी ही ओटाळ ।
लखणां री लाडी । ऊंदरा नै घणा घणा नाच नचावती । मन
करती जणाई रिसाय जाती । ऊंदरी मनावण जावती । लटापोरियां
करतो तद नीठ नखरा करती करती वा घर री थळी चढ़ती ।
अेकर दोनूं लोग लुगाई में जबरी खटपट व्ही । ऊंदरी काठी
आंती आयोड़ी ही । ऊंदरी नै सांतरी जंतराई । ऊंदरी रिसा-
यनै घर सूं बारें निकळगी । ऊंदरी घणा ई नेवरा करिया पण
वा किएरी मानै । ऊंदरी सगळा घर री फूस वाइदी काढ़,
चौका बासण कर, चूलौ चेताय, माथै साग री घेगची चाढ़नै
फेर ऊंदरी नै मनावण आयौ । ऊंदरी कह्यौ :

चाल म्हारो रूपाळी नार

चौका बासण सगळा त्यार

ऊंदरी तड़कनै मिजाज सूं मूंडौ मस्कोड़ती पाछी जबाब
दियौ :

थूं म्हनै मारी थूं म्हनै कूटी

आबै म्हारा डावा पग री जूती

मनावण सूं आगै ऊंदरा री कांई जोर । लचकाणौ पड़ियो ।
पाछी घरै आयौ । परात में घी री मौवण देयनै आटी गूंदियो ।
साग में वगार देयनै हेटै उतारियो । पण उणरो मन तो
ऊंदरी में हो । अेकर फेर मन काठी करनै ऊंदरी कनै गियो ।

चाल म्हारी रूपाळी नार

साग , आटी सगळा त्यार

ऊंदरी किणरी मानै । वा करड़ावण में आंटी ब्हियोड़ी ही ।

बोली :

थूं म्हनै मारी , थूं म्हनै कूटी

आवै म्हारा डावा पग री जूती

मनावण सूं आगै ऊंदरा री कांई जोर । लचकांणी पड़ि-
योड़ी पाछी घरै आयौ । बोलौ बोळौ सगळी रोटियां पोई ।
ठांव ठीकरा ठाणै करिया । करड़ी मन करनै फेर ऊंदरी कनै
गियौ । बोल्यौ :

चाल म्हारी रूपाळी नार

झरझरती पुड़ियां ब्हैगी त्यार

पण ऊंदरी तौ चटोकड़ी घणी बळती ही । आपरा घणी रा
धीमा सभाव नै जाणती ही । करड़ावण रा मीठा सवाद चाखि-
योड़ी ही । बोली ।

थूं म्हनै मारी , थूं म्हनै कूटी

आवै म्हारा डावा पग री जूती

ऊंदरी ई लाडी रा लखण जाणतौ हौ । पाघरौ घरै आयनै
सीरो करियो । जाण्यौ अबै तौ मानैला । जे इण वार नीं मानै
तौ धूड़ उणरै लारै । म्है अकलौ ई जीमण खाय लेस्यूं । अंडी
बात विचारनै वो ऊंदरी कनै अकर फेर गियौ । बोल्यौ :

चाल म्हारी रूपाळी नार

कचकचतौ सीरो ब्हियौ त्यार

ऊंदरी जाण्यौ अबै करड़ावण करी तौ मूंगी पड़ैला । चालणा

में सार है । मीठी वांणी में गडका करती बोली

चाल म्हारा भोळा जीव

थनै बुलावण आयी पीव

आई ओ सायबजी आई

लोग लुगाई रे काई लड़ाई



अचपळी ऊंदरी

अेक हो ऊंदरी नै अेक ही ऊंदरी । ऊंदरी अचपळी
अंत घणी ही । उणरै हाथां पगां दीया जगता हा ।
कीं न कीं बोछरडाई करियां बिना को मानती नीं । ऊंदरी घणी
ई समझावती — देख घणी रोळियां मत कर । कदैई कुमौत मारी
जावैला । पण ऊंदरी किणरी सीख मानै । उणनै तो बोछर-
डायां रो साव लादोडी ही ।

अेकर वा फदाफद करती घी रो चाडी में पड़गी । बारै
निकळण सारू ज्यूं झांपळियां मारी , कळती गी । ऊंदरी नीठ
कीकर ई पूंछ पकड़नै बारै काढी । ऊंदरी बारै आवतां ई
कह्यो — नीठेक तो घणा दिनां सूं घी रो छांटो आंख्यां देख्यो ,
पण रा'कुडिया नै ओ ई सुवायो कोनीं ।

अेकर गुळ नै कुरटतां ऊंदरी गुळ रो भेली रं हेटै
आयगी । किचड़को निकळ जातौ पण सताजोग ऊंदरी उठै
आय पूगौ । ज्यूं त्यूं करनै भेली सूं किचरती नै बचाई ।
पण ऊंदरी तो किणरी किरियावर मानै, सांमी भांडती कह्यो —
नीठेक तो घणा दिनां सूं गुळ रो भोरौ आंख्यां देख्यो , पण
रा'कुडिया नै ओ ई सुवायो कोनीं ।

अेकर वा बोरड़ी रा कांटां में फदाफद करती फंसगी ।
ठीड़ ठीड़ सूं उणरी डील वींधोजगी । ऊंदरी चीं चीं करण
लागी । ऊंदरी आफळतौ आफळतौ कीकर ई ऊंदरी नै बारै
काढी । पण ऊंदरी तो नुगरी घणी ही । वा किणरी किरिया-
वर मानै । बड़का तड़का करती कैवण लागी — पेई में ओग-

निया अर टोटियां कद सूं घड़ायोड़ी पड़ी । अडोळा कांन भूंडा लागे । कांन विघावण री वगत रा'कुडियो आंटी साजियो, म्हनै फट आगी लेली ।

अेकर ऊंट री सवारी करतां ऊंदरी उणरो तापड़ हेटै आयगी । थोड़ी ताळ फेर नीचे रै जाती तौ पिदड़को निकळ जाती, पण ऊंदरी आयनै कीकर ई उणनै ऊंट री तापड़ हेटा सूं निकाली । पण ऊंदरी किणरी किरियावर माने । वा तौ सांमी ऊंदरा नै लांबड़धकै लेयनै बोली—ऊंट री तापड़ हेटै निरांत सूं कड़ियां री चिणक कढ़ावती जको आगला भौ री बदळायत कठै बैठी ही, म्हनै माडांणी बारै काढ़ दी । इण अबूझ घणी री घाल्यां अबै कठै जाऊं ।

अेकर वा ऊंदरा नै कह्यौ—म्है तौ मिन्नी कनै ग्यांन री बातां सुणणनै जास्यूं । ऊंदरी बोल्या—इत्ता तांना मत कर । हाल तांई तौ थारी सगळी बोछरड़ायां भरै पड़गी । मिन्नी कनै म्हारौ ई बस को पूगै नीं । अबै माठ कर । पण ऊंदरी किणरी सीख माने । उणमें तौ अकल उबरती पड़ी ही ऊंदरी ज्यूं बरजी त्यूं उणनै जोस चढ़ियो । वा तौ मिन्नी मासी कनै ग्यांन री बातां सुणणनै गी इज । अर मिन्नी मासी उणने ग्यांन री छेली बात सुणायदी । उणने अेक ई गपळका में गिटगी । उणसूं तौ ग्यांन री बात री हुंकारौ ई को दिरी-जियो नीं ।



पांन अर ढगळौ

अेक रूख हेँट अेक ढगळौ पड़ियो । साव अेकलौ ।

किण सूं बोलें । किणनै बतळावें । अेकलौ पड़्यो
पड़्यो अमूंझगौ । के सता जोग री अेक पांन उठै अळगी भांय
सू उडतौ आयौ । ढगळा रें तौ अणचींती वंतळ व्ही । वौ घणी
राजी व्हियो । आपरें वासं आयोड़ा पांन री वौ घणी आव-
आदर करी । दोनूं ई गाढ़ा मित व्हेगा ।

अेकर ढगळौ पांन नै कह्यौ—बेली थूं म्हनै अेकलौ छोडनै
मत जाजैं । अबं थारै बिना म्हनै अेक पल ई को आवडैं नीं ।
पांन कह्यौ—थारै जेड़ा मित नै म्हैं छोडनै जावूं, म्हैं अेड़ी
बावळौ कोनीं । पण म्हारै बस परबारी जोर सूं हवा चाली
तौ म्हैं अेक ठोड़ कीकर ठमस्यूं । म्हनै तौ उडणौ ई पडूसी ।

जद ढगळौ अेक उपाव बतायौ—इणरी थूं परवा मत
कर । आंधी री बाप आवैं तौ ई म्हैं थनै उडण नीं देवूं ।
पवन चालतां ई म्हैं थारै साथै बैठ जास्यूं । आंधी रा खेंखाड़
बाजैं तौ ई म्हैं थनै हिलण नीं देवूं । पण मित, मेह आगै
म्हारौ ई बस कोनीं । मेह आयौ तौ म्हनै गळियां सरसी ।

जद पांन तुरत अेक उपाय सोच्यौ । कैवण लागौ—
इण बात री थूं परवा मत कर । मेह आतां ई म्हैं थनै
ढक लेस्यूं । मेह री बाप आवैं तौ ई म्हैं थनै गळण नीं
देवूं । दोनूं ई बेली अेक दूजा नै बचावण री अटकळां सोचली ।
घणी ई आंधियां आई, पण ढगळौ पांन नै नीं उडण दियो ।
घणी ई बरसातां व्ही पण पांन ढगळा नै नीं गळण दियो ।

जोग री बात के अेकर आंधी अर मेह दोनूं सागै आया । न्यारी न्यारी सोचियोड़ी कीं पार पड़ी नीं । ढगळौ कह्यौ म्हैं थनै बचावूं । पांन कह्यौ म्हैं थनै बचावूं । ढगळौ सेवट पांन नै समझायौ—थूं बावळा म्हनै कीकर बचा सकै । हवा रै पैल फटकारै थूं तो कठैई उड जासी । अर म्हनै गळणौ पड़सो । फालतू झोड़ मत कर म्हनै थारै माथे बैठण दे । पांन नै मन उपरांत ई ढगळौ री कैणौ मानणौ पड़्यौ । ढगळौ सावळ जमनै पांन माथे बैठयौ ।

बादळा गाजण लाग्या । बीजळियां कड़कड़ाट करती पळ-पळावण लागी । मोटी मोटी छांटं री मेह ओसरियौ । आंधी री फांफां चालण लागी । ढगळौ गळण लागी । गळतो ई गियो । जठा लग पूरौ नीं गळियौ उठा लग आपरा मित नै बचायां राख्यौ । ढगळौ पूरौ गळतां ई आंधी री अेक फटकारौ आयौ अर पांन नै आपरै सागै उडाय लीनौ । पांन आंसूड़ा ढळकावतौ ढळकावतौ भारी मन सूं विदा न्ह्यौ ।



चक्कौ मक्कौ नै हमसाब

अेक हौ चक्कौ । अेक हौ मक्कौ । नै अेक हा
हमसाब । चक्का नै लाधौ चावळ । मक्का नै लाधौ
चावळ । अर हमसाब नै ई लाधौ चावळ । चक्कौ गियौ
कुमार रै । मक्कौ गियौ कुमार रै । हमसाब ई गिया कुमार
रै । चक्कौ लायौ हांडी । मक्कौ लायौ हांडी । अर हमसाब
लाया तोलड़ी ।

चक्कौ गियौ पांणी नै । मक्कौ गियौ पांणी नै । अर
हमसाब ई चाल्या पांणी नै । चक्कौ बारै निकळग्यौ । मक्कौ
बारै निकळग्यौ । अर हमसाब गुचळकिया खावण लागा ।
अेक हाथ चक्कौ खांचियौ । अेक हाथ मक्कौ खांचियौ । अर
हमसाब निकळग्या बारै ।

चक्के रांधी खीचड़ी । मक्के रांधी खीचड़ी अर हमसाब
ई रांधी खीचड़ी । चक्के री सीझगी । मक्के री सीझगी ।
अर हमसाब री बळगी । अेक दांणौ चक्के दिनौ । अेक दांणौ
मक्के दिनौ । अर हमसाब रौ पेट भराणौ ।

चक्कौ चाल्यौ सासरै । मक्कौ चाल्यौ सासरै । अर हम-
साब ई चाल्या सासरै । चक्का रौ घोड़ी हींसै—हीं, हीं ।
मक्का रौ घोड़ी हींसै—हीं, हीं । अर हमसाब री सवारी
करं—चीभौ, चीभौ । चक्के हंसियौ खिलखिल । मक्के हंसियौ
खिलखिल । अर हमसाब ई हंसिया खिलखिल ।

कुटलाई रा मांडवा

अक हो खिरगोसियो नै अक हो स्याळ । दोनां में
मेळ मुलाकात हो । दोनूं ईं भेळा रमता । कदैई कदैई
भेळी गोठ गूगरी करता । अंकर चौमासा रा दिनां में वं गोठ
करी । खीर अर मालपूवा बणाया । गावा घी में झरझरता
मालपूवां री सौरम सूं स्याळ रा मन में कुटलाई चेती । वी
सुसिया नै पूछघी—थूं कित्ता पांन माथै खावैला, केर रा पांन
माथे के आंबली रा पांन माथे । सुसियो बापडो ही भोळीढाळी ।
आंबली बिचै केर री पांन कीं लांठी जाणनै वी बोल्यो—म्हें
तो केर रा पांन माथै खावस्यूं ।

स्याळ कह्यो—थारी मरजी भाई । म्हें तो केळा रा पांन
माथै खाऊंला । जा थूं केर री पांन तोड़ला, म्हें ईं अक केळा
री पांन लेयने आवूं । सुसियो दोड़नै केर री पांन लायो अर
स्याळ मोटी देखनै केळा री अक पांन लायो ।

स्याळ खिरगोसिया नै केर रा पांन माथै अक टोपी खीर
अर मालपूवा री अक भोरी पुरस दियो । बाकी बचियोड़ी सगळी
खीर अर सगळा मालपूवां नै अकण सागै ई केळा रा पांन
माथै आपरा हाथ सूं पुरस लिखा । सुसियो तो जीभ रै पेल
फटकारै ई केर माथै री पुरसगारी चाटग्यो । दूजी बगत फेर
पुरसण री कह्यो तो स्याळ बोल्यो—भाई, म्हें ईं अंकर
पुरसगारी करी अर थारै ईं अंकर पुरस दियो । थारी पांन
तो दुळदुळती सेंठी भरियो, पण भ्हारो पांन तो आधी खाली
हो । अबै काई न्है, पैला बेंचवाडो व्हेगो जकी सही है ।

महँ तो उछळपांती थारी राखी । थूं केर रा पांन माथै खावण री कह्यो तो थनै उण माथै ई पुरस दियो, इण में म्हारी चूक व्है तो बता, महँ कांन पकड़स्यूं ।

सुसियो स्याळ री कुटळाई लखग्यो, पण अबै जोर कांई करै । माडांणी माठ झेली पण मन में खांचनै गांठ बांधली । मौका माथै पाछी इण छळगारा स्याळ में भूंडी बितावणी ।

थोड़ाक दिन आडा पड़िया, पछे अेकर खिरगोसियो जंगळ री वास छोडनै अेक गांव में गियो । अेक डोकरी ऊखळ में घान कूटती ही । सुसियो उण कनै जायनै कह्यो—थारा पूत फळै, थारी गवाड़ी बघै, डोकर-मां म्हनै थोड़ी घान दे । डोकरी सुसिया री आसीस सुणनै घणी राजी व्ह्यो । उणनै छाजळी भरनै घान दे दियो ।

खिरगोसियो पछे अेक बांणिया रै घरै गियो । बांणियो बोरी खोलनै खांड जोखती ही । खिरगोसियो उण कनै जायर कह्यो—माजन वीरा, थारो वौपार फळै, थारै घर लिछमी बघै, थारो परदेसां जस फेलै, म्हनै थोड़ी खांड दे । परभात री पौर सुसिया रा मूंडा सू आ आसीस सुणनै बांणियो घणी राजी व्ह्यो । ताकड़ी री चेळी सेंठी भरनै सुसिया नै दियो ।

खांड लियां पछे वौ सुसियो अेक तेली रै उठै गियो । तेली घोळी तिल्ली री घांणी करती ही । खिरगोसियो उण कनै जायर कह्यो—थारी घांणी फळै, थारो कुटुंब बघै, थनै वौपार में घणो लेणियो व्है, म्हनै थोड़ी सौ तेल दे । तेली सुसिया री आसीस सुणनै घणो राजी व्ह्यो । सोना री बींटी अर सूआ री पांख व्है जैड़ी, नाक सू पीवं जिसी तेल कूड़ियो

भरनै सुसिया ने दियो ।

सुसियौ धान , खांड अर तेल सूं आपरै संधीणा रा लाइ सांधिया । दिनूंगा रा दोय , दोपारां रा दोय अर ब्याळू वेळियां रा दोय लाडू खावै । उणरौ डील पळपळाट करण लागौ । स्याळ नै ई वौ दो तीन भोरा चखाया । स्याळ तौ अँडा लाडू ऊमर में ई को चाखिया हा नीं । उणरै होठां रस-कस बैठग्यौ । लाडूवां बिना की चीज चोखी नीं लागै । वौ सुसिया ने पूछ्यौ—अँ लाडू कीकर बणाया । म्हनै ई उपाव बता , म्हँ ई बणावूं । खिरगोसियौ तौ इणी भाळ में ई हौ । कह्यौ—इण में काँई इदकाई । आ तौ साव सैल बात है । म्हँ सांमला गांव में गियौ । उठै अँक डोकरी धान कूटती हौ । उणने कह्यौ—रांड , बूढी डेण , थारा पूत मरै , थारौ खूंटौ उखलै , थूं अन्न अन्न करती फिरै , थनै कोढ़ उघड़ै , म्हनै थोड़ी धान घाल । वा झट धान रौ छाजळी भरनै घाल दियो । पछै म्हँ अँक माजन रै घरै गियो । वौ खांड जोखतौ हौ । उणनै जायर कह्यौ—मिनखमार किराड़ , थारौ देवाळी निकळै , थारौ घर भागै , थारौ रांड ऊघळै , थारा पूत मरै , थारै कीड़ा पड़ै , म्हनै थोड़ी सी खांड घाल । वौ झट कैतां पांण म्हनै चेळी भरनै खांड घाल दी । पछै म्हँ अँक तेली रै घरै गियो । वौ घांणी करतौ हौ । उणने जायर कह्यौ—चीकरणा भूत , थारा बळद मरै , थारौ घाणी बळै , थनै नाग डसै , थारौ नाबंस जाय म्हनै थोड़ी तेल घाल । वौ म्हनै कैतां पांण कूड़ियौ भरनै तेल घाल दियो । अँ तीनूं चोजां भेळी ज्हियां पछै म्हँ लाडू सांध लिया । इण भांत थूं ई

कळाप करे तो लाडू तो संधियोड़ा इज पड़िया है ।

स्याळ रे इत्ती नेठाव कठे । सुणतां ईं उडियो । सांमला गांव में गियो । वो पैलपौत उण डोकरी रे घरें गियो । वा साचांणी धान कूटती ही । स्याळ जांणियो सुसिया री बात तो साव साची । चौक में ऊभने कहाँ— रांड बूढ़ी डैण, थारा पूत मरें, थारो खूंटो उखलें, थूं अन्न अन्न करती फिरें, थने कोढ़ उघड़ें, म्हने थोड़ी धान घाल । डोकरी रे सुणतां ईं जाणे लाय लाय ऊठगी । परभात रो वेळा अं काई अपसुगन व्हिया । ओ काळजीभा यूं काई बोलें ! वां होळें होळें उठा सूं ऊठी, बोली नीं कोई चाली । छाजळी जग-जगता खीरां सूं भरने लाई । स्याळको जांण्यो बात तो साव साची । छाजळी भरने लाई है । वो निरांत सूं सागे ठोड़ ऊभो रह्यो । डोकरी कने आयने उणरे माथे जगजगता खीरा ऊंघाय दिया । स्याळ ठोड़ ठोड़ सूं बळग्यो । सगळी चांमड़ी दाझगी । उठा सूं दोड़ियो ।

दोड़तो दोड़तो वो उण सेठ रे घरें पूगो । वो बोरी सूं मुस्ती खांड जोखतो ही । स्याळ जांण्यो बात तो साव साची । तिबारी में ऊभने बोल्थो—मिनखमार किराड़, थारो देवाळो निकळें, थारो घर भागें, थारो रांड ऊघळें, थारा पूत मरें, थारें कीड़ा पड़े म्हने थोड़ी सो खांड घाल । बांणियो देख्यो परभात री वगत आ काई कुबांणी सुणणा में आई । इण काळजीभा स्याळ रो कीकर पापो कटें ? वो होळें होळें कोथळी में बाट भरने स्याळ कने आयो । स्याळ जांण्यो चेळा री ठोड़ कोथळी में खांड लायो, घणी सावळ, म्हारे कने ठांव ईं कोनीं ।

कोथली पाछी पुगाय देस्यूं । सेठ स्याळ रं कने आयर बोल्यो —
ले खांड । पछे वो घडीइ घडीइ बाट भरियोड़ी कोथली सूं
स्याळ नै कूटण लागी । कह्यो—थारी जीभ नै नाग डसै ।
स्याळ जाण्यो आ तो जबरी व्ही । कठेई चूक तो नीं गियो ।
कीकर ई लारो छुडायन उठा सूं सोकड़ मनाई ।

पछे वो स्याळ तेली रं घरं गियो । उणरी छान हेटें
घांणी रं पासै ऊभनै कह्यो—चीकणा भूत, थारा बळद मरै,
थारी घांणी बळें, थनै नाग डसै, थारो नाबंस जाय म्हने थोड़ी
तेल घाल । तेली देखियो के तड़कै तड़कै खूडपगो आ कांई
जीभ काढ़े । उणनै रीस आई पण आई । होळें होळें बोलो
बोलो उठा सूं ऊठियो । कूडिया में कळकळतौ तेल लेयनै आयो ।
स्याळ जाणियो अबकी बात भरें पड़ी । तेल तो हाथ लागो ।
तेली स्याळ कने आयनै सगळी कूडियो स्याळ रं माथे कूढ़
दियो । स्याळ रा सगळा डील में फाला ई फाला उपड़ग्या ।
डील बळें तो अंडी बळें के बात छोडी । कीकर ई लारो छुडायनै
उठा सूं ततैया मनाया । तेली लारै दौड़नै कह्यो—अक कूडियो
कम व्हे तो अक भळें लेतौ जा ।

स्याळ तो मारग में ढबियो ई कोनीं । ठेट सुसिया कने
आयर सांस लियो । आपरा सगळा रांडीरोवणा उणरै मूडागे
रोया । कह्यो—म्हारी तो जाणें जेड़ी दुरगत व्ही । थूं म्हारै
साथे दगो करियो । पण अब ई कीं उपाव बता, म्हारी
डील तो जाणें भट्टी में सिळग रह्यो है ।

सुसिया रा मन में हाल तांई अइस बड़ियोड़ी ही । स्याळ
सूं उणरो पूरो पूरो मन फाटग्यो । वो फेर उणनै खोटी सला

दी । कह्यो—जायनं चिणां रा खेत में लुट, खूब लुट, थारी बल्लत उणी वगत मिट जावैला । स्याळ ती कंतां ईं दौड़ियो । जायनं चिणां री फूलां आयोड़ो लांठी खेत भाळनं उण में घणी ताळ लुटियो । लुटतां ईं सगळा फाला फूटग्या । चिणां री खार वां में अँड़ी चढ़ियो, जाणे घाव माथे मिरचां अर लूण भुरकायो । बल्लत रै कारण स्याळ ती बोबाड़ा मेलण हूकौ । बोबाड़ा करती करती ई मर गियो ।



अेक चिड़ी री अटकळ

अेक ही चिड़ी । वा नित ह्मेस अेक राजा रा बाग
में मीठा मीठा पाक्योड़ा फळ तोड़ने खावती ।
घणी ई बिगाड़ करती । राजा हैरान । घणा ई कळाप करिया ,
पण चिड़ी फंदा में नीं फंसी । सताजोग री बात के वा अेकर
लीला रेसम रा झीणा जाळ में फंसगी । सिपाई अपड़ने राजा
रे गोडे लेग्या । राजा दोनू हाथां में सेंठी अपड़ने कह्यो—
निकांमी चिड़कली , थूं म्हारे बाग में घणो उजाड़ करियो ।
अबै थने बाज रा पींजरा में घालने जियामौत मरावस्यूं , घणा
दिन व्हिया थने मौज मांणती ने ।

चिड़ी छोटी तौ ही , पण ही इदक चतुर । वा मौत रा
डर सूं चळविचळ नीं व्हि । राजा ने निरांत सूं मीठी बांणी
में कह्यो—मरणो तेवड़ने ई म्है थारा बगीचा में इतरो उजाड़
करियो । इण दुनियां में कुण अमर होयने आयो । म्हने मारण
वाळो बाज अर मरावण वाळो राजा खुद किसा अमर रेसी ।
पछे म्हने म्हारा नैना जीव रो कांई फिकर । राजा , म्है मरण
ने त्यार हूं । पण मरियां पैली पिराचित सरूप थने चार
अमोलक बातां बतावणी चावूं । म्है थारो घणो बिगाड़ करियो ,
अबै मरती बगत थारो मंगळ करणी चावूं । आ म्हारे पेटा री
मंसा है , राजा म्हारे माथे भरोसो कर ।

राजा रे तौ उण चिड़ी ने मारण री घणो अंतावळ
ही । बोल्थी—नैनी अबूझ चिड़कल , थूं म्हने अठी उठी री
बातां सूं क्यूं भरमावै ? म्है भवे ई थारी बातां में नीं आवूं

कंणी व्हे जकौ फुरती सूं कै, अंतकाळ रै पैला थनै इत्ती मया बगसूं हूं ।

चिड़ी कह्यो — राजा अ फोरी पतळी बातां नीं है । थारै राजपाट में घणी काम आवैला । थूं ध्यान देयनै सांभळ । जीव नै थोड़ी ताळ ठाणै राख । म्हैं ती थारी बखड़ी में हूं । जिएण वगत चावै मार न्हाकजै । इण बात री इत्ती विचार क्यूं करै ! सीख री बातां बतायां पछे ती म्हैं खुद ई जीवणी नीं चावूं । ले सुण, पंली बात आ के अंकर बखड़ी में अयोड़ा दुस्मी नै भूल सूं ई पाछी जीवती नीं छोडणी ।

राजा कह्यो—आ सीख ती म्हैं जाणूं । थनै भवै ई नीं छोडूं । अबे दूजी बात कै । जद चिड़ी कह्यो—राजा, दूजी बात आ है के अणहोणी बात माथे कदेई पतियारी नीं करणी ! पतियारी करियां अंत पछताणी पड़ै । राजा नै आ बात दाय आई । बोल्थी—नैनी चिड़कल, थारी आ सीख ती घणी सिरै । बातां ती थारी नांमी पण करणी थारी माड़ी । थूं म्हारै बगीचा री सित्यानास कर न्हाकियौ । थनै मारूं ती म्हारी काळजौ ठरै । अबे फुरती सूं ई तीजी बात कै ।

चिड़ी कह्यो—राजा ध्यान देयनै सुणजै, तीजी सीख आ है के बीत्योड़ी बात माथे पछतावी नीं करणी । पछतायां कीं हाथ नीं लागै । जीव कळपै सो इदकाई में । राजा नै आ सीख ई मन भावतो लागी । कह्यो—अबे चौथी बात बता, पछे म्हैं म्हारी मन जांणी करूं । तद चिड़ी कह्यो—आ चौथी बात थारै सारू लाभकारी है । म्हारै मरियां थनै अमोलक खंजांनी हाथ आवैला । म्हारा पेट में डेलड़ी रै इंडा जैड़ा

पांच हीरा है । अक अक हीरो अरबां री । आं हीरां सूं थारै खजांना में कदैई तोटी नीं आवंला । पण किणी दूजा रै हाथ सूं मरियां वै हाथ नीं आवं । म्हैं खुद म्हारी मरजी सूं प्राण त्यागनै, थारै पगां में आय पड़ूला । म्हनै सांयत सूं अकर रूख माथै बैठण दे । म्हैं धूप-ध्यान करनै थनै वै पांचूं अमोलक हीरा सूप जावूला । किणी नै ई आ बात मत करजै ।

राजा अंत लोभी हो । अमोलक हीरां री बात सुणनै उणरो जीव डिगियो तो अंडी डिगियो के अजेज उण चिड़ी नै छोड़ दी । चिड़ी फुदकनै आंब री ऊंची डाळी माथै बैठगी । राजा बेताब होयनै कह्यो— म्हारी रूपाळी नैनी चिड़कल, फुरती कर, थारै पेट मांयला अमोलक हीरा हाथ आयां ई म्हनै झख पड़ेला ।

चिड़ी आंब री डाळी माथै बैठी ई जोर सूं हंसी । हंसती हंसती ई बोली— राजा, म्हैं तो जाणती के थूं इत्ती मोटी राज संभाळै, थारा में कीं न कीं तो अकल व्हेला इज । पण थारा में तो अकल रा दोय दांणा ई कोनीं, थूं तो निपट अबूझ ढोर री गळाई है । म्हैं चिड़ी जात होयनै थारै हाथ में आयोड़ी छूटगी अर थूं राजा होयनै म्हनै बखड़ी में आयां पछै छोड़ दी । म्हारी चार बातां थारै हीयै तो कीं झरो नीं । सुणतां सुणतां ई पांतरग्यो । म्हैं थनै अबांरू अबांरू कह्यो के बखड़ी में आयोड़ा दुस्मी नै भवै ई नीं छोडणी अर थूं म्हनै छोड़ दी । थारै जित्ती मूरख फेर ई कोई इण धरती माथं व्हेला । म्हैं थनै दूजी सोख दी के अणहोणी बात माथै भरोसी नीं करणी अर थूं सांप्रत भरोसी करियो । कीं न कीं तो मगज

लड़ावती । मूरखां रा पातसा, चिड़ी रा छोटा सा पेट में ठेलड़ी रै इंडा जैड़ा पांच हीरा कीकर खट सकं । थोड़ी घणौ तो विचार करियौ व्हेतौ । इत्तौ खजानौ व्हेतां थकां ईं थूं मंगता री गळाई फट हाथ मांड दियो ! जाणें इण सगळी माया नै छाती माथै धरनै साथै ले जावैला । म्है थनै तीजी सीख दीनी के बीत्योड़ी बात माथै पछतावौ नीं करणौ । पछतावौ करियां कीं हाथ नीं आवें । अबै इण सीख नै मान, थारै गुण आवैला । थूं म्हनै छोडण री मूरखता करी, अबै पछतावण री मूरखता मत कर । फालतू जीव कळपैला । राजी खुसी आपरै मेलं जा ।

राजा रौ मूंडौ उतरियोड़ी देखनै चिड़ी फेर कह्यौ—चीकणें घड़े पांणी री छांट नीं लागै । थनै सीख देणौ बिरथा है । थारी मरजी आवें जितौ कळप, धाप धापनै पछता, म्है तो आ उडी ।

अर चिड़ी तो फर करती उडगी । नै राजा हाथ मसळती उडती चिड़ी कांनी चितबंगियौ व्हे ज्यूं भाळतौ रह्यौ । उणरा नांव सूं सिंघ खोड़ा व्हेता हा, पण नाकुछ चिड़ी हाकां-धाकां उणरी बखड़ी में आयोड़ी छूटगी अर वो उणरी कीं नीं बिगाड़ सकियौ । फेर माजनौ पढ़ायौ जकी इदकाई में ।



गंगाराम स्यालियौ

अक हौ अवाळियौ । उणरै अक लांठौ अवेइ हौ ।

घणी ई लरइयां अर घणी ई छाळियां । तड़कै तड़कै ई आखरियां सूं अवेइ नै उछेरै नै सिझ्या रा घड़ी रात ढळियां पाछौ आपरा अवेइ नै आखरियां में ला बिसाणै । दूल रौ मोटी कसूंबल गोळ फेंटी, सिघोड़ा भांत अंगरखी, हुक्कादार मोचड़ियां, गेपरिया रंग रौ छापल कमरबंध, कान रै परवाणै डोगी गेडी अर खांधा माथै पांणी रौ दीवड़ी लियां ढर ढर करतौ अळगा मगरा माथै आपरौ अवेइ चरावै । खुद निरणौ रै जावै पण आपरै अवेइ री पूरी पूरी निगंदास्ती राखै । खत नै पंपोळतौ जावै नै आपरा वित्त नै चरावतौ जावै ।

अकर सिझ्या रा कांकड़ सूं आपरा अवेइ नै टोळनै गांव में लावतौ हौ के अक बकरी ब्यावण सारू मारग में ई ऊभी रेंगो । अवाळियौ उठै ई बकरी रै वास्तै सावळ जुगत बिठायदी । मोटा तालर में पायां री बाड़ छापनै अक बकरी जोगी छोटो बाड़ोटियौ ठाय दियो । जान्ता सूं बकरी नै उठै ई राख छोडी ।

उण कांकड़ में गंगाराम नांव रौ अक अलाम कुबदी स्यालियौ रेंवतौ हौ । वो बकरी रै खोजां खोजां उणरी सोय करतौ बाड़ा पास आय पूगौ । बाड़ा रै चारुमेर फेरी दियो पण डोगी बाड़ रै कारण कीं कारी लागी नीं । घांटी ऊंची करनै वो आखतौ अठी उठी जोयनै लाळां पटकतौ बोल्यौ :

खेत न पांत , रूख न राई

आ चौड़े बाड़ कुण चुगाई

बाड़ोटिया में बकरी निरभे ऊभी ही । स्याळिया नै चिगा-
बण सारू ऊभी थकी ई बोली :

रांम परमेसर रा बैसणा

बाड़ ऊपर क्यूं देखणा

स्याळियौ निपट छळगारौ हौ । मीठी बांगो में पड़ूतर
दियौ :

थें हौ म्हारा रांम परमेसर

बात करो थें बारै नीसर

पायां री बाड़ में बकरी तौ निसंक ऊभी ही । पछे वा
क्यूं कम उतरै । तुरत पाछी जबाब दियौ :

न्हाय धोय म्हें पाटै बेंठा

बात करो थें बारै बेंठा

स्याळियौ लचकाणौ पड़नै आयौ जिणी पगां पाछी गियौ ।
आपरै घरवाळां सागें सूरज री उगाळी पाछी आवण री मतौ
करियौ । मन में डिढ़ विचार करियौ के इण बकरड़ी नै भवै
ई नीं छोडणी । छोटा बकरिया रै काचाजिग मांस रौ तौ कांई
पूछणी, नाळेर री काची गिरियां जैड़ी स्वाद आवेला ।

अेवाळिया ने झख कठै ! वो तौ झांझरकें आयनै बकरी
नै संभाळ लो । नैनो सौ बकरियौ चारुं पगां माथे फदाकां
मारती । लिलाड़ माथे घोळी चांद । काळी भंवर रुंवाळी पळका
करै । वो बकरिया ने खाक में ऊंचो लेयनै उणरौ लाड
करियौ । बकरी आपरा घणी नै स्याळिया री सगळी बात
बताय दी । कह्यौ—मांस रौ भूखी वो अेकर फेर आयौ

रैवैला ।

बकरी रौ कैणौ व्हियो अर स्याळियो तौ उणी सांयत जीभ लपलपावतौ आय धमकियो । इण बार साथै आपरी घरवाळी अर आपरा बेटा नै ई लेतौ आयौ । उणरी जोड़ा-यत रौ नांव गजकतरणी अर उणरै बेटा रौ नांव सरवण हौ । अेवाळियो तौ बाड़ रै चापळग्यौ । स्याळ बाड़ोटिया में जावण री जुगत बिठावतौ उचकतौ थकी बोल्यौ :

खेत न पांत, खूंख न राई

आ चौड़े बाड़ कुण चुगाई

बकरी पैला सूं कीं दबती थकी जाण करने बोली :

रांम परमेसर रा बंसणा

बाड़ ऊपर क्यूं देखणा

स्याळियो बोल्यौ :

थें हौ म्हारा रांम परमेसर

बात करौ थें बारै नीसर

बकरी पाछौ पङ्कतर दियो :

न्हाय धोय म्हैं पाटे बैठा

बात करौ थें बारै बैठा

अेवाळियो अणचींत्यौ कूदनै बारै आयौ । आवतौ ई स्या-ळिया रौ पूंछ पकड़तौ इज निगै आयौ । स्याळियो अबै जोर करे तौ कांई करै । बखड़ी में आयां पछै रांम भजौ । उणरै घरवाळा पाखती रा बांटका रै लारै ऊभा हा । वै ई कांई जोरावरी करै । घरवाळां सांमी जोयने वी कह्यौ :

गजकतरणी दौड़ें तौ दौड़

सरवरण थारै झोळघां

गंगारांम नै अंडी जंतरासी

मिळसी आवती होळघां

अेवाळियौ गंगारांम नै फूंदी देयनै इण भांत भंवायनै
फेंकियौ के खेजड़ी रौ भचीड़ खायनै वो तौ नीचें पड़तां ईं
फोट खेलग्यौ । बकरी, बकरियौ अर अेवाळियौ तीनूं ईं मौज
सूं आपरें ठायें ठिकाणें आया । बकरी गूंद सूंठ री सवा मण
गावा घी में सुवावड़ खाई नै आंणद रा थाट करिया ।



सेखौजी उमराव

अक ही गेवाळियो । उणरें नागौरी बळदां, सांचौरी
गायां अर नाळी री भेंस्यां री लांठी छांग ही ।
नित कांकड़ में मगरा माथे चरावण नै जावतौ । सिझ्यां रा पाछो
आपरी गवाड़ी आ जातौ । अक दिन वो आपरी छांग नै लेयनै
पाछो आवतौ के अक गाय रा खुर में बांवळिया री तोखी सूळ
खुबगी । आगे चालणो मुस्कल व्हेंगौ । गेवाळियो उठे ई कांकड़
में पायां री बाड़ छापने गाय नै रोड़ दी ।

गेवाळिया रे गियां रात रा अक स्याळियो आयी । वो
पायां री बाड़ देखनै घणो ई रातौ-पीळौ व्हियो । बोल्यो—
म्हारें पट्टा री जागा में ओ कुण बाड़ छापी । किणी नै ऊंधी
सूझी है, हकनाक मारियो जासी । काले ई बाड़ नीं हटाई
तौ जाणें जेंडी करूंला । म्हारी नांव सेखौजी उमराव है ।

गाय डरतां कह्यो—म्हारा पग में सूळ खुबगी, जिण
सूं हिफाजत करनै म्हारी घणी आ बाड़ छापी है । आप
गळ माथे दया विचारो, काले आ बाड़ हट जासी ।

स्याळियो फेर तड़कनै बोल्यो—पण आ बात व्ही तौ
व्ही इज कीकर ? थारा घणी नै कैजें इणरी डंड भरें, नीं
तौ जियामोत मार न्हाकूंला ।

तड़कें गेवाळियो आयनै गाय रे खुर सूं सूळ काढी ।
उणरी पाटा पीड़ करी । जीव में सौराई वापरियां पछे गाय
आपरा घणी नै सेखौजी उमराव री सगळी बात बताई । घणी
नै डंड भरण सारू कह्यो ।

स्याळ ती वगत परवांणै डंड लेवण सारू आयी । गेवाळियौ अेक लांठी डांग लेयनै लुक्योड़ी बेंठी रह्यौ । स्याळ आतां ईं गाय माथै धसळां भरती बोल्यौ—आ कांई बात है, हाल बाड़ नीं हटाई । कठै, म्हारी डंड कठै ? गाय नरमाई सूं डरती कह्यौ—आपरी डंड म्हारे कनै है । अबारूं हाजर कहूं ।

स्याळ अंतावळी सूं बोल्यौ—ला फुरती कर । गाय बोली :

आवौ सेखौजी उमराव सांमी सेरियां

स्याळ ती केणा रै समचे ई सांमी सेरी आयी के गेवाळियौ खांचनै कमर में डांग वाई । सेखौजी उमराव ती गुळाचां माथं गुळाचां खाई ।

गेवाळियौ मसखरी करती बोल्यौ :

आया सेखौजी उमराव सांमी सेरियां

लागी कमर में, खाई चकफेरियां

स्याळियौ ती पाछौ फुरनै ई नीं जोयौ के पट्टा री जागा सूं बाड़ हटाई के नीं हटाई । गेवाळियौ आपरी गाय नै लेयनै हंसती हंसती आपरी गवाड़ी में गियो ।



आठ राजकंवर

चिड़ी रा बिचिया

बात कैवूं साची, नंदिया री बहू नाची । नंदिये बजाई थाळी, नंदिये री मरगी छाळी । नंदिये वायौ खोलियौ, वाळें में जायर बोलियौ । वाळें वाई रेत, भोम्यां रा भरग्या खेत । भोम्यां वाई डांग, खाती री तूटी टांग । खाती वायौ रंदी, बाबाजी री तूट्यौ कंधौ । बाबे वाई तूंबी, मिंदर में जायर लूंबी । मिंदर वाई जड़ी, चीता सूं जायर लड़ी । तौ रामजी भला दिन दे ढगळ पांनड़ी उड़तौ जाय, हुंकारियौ गुळ खातौ जाय । घणा दिनां पैली री बात है । अक ही राजा ने अक ही रांणी । राजा न्याई, घरमी अर सोलवांन हौ । आपरी सगळी रंयत नै बेटा री ठोड़ मानतौ । सिंघ बकरी अक घाट पोणी पीवता । चोरी-चकारी, लूट-खसोट अर झूठ-फरेब रा विचार ई लोगां नै को आवता नीं । सगळी नगरी में सरब आणंद अर सरब थाट हा । राजा रै प्रमाण ई रांणी घण रूपाळी इदक सरूप अर गुणवंती ही ।

राजा रांणी रै गुण, सोल अर रूप रै उनमान ई वारे आठ राजकंवर हा, सूरज री जोत अर चांद रै टुकड़ां जेड़ा । रूपवान, गुणवान अर इग्याकारी । राजा नै आपरै बेटां री घणौ ई गुमेज हौ । रांणो नै आपरी कूख रै जायां री घणौ ई अंजस अर घणौ ई मोद हौ ।

अकर जोग री बात अँड़ी बणो के रांणी आपरा सीस मँल में सूती ही के लगौलग अक चिड़ी री चीं चीं री आवाज सुणनै उगरी नींद उचटगी । वा क्षिप्तकनै पिलंग माथे बैठी

व्ही । सोना रा पिलंग रें चारुं पागां कने ऊभी चारुं डाव-
ड़ियां हाथ जोड़ने अरज करी — हुकम फरमावौ !

रांणी रा कानां में डावड़ियां री अरज अर चिड़ी री चीं
चीं साथै ई सुणीजी । रांणी आपरी आख्यां देख्यो के अक चिड़-
कल रोसनदान रा काच माथे मार टूंचा मारें है । चिड़ी सीस
मैल रें मांय आवण सारू खपती ही । चिड़ी नै इण भांत
आफळतां देख रांणी अक डावड़ी सांमी देखने कह्यो — आ चिड़ी
ईंडा देवैला, म्हारै सीस मैल री रोसनदान उघाड़ दे । आज सुं
ईं इण चिड़ी री साळ-संभाळ म्है आपरा हाथां सुं करूला ।
थूं म्हने वगत माथे चुगौ पांणी लायने देती रैजै ।

डावड़ी कैतां पाण रोसनदान उघाड़ दियो । चिड़ी चीं चीं
करती रांणी रा मैल में फड़फड़ाती बड़गी । चारुं कानी चार
पांच चकारा दिया । पछै निरांत सुं अक ऊंचा ताक में बैठने
हरख सुं चीं चीं करण लागो । थोड़ी ताळ में चिड़ो ई आयन
चिड़ी री सोय करली । वा तौ रांणी रा मैल में ठायै सुं
बिराजी ही । रांणी चिड़ी नै कह्यो — नैनी चिड़कल आज सुं
थूं म्हारी धरम बैन है । म्हारा कमरा में थारी मरजी व्हे
जठे ईंडा दे । म्है थारी साळ-संभाळ करूला । म्हारा हाथ
सूं थने मोत्यां री चूण चुगाऊंला, थने गंगाजळ पाऊंला ।

रांणी री बात सुणने चिड़ी हरख सुं पांखां फड़फड़ाई ।
पछै चिड़ो उड्यो जकौ देखतां देखतां आपरी टूंच में अक अक
तिणकौ लायने चिड़ी वास्ते अक ठावकौ आळी ठाय दियो । रांणी
अर चिड़ी जिते माहोमाह वंतळ करी । दोनां रें गाढ़ी मेळ
व्हेगो । चिड़ी कह्यो — रांणी आपरै जैड़ी रूपाळी, गुणवंती अर

समझवांन रांणी म्हनै सगळी दुनियां में ईं निगै नीं आई । रांणी कह्यौ—म्हनै थारे जैडी सुवावणी भली चिड़कल हाल तक कठैई देखणा में नीं आई ।

उणी दिन सिझ्या रा चिड़ी आठ धोळा-धोळा मोत्यां रै उनमांन फूठरा ईंडा दिया । रांणी सगळा नगर में हरख अर उच्छब मनायौ । आपरी धरम बैन वास्तै जच्चा रा गीत गवा-ड़िया, खुसियां मनाई, हजारूं रिपियां री निछरावळां करी । रांणी नित चिड़ी नै आपरा हाथ सूं मोतियां री चूण चुगावै । सोना रा कचोळा में गंगाजळ पावै । चिड़ी अर चिड़ी उठै घणौ ई सुख पायौ, वै घणी ई मछरां करी । चिड़ी अथाग हरख सूं आपरा ईंडां नै सेवै, रांणी सूं मीठी सुहांणी वंतळ करै । दिन लाग्यां वां मोतियां रै उनमांन फूठरा ईंडां सूं गुलाब री कळियां जैड़ा आठ कंवळा कंवळा बिचिया नीसरिया । रांणी फेर हरख अर उच्छब मनायौ । हजारूं रिपियां री निछरावळां करी । चिड़ी, चिड़ी अर रांणी रै आणंद रौ छेह नीं हौ ।

आं हरख अर उच्छब रै दिनां में ईं कुजोग री बात के चिड़ी मांदी पड़गी । घणा ई ओखद कराया पण चिड़ी री तौ मांदगी बघती ई गो । चिड़ी री मांदगी सूं रांणी हरदम दुमनी रैवै । इणसूं आगे जोर कांई करै ! आखा नगर में गळो गळी आ डूंडी पिटाय दी के जकौ इण चिड़ी री मांदगी सावळ करैला उणनै राज रा खजांना सूं अक हजार मोहरां अर अक हजार गायां इनांम मिलैला । डूंडी पिटावणी रांणी रै हाथ ही, पण चिड़ी नै सावळ करणी उणरै हाथ नीं हौ ।

ओखद करतां करतां ई चिड़ी तौ काठी तजगो । अबे उरणे सोलै आना भरोसो व्हेगो के कीं करियां वा बचै नों । वा मरियां पैली रांणी रा घणा ई गुण बखांणिया, रांणी नै आसीर-वचन कहा । अर चिड़ा नै मरती वगत आख्यां सूं आसू ढाळनै कह्यो—म्हारै आठूं बिचियां री साळ-संभाळ अबे थारं माथे है । वगत माथे चुगो पांणी देजै । मरियां ई दूजो ब्याव मत करजै । नवी दुमात म्हारा बिचियां नै घणा फोड़ा भुगतावैला । म्हें मरियां ई जीवत बराबर हूं के जे थूं दूजो चिड़ी नों लावै । चिड़ी उणनै वाचा दिया के वो मरियां ई दूजो चिड़ी नों लावैला ।

चिड़ा रै वाचा देतां ई चिड़ी तौ प्राण मुगत व्हेगो । चिड़ी घणो ई रोयो-रीकियो पण होणो नै कुण मेट सके ! रांणी ई घणा डुसक्या भर भरनै रोई । पण काई सांघो लागे ! चिड़ी तौ आपरा आठूं बिचियां, चिड़ी अर आपरी धरम बैन रांणी—आं सगळां नै कळपतां छोड सुरग सिघायगी ।

रांणी चिड़ी रै मरियां पछे ई उणरा बिचिया अर चिड़ा री वैंडी ई साळ-संभाळ करती । ढळतां दिनां रै साथै-साथै चिड़ा रै मन सूं चिड़ी री विछोह ई ढळती गियो । आठूं बिचिया बापड़ा अवस मां रा नांव माथे छबरां-छबरां रोवता । पण मां रो ममता तौ मां रै साथै ई सिघायगी ।

रांणी चिड़ा री घणो ई साळ-संभाळ करती तौ ई लुगाई बिना उणनै घणी अटपटाई आवती । लुगाई बिना कुण पग चांपे, कुण माथो दबावे अर कुण कड़ियां खूंदे ! सोलै सिण-गार करने कुण सिझ्या रा उडीकै । चिड़ा रै खायां बिना

चिड़ी चुगो पांणी ई नीं करती । अबे तो वै बातां सपना री आळ-जंजाल व्हेगी । जोड़ावत बिना नीं तो उणने चांद चांदणी आछी लागती अर नीं जगमग जगमग करता तारा चोखा लागता, वै तो उणरी आंख्यां में तिणगां ज्यूं बळता । नीं सूरज ऊगतो आछी लागतो अर नीं आथमतो । नीं रात आछी लागती अर नीं दिन री उजास उणने रुचतो । सगळे दिन गुमघांम व्हियोड़ी विलखो विलखो बैठो रेतो ।

रांणी चिड़ा रै मन री बात लखगी । वा उणने लाड सूं कहाँ—बावळा, म्हें देखूं के आजकाले थारा मन में घणा घणा गोटा ऊठे । थारा मामूली सा आरांम वास्तै, थूं कठई आ नीं व्हे के बापड़ा बिचियां ने हेमाळे मेल दे । हाल बिचिया कंवळा है । खांवण कमांवण जोगा व्हियां पैली जे थूं दुमात लायने घरे बिठांण दी तो टाबरां री कांई गत बिगड़ेला, इणरो थने कीं अंदाज है ।

चिड़ी मोळी पड़तो थको कहाँ—म्हने तो म्हारा विखा रै पार कीं सूझै ई कोनीं । म्हें तो म्हारे मरतां, टाबरां री तकलीफ री राव-रत्ती ई अंदाज नीं लगा सकूं । रांणी-मां म्हने थें भूंडी को चाहै भलो, म्हारे तो लुगाई बिना अेक पलक ई नीं सरै ।

रांणी उणने घरौ ई समझायो पण चिड़ी तो नीं मानियो जको नीं इज मानियो । सिझ्या रा दिन बघियां पछे रांणी भोजन करने सीस मेल में पाछो आई तो वो आपरा आळा में दूजी चिड़ी लायने बिसाण दी ही । गुलाब री कळियां रै उनमान कंवळा कंवळा आठूं बिचिया गलीचा माथै पड़िया चूं

चूं करता तड़फड़ तड़फड़ कर रह्या हा । रांणी देख्यौ तौ देखती ई री । थोड़ी ताळ पछै चिड़ा सूं दवायती लेयने आळा सूं नीचै उतरी । बिचियां नै टूंचां मार मार अर पांखां सूं फफेड़ने, रांणी हळफळती उठै पूगी जितै तौ वा सगळां नै मार न्हाकिया ।

कुमळायोड़ी कळियां व्है ज्यूं सगळा बिचिया मरगा हा । औ रासौ देखनै रांणी री सगळौ डील थर थर धूजण लागौ । चिड़ी बिचियां नै मारनै पाछी आळा में उडगी । चिड़ी रा इण अकरम नै देखनै चिड़ी कीं नीं कह्यौ । चमगूंगौ व्है ज्यूं आळा में दावड़ियोड़ी बैठी रह्यौ । छतै बाप री आंख्यां सांमी औ तोतक व्है तौ रांणी कांई कर सकै । रांणी जळजळी आंख्यां सूं मरियोड़ा बिचियां नै गिणिया । वै आठ हा ।

आठ री आंकड़ौ गिणतां ई रांणी री माथौ ठणकियो । उणरी कूख सूं ई चांद सूरज रै उणियार आठ राजकंवर जलमिया ! जे इण भांत म्है संसार में नीं रैवूं अर म्हारै बेटां में दुमात रै आयां आ इज रचना व्है तौ ।

रांणी तौ इण विचार सूं ई बावळी व्हैगी । लड़थड़ती पिलंग माथं आयनै बैठी । भाटा री पूतळो रै उनमान ! उणरी आंख्यां सूं आंसुवां रा धारौळा ओसरण लागा । इत्ता बरसां में ई रांणी री आंख्यां सूं आंसुवां री आज पैली वार मेळ व्हियो । पण आज पैली वार में ई जाणै हिवड़ा री बांध फूटगौ व्है ज्यूं । रांणी री आंख्यां में सावण री झड़ी माचगी ।

रांणी री औ ढंग-ढाळौ देखनै डावड़ियां तौ सगळी हाकी-

बाकी व्हेगी । वै रांणी नै राजी करण वास्तँ उण चिड़ा अर चिड़ी नै सीस मैल सूं बारै उडावण सारू चेस्टा करी तौ रांणी माथी हिलायने ना कर दियो । पछै वै मरियोड़ा बिचियां नै बारै फेंकण री कोसीस करी तौ रांणी थोड़ा सा होठ उघा-इने होळै सूं कह्यो—ऊं हूं । पछै वाने हाथ रौ इसारौ करियो के अठा सूं सब बारै जावौ परी । डावड़ियां सगळी बारै जायनै सला-सूत करी । पछै आखिर में वै राजा नै इण बात री अरदास करी ।

राजा आ बात सुणतां ई राज दरबार छोडनै घबरायोड़ी सीस मैल में आयौ । काई देखै के रांणी तौ भाटा री मूरत ज्यूं बैठी छबरां छबरां आंसू ढळकावै है , बोले नीं कोई चालै । राजा तौ गताघूम में पड़ग्यौ । उणरें कीं समझ बैठी नीं । वौ रांणी नै पूछ्यो—रांणी , थूं रोवै अर म्हैं ऊभौ ऊभौ जोवूं , आ बात म्हारा सूं सहन नीं व्हे । बता , काई बात व्ही ? थने काई क्लेस है ? म्हैं छिन में उणनै मेटण रौ उपाव करूं ।

रांणी मूंडा सूं कोई बोल नीं काड़ियो पण हाथ सूं वां मरियोड़ा बिचियां सांमी इसारौ करियो । राजा इसारा रै समचै मुड़ने उण ठोड़ गियो । गुलाब री कळियां जैड़ा आठ कंवळा कंवळा चिड़ी रा बिचिया मरियोड़ा देखिया । तौ ई राजा रै पूरी बात समझ में नीं आई । वौ उठा सूं आयनै रांणी रै पाखती बैठग्यौ ।

राजा आपरा हाथ सूं रांणी रा आंसू पोंछ्या । होळै सूं कह्यो—आ बात काई व्ही ? सवार तक तौ बिचिया साब साजा-सूरा हा ।

रांणी री आंख्यां में फेर आंसू ढळक पड़्या । बोली—
चिड़ी दूजो घर मांडियो । दुमात आतां ई बिचियां रा अ
हवाल करिया ।

पछे राजा नै वा सगळी बात मांडनै बताई । कह्यो—
म्हारै आठूं राजकंवरां री म्हें मरगी तो ओ ई दीन व्हेला ।

आगं उणसूं बोलीजियो कोनीं । गळी रुंधग्यो । पछे तो
वा राजा री गोद में आपरो माथो धरनै दुसकिया भर भरनै
रोवण लागी । रोवती रोवती ई कैवण लागी—म्हें मरगी तो
म्हारा कंवरां री ओ ई ढाळी व्हेला । म्हनै वाचा दो के म्हें
मर जावूं तो आप दूजो ब्याव भवे ई नीं करौला ।

राजा रांणी रै मोरां माथे हाथ फेरती कह्यो—मरै दुख-
दाई भूत-पलीत । थूं नोज मरै ! म्हारै अर कंवरां रै भाग
री थारी हजारी ऊमर व्हे । थूं अँड़ी ऊंधी बातां मन में ई
क्यूं लावै ।

रांणी तो हठ झेल्यो । बोली—चिड़ी रा बिचियां वाळी
आ रचना देखनै म्हारै तो पूरी जचगी के म्हारा कंवरां में आ
बात व्हेणी है । म्हें तो वाचा लियां बिना अंजळ मूंडा में नीं
घालूं । सेवट राजा रांणी नै कह्यो—थूं तो इण जलम रा ई
वाचा मांगै, पण म्हें तो अठा तक कंवूं के मरियां पछे आगला
जनम में ई म्हें थारै बिना ब्याव नीं करूं । थारै जैड़ी गुणवंती
लुगायां इण घरती माथे जलमी ई कित्ती है !

पण राजा रै वाचा उपरांत ई रांणी रा मन में थावस
नीं व्ह्यो । उणनै उणी वगत चिड़ी नै दियोड़ी चिड़ा री
बादो याद आयो । वा रोवती रोवती ई कह्यो—इण भांत

चिड़ी ई चिड़ी नै वाचा दिया हा, पण वो तो चिड़ी रै मरतां ई सगळी बातां बीसरग्यो । थां मरदां री जात ई निकामी है । आपरा स्वारथ में आंधो वो चिड़ी इण गत आपरा बिचियां नै आपरी आंख्यां सांमी मरतां देखनै ई नीं कीं कहाँ अर नीं कीं करियो । काठ रा रमतिया री गळाई फगत आळा में पड़ियो रह्यो । पछे म्हनै आपरै वाचा री कीकर पतियारो व्हे !

रांणी तो रोवती ढबी ई नीं । सेवट कायो होयनै राजा कहाँ—रांणी, थनै थारै कंवरां रौ इत्तो डर है अर थूं म्हारी बात रौ पतियारो नीं करै तो म्हारो वचन राखण सारू म्हैं पैला ई मर जावूं । नीं तो म्हैं जीवतौ रैवूला अर नीं राजकंवरां रै वास्तै दुमात री खतरो रैवला । थूं नीं मानै तो पछै कांई करूं !

राजा रा मूंडा सूं आ बात सुणनै रांणी गोद सूं आपरो माथो ऊंचो करियो । बोली—अंडी बात आपरा मूंडा सूं नोज काढ़ो । आप सूं वत्ता म्हनै कंवर थोड़ा ई लागै, पण रांम जाणै चिड़ी रा बिचियां री आ गत देखनै म्हारो तो माथो भंवग्यो । म्हारा मन में तो पल पल आ इज बात ऊठे के म्हारै मरियां राजकंवरां में अणूतौ विखो पड़ैला ।

रांणी मन नै घणी ई काठो करियो । पण आंख्यां माथे उणरो जोर नीं चाल्यो । वा तो सगळे दिन अर सगळी रात ई रोवती री । राजा वाचा देय देयनै थाक गियो, पण रांणी नै पतियारो नीं व्हियो सो नीं व्हियो ।

रांगी री इंतकाळ

उण दिन सूं ई रांगी री आंख्यां तौ रोवण रै
हैवा इज पड़गी । उणरा मन में वेम पड़ियौ सी
पड़ियौ ! नीं जागतां चैन, नीं सूतां चैन । उण दिन सूं ई
अंडी कुथाल पड़ी के वेम रै कारण उणारी भूख ई मरगी ।
नींद में बिना मापा रा आळ-जंजाळ आवता, झिझकनै ऊठती
अर आपरै कंवरां री सोच करती । राजा घणौ ई समझायौ—
हाथां करनै क्यूं मौत नै निवतै । अणूता सोच में थारी कंचन
वरणी काया तौ काठी तजगी । सूरज आधूण दिसा में ऊंगै
तौ म्है म्हारा वचन सूं टळूं । पण मां बिना थारै कंवरां नै
कित्तो दुख व्हेला, थारै बिना म्हने कित्तो दरद व्हेला । आ
बात कदेई थारा सोचणा में नीं आई । भोळी सेंण दुस्मण
री गरज साजै । थूं हाथां करनै म्हा सगळां में फोड़ा
पटकैला ।

रांगी कंणा में तौ कै दियौ के अबै फालतू सोच नीं
करूंला, पण सोच नीं करणौ उणरै बस री बात नीं ही ।
राजा रै देखतां तौ वा विलखणौ बंद कर दियौ, पण मांय
री मांय उण सोच में सिलगती री के उणरै मरियां पछै
आठूं राजकंवरां में चिड़ी रै बिचियां वाळी ई बीतैला । जाणै
उणने अगम भावी बात सांप्रत आपरी निजरां दीखे ।

उण दिन सूं ई अंडी संजोग बणियौ के रांगी री सरीर
तौ तरतर छीजतौ ई गियौ । इत्ता सोच सूं तौ हाथी ई ठोळै
बैठ जावै, पछै रांगी री फूलां जैड़ी कंवळी काया छीजतां कांई
वगत लागे ! वा तौ सूखनै खंखर व्हेगी । आंख्यां में सांस
आयग्यौ । राजा मन में आछी तरै जाण लियौ के अबै रांगी

भवे ई बचे नीं । वो आठ पोर बत्तीस घड़ी रांणी रै पाखती बैठो रवे ।

रांणी रै आ बात सोळे आंना हीयै दूकगी के अबे घड़ी पलकां री बात है । हाथां करने काळ नै हेलौ मारियो । रांणी मरियां पैली बोलण लागी । मरती वगत वा चिड़ी जिण भांत चिड़ा नै भुळावण दी, उणी भांत वा राजा नै कैवण लागी — म्है तो अबे घड़ी पलकां री पांवणी हूं । म्हारे कंवरां री घणी भुळावण काई देवूं ! म्है तो लारला दिनां सू फगत आ इज आंकड़ी झेल राखी हूं । भगवान नै आ ई अरदास करूं के म्हनै आप जेड़ो ई भरतार मिले । जीवता म्हारी कोई बात नीं टाळी तो अबे मरियां पछे ई मत टाळजो के म्हारी ठोड़ इण मेल में कोई दूजी रांणी मत लाजो । म्हारा भोळा कंवर दुमात रा कस्ट झेल नीं सकैला । कठे ई आ नीं व्हे के . . . ।

रांणी सू आगे बोलोजियो कोनीं । उणरी आख्यां सांमी झांवळा आयग्या । उण दिन री चित्रांम उणरी आख्यां सांमी साफ तिरण लागी के चिड़ी रा आठूं कंवळा कंवळा बिचिया आळा सू नीचे पड़िया तड़फड़ तड़फड़ कर रह्या है । दुमात चिड़ी टूंचां मार मारने पांखां री झड़पां सू वाने अक ई पलक में मार दिया । आठूं राजकंवरां रै माथा माथे बारी बारी सू हाथ फेरने रांणी तो सांस छोड़ दियो । राजकंवर अरड़ां अरड़ां रोया । राजा री आख्यां में ई आंसू आयग्या । अड़ी रूपाळी अर गुणवती रांणी भरती थपियां पछे ई नीं जलमी व्हेला । राजकंवर अर राजा नै छोड़ने सेवट रांणी तो आपरै मारम चाली ।

रांणी रै मरतां ईं राजा तो बेचेतै व्हेगौ । तीन दिनां सूं आंख्यां खोली । अठी-उठी जोयनै होळै सूं पूछथौ—रांणी कठै ?

जबाब में आठूं ईं राजकंवर ठळाक ठळाक रोवण लागा । कांई जबाब देवै । होस में आयां पछै राजा नित कंवरां री साळ-संभाळ करतौ । हरदम वारौ ध्यान राखतौ ।

रात ढळी दिन ऊग्यौ, दिन ढळियौ अर रात आई, यूं करतां करतां रांणी नै मरियां चाळीस दिन बीतग्या । राजकंवर तो मां री याद में नित कायर मोर ज्यूं आंसू ढळकावता । सगळा अेक दूजा नै समझावता के अबे रोयां कांई सांघौ लागै ; उण ठायै गियोड़ी मां तो इण जलम में पाछी नीं बावडैला । पण सगळा खुद रोवता रैवता । सबसूं छोटकिया राजकंवर नै तो मां री हर अणूती ई आवती । वो तो रांणी रै मरियां पछै अेक वार ई मुळकियौ कोनीं । हरदम दुमनौ ई रैवती ।

मरणा री मार दुनियां में सबसूं तीखी अर खारी लागै, पण दिनां री मलम वगत लाग्यां उण मार री घाव ई मिळाय दे । राजा नै सखात में रांणी रै मरणा री दुख ई घणौ व्हियौ, पण अबे उणारी कमी अखरण लागी । अबे वो उणनै याद कर करने झुरण लागौ । रांणी रा गुणां बिचै उणरा रूप री उणनै घणी याद आवण लागी ।

अबै राजा रौ राजकाज में पैला जैड़ी मन लागै नीं । उणरै मन री सगळी खुसियां लोप व्हेगी । चांद री चांदणो उणनै आछी लागै नीं, जगामग करता तारा उणने आछा लागै नीं । सुरंगा फूल अर कोयल री मधरी वांणी उणनै

लागै नीं । पळापळ करती बीज, सांवण भादवा री काळी कळायण, बादळां री गाज आछी लागै नीं । सूरज री ऊगणी अर आयमणौ सुहावै नीं । अँ सगळी बातां रांगी री रूपाळी देह रँ साथै बिलमाय गी ।

रांगी रँ बिना उणनँ मुखमल री फूलाळी सेज कांटां रँ उनमानं अळखावणी लागण लागी । चांद री ठाडी चांदणी उणरा डील में झाळ रँ ज्यूं लागती । रांगी रँ अभाव में राजा रा सरब सुख वैभव दुखदाई बराग्या ।

राजा रौ औ दुख उणरा मंत्री तुरत ताड़ग्या । वँ सगळा भेळा होयनँ राजा रँ सांमी हाजर न्हिया । हाथ जोड़नँ अरदास करी—आपरा दुख सूं सारी परजा दुखी है । इण दुख रँ सिवाय आपरी परजा नँ कीं दूजौ दुख अर क्लेस कोनीं । आप सुखी व्हे जावौ तौ सगळी नगरी में आणंद रा थाट व्हे जावँ ।

राजा होळै सूं सवाल करियो—पण म्हारौ दुख अबँ कीकर मिटै ?

सगळा मंत्री अँकण सागै कहाँ—पण आपरी इँछ्या व्हे तौ औ दुख तौ अँक पलक में दूर व्हे । पाखती देसां रा सगळा राजा आपरी रूपाळी किन्यावां आपनँ देवण सारू ताखड़ा तोड़ै है । पण आपनँ कैवण री वारी हीमत नीं पड़ै । अँड़ा नेकनांमी, न्याई राजा नँ कुण आपरी बेटी नीं देवणी चावँ ।

राजा संका करी—पण म्हारी आ ऊमर दूजौ ब्याव करण री है काँई ?

मंत्री मुळकनँ कहाँ—हाल अंदाता री ऊमर ई काँई

वही है ! पच्चीस बरसां रा भर मोटघार तो आपरै सांमी फीका लागै ।

रांणी नै दियोड़ा वचन याद करनै राजा री मन डिग पिच्छूं होवण लागी के उणी वगत पाखती रा बगोचा में कोयल बोलण लागी । कोयल रा मीठा टहूका सुणनै राजा आपरा वचन नै तुरत पांतरग्यो ।

मंत्री अंतावळी करता पूछ्यो—अंदाता कीं पाछो हुकम को दिरायो नीं ।

राजा मुळकनै होळें सूं कह्यो—महैं कांई हुकम दूं, थानै कोयल री हुकम सुणीजै कोनीं कांई ।



नवी रांणी

जिण धूमधाम सूं लारली रांणी री दाह क्रिया करो
 ही , उणसूं चौगणी धूमधाम सूं राजा नवी रांणी
 परणीजनै लायी । नवी रांणी में गुण तौ नैड़ा-अळगा ई नीं
 नीसरिया हा , पण वा रूप री तौ सागर इज ही । नवी
 रांणी री सीस जाणै बागड़ियौ नाळेर , वेणी वासग नाग ।
 भूंह जाणै इंद्र धनख । मिरग सा नेत्र , मीन जिंसा चपळ ।
 रतनाळा लोचण । नाक सूवा री चांच । दाड़िम कुळी सा दांत ।
 बसंत कोकिला सरीखी मधरी वांणी । आरीसा सरीखा कपोल ।
 मुख पुनम रै चांद ज्यूं , सोळै कळा संपूरण । ग्रीवा मोर सी ,
 जाणै खेराद उतारी । बांह जाणै कंवळनाळ अर चंपा री
 ढाळ । चंवळाफळी सी आंगळियां । उरस्थल कुंभात सरीखी ।
 कुच जाणै पाकी नारंगियां , सोपारी सा कठोर । पांन सरीखी
 पेट । केसर लंकी । नाभि जाणै गुलाब री फूल । पासा जाणै
 माखण री लोथ । नितंब कटोरा सा । नख लाल ममोल्या ,
 हीरा सा दमकता । नवी रांणी तौ जाणै आभै री बीज । भादवा
 री अकास परी , मोतियां सरी । सोना री कांब । किरत्यां
 री झूमकौ । इंदर लोक री अपछरा । रूप री रंभा । चित्रांम
 री पूतळी ।

राजा रांणी री औ रूप देखनै गेलीजग्यौ । उणनै तौ
 अँडी लखायी जाणै सोळै चांद अेकण सागै रांणी रा मूंडा मग्गै
 ळगिया । उणरी तौ आख्यां ईं चूंधीजगी । नवी रांणी रै रूप
 री बिजळी राजा रै मन माथै अँडी कड़की के पुरांणी रांणी
 कां. १९

रो याद जड़ांमूळ सूं बळगी । वो उण रांणी रो मांदगी में उणसूं कोल करियो हो के वो दूजा जलम में ईं दूजी रांणी नीं लावैला । उण कोल रो याद तक राजा नै नीं रो । राज-कंवरां नै निजरां देखतो तो उणनै इण बात रो चेतो ब्रैतो के वो पैला किणी रांणी सूं परणीजियो हो । अँ तो वगत-वगत रो बातां है ।

रांणी जित्ती रूपाळी ही उणसूं सवाय में ओछी अर हीण सुभाव रो ही । अके सांचै ढळिया रूपाळा राजकंवरां नै देखतां ईं उणनै इण भांत लागा जाणै वासदी रो आठ तिणगां उणैरी आख्यां में उछळनै पड़गी है । वानै देखतां ईं उणरा ओछा मन में सबसूं पैली बात उपजी के आं सगळां रे जीवतां तो म्हारी कूख सूं जलमिया कंवर तो हमेसां ईं अभागिया रैवैला । अँ जीवैला जित्तै तो म्हारा जाया गादी रा हकदार नीं बण सकै । म्है तो रांणी होयनै ईं म्हारा बेटां वास्ते तो मरियां समान हूं । वा मन में सोच्यो—म्हारी ओ रूप रो खजांनी फेर कद कांम आवैला !

नवी रांणी नै वै आठूं ईं राजकंवर देख्या ईं नीं सुवावता । जठा तक आंरो पापी नीं कटै , उणनै तो रात रा नींद में ईं चैन नीं पड़ै । वा हरदम विलखी , दुमनी अर थोड़ी-घणी रिसायोड़ी रैवती । राजा नै मन रो भेद परगट करण सारू उणरी हीमत तो नीं ब्रै । राजा पूछतो—रांणी थनै अठै काईं दुख है , थूं विलखी विलखी क्यू रैवै ? म्हनै बतावै तो कीं जांच पड़ै । अठै काईं कमी है । थूं कवै तो थारै वास्तै आकास सूं सूरज नै तोड़ लावूं ।

रांणी नवी नवी आई ही । उणनै हाल राजा रै सुभाव रौ पूरौ पतौ नीं पड़ियौ के वौ म्हारी बात मानैला के नीं मानैला । राजा म्हनै घणी चावै के वौ आपरै कंवरां सूं घणौ प्रेम करै । जे म्हारै कैणा सूं वौ नाराज व्हेगौ तौ पछे कीं उपाव कोनीं । इण ख्याल सूं वा उणनै बिना पतवाणियां छेड़णी नीं चावती । आपरै मन री पीड़ मन में ईं दबायोड़ो राखी । वा भांत भांत री अटकळां सूं राजा रै मन रौ थाग लेवणी चावती ।

आज सीस मैल में राजा आयौ तौ उणनै रांणी घणी विलखी दीसी । वौ उणनै पूछथी—रांणी, थनै इण भांत दुमनी देखनै म्हारा काळजा में सळीका ऊठै । म्हारै सब सुखां माथे पांणी फिर जावै । म्हारै चांद रा टुकड़ा जैड़ा आठ राजकंवर है, थारै जैड़ी रूपाळी अपछरा है, राज रौ अखूट खजांनी है, म्हारी प्रजा म्हनै बाप री ठौड़ मानै, राज में विद्वांन मंत्री है । पाखती रा सगळा राजा म्हारौ मान करै, म्है इंदर राजा सूं ईं घणौ सुखी हूं पण थनै दुमनी देखनै म्हारौ सगळी सुख कुमळाय जावै । थूं म्हारा सूं आपरै मन री बात लुकावै !

राजा रै मूंडा सूं आ बात सुणनै रांणी रा मन में तुरत अक अटकळ सूझी । वा होळै गळगळा कंठ सूं बोली—म्हनै म्हारै मां-बाप अर साथणियां री हर घणी आवै । म्हनै सीख देवतां तौ मां बेचेतै व्हेगी ही । राम जाण उणरौ कांई हवाल व्हियौ व्हेला ? म्हारै बिना दोनां रौ अक पलक ईं जोव नीं लागतौ व्हेला । कालें म्है पीवर जावणी चावूं ।

म्हारो मन मां री याद करने हर छिन कळपे । आपसूं की कँवण री म्हारो हीमत नीं व्ही । आज आप घणी पूछयो तो म्हनें मन री दरद दरसावणी पड़ियो । नींतर म्हें म्हारो पीड़ आप ई लियां बैठी हो ।

रांणी रै विछोह री बात सुणतां ई राजा माथे तो जांणै गाज पड़ी । उणरौ मूंडो अकदम उतरग्यो । बोल्थो—रांणी, थारै जावण री बात सुणणा सूं ई म्हारो जीव ऊंचो चढ़ग्यो, साचांणी जावण सूं तो म्हनें कदास दूजो सांस ई नीं आवैला । थारा सूं अळगो होवण री बात तो म्हें सपना में ई सहन नीं कर सकूं ।

राजा रा मूंडा सूं ओ पड़ूतर सुणनें रांणी री ओछाई माथे तो जांणै नवी पांण लागी । वा मुळकती कँवण लागी — जद सात दिनां री मुलाकात सूं ई आप म्हारो विछोह अक पलक वास्तै ई सहन नीं कर सकौ, तो थोड़ी निरांत सूं सोचो के जका माईत म्हनें बीस बरसां तक आपरी गोद में बाळ पोसनै मोटी करी, बेटी गिणी चाहें बेटी गिणी, वारै बास्तै तो सेंग म्हें इज हूं, पछे कीकर म्हारै बिना वाने चैन पड़ती व्हेला । अर बीस बरसां तक ज्यांरी गोद में म्हें रमी, इत्ती लांठी व्ही, म्हनें ई वारै बिना कीकर आवड़ती व्हेला । आप इणरौ कीं अंदाज लगा सकौ ! आप थोड़ी ताळ वास्तै आपरै माथे ई लिरावो, जद म्हारै जावणा री बात सूं आप इण गत बैचैन व्ही अर ज्यूं आप फरमावो के म्हारै परतख बाणा सूं तो आपनै दूजो सांस ई नीं आवैला, तद आं दिनां में म्हारो मां रा काई हवाल न्हिया व्हेला !

राजा इण बात री काई जबाब देती ! बात रांणी री साव साची ही । वो होळें सूं कह्यो—मैं तो फगत म्हारी बात जाणूं के पांणी बिना मछली जीवती रै सकें तो मैं थारै बिना जीवती रै सकूं । मैं थारै माईतां री बेचैनी री बड़ी आसांनी सूं अंदाझ लगा सकूं । पण जका इत्ता दिन बेचैन रहेतां थका ई जीवता रेगा, वै दिन लाग्यां तरतर सावळ होय जावेला । मैं तो थारै बिना दूजो सांस ई नीं ले सकूं, थूं तुमार जोयले ।

रांणी बनावटी तोर सूं मुंडी उतारन कह्यो—मैं अंडी तुमार नोज देखूं । भगवान करे आप हजार बरसां लग जीवी । मैं तो आपरै पग री जूती हूं, मन करी जद खोलौ अर मन करी जद पैरो । म्हारी काई जिनांत के मैं म्हारी खातर आपनै दुख पौंचावूं । मैं अबै कदेई जावण री नांव नीं लूं ।

राजा रांणी री बात सूं बेहद प्रसन्न ब्हियो । रूप सूं घणौ उणारा गुणां माथं रीझियो । मोद भरन कह्यो—थारै जेड़ी रूपाळी अर गुणवंती रांणी घरती थपियां पछे ई नीं जलमी रहेला ।

आज रांणी नै राजा रै मन री थोड़ी घणौ सोय लाधी । वा मन में जाण्यो इण आंधा अर अबूझ राजा सूं तो मैं मन चाथी काम कराय सकूं । राजा री गोद में आपरी माथी धरन कह्यो—महने जद म्हारै पीवर री हर आसी तो मैं म्हारा मां-बाप अर म्हारी साथनियां नै अठे ई बुलाय लेस्यूं । सगळां री कोड पूरौ होय जावेला ।

राजा कह्यो—रांणी थूं कित्ती भली अर समझदार है !

रांणी मन में सोच्यो के ओ राजा कित्ती बावळी अर मूढ़ है !

इए दिन सूं ई रांणी राजा नै बस में करण सारू सब तरै री चेस्टावां करण लागी । राजा रें खायां बिना वा नीं तो भोजन करे अर नीं पांणी पीवें । राजा सीस मैल में आवें तो हरदम उणनै ऊभी ई उडीकती देखें । राजा तो रांणी रा गुणां माथे पूरो बावळी व्हेगी । सपना में कह्योड़ी बात ई वो रांणी री भवें ई नीं टाळें । बस में व्हियो पण व्हियो !

रांणी राजा रें सुभाव री नित नवी थाग लेवण री चेस्टावां करती । अेक दिन वा पेट दूखण री मिस करियो । जाण-बूझनै पिलंग माथे पसवाड़ा पलटती री । राजवेद सगळ्ठा दवायां दे थाका पण दरद व्हे तो मिटें । इत्ती किणी री हीमत कोनीं के के सके रांणी मिस करे । राजा सगळी रात रांणी रें सिरांतियें बैठी रह्यो, आंख्यां री पलकां ईं नीं झपाई । रांणी अर राजा दोनूं सैंग रात अेक दूजा री आंख्यां में जोवता रह्यो । रांणी री पीड़ री तो किणी नै पती नीं लागी पण राजा रें सुभाव री रांणी आज सोळें आंना पती लगाय लियो ।

ढळती रात रा दोनां री थोड़ी सी आंख लागो । रांणी रें मन रा दबियोड़ा कळाप उणनै सपना में परतख दीखण लागो । वा सपना में देखियो के उणरें राजकंवर जलमियो । आठूं राजकंवर उणनै मारण सारू तकें है । रांणी उणनै सात ताळां री तिजोरी में बंद कर दियो, तो ई वां आठूं भाइयां नै झख नीं पड़ी । वे उणनै मारण रा नवा नवा उपाव सोचण लागो । रांणी देख्यो के आं भाइयां रा झाळ सूं बेटा नै

बचावणी दौरा है । बेटी जीवती रह्यो तो सगळी बातां सावळ
व्हेला, वा तो भली सोची नीं कोई भूंडी । आपरा बेटा नै
मेहतरांणी रै हवालै कर दियो । कह्यो — आज सूं थूं इगरी
साळ-संभाळ कर, म्है थने नित तड़कै पांच मोहरां देवूला ।
किणी नै पतो नीं पड़ै के ओ म्हारी बेटी है ।

नींद में सूती रांणी री सपनी चालती ई गियो । वा
देख्यो के उणरो बेटी लांठी होयने भंगी री काम कर रह्यो
है । सेवट पतो लगावतां वै आठूं भाई रांणी रै बेटा री तपास
करली । वै राजा नै सिखायने उण भंगी वास्तै फांसी री फर-
माण कढ़वाय दियो । जद वो फांसी माथै चढ़ण सारू जावण
लागो तो रांणी बेटी बेटी करती उणरै लारै दौड़ी । राजा
रांणी नै पकड़ण सारू हुकम दियो । सिपाई रांणी नै पकड़ण
सारू खपे अर रांणी छुडावण सारू झांपळियां भरै । इण
झड़पा झड़प में रांणी री नींद खुलगी — कठै बेटी, कठै भंगी
अर कठै सिपाई ! वा तो सीस मैल में राजा रै पसवाड़ै
सूती ही । रांणी नै इण भांत री ओ कांई सपनी आयो ! रांणी
री हाल तांई कूख नीं मंडी तो ई वा सपना नै साची जाणने
उण माथै बिस्वास कर लियो ।

राजा रांणी रै पसवाड़ै नेखम सूती हो । रांणी मन में
गोटीजण लागी । राजा नै आपरै पेटा री बात कीकर कैवै !
सीधा तरीका सूं कैवणी आछो ई कोनीं लागै । राजा रा मन
में उणरै वास्तै अर राजकंवरां वास्तै कित्ती प्रीत ही, वा उणने
सावळ कूंतली ही । राजा रांणी नै घणी चावती हो । राजकंवरां
री राजा परवा नीं करती । वो रांणी माथै संपूरण रूप सूं

पागल हो ।

रांणी आं राजकंवरां रो कीकर अर किंतौ वेंगौ पापी काटे । उणरा मगज में तो ओ ई फितूर भरियो हो । आज रो सपनी देखियां पछे तो रांणी ने अबे अके पलक रो ई झल नों पड़े ।

रांणी रं डील माथे रूप घणी छायोड़ी हो के उणरा काळजा में तोखी छुरियां घणी बिखरियोड़ी हो, इणरो अंदाज रांणी रा उणियारा सूं राव-रत्तो ई नों लागती । रांणी रा उणियारा माथे तो घणी भोळप झलकती हो ।

राजा रो अचाणक आंख खुलो तो देख्यो के रांणी पिलंग माथे बैठी कीं सोचै है । राजा पूछ्यो—काई बात व्ही ? पलक झपियां ने तो आध घड़ी ई नों व्ही, अबारूं जागी कीकर ? काई पाछी दरद तो नों बिह्यो ।

रांणी होळै सूं बोली—पेट तो पाछो नों दूखियो । पण म्हने अबारूं सपनी भूँडो घणी आयो । जिणसूं म्हारी जीव फड़कां चढ़्यो । राजा थावस देवती थको बोल्यो—सपना रो आछो सोच करियो ! अं आळ-जंजाळ तो साव कूड़ा व्हे । सपनी सांमी कावळ आयोड़ी चोखी । सपना में भुगतियोड़ी दुख, सुख रा आसार बतावै अर सपना रो सुख, दुख पावण वास्तै सीवघानं करै । थने काई सपनी आयो ? बोल, म्है उणरो अरथ बतावूं ।

रांणी कह्यो—म्है सपना में म्हारी मां रो बैकूँठी निक-लतो देखो । म्हने म्हारी मां अबे-भबे ई बचती नों दीसै । म्हारी बिछोह उणरा प्राण लियां छोड़ैला । आप हुकम फरमावो

तो म्हेँ थोड़ा दिनां वास्तै पीवर जायनै मां सूँ मिळ आवूं ।

राजा ऊठनै बैठी ब्हियो । कह्यो—रांणी, थूं म्हेनै छोडने जावण री नांव ई मत लेजै । थनै जावणी है तो म्हेँ थारै साथै चालूँला । भलाईं आज ई वहीर व्हे जावां ।

बणावटी लाज री हळकी सी गुलाबी झांईं रांणी रा मूंडा साथै प्रगट व्ही । वा कह्यो—भलां, लोग कांईं कैवैला । लोक-लाज री थोड़ी घणी तो विचार करणो ई पड़ै । सगळा नगरवासी मन में जाणैला के नवी रांणी राजा साथै कामण कर दियो, जिणसूं वै अेक दिन ई अळगा नीं रै सकै । लोकीक सूँ डरती म्हेँ तो आ बात घणी सांतरी ब्हेतां थकांईं नीं करूं । आपरी आ इज इच्छा व्हे तो म्हेँ आज सूँ कदैईं पीवर जावण री नांव नीं लेवूँला । अबे इण मेल सूँ ऊभी आई नै पाछी आडी ई जावूँला !



रांणी छल्लगारी

रांणी राजा नें तौ आपरें पेटा री बात नीं दरसाई
पण आपरें माजना री अेक डावड़ी नें सगळी बात
बतायनं कह्यौ—जे थूं म्हारौ ओ कांम कर दियो तौ म्हें थनं
गळा री ओ नवलखौ हार बगसीस करूंला । मोत्यां री पळ-
पळाट करतो हार देखनं डावड़ी री मन तुरत डुळग्यौ । तो ई
वा ऊपरला मन सूं कह्यौ—आपरें खजांना री ई सगळी पुत्र-
परताप है । म्हने तौ आप ज्यूं हुकम फरमावौ त्यूं करणौ
पड़सी । किणी नें इण बात री कानौकानं भणक ई नीं
पड़ण दूं ।

रांणी नें डावड़ी रें कैणा माथें पूरौ भरोसी व्हेगौ । दूजें
दिन राजा सीस मेल में आयौ तौ कांई देखे के रांणी केस
छितरायोड़ी, आटी-पाटी लियां नीचें सूती है । राजा खुद हळ-
फळियो नीचें ई उणरें पाखती बँठग्यौ । पूछ्यौ—रांणी, कांई
बात व्ही ? थूं ओ भेस कीकर धारण करियौ । म्हने तुरत
बता, थारी कांई मंसा है ? म्हें तुरत पूरण करूं ।

रांणी कीं पड़ूतर नीं दियो । वा मूंडौ फेरनं दूजें कानौ
सूयगी । राजा फेर खथावळ में पूछ्यौ—रांणी, ओ रिसांणी
किण माथें ? कांई म्हारा सूं कीं भूल व्ही । म्हने अजेज बतावें
जकी बात कर । म्हारा सूं अबै नेहचौ नीं व्हे ।

रांणी तौ फेर जबाब नीं दियो । फगत आंख्यां सूं ठळाक
ठळाक आंसू ढळकावण लागी । वा डावड़ी पाखती ई ऊभी
ही । राजा सांमी देखनं पूछ्यौ—थनं कीं जाच व्हे तौ बता ।

बिना सुणियां म्हनै चैन नीं व्हे ।

डावड़ी नीची घूण करने बोली — जाच व्हेतां थकां ईं बात बतावै जैड़ी कोनीं । म्हने रांणीजी साफ मना करियो है । अबै आप हुकम फरमावो ज्युं करूं । राजा खथावळी में ऊभो व्हियो । डावड़ी री हाथ पकड़नै बारै अकांयत में लेजायने पूछयो — म्हनै थूं जाणें जकी बात तुरत बता । थने बतावणी पड़सी । रांणी किण माथै रिसायोड़ी है ? म्हनै उण दुस्मी री नांव तो बता । घांणी में पिलायदूं ।

डावड़ी पैला तो संको करियो । पछे नीची माथो करने होळें सूं बोली — आठूं रा आठूं राजकंवार रांणी माथै खराब निजर राखें । रांणीजी, मोकळी वार सगळां नै सावळ घर में समझायो-बुझायो, तो ईं वारो भूत नीं उतरियो । रांणीजी, अँड़ी अजोगती बात आपनै बतावणी वाजिब को समझी नीं । लाज अर लोकीक रै डर सूं वै आपरें कांनां ईं इणरी भणक नीं पड़ण दी । पण जद रांणीजी नै इण जाळसाजी री पतौ लागी के आठूं राजकंवर घात करने आपनै मारणी चावै, पछे रांणीजी साथै मनमांनो करैला, इण डर सूं वै ओ भेख धारण करियो है । म्हने तो इण बात री इचरज व्हे के उण रांणी री कूख सूं अँड़ा कंवर कीकर जलमिया !

बात सुणतां ईं राजा नै अँड़ी लखायो के जाणें आकास सूं सूरज तूटनै उणरें पगां तळें आयने पड़ग्यो है । उणरा डील में झाळ झाळ ऊठगी । माथो फुड़कली रै उनमांन घरणाटी चढ़ग्यो । उणरें पगां हेटा सूं धरती खिसकगी । सांस रै साथै जाणें बतूळिया ऊठण लागा । उणरी आंख्यां जगमगता खीरां रै

प्रमाण जगामग करण लागी । वो बाबळी ब्हियोड़ी आंधी रै वेग ज्यूं पाछी रांणी रै गोडे आयी । राजा री ओ रूप देखन डावड़ी तौ थर थर कांपण लागी ।

राजा रांणी रै पसवाड़े बैठन उएरौ हाथ झंझोड़तौ थकी बोल्यौ—रांणी, इत्ता दिन थूं म्हारा सूं चोज क्यूं राखियौ ? अंडी बात जाणतां थकां ईं थूं म्हारा सूं लुका-छिपी करी, आ थारी जबरदस्त भूल व्ही । म्हैं आं कुत्तां रा माथा घांणी में पिलाय देतौ । थूं ओ कांई संको करियौ !

रांणी राजा री हाथ पकड़ने बैठी व्ही । दुस्किया भरतौ थकी ई बोली—म्हैं जाण्यौ लोग कांई कैवैला । दुमात आतां ई राजा नै बस में कर लियो । छळ-छंद रचने राजकंवरां री आ दुरगत करी । साची बात री कुण पतौ लगा सकै ! सगळी रैयत में चक चक माच जावैला । म्हैं म्हारे बस पूगतां आठूं राजकंवरां नै घणा ई समझाया, पण वारौ तौ माथो ई भंग्यौ, वां सगळां नै आ कांई भूंडी सूझी ।

राजा रीस में भळभट ब्हियोड़ी बीच में ई बोल्यौ—अबै नीं तौ वारा माथा ई रवेला अर नीं वां सगळां नै ऊंची ई सूझैला । म्हैं आज ई वां दुस्ठियां री पापो कटाय न्हाकूला । ओ आपरी मां नै भूंडी निजर सूं जोबं अर आपरा बाप साथे घात करणी चावै ! म्हैं आं सरपणी रा बिचियां नै छाती सूं चेप चेप नै लांठा इण वास्तै करिया के मौकौ लाग्यां ओ म्हनै ई डसै ! इत्ता दिन म्हारी समझ माथै ई भाटी पड़ियोड़ी हौ । कित्ता भोळा दीसै, पण म्हनै आज ठा पड़ी के आं सगळां रा डील में लोई री ठोड़ विस भरियोड़ी है ।

रांणी बांझ्यां पूंछती थकी बोली—आप रीस रें पांण उतावळी में बेंडी हुकम मत फरमावो । आछी तरह खुद आपरी निजरां सूं इण बात री छांण-बीण तो कर लिरावो । पछे आपरें ज्यूं दाय पड़ै त्यूं करजो । सास्तरां में लिखियोड़ी है के लुगाई री बात माथें कदेई भरोसो नों करणो । इत्ता दिन म्हारी बात अर लोकलाज रा डर सूं म्हैं मूंडो बंद करियां मांय री मांय गोटीजती री । पण आपरें साथें घात करण री जाळसाजी री पतौ पड़ियां पछे तो म्हारा सूं को रैईजियो नों ।

रांणी अणूती चात्रंग अर छळगारी ही । राजा रा मन में ऊठण वाळी संकावां रौ वा पैला ई खुलासो कर दियो । मंत्री आठूं राजकंवरां माथें जीव देवता हा । रांणी इण बात नें आछी तरह जांणती ही के राजा रौ हुकम मुणतां पांण वें राजा नें समझावण री कोसीस करैला । जे राजा मानंग्यो तो ! आं सगळी रुकावटां रौ आगम समाधान सोचनं, वा पैला सूं ई बैड़ी बातां करणी ठोक समझो । नवी रांणी रूप री खान रै साथें कपट अर छळ-छंद री ई खान ही ।

रांणी री बातां सुणनं राजा उणरा गुण अर उणरी समझ माथें घणो ई राजी ब्हियो । कह्यो—रांणी, थारी बात माथें अभरोसो करनं म्हैं पुराणा सास्तरां अर लोगां री बातां माथें भरोसो करूंला, थूं म्हनं इत्तो नासमझ जाणें है कांई !

राजा नें जित्ती रांणी री समझ अर उणरें गुणां माथें भरोसो हो , रांणी नें उत्तो ई राजा री नासमझी अर उणरी मूढ़ता माथें भरोसो हो । वा पाटक अंत इज घणी हो । उणनं तुरत अकल सूझती । वा होळें नेठाव सूं कह्यो—आ

कोई मामूली बात नीं है । सगळी रैयत में चक चक माच जावैला । आपरी बदनामी व्हेला । कंवरां माथै सगळी रैयत झुरे है । कठई आ नीं व्हे के लोग उलट पड़े । आप पैला राज-मंत्रियां सूं सला सूत तौ कर लिरावौ ।

रांणी री आ बात सुणने राजा रै अंडी सूं चोटी तक झाळ झाळ ऊठगी । उणरा भंवारा तराग्या । कह्यौ—म्हारी हुकम सांप्रत भगवान ई नीं टाळ सकें । बापड़ा मंत्रियां री कांई जिनांत के म्हैं वारां सूं सला विचारूं । म्हारै जचगी जकौ लोह री लीक है । साची बात रै आगे म्हैं बदनामी री परवा नीं करूं । म्हारा बेटा व्हिया तौ कांई, राजा री न्याव सगळां माथै अक ई सरीखी लागै । रांणी, म्हारी अरज है के इण बात वास्तै थूं बोल ई मती । इत्ता दिन लुका-छिपी राखी जकौ ई घणी है ।

रांणी री तौ मनजांणी व्ही । राजा रै खरायां पछै वा क्यूं आगे बात नै खांचै । फगत राजा नै उकसावण वास्तै वा कह्यौ—दुमात होवण सूं नगरी रा लोग म्हारै वास्तै हजारूं बातां करैला, म्हैं वारी परवा तौ नीं करूं, पण म्हारी कूख सूं जायोड़ा नीं व्हेतां थकां ई अ आपरा तौ बेटा है; थोड़ी घणी ममता विचारौ अर आने मारण री हुकम मत दिरावौ, फगत देस निकाळी देयने ई मोटी विचारौ ।

राजा कह्यौ—रांणी थूं इण बाबत तौ कीं बोल ई मती । म्हैं कीं सोच समझनै, मन नै काठी करनै ई औ हुकम देय रह्यौ हूं । अंडा दुस्टियां री तौ छीयां भेटणा सूं ई पाप लागे । दुनियां में अंडा अकरमियां री अंस ई बाकी नीं रैवणौ

चाहीजे । जका आपरी मां माथे ई कुदिस्ती राखे, वांरी छीयां ई इण धरती माथे नीं पढ़णी चाहीजे । जे म्हें इण जुलम ने बगसूं तो म्हने ई इणरो घोर पाप लागैला । अेड़ा अकर-मियां ने राज दरबार में खुले आंम सगळी रेयत रे देखतां घांणी में पिलावणी सादळ है ।

पण आठूं राजकंवरां री चाल चलगत रांणी आछी तरें जाणती ही । आपसूं छोटी ने मां-जाई बैन अर मोटी ने आपरी मां करने मानता हा । सगळी परजा वांरे वास्तै तरजन तरजन करती ही । वै किणी री आंख में घालियोडा ई नीं खटकता हा । अर नीं वांने किणी तरें रो राजमद ही, नीं किणी भांत री करड़ावण ही । दया-माया अंत इज घणी ही । वगत माथे हर किणी रे कांम आवता । रांणी जाणती के राजकंवरां ने मारण रो हुकम सुणतां ई सगळी नगरी में हाको फूट जावैला । लोग आंधा होयने उलट पड़ेला । राजा ने राज-काज चलावणो मुस्कल व्हे जावैला । राजा तो उणरा रूप माथे बावळी व्हियोडी ही । उणने तो आगली-लारली कीं नीं सूझती ही । रांणी ने चोड़े खुले आंम मारणा सूं तो कीं मतलब नीं ही । वा तो बाले बाले ई आपरी कांम करावणी चावती । सांप ई मर जावे अर गेडो ई नीं भागे । वा तो उण डावड़ी सूं ई राजा री दवायती लेयने सगळो कांम सारणी चावती ।

आ बात मन में सावळ विचारने वा कह्यो—राजा, म्हें घणा दिनां तक इण मरम ने मन में छिपायां राखियो । पेला जद कदैई आप म्हने विलखी देखी अर आपरे बार

बार पूछणा सू ई म्हें आ कर्पन टाळ देती के म्हन परिवर री याद घणी आवे । म्हें तो फगत आं राजकंवरां रें डर सूं पोवर जावण री नांव लेवती ही । मां-बापां री हर तो अवस आवती, पण म्हारें दुख री खास कारण ओ इज हो । म्हें डरती आपनै कह्यो कोनीं ! दुमात होवणा रें कारण म्हनै पचासूं बातां सोचणी पड़ै । दुमात रें केई घया है । लोग तो हमेसां दुमात में ई खोड़ां काढ़ै, सावका बेटां री गलतियां सगळा अणदेखी करै । जे दुमात सावका बेटां नें सगा बेटां री ठोड़ नीं माने तो सावका बेटा किसा दुमात नें मां री ठोड़ माने । पण म्हें तो हाल ताईं आं सगळा राजकंवरां नें सगा बेटां रें बिरोबर ई गिनिया, इण कारण विगन रा डर सूं आपनै पेटा री साची बात बताई कोनीं । अबे सेवट काठी आंती आयनै म्हनै भेद परगट करणी पड़ियो ।

राजा चुपचाप रांणी री सगळी बातां सुणती रह्यो ।

रांणी फेर आगै कंवण लागी—इण नगरी रा लोग आं आठूं राजकंवरां माथे अणूता झुरै है । अेक बार लोग उखड़ गया तो पछै बस में करणा दौरा है । राज-काज संभाळण में हरदम खुड़को बणियो रेवैला । आज दिन तक आपरा राज में किणो तरे री कोई रोळी-दंगो नीं व्हियो । आ घणी नांमी उम्दा बात है । अबे म्हारें वास्तै आपरें जीव नें किणी तरे री घांदो नीं व्हेणो चाहीजै । अपाने कांम सूं मतलब है, रोळा दंगा सूं कांई करणी है । जे रैयत अेक बार ई बेकाबू व्हेगी तो पछे उण माथे लगांम राखणी भार पड़ जावैला । आपनै आपरा हुकम में थोड़ी नरमी बरतणी

पड़ैला । म्हैं आज आपनै चोखी लागूं, पण सेवट हूं तो पर घर री अर आठूं राजकंवार आज आपनै खारा लागें, आपरा अंस है । मौकौ पड़ियां विखा में काम आवैला । म्हारै माथै दया विचारनै आप सगळां नै देस निकाळी दे दो, फांसी री हुकम माफ करणी पड़सी ।

राजा री रीस में जाणै अक फेर उफांण आयौ । आंख्यां रातीचोळ करनै बोल्यौ—जका अकरमी म्हारै मारण री घात तकै, बै मौकौ आयां म्हारै विखा में कांई काम आवैला । अबे तो अक दिन री ढील करणी वाजब कोनीं । म्हनें धोखा सूं अ किणी वगत मार न्हार्क तो आ दया कांई काम आवै । आंरा लखण तो अंडा है के मरियां पछे आंरा नांव लेवणिया री ई पापी काट न्हार्कूं । नगरी रा लोग चाहै उल्टे, चाहै रोळा-दंगा करै, म्हैं आं दुस्टां साथै कोई रियायत नीं करूंला । इण बात वास्तं तो म्हनें थनै ई ओड़ौ देवणी पड़सी । इत्ता दिन धोखा में रैगौ जको ई घरणी है । थूं घापनै भूल करी जको म्हारा सूं चोज राखियो । भेद परगट करणी थारै सारै हौ, पण अबे उण माथै सोच विचारनै फंसलौ देणी म्हारै हाथ है । म्हैं तो सूरज ऊगियां पैला आंरौ खातमी कराय देणी चावूं ।

रांणी मन रा हरख नै दबावण री चेस्टा करती थकी कैवण लागी—आप थोड़ा धीमा दिमाग सूं विचार तो करी के इणमें म्हारी किस्ती धूळ उडैला । म्हारी किस्ती बदनामी व्हेला । आप तो अबारूं रीस में आंधा व्हियोड़ा हौ, इणसूं म्हारी बदनामी री अंदाज नीं लगा सकौ । जे आपनै इण हुकम माथै

ई डिढ़ रेवणी है तो पछै आं आठां रे साथे म्हने ई मारण री हुकम फरमाय दिरावौ । के म्है आपनै ठाडा दिमाग सूं नेक सला दूं उण माथे राज अमल करावै तो सांप री ई कादौ निकळ जासी अर लाठी री ई कीं नीं बिगड़ै । पछै रावळी मरजी व्हे ज्यूं करौ । राज में हुकम तो आपरी चालै म्हारै लिक लिक करणा सूं कांई व्हे ।

राजा नै रांगी री आ बात मन में खटकी । वो रांगी नै लाड सूं कह्यौ — रैयत माथे तो हुकम राजा री चलै, पण राजा माथे हुकम रांगी री चालै । पछै किरारी हुकम वत्तौ ब्ह्यौ । अबे थूं कंवैला जकी बात इज ब्हेला ।

राजा फेर कीं आगे कंवणी चावतौ के रोसनदान रा काच में अेक चिड़ी अर अेक चिड़ी मार टूंचां मारनै टच टच करता निगं आया । राजा नै उणी वगत पुराणी रांगी री बात याद आयगी के वा कीकर उण पैलकी चिड़ी नै इंडा देवण सारू सीस मेल में आसरौ दियौ । कीकर वा आपरा हाथ सूं साळ-संभाळ करती । पैलको चिड़ी रै मरियां पछै जद चिड़ी दूजो चिड़ी लायौ अर उणरै आतां ई कोकर आठूं बिचियां री दुरगत व्ही, जिणनं देखनं रांगी तो उण दिन सूं ई ढोळै बैठगी, पाछी संभी ई कोनीं । रांगी मरतो वगत म्हने राजकंवरां री कित्ती भुळावण दी ही । म्है उणसूं कांई वचन करिया हा । अै सगळी बातां राजा मांडनै रांगी नै बताई । रांगी चुपचाप ध्यान सूं सुणती री । सगळी बात सुणियां पछै वा होळै सूं कह्यौ — रांगी खराय खरायनं जित्ता

आप सूं वचन कराया , जे इणी भांत वा आपरै बेटां नै ई वचनां में बांध लेती के वै किणी भाव मरियां ई राजा रे साथै घोखौ नीं करे तौ आज आ नौबत नीं आवती । पण रांगी तौ मरती वगत आप सूं ई कोल करवायौ , आपरै बेटां नै नीं तौ वा कीं नसीयत दी अर नीं वारां सूं किणी बात रा कोल-वाचा लिया । कदास आ ई बात व्हे सकै के रांगी आपरै बेटां रे कांनां में आपरै साथै घात करने राज खोसण रो भुरकी न्हाकी व्हे । किणी रा जीव में तौ कुण जीव घाल सकै ?

चिड़ी अर चिड़ी उणी भांत फड़फड़ाटा करता , रोसनदान रे काच में टूचां मारता , मांय आवण सारू खपता हा । राजा रांगी दोनां नै इण बात रो अणूती अल्लावण अर जूझल छूटी । वै डावड़ी नै हेली मारनै कह्यौ—वां चंचल चिड़ियां नै अठा सूं उडाय दे , वै कणाकली माथौ पचावै ।

डावड़ी अक लांठी छड़ी लेयनै वां चिड़ा चिड़ी नै उडावण सारू खपी । चिड़ी डावड़ी नै कह्यौ—रांगी-मां नै अरज करी के म्हारी नवी चिड़ी नै ईंडा देवण सारू मांय सीस मैल में आवण दे । वा हठ झेल राख्यौ है । मोटोड़ा रांगी-मां पैलकै म्हारी पंली चिड़ी नै घणा लाड-कोड सूं मांय आळा में बिसांणनै उणरी घणी साळ-संभाळ करी ही । नवोड़ी चिड़ी आ सगळी बात जाणै है । वा कदसूं ई हठ झेल राख्यौ है के म्हें ई सीस मैल में ईंडा देवूला । म्हारी तरफ सूं नवी रांगी-मां नै अरदास तौ कर । जे वै नीं मानै तौ म्हारी किसी जोर है । म्हे यूं ई उड जास्यां । म्हानै उडावण सारू तक-

लीफ करण री कीं जरूरत कोनीं ।

डावड़ी जायने रांणी नै चिड़ा री वीणती सुणाई । पण मोटोड़ी रांणी रो गळाई इणरें दया-माया कोनीं ही । वा डावड़ी नै कह्यो—जा, चिड़ा नै कै दे के अठे फालतू चक चक करने मगजमारी करण री जरूरत कोनीं । जंगल में रूखां रे डाळे सगळा पंछी ईडा देवें, इण में नवी अर अजोगती बात कीं नीं । चिड़ियां नै रांणियां रा मेल में ईडा देवणा फबे कोनीं । माजना सूं पाछा उड जावो नींतर म्हें अबारूं माथे सिकरी छुडावूला ।

डावड़ी रा मूंडा सूं कुलळा समंचार सुणनै चिड़ा नै रीस तो घणी आई, पण जोर काई करे ! तो ई वो होमत करने खुद रांणी कने गियो । हाथ जोड़ने फेर घणी घणी वीणती करी—रांणी-मां, थोड़ी घणी दया विचारो । म्हें आपरो कीं बिगाड़ नीं करांला । म्हें घणौ मोद करने अठे आया हां ।

रांणी कह्यो—म्हें पुरांणी रांणी जैड़ी मूढ़ अर फूहड़ कोनीं । वा गरीब घर री, छान में रह्योड़ी राज मैलां री काई कदर को जांणती नीं । वा तो खुद फूस अर वाइदा सूं रंजियोड़ी ही । म्हने अं बातां परायें घर ई को सुहावें नीं । अठा सूं तुरत उडै जकी बात कर, नींतर अबारूं भूँडा हवाल व्हेला ।

रांणी री आ बात सुणनै चिड़ा नै ई रीस आयगी । वो कह्यो—मरियां पछे ओ सीस मेल छाती माथे को चालैला नीं । थने फूस वाइदो परायें घर नीं सुहावें, पण मरियां थारी इण कंचन काया री वानो व्हेला, जद वा कीकर

सुहावैला ।

बारूद रा कोठार में जाणै तिराग पड़ी । रांणी उचकनै चिड़ा नै मारण सारू झपटी । पण चिड़ी तौ फुर करती री उडग्यो । उडतो उडतो ई चिड़ी नै कह्यो—भाटा सूं कदे तेल निकळै । दया री भूरत मोटोड़ी रांणी तौ सुरग सिधई । आ रांणी तौ अणूतो चात्रंग अर पाटक है ।

चिड़ी उणरै लारै री लारै उडी । दोनूं ई उडता उडता राजकंवरां रै मैलां जायनै सरण ली ।

चिड़ा रै उडियां पछै रांणी विचार करियो तौ उणनै इण बात री पिछतावो ब्हियो के वा बिना बात चिड़ा नै नाराज क्यूं करियो ? राजा मन में जाणैला के रांणी जोव री बोदी है, उणरै हीयै दया-माया कोनीं । जे चिड़ा नै आसरो देय देती तौ राजा अवस मन में म्हारी सरा करतो के रांणी ममता वाळी है । पण अबं काई व्है ! चिड़ी अर चिड़ी तौ नाराज होयनै उडग्या ।

बात नै संवारण री चेस्टा करण लागी—म्हनै उण वगत चिड़ा री चक चक सूं ताव आयोड़ी हो । इण कारण बापड़ा नै झिड़क दियो । पण अबै म्हारी पेट बळै, बापड़ी चिड़ी कठै कठै रोवती फिरैला । अबं पाछा आय जावै तौ म्हें वारी पूरी पूरी साळ-संभाळ करूं । म्हारी मन साव काची है, किणो री ई दुख म्हनै झरै कोनीं ।

पण राजा तौ नीं चिड़ा चिड़ी रै उडणा री गिनरत करी, नीं रांणी रै काचा मन री बात नै ई पूरा ध्यान सूं सुणी । रांणी रै भूँडा सूं कंवरां री बात सुणियां पछै उणरा

मगज में तौ जाणै हजारुं बुग बड़ग्या व्है ज्यूं । माथी गणण गणण करण लागी । डील री नसां में जाणै बाळोड़ी कीड़ियां चेंटगी व्है ज्यूं । वो तौ आठूं कंवरां नै आपरी आख्यां सांमी मरता देखणी चावती ही । औ कांम व्हियां बिना उरणै तौ झख ई नीं पड़ैला । रात रा सूता री पलक ई नीं झपैला । पण रांणी रा अँ बोल ई उणरै काळजा में खटकता हा के हुकम दिराणी तौ आपरें हाथ है, वा तौ फालतू लिक-लिक करै । रांणी रें मन री बात टाळणी उणरै बस में नीं ही । वो जाणणी चावती के रांणी री कांई मंसा है । वो रांणी नै लाड सूं पूछ्यो—आ चिड़ी तौ अबै ईंडा देवेला, पछे वां ईंडां सूं राम जाणै कद बिचिया निकळैला, थनै तौ वारो सोच लागी है, परा म्हें तौ म्हारै जलमियोड़ा आठूं बिचियां री पापी काटरा रा सोच में हूं । औ सोच मिटियां ईं म्हनै चैन पड़ैला । थूं अबार कह्यो के सांप ई मर जावैला अर लाठी री ई कीं नीं बिगड़ैला, वो कांई उपाव है सो म्हनै तुरत बता ।

रांणी राजा रा मन में चम चाळनै खुद पाछी सिरकणी चावती हो, इण ख्याल सूं के राजा आपरा निस्चें में ढीलाई नीं करै । वा खुद नरम बणनै राजा नै अणूंतो काठो करणी चावती ही । जिणसूं मन चायो कांम ई व्है जावै अर उणरी दोसण ई आपरें माथै नीं लागै । वा पाप करनै ई राजा री निजर में बेदाग रैवणी चावती ही । मकड़ी जिण भांत अक माखी नै आपरा जाळ में फांदे, उणी भांत वा राजा नै आपरा कपट-जाळ में फांद लियो ही । अर उण अबूझ राजा नै

इण बात री चेतो ई नीं व्हियो । रांणो कँवण लागी — आप तो मांनो नीं हो, पण म्हेन काच में दीस ज्युं साफ दीस के कंवरों नै मारण री हुकम सुणतां ई सगळी नगरी मे लाय लाग जावैला । उण उखड़ियोड़ी रैयत माथै काबू पावणो दूभर काम है । पैला आप रैयत री धीजो पतियारण सारू कंवरों रै देस-निकाळा री ई हुकम फरमावो, जे ओ हुकम सुणनै नगरी रा लोग उखड़ै कोनीं, तो पछे वाने मारण री ई हुकम फरमाय दिरावो । पण म्हारे मन में तो सोळै आना बात जचियोड़ी है के आप कंवरों नै दीखतौ हुकम फगत देस निकाळा री ई दिरावो । म्हारे अक विस्वास री डावड़ी है । उणनै मरदानो भेख करायनै कंवरों रै सागें मेलदां । साथै कटोरदान में विस रै लाडुवां री संभाळ घालदां । वा आपरा हाथां सूं इण राज री सींव रै बारै वानै अ लाडू खवाड़ देवैला । खातां ई कंवरों री फूकां सांस निकळ जावैला । पछे वा आपरा हाथां सूं आठूं राजकंवरों नै खाडा बूच करनै पाछो आय जावैला । इण भांत नगरी में रोळी-दंगो ई नीं व्हेला अर आपरो मन चाही व्हे जावैला । मांनो तो म्हारी आ सला है, पछे राज री मरजो व्हे ज्युं हुकम दिरावै ।

रांणी री आ सला राजा रै पूरी पूरी हीयै ठूकगी । कह्यो — थारी बात नीं मांनूं तो पछे किणरी मांनूं । रांणो री हुकम सिर आख्यां माथै । तड़कै ई आं दुस्टियां री इण राज सूं काळो मूंडो होय जावैला । पण थूं उण डावड़ी नै पूरी खरायनै भुळावण दीजै । अँड़ी नीं व्हे के अ दुस्ती छळ करने बच जावै । जीवता रह्या तो हमेसां म्हारा जोव नै

खुड़की रैवेला । लाडुवां में विस अँड़ी मिळावाड़जै के होठां
लागतां ई प्राण मुगत व्है जावें ।

रांणी विलखी मूँडौ करनै होळै सूं बोली—म्हारी तौ
अबारुं ई पेट बळै, जीव अणूंतौ काचौ है, पण आपरौ हुकम
तौ म्हनै बजावणौ ई पड़सी ।

राजा कह्यो—समंदर री थाग लाग सकै तौ म्हारी गुण-
वंती रांणी री समझदारी री थाग लाग सकै । लारला जलम री
पुन्याई सूं म्हनै थारै जैड़ी रांणी मिळी ।



देस निकाळी

दूजे दिन तडके राजकंवरां रें देस-निकाळा री बात सुणतां ई सगळी नगरी साथै जाणें पाळी पडग्यो । रेंयत री सगळी खुसियां लोप व्हेगी । लुगायां, टाबर अर बूढा-ठाडा सुणियो जका री ई माथी अर डील सुन्न व्हेगी, जाणें वारें माथाकर बाण वेंगी व्हे ज्यू । वै बेरा अर बगना व्हियोडा राज दरबार में उमड पड़िया । जाणें समंदर पगां हालियो । मंत्री ओ चाळी देखियो तो वै राजा कने दौडिया । कह्यो—अंदाता ओ कांई हुकम फरमायो ! अेकर म्हांरा सूं सला तो विचार लेता । आठूं राजकंवर तो किणी रें आंख में घालियोडा ई नीं खटकै, अेंडा साळस अर दूध जेंडा निरमळ राजकंवर तो जलमतां जेज लागें । सगळी नगरी रा लोग दरबार सांमी आयनं भेळा व्हिया है । वै आपसूं फरियाद करणी चावें के आं कंवरां साथै वानें ई देस निकाळा री हुकम मिळ जावें । सगळा लोग सुणतां पांण सीधा अठे दौडता आया । लारें चिडी री जायो ई नीं बचियो । म्हांरें तो कीं समझ बेठी नीं के ओ कांई व्हियो, कीकर व्हियो !

राजा नै मंत्रियां री बात सुणनं अेंडी रीस आई के जाणें पेट्रोल रा कुंड में तूळी लागी व्हे । उणरी आंख्यां रातीचोळ व्हेगी । फुरणियां अर होठ फरूकण लागी । भंवारा तणग्या । दांत किटकिटावती बोल्यो—इण राज में हुकम म्हारो चालेला के थां लोगां री चालेला । म्हें घणा दिन भोळप में रह्यो । थें सगळा ई जाळसाजी में कंवरां रें भेळा

क. २२

हौ । थां लोगां रें भिड़कावणा सूं ईं अं लोम अठे अड़वड़िया है । पण अबे थें म्हनैं घोखौ नीं दे सकौ । म्हारी आंख्यां खुलगी है । आं दुस्तियां री म्हें मूंडी तक नीं देखणी चावूं । ओ वेंगा सूं वेंगा इण राज बारे निकळै जकी बात करी , पछे म्हारा सूं सला विचारणा री मन में लावौ , पैला म्हें अेक हरफ ईं नीं सुणणी चावूं । जावौ फुरती करी ।

मंत्री कांईं पड़तर देता । वें सगळा हाक्या-बाक्या होयनैं आंख्यां फाड़ता राजा रें सांमो जोवण लागा । वानें तो सपना में ईं ठा कोनीं के कंड़ी जाळसाझो ! राजा कंवरां री मूंडी क्यूं नीं देखणी चावें ? सगळा गताधूम में पड़ग्या ।

राजा इण भांत मंत्रियां नें अबोला देखिया तो उणरी वेम पक्को व्हैगी । पग पटकती बोल्यौ—घणी नें जाच नीं पड़े पण चोर री मन तो जागें । थां सगळां रा मूडा थाप क्यूं खायग्या ? जवान सूं बोल क्यूं नीं निकळै ? जे थें सोना री जात खरा व्हैता तो थानें कांईं डर ! पण झूठ रा पग काचा व्है ।

मंत्री हाथ जोड़नैं कंवण लागा—आप नें कीं वेम व्है तो म्हानें आपरा हाथ सूं जेर दे दिरावौ , पण अेंडी कळंक मत लगावौ । म्हें तो सगळा आपनैं भगवानं अर बाप री ठोड़ मानां इण में आपनैं कांईं फरक निगै आयौ ? म्है सपना में ईं आपरें साथै दगो करण री विचार करियो व्हें तो म्हानें नरक में ईं ठोड़ नीं मिळै । सगळी रैयत आपरी पूजा करै । म्हानें बात व्है जकी खुलासं दरसावौ ।

राजा तो ईं नीं पत्तीजियो । रांणी सूं वत्ती वौ किण साथै

भरोसो करे ? उणनै मंत्रियां री साची बात में ई छल निजर आवतौ । उणनै चारुं कांनी आपरै साथै जाळसाजी रा ई आसार निजर आवता । वो थोड़ी सौ धीमी पड़ने कह्यो— जे थें सपना में ई जाळसाजी नों विचारी व्हो तो सबसूं पैला आं कंवरां नै इणो सायत देस निकाळौ दो । सगळो रैयत नै समझावो । बात बतावे जैड़ी कोनीं, थारो पूछणो बिरथा है । जे म्हने भगवान अर बाप री ठोड़ मानो तो म्है कैवूं ज्यूं करो । नीतर म्है जाणूला के थारे पेटे पाप है ।

मंत्री अक दूजा री मूंडी जोवण लागा । राजा री इण उगती री कांई जबाब देव ! अँड़ा देव रूपी राजा री ओ कांई ढाळो व्हियो ! वाने साफ लखायो के नवी रांणी राजा नै काठो मंतर लियो है । राजा माथे रांणी री नसो छायोड़ो है । कैड़ी ई साची बात राजा रै होयें नों ठूकला । पण दोखती आंख्यां ओ अन्याव कीकर सहन करे ? जोवती माखी कीकर गिटै ? नवी रांणी तो आवतां ई कँड़ा कबाड़ा करिया ? वे अकर फेर हीमत करने कह्यो— म्हारै पेटे पाप है के नीं , वो म्हारा सूं छांनो कोनीं । पण अबे म्हारें ई साफ होयें बंठगी के आपरै नवी रांणी री रंग लागी है । ओ रंग इण राज में घणा रंग लावला । भूँड री ओ ठीकरो म्हारें गळें बंधियो जको तो ठीक है , पण अबे आ चाकरो म्हारा सूं बण नीं आवे । कंवरां रै साथै आप म्हाने ई देस निकाळो समझो ।

राजा घणो ई भिमरियो । पण मंत्री तो अक ई टेक राखी । वे आपरै आपे अवजळ रह्या । राजा नै चढ़े अर

उतरै । वो रीस में जोर सूं पण पटकती बोल्यो—रांणी रंग लावैला के नीं लावैला , आ तो आगै री बात है । पण थें सगळा तो आपरा लखण दरसाय ई दिया । आ नवी रांणी म्हारी आंख्यां रो जाळी काटियो । म्हें तो सगळां नै ई घोळी घोळी दूध जांणती हो पण म्हनै आज ठा पड़ी के म्हें सांपां नै दूध पायो , जकी वै ई वगत माथै म्हनै डसण री चालां करै । आ रांणी व्है अर म्हारी आंख्यां खुलै । म्हनै इक्कोस आंना पतियारी व्हेगो के थें सगळा म्हनै मारण री जाळसाजो में भेळा हा ।

मंत्री इण बात रो कांई पडूतर देवता ! धणी री धणी कुण ? बात साव निपग्गी व्हेतां थकां ई राजा नै कांई ओड़ी देवे , वारै कीं समझ बैठी नीं । हाथ जोड़नै होळें सूं अरदास करी—वगत आयां आपनै सगळी जाच पड़ैला के आज रें दिन आपरी आंख्यां खुली कोनीं , रांणी रें रूप रो जाळी आंख्यां री जोत नै बंद करदी है । पण आज इणी सायत तो आपनै म्है भवै ई सूझता नीं कर सकां । इण खातर वेम री निपग्गी बातां रो जबाब देवणौ बिरथा है ।

राजा री कोप. बीजळी ज्यूं कड़कण वाळी हो के जोग री बात आठूं ई राजकंवर अचांणचक रा उठें आयगा ।

राजा रीस में उफणती बोल्यो—म्हें आं दुस्टियां री छीयां तक नीं भेटणी चावूं , आंरो मूंडो तक नीं देखणी चावू । देस निकाळा री फरमाण निकळियां पछें अै राजमैल में आवण री हीमत कीकर करी ?

राजकंवर राजा अर रांणी नै दंडवत प्रणांम करियो ,

बारें पगां में माथी निवाथी । हाथ जोड़ने नरमाई सूं अर-
दास करी—आप म्हांरो मूंढी नीं देखणी चावो ओ तो सावळ
है, पण म्हे बिना दरसण करियां जावां तो म्हांने सपना में
ई चैन नीं पड़ेला । इण खातर आवण री गुस्ताखी करी
जकी माफी चावां ।

मंत्री आखता पड़ने कवण लागा—म्हांरो गुस्ताखी नै ई
राज माफी बगसावे । आज सूं आठूं राजकंवरां री अर म्हांरो
अंजळ भेली व्हेला ।

राजकंवर सगळा मंत्रियां नै बरजता थका कवण लागा—
आप सगळा समझदार हो, म्हांरा बडेरा हो । आपने ओड़ी
देतां म्हांरें मूंढे फबे कोनीं । इत्ती ताळ सगळी रैयत नै ई
नीठ समझाई । आपने समझावण री म्हांरो बूतो कोनीं ।
माईतां री हुकम मानणो ई टाबरां रे वास्तै सरब सुख है ।
माईत सदा टाबरां री भली ई चींत्या करे । म्हांने तो इण
हुकम री कीं दुराजो कोनीं । किणी नै म्हांरें पखे बंधण री
जरूरत कोनीं । माईतां री हुकम अर वारी पगधूळ माथा माथे,
टाबरां री माया-संपत्त आ इज है । भगवान् सूं नित म्हांरो
तो आ इज अरदास है के म्हांने सदा इण जोगा राखे के
म्हे माईतां री हुकम राख सकां, म्हांरें वास्तै वारी हुकम हो
राज है, वारी हुकम ई म्हांरो देस है । माईतां रा हुकम
में ई म्हांरें वास्तै सरब आणंद बसे । इण हुकम में
रांझी पटकणवाळा म्हांरें सारू दुखदाई है । म्हे तो
म्हांरा भाव दरसाया । समझदारां नै समझावता म्हे कोजा
लागां ।

मंत्री काई जबाब देवता ! वाने नीं तो राजा री बात समझ आई, नीं कंवरां री बात हीयै ठूकी । करै तो काई काई करै ! राजकंवर तो उठा सूं वहीर व्हेगा । मंत्री पूत-लियां रै उनमान उठै ई ऊभा रह्या । कंवरां रै अदीठ ब्हियां राजा डग डग हंसियौ । खिखरां करती कंवण लागी—मीठी बोली री चासणी सूं आंरा खोटा करम खरा नीं व्हे सकै ! मोरियो घणो ई मोठी बोलै पण काळिंदर ने गिट जावे । दुस्टी बातां तो कंडी मीठी मीठी करै, पण मांय रा मांय बाप ने मारण रा करतब रचै ! अबै म्है इण मीठी बोली सूं भरमीजूं कोनीं ।

पछे वो मंत्रियां ने कह्यौ—यूं भड़भोल्यां ज्यूं मूंडौ टेरियां ऊभा काई हो ? जावो आं दुस्टां ने काळी भेख करायने काळा घोड़ा माथे बिठायने, लीला पग अर काळी मूंडौ करने अठा सूं भूखा तिरसा रवाना करौ । नीं करौ जित्तै म्हारौ काळजौ ठाडो नीं व्हे । फुरती सूं पाछा आयने म्हने ओ सुभ समंचार देवो तो पछे म्है पांणी पीबूला ।

मंत्री घणा दौरा पग उठावता उठा सूं वहीर ब्हिया । के तो वारा पग हेटे चिप गया व्हे ज्यूं, के पगां रै माथे मणां बंद बोझ आयने पड़्यौ व्हे ज्यूं ।

राणी राजा ने होळें सूं मूंडौ मस्कोर ने कह्यौ—आंरै पगां सांमी देखने आप आंरै मन री बात नीं जाण सकौ ? कंवरां रै बोल अर मंत्रियां रै पगां में कित्ती मेळ है !

राजा कह्यौ—म्है सब बातां समझूं हूं, म्हने समझावण री जरूरत कोनीं । थूं म्हारी आंख्यां री जाळी काट दियो ।

अबे सब सुभट दीसे है, दिखावण री जरूरत कोनीं ।

रांणी मूंडी उतारनै कह्यो—म्हारी बदनामी री तो अबे नीं कोई छेह है नीं कोई पार ! नित नवी नवी बातां उडैला । बांरी बोझी म्हारा सूं तौ झेलणी दीरी है । मर जावूं तौ अं बदनामी रा फंद कटे ।

राजा उणरी पूठ सहळावतौ बोल्यो—भली मांणस, जूवां रे डर सूं कठे ई धाबळिया फेंकीजै ! हाथी नै चाहोजे के वो आपरी मस्ताई में चालतौ रैवै, भुसतोड़ा कुत्तां री गिनरत नीं करे ।

अठीनै राजा री ओ कैणो ब्हियो अर उठीनै राज दर-बार रे सांमी अड़वड़तौ बेसुमार मांनखी अकण सागे जोर सूं पुकार करी—राजाजी सूं सांप्रत मिळियां बिना राजकंवर अक तिल जित्ता ई आगे नीं बध सकैला । राजकंवरां रे साथै आज सूं दरबार म्हां सगळो रैयत री ई उछाळी समझे ।

ओ हाको सुणनै राजा री मन कीं मोळी पड़ियो । वो उठै जावण सारू मतौ करियो । रांणी कह्यो—अबारूं तौ आप फरमावता के हाथी नै कुत्ता रे भुसणा री गिनरत नीं करनै मस्ताई सूं आपरी चाल चालतौ रैणौ चाहीजै, तौ आप अबे खुदोखुद इण भुसणा री परवा क्यूं करौ ।

राजा पड़ूतर दियो—म्हने अकर इण हाका री जबाब तौ देवणी पड़सी । म्हेँ रैयत री ओ तोतक म्हारी निजरां देखणी चावूं । थूं मन में किणी बात री संकौ मत आणें, म्हारी फरमाण मरियां ईं पाछी नीं फिरैला ।

चात्रंग 'रांणी तुरत जबाब दियो—म्हें मन में संकौ लावूं,

आप आ किसी बात कही ? म्हारा तो जीव में हाल आ ई जच के आप मोटो विचारो अर कंवरां नै डराय धमकायनै सुपथ माथे ले आवो । आ इज बात आपरै वास्तै साबळ रेवैला । जाब्तो राखतां थकां कंवरां नै समझाय-बुझायनै सीधा-सराक कर दिरावो । रैयत काबू में आवणी दौरी है । आपरा जीव नै घणी घयो व्हेला ।

राजा कह्यो—रैयत नै काबू राखणी ई राजा री काम है । अं सगळी जुगतां म्हनै आवै, थूं नेठाव राख । इणी सायत घांदो निपटायनै पाछो आवूं ।

राजा रांणी नै तो नेठाव राखण री कह्यो, पण खुद री जीव जागा छोडण लागी । अंडी अळझाड़ उणरा जीव में ओ पेली ई आयो हो । राजा मन में आगो-लारी सोचतो रैयत सांमी जांवण नै वहीर व्हियो । मंत्रियां रै गळाई उणरा पग ई जाणै हेटै झिलग्या व्हे ज्यूं । पण तो ई राजा ऊपर सूं रोब जतळावती पूरण अकड़ाई रै साथै रैयत रै सांमी गोखड़ा में ऊभो व्हियो । रैयत राजा नै देखतां पांण इण गत हाको करियो जाणै समंदर जोर सूं गरजियो । राजा नै मीट लग मानखो ई मानखो निजर आवती । राजा आपरा जीवण में थाळी तिरायां तिरै जैडी अर तिल उछालियां हेटै नीं पड़ै वैडी भीड़ आज आपरी आंख्यां सूं देखी । कानां मुणी जकी बात सांप्रत निगै आई । राजा री कांई बिसात के इण उमड़ियोड़ा समंदर माथे काबू पा सकै । राजा तो खुद ई आपरा काबू में नीं रह्यो । राजा घणी ई नेखम रैवण री चेस्टा करी, पण उणरी जीभ, उणरी मगज अर उणरी काळजौ उणरा बख में ई नीं रह्यो ।

वो रैयत नै कड़कती वांणी में डाट-डपट करणी चावती के फेर कदैई वा इण भांत भेळी नीं व्है । अकला न्यारा आदमी नै धमकावणी अर उएनै डरावणी कित्ती संल कांम है, पण रैयत रा इण उमड़ियोड़ा समंदर माथे काबू पावणी कित्ती दूभर हौ । काबू पावणी तो अळगौ, राजा तो इण उछाळा मारता समंदर नै देख डरण लागी ।

राजा रमेकड़ा रै उनमांन अठी-उठी घांटो हिलाई तो उणरी निजर कंवरां माथे पड़ी । काळा गाभा पेरियोड़ा आठूं राजकंवर काळा घोड़ां री लगामां पकड़ियोड़ा ऊभा हा । बै रैयत नै समझावण री चेस्टा करता पण वा तो बेताव व्हि-योड़ी ही ।

राजा सांमी देखनै रैयत फेर जोर सू हाकौ करियो । जाणै अंक लांठी छौळ उण छोर सू इण छोर तक गरजती पार व्हैगी । अंक सुर में पुकार करी—राजकंवरां रै देस निकाळा री कारण कांई ? औ फरमांण पाछी ली, नींतर म्हांरो ई उछाळी समझी ।

राजा नै अंडी लखायो जाणै उणनै अलेखूं सिंघ चौतरफ सू घेर लियो है । उणरा लिलाड़ माथे परसेवा री बूदां झळ-कण लागी । काळजी अर होठ धूजण लागा । गळा में जाणै डूंजी बंधगी व्है ज्यूं । आख्यां सांमी झांवळा आयग्या । वो अंक मंत्री नै हाथ री सांनी करने आपरै पाखती बुलायो । उणनै डरती डरती होळै सू कह्यौ—पूछी आं लोगां नै के अठे भेळा क्यूं व्हिया ? देस निकाळा री फरमांण काढ़्यौ तो म्है काढ़्यौ । राजा रा फरमांण माथे इण भांत भेळा होयनै पुकार

करणी बेकायद है । म्हने अंडी बातां सुहावै कोनीं । साफ डूंडी पिटायदो के आज तो मते मते अड़वड़ने भेळा व्हिया जको तो माफ करूं पण फेर कदैई आ रंगत व्ही तो जाणै जैड़ी करूंला ।

मंत्री तो मन ई मन राजी व्हियौ । ती ई उपरला मन सूं मूंडो उतारनै पूछ्यो—आइंदा तो राज री मरजी व्हे ज्यूं करजो, पण आज काई उपाव करां जको फरमावो, म्हारे तो कीं समझ नीं बेंठे ।

राजा अटकती अटकती बोल्यो—इत्ती बात ई समझ नीं बेंठे तो पछे मंत्री क्यूं बणिया । म्हें तो राजा हूं । देस री धनी हूं । राज चलावणी थांरी काम है के म्हारी । इण भीड़ नै फुरती सूं आप आपरें ठिकाणें रवांना करो । आं अलेखूं जिनावरां री कोजी मिचळांद सूं म्हारी तो माथी चढ़ग्यो । जे अठे आया तो न्हाय धोयनै क्यूं नीं आया ? राजदरबार में सुथराई सूं हाजर होवणी चाहीजं । यूं गलीच री गळाई लर-ड़ियां रे उनमानं भेळा होयनै में में करणी मिनखां री काम नीं है । इण मिचळांद सूं म्हें बेचेतें व्हेगो तो आ जोखम कुण ओढ़ेला, पैला वो घणी म्हारे सांमी आवे । म्हने तो लखावै के म्हारा प्राण निकळ जावैला ।

राजा सोच्यो इण मिचळांद रा डर सूं रैयंत चुपचाप आपरी मारग लेय लेवैला । राजा रे बेचेतें री बात सुणतां ई रैयत नै चेतो होय जावैला । कित्ती सैल बात है, पण तो ई मंत्रियां नै को सूझी नीं ।

मंत्री सोच्यो वगत माथे ई अकल री जाच पड़े । राजा कंडी कुलळी बात करो, अंडी बात तो अबूझ बाळक ई नीं

सोच सकै । पण वो मन में अणूती राजी ब्हियो के जे आ
डूंडी पिटवाय दूं तो मन जाणी व्है । रांणी रै रूप में आंधा
ब्हियोड़ा राजा री अेक पलक में आंख्यां खुल जावै । राजा
नै हाथोहाथ इणरौ परचौ मिळ जावैला । वै तो राजा नै
दूजी बार पूछ्यो ई कोनीं । झट डूंडी वाळा नै पाखती
बुलायने राजा कही जकी बात समझाय दी ।

डूंडी वाळौ जोर सूं डूंडी ठपकारनै हाकौ करियो — सुणौ
रे नगर-वासियां सुणौ, थें राज दरबार में बिना न्हायां-धोयां
भेळा क्यूं ब्हिया ? थांरी भूंडी मिचळांद सूं राजाजी री माथौ
चढ़्यो । पून रै समचै थें अठा सूं उड जावौ; नींतर थांरी
खैर कोनीं है । जिनावरां रै गळाई बिना सोच्यां बिचारियां
भेळा क्यूं ब्हिया ? राजाजी री हुकम है, दोड़ना ई निगे
आवौ ।

डूंडी वाळा री ओ कंणौ ब्हियो अर रैयत में खलवळ
माची, जाणै समंदर में तूफान आयौ ! रैयत कह्यौ — जिरा
राजा नै रैयत री मिचळांद आवै, उणरा राज में ईं म्हानै
नों रैवणी । म्है तो कंवरां रै साथै ई ओ राज छोड देवांला ।
राजा-रांणी पछे अेक दूजा री सौरम लेता रंजी ।

हालौ, हालौ री हाक माथै हाक ऊठी । हालौ, कंवरां रै
साथै हालौ । राजा री आंख्यां सांमी अंधारी आयगी । कानां
रा पड़दा फूटण लागा । बेचेत होयने पड़णवाळौ हौ के मौका
माथै रांणी उणनै झाल लियो । थावस देवती बोली — यूं
डरपियां काम नीं चालै, थोड़ौ गाढ़ राखौ ।

राजा हलफळतै कह्यौ — डरे कुण, आं लरड़ियां सूं कुण

डरै ! फगत आंरी मिचळांद सूं म्हारी माथो गरणाटी खाय रह्यो है ।

चात्रंग रांणी राजा री समझ माथे तरस खावती बोली — खैर, छोड़ी इण बात नै । अबै आं कंवरां रै बिना खुद भग-वान ई इण रैयत माथे काबू नीं पा सकै । वै चावै तो इण भीड़ नै समझाय सकै । कंवरां नै हुकम फरमावो, नींतर राज री पाटियो पलट जावैला ।

रांणी नै तो पेंला ई काच में दीसै ज्यूं दीसतो हौ । राजा में इत्ती अकल तो ही के वो कैतां पांण रांणी री बात समझग्यो । सांनी करने कंवरां नै पाखती बुलाया । इग्याकारी कंवर हाथ जोड़ने राजा रै सांमी हाजर व्हिया ।

रैयत री सगळी रीस राजा कंवरां माथे झाड़ी । रीस में कड़कती बोल्यो—दुस्तियां म्हारा सूं लारला भो री कांई आंटी है । थें म्हारी रैयत नै म्हारै खिलाफ ई सिळगाई । बेटा होयनै थें म्हनै ओ परचो दियो । आपरै हाथां सिळगा-योड़ी लाय नै अबं थें ईं बुझावो । म्हें कीं नीं जाणूं । रैयत नै भेजियां पछे थें ईं थांरो काळी मूंडो करो तो म्हनै सुख री सांस आवै । म्हारो मूंडो कांई जोवो, फुरती करो ।

कंवर राजा री इण बात री कांई जबाब देवता ! हाथ जोड़ने कह्यो—म्हें किणी बात री ओड़ी नीं देवणी चावां । आप जको फरमावो सो साच है । आपरी बात नै मानण रै सिवाय म्हानै कीं दपूचा नीं लेवणा । मरती वगत मां म्हानै आ अेक ई भुळावण दी ही । म्हे तो मरियां ईं उणरी बात नीं टाळां । आप करो जको न्याव अर आप फरमावो

जकी साच है ।

राजा री रीस में भळै छमकी लागी । कह्यो—म्हने अब मीठी बातां सूं भरमावण री चालां मत करो । म्है थारें मन रा भावां नै समझूं हूं । म्हारो कँगो नीं टाळी तो अब फुरती सूं इण रेंयत नै ठिकाणें सर लगावो ।

राजा रे कैंतां ई सबसूं लांठोड़ी कंवर रेंयत सांमी मूंडी करने कंवण लागी—बेलियां, आप सगळा म्हारें मंगळ अर म्हारी भलाई री खातर भेळा व्हिया, इणरी म्हाने घणी मोद है । पर दरअसल आपरें सोचणा में जकी भलाई अर मंगळ री बात है, वा म्हारें सोचणा में दुख अर क्लेस री बात है । म्हारी मां म्हानें मरती वेळा आ इज सीख दीवी के बाप माथो उतार लेवें तो ई ओड़ी नीं देवणी । बाप री हुकम मानणा में ई बेटां रें सरब सुख अर सरब आणंद है ! जे म्हारी दिवगंता मां री आतमा नै आप सांयत पोचांणी चावो तो म्हारी फगत आ इज अरज है के आप सगळा आप आपरे घरे पधारो । इण वास्तै म्हानें आप सूं दूजी वार अरज नीं करणी पड़ै, म्हारी आ इज बीणती है ।

मोबी राजकंवर री बीणती री अँड़ी जादू व्हियो के कंवर नै कैंतां जेज लागी अर सगळी रेंयत नेठाव सूं बिना कीं कह्यां सुण्यां उठा सूं वहीर व्हेगी ।

रांणी राजा रें कान में होळै सूं कह्यो—कंवरां रें भिड़-कायोड़ी रेंयत कैंतां पांण मानगी । म्है तो पैला ई लखगी ही ।

राजा माथो हिलायने हुंकारो भरियो—हूं ! रेंयत रें अदीठ

व्हेतां ईं राजा नै पूरो चेतो व्हियो । उणरो आपो संभळियो । दरबार में अबे फगत राजा, रांणी, मंत्री, आठ काळा घोड़ा, नै काळी भेख धारियां आठ राजकंवर अर रांणी री मरजीदांन डावड़ी मरदांनी भेख धारियां आपरै घोड़ा समेत ऊभी ही ।

राजा रांणी रै रूप में इत्तो बावळी अर गरक व्हियोड़ी हो के उणरा मगज में आ ई बात नीं बैठी के जे कंवरां रा मन में राव-रत्ती ई छळ-कपट व्हेतो तो जाळसाजी करण रो इण सूं फेर वत्तो कांईं मौकौ हाथ लागतो ! कंवर थोड़ी सी सांणी कर देता तो रैयत रो औ समंदर सगळा राज नै गिट जावतो । राजा रांणी रो कीं जोर नीं चालतो । अेक पलक में ज्यूं राजकंवर चावता ज्यूं होवणो पड़तो । खुद भग-वान ई उण होवणा नै टाळ नीं सकतो । सगळा राज रो खाकौ ई पलट जावतो । अेक अबूझ टाबर री समझ में आवण वाळी बात ई राजा रै ध्यान में नीं आई । रांणी रो बात सूं उणरा उफांण में इदकी आंच लागी । वो मंत्रियां नै कह्यो—वैंगा सूं वैंगा आं सरपां रा मूंडा काळा करी । इण राज री सींव लग अे सगळा भूखा तिरसा ई जावैला ।

पछै डावड़ी सांमी इसारो करने कह्यो—औ हाजरियो खुदोखुद आनै सींव रै बारै काढ़ैला । साथै री संभाळ नै अे राज रै बारै खाय सकै, पैला नीं ।

औ फरमाण देयनै राजा-रांणी तो आपरै मैलां दाखल व्हिया । सगळा मंत्री छबरां छबरां आंसू ढळकावता आठूं कंवरां नै वहीर करिया । मंत्रियां नै अेड़ी लखायो के वारो जीव देह सूं बारै जाय रह्यो है । पण जोर कांईं करता ।

सगळा कंवर वाने आ ई सीख दीवी ही ।

आठूं ई कंवर काळा घोडां माथे असवार हीयने उण डावड़ी रे धके धके वहीर व्हिया , राजोखुसी अर मुळकता थका । वारा मूंडा माथे रंज री नांव-निसाण तक नीं ही ।

नगर रा परला फिळा माथे सगळा नगरवासी कंवरां सूं मिळण सारू उठे ऊभा हा । वाने देखतां ई ठळाक ठळाक रोवण लागा , जाणे सांवण री काळी कळायण बरसी व्हे । उण देवी री कूख सूं जायोडा कंवरां रा आज अे हवाल ! काळी भेख , काळा घोडा अर ओ देस निकाळी ! आं कंवळां फूलां री परदेस में कांई गत व्हेला ।

कंवर सगळी रेंयत सूं गळे मिळने वहीर होवणो चावता , पण वा निकांमी डावड़ी कह्यो—म्हने राजा री हुकम कोनीं , फुरती सूं चाली , फालतू रा आं ढपलां में कांई सार ! सेवट पेंडो तो हालियां कटंला । कूडा छिपलां में कीं आंणी जांणी नीं ।

राजकंवर उणरे कंतां ई बोला बोला वहीर व्हेगा । सगळी रेंयत डुसकिया भर भरने रोई ।

इत्ता में कांई रासो व्हियो के वे दोनू चिड़ी अर चिड़ी आपरी टूंचा में आळी झालियां कंवरा रे पाखती उडता उडता आया । छोटकियो राजकंवर आपरा हाथ में आळा ने थामियो । चिड़ी कह्यो—जद आप ई मेल छोडने जावो तो पछे म्है किणारे भरोसं रेवां । म्है दोनू ईडां समेत आपरे साथे चालस्यां । राजकंवर उणरी वीणती मानली ।

रेंयत मन में जाणियो के उणरे बिचे तो अे चिड़ा चिड़ी

सभागिया है जकौ कंवरां रै साथै जाबै । पण कंवरां रै
बरजियां पछै फेर हठ झेलण री हीमत नीं व्ही ।

सगळी रैयत निरीताळ तक घोड़ा री टापां सूं उडती खेह
रै बिचाळै कंवरां नै भर भर मोट निरखती री । उडती खेह
रै बिचाळै काळा घोड़ा साथै बैठा राजकंवर अँड़ा लागता जाणं
आंधी रा आसण साथै काळा बादळा इण नगर सूं अळगा जाय
रह्या है ।

देखतां देखतां वै बादळां रा टुकड़ा मगरा री ढळांत भें
अदीठ व्हेगा । फगत झीणी झीणी खेह उडती ही । हुसकिया
भर भरने सगळा नगरवासी विलखा होयनै आपरै ठायै ठिकाणै
बोला बोला गुमघांम वहीर व्हिया ।



सुगन चिड़ी

छोटकिया राजकंवर रै काळा फेंटा में चिड़ी रै ईडां
रौ आळी सुथराई सूं घरियोड़ी हो । घोड़ा रै फर-
गटे चालतां थकां ई वां ईडां नै अल ई नीं आवतो ही ।
चिड़ी अर चिड़ी राजकंवरों रै माथे उडता जावता हा । डावड़ी
रौ घोड़ी सबसूं लारे दौड़ती हो । आपरी जलम भोम अर बाप
रौ राज छोड़ने राजकंवर असेंघे दिसावरां री सोय में मन करै
जठिनै ई घोड़ा बगडावता जा रह्या हा । वाने तो फगत
आपरै राज री सींव लांघणी हो । इण सींव में तो वाने
खावण पीवण री ई मनाई हो ।

इण भांत दौड़तां दौड़तां तीन दिन बहेगा । हर घड़ी अर
हर पल नौ ई घोड़ां रा असवार दौड़ता जावता । दिन ऊथ्यो
अर रात ढळी, रात ढळी अर दिन ऊथ्यो, राजकंवर तो
आंधी रै उनमांन दौड़ता ई रह्या । हर छिण रै सागे जलम
भोम अळगी सिरकती री । यूं दौड़तां दौड़तां सेवट राज री सींव
लांघण आई । अबे तो हांकरतां नवा राज री कांकड़ आवण
वाळी ही के मारग में झाड़ माथे डावे कांनी सुगन चिड़ी
सूंण माड़ा कर दिया । सगळा घोड़ा उणो ठोड़ ठमग्या ।
सुगन चिड़ी रै सुगन दियां बिना घोड़ा तो आगे सिरकै ई
नीं । राजकंवर घणो ई मानतांवां बोली पण सुगन चिड़ी तो
आपरी जागा छोड़ी ई नीं । घरे आवतां डावी अर दिसावर
सिधावतां सुगन चिड़ी जीमणी घकै तो मन जांघ्या आछा सुगन
बहे । पण पारवती रौ अवतार आ सुगन चिड़ी तो परदेसां

जावतां डावै माल्हे है , पछे कीकर आगे बघणी आवै ।

सगळा घोड़ा अर सगळा असवार भाटा री पूतळियां ज्यूं सागं ठोड़ ऊभग्या । कंवरां रां भूखा-तिसायां प्राण नीसरता हा । कंवरां रै देखा-देखी चिड़ी अर चिड़ी ई चुगो पांणी नीं करियो । मरदानी भेख करियां अकली डावड़ी पड़ूदी रा लाडू गटकावती ही अर दीवड़ी में भरियोड़ी ठाडी पांणी पीवती ही । डावड़ी कने दो कटोरदानं हा । अक में तो आठ कंवरां सारू आठ विस भरियोड़ा लाडू हा अर दूजा में उणरै खावण सारू पड़ूदी रा लाडू हा । दीखणा में साव अक जैड़ा , कोई सनागत नीं कर सकै के आं दोनां में किणी भांत री फरक है । जोग री बात के डावड़ी रा कटोरदानं में खावतां अबै फगत आठ इज लाडू बचिया हा । डावड़ी री कटोरदानं रूपा रौ अर राजकंवरां री कटोरदानं सोना री हो । रांणी जाण करनै कंवरां सारू औ अमोलक कटोरदानं डावड़ी ने सूप्यो हो , जिणसू के मन में किणी भांत री अभरोसो नीं न्है । कंवरां ने तो माटी री पारी खातर ई वेम को उपजतौ नीं । पण चिड़ा ने सगळी बात री जाच ही । इण वास्ते ई वो कंवरां रै सागं आवण रौ मतौ करियो हो । मारग में वो नीं तो किणी ने चरचा करी अर नीं डावड़ी ने ई इण बात रौ खुड़को होवण दियो के चिड़ी सगळी जाल-साजी जाणै है ।

सुगन चिड़ी जिण झाड़ माथै बैठी हो , उण छंडै थोड़ी भांय माथै ई अक नाडी सांमी दीसती हो । हबाहब हबोळा भरतौ ठाडी अर निरमळ पांणी ! पाळ माथै बड़लां री जाडी छीयां !

परसेवा में लथोबथ डावड़ी संपाड़ी करने बिसाई खावणी चावती ही । नाडी रै परलै तीर नवा राज री सींव ही । अबै उणरा मन में खाथाई तड़फा तोड़ण ठूकी ही । सगळा कंवरां री खातमौ करने इनांम इकरार पावण सारू वा नवी रांणो रै पाखती अणजेज पूगणी चावती ही । अक छिए री मोड़ी ई उणनै खटती नीं हौ ।

डावड़ी खथावळ दरसावतो राजकंवरां नै कैवण लागी — भला मिनखां, थोड़ी घणौ तौ विचार करी के थें देस निकाळै जावता अबै किसान सुगन मनावो ! सुगन अर करम तौ धापनै माड़ा हा जद ई बाप री राज छोडणी पड़ियौ । अँ मूढतां री बातां छोडो अर धकै चालो । थारै साथे म्हनै ई क्यूँ देस निकाळो भुगतावो ।

चिड़ी तुरत सुगनचिड़ी रा सुगन विचार लिया के अँ सुगन तौ डावड़ी सारू माड़ा है । राजकंवरां वास्तै तौ आज री घड़ी फेर काँई बिगड़ै । वौ उकरास लगायनै लाडुवां री अदळ-बदळ करने डावड़ी नै विस रा लाडू खवावणी चावती हौ । पण मारग में वत्ता घड़ता होवणा सूँ चिड़ा री तजबीज पार नीं पड़ी अर वौ मारग चालतां डावड़ी नै सावचेत ई नीं करणी चावती हौ । आज दोनूँ लाडुवां री गिणती बिरोबर ही । चिड़ी आं सुगना री बात फट लखग्यौ । डावड़ी रै साथे वौ खुद ई चालण री खथावळ करी । साळस राजकंवर कैतां पांण दोनां री बात मानग्या ।

सुगनचिड़ी रै खराब सुगनां रै उपरांत ई सगळा इण राज री सींव नै लांघनै परला राज री सींव में वड़ग्या । अक घेर

धुमेर पीपळी री जाडी छीयां में बिसाई खावण बंठा । डावड़ी पसीना में घाणमघाण व्हियोड़ी ही । उणरी जीव बिखरती ही । मरदांनो भेख धारण करियो तो काई, ही तो लुगाई री जात ई । संपाड़ी करियां बिना उणरा प्राण नीसरता हा । पण सगळां रै सांमी खुला में न्हावै तो भेद परगट होवण री डर ।

वा मिस बणावती कहाँ—अठे चौड़ा में हवा घणो बाजै नाडी री आड में अबारूं खंखोळी खायनै आवूं । चिड़ी तो आ ही बाट जोवण सारू ताखड़ा तोड़ती ही । आठूं राजकंवर ई हाथ पग धोवण सारू खोजा टांकनै नाडी में वड़ग्या हा । डावड़ी आड री ओट में अेकांत झीलण सारू आपरें मतै अेकली ई वहीर व्हेगी ही ।

चिड़ी तो लियां दियां बंठो हो । सांतरो मौकी देखनै वो फुरती सूं फटाफट कटोरदांनं रा लाडू अदळ-बदळ कर दिया । ओ खिलकौ रचियां पछै वो नेठाव सूं नाडी में पांणी पीवण सारू उडियो । घापनै पांणी पीयो । पांखां फड़फड़ायनै च्यार-पांच झिकोळा खाया ई ।

डावड़ी खंखोळी खायनै तुरता-फुरत पाछी वळी । संपाड़ी करियां पछै भूख रै कारण उणरा आंतरड़ा कुळण लगा । वा तो किणी री मान-मनवार नीं करी । रूपा रा कटोरदांन सूं आधो लाडू तोड़नै झट मूंडा में धरियो । लाडू धरतां ई वा तो पाछी चुस्कारो ई नीं करियो । ज्यू बैठी त्थूं ई फोट खेलगी । देखतां-देखतां डोल लीलौ-चम पड़ग्यो, आंख्यां रा डोळा बारें आयग्या । ठोड़ ठोड़ दापड़ उपड़ग्या । थोड़ी ताळ तो वा बंकूठी व्हे ज्यू बैठी री, पण हवा री अेक जोर सूं

झोली आयी अर वा जमीं माथे गुड़गी ।

राजकंवर सगळा दौड़ने उणरै पाखती आया । अकचकिया होयनै वे अेक दूजा री मूंडो जोयी । चिड़ा नै पूछथो—
अचाराक आ काई अजोगती बात व्ही ?

चिड़ी कह्यो— इण में अजोगती कीं नीं, साव फबती अर चोखी बात व्ही । मरद रा भेख में आ नवी रांणी री खास डावड़ी ही । आप सगळां नै छळ सूं विस रा लाडू खवा-इणी चावती ही । पण इणने हाथोहाथ आपरै करमां री फळ मिळग्यो । वा भूल सूं थारै लाडुवां री संभाळ गटकायगी । इणने तो अठै ई पूरो इनांम-इकरार मिळग्यो ।

पछे चिड़ी अर चिड़ी वे विस भरियोड़ा लाडू धूळ में पटक दिया, पांखां फड़फड़ायनै वाने धूळ में रगदोळ दिया । राजकंवर कह्यो— आ तो आपरी करणी मुजब भुगत लियो । पण अपाने तो इण मिनखा देह री किरियाकरम करणी ई पड़सी ।

आठूं राजकंवर आपरै हाथां सूं लकड़ियां भेली करी अर डावड़ी नै दाग दियो । पछे संपाड़ी करनै सूरज भगवान नै पांणी चढ़ायो । तठा उपरांत तीन दिनां रा भूखा अेक अेक लाडू खायो । चिड़ा चिड़ी ने ई चूण चुगायो ।

चिड़ी कह्यो— सुगन चिड़ी इण डावड़ी री खातर अपाने सुगन को दिया हा नीं । इण अेकली री खातर अपां सगळां रा अपसूंण व्हिया । पण डावड़ी रा मन में गुमेज हो के इणरो कुण काई बिगाड़ सकै ! आपरै हाथां आक बोयी जिणरो फळ उणने तुरत मिळग्यो । अपारै नगर सूं ई म्हुने इणी बात री

सोय ही । इण खातर म्हे दोनू आपरै सागें आया । नवी रांणी रें आयां आपरै राज अर आपरी रैयत रा दिन-मान खराब आयग्या । आप लोगां रें जाणा सूं तौ सगळा राज में रह्लि-यारो माच जावैला । आप लोग जठें जाबौला, फतै रा डंका है । आ अेक बोचली घाटी ही, जको आप लांघग्या । अबै कांई डर कोनीं । दिन आयां सगळी बातां सिरै हो जासी । पण ओ विखौ तौ ज्यूं त्यूं काटणौ पड़सी । पुराणो रांणी री पुन्याई री गिणिया दिनां सूं आपनै फळ मिळैला । अबै म्हे दोनू जणा अठै ई जंगळ में रैवास करस्यां । अंडी सुथरी ठोड़ म्हांनै हाथ नीं आवैला । ओ हरियो वन, ओ इमरत पांणी, ओ फळ-फूलां सूं लदियोड़ा रूख अर आ सुहांणी कुदरत ! म्हे तौ अठै ई सांतरै रूख रा डाळा में आळी घालनै ईडां नै सेवांला । म्हांरी तौ आपनै आ अेक ई सीख है के साच अर न्याव री पंथ मत छोडजौ । कित्तौ ई विखौ अर संकट पड़ै तौ ई इण पंथ सूं डिगजौ मती, आखोर में सगळी बातां भली व्हेला । आज दिन तक जिण सुमारण ऊपरां चालता रह्या, वो ई मारण आपरै वास्तै सिरै है । आपनै अधरम अर कूड़ रा राज सूं देस-निकाळी व्हियौ है । साच ई आपरौ घर है अर न्याव ई आपरौ देस है ।

राजकंवर कह्यौ — म्हां हर सांस रें समचै थारी सीख नै याद राखस्यां । थूं म्हांरै साथै जको गुण करियो उणनै ऊमर भर पांतरां कोनीं । अबै म्हे म्हांरी मारण लां ।

आ कैयनै सगळा राजकंवर आपरौ भेख पलटियो । काळा घोड़ा आया उण दिस सांमी पाछा तगड़ दिया । खुद पाळा ई

उठा सूं वहीर ब्हिया । चिड़ा चिड़ी सूं विदा लेतां वारी आख्यां जळजळी ब्हैगी ।

आठूं भाई साच अर न्याव री संपत साथै लेयने दूजा राजा री सींव में वहीर ब्हिया । सांझ री तिगूं मिगूं उजास हो । पंखेरू चुगो पांणी करने आप आपरा आळा में हरख सूं चैचाट करता पाछा वळता हा । मून तपसी ज्यूं वन रा रूख जाणै सिझ्या बांधता ब्है । अंधारी चोर री गळाई लुकती छिपती जमीं साथै घेरो घालण सारू चापळती हो । अर तीतर रख-वाळां री भांत बोल बोलनें सावचेती दरसावता जाणै आपरौ फरज निभावता हा । हाडां री जान कांव कांव करती पांखां पसारती वन रे सरणै इण भांत उडती आवती जाणै वारै लारै कोई वार आती ब्है ज्यूं ।

इत्ता में सबसूं मोबी राजकंवर मून तोड़नें दोनूं छोटकिया राजकंवरां सांमी देखनें कह्यौ—थें दोनू हाल नैना टाबर हो । फोड़ा विखा ने थांरी कंवळी डील झेल नीं सकैला । थानै नानेरे सावळ पौंचायनें भै पछै निरांत सूं इण लांबी चौड़ी दुनियां में रम जावां । थें म्हारै साथै कसाली काढीला, घणा दुख पावौला । दो तीन साल नानेरे रह्यां पछै भै थाने पाछा संभाळ लेवांला । म्हारी कैणी मांती ती नानेरे आराम पावौला ।

छोटकियौ कंवर बीच में ई बोल्यौ—औ आपरौ बडापणी अर माईत पणी है । सो बरसां पछै ई भै ती आप सूं सदा छोटा ई रेवांला । विखौ, फोड़ी अर संकट अबै ती साथै ई भुगतांला अर साथै ई टाळांला । आपसूं न्यारा होयनें म्हानै किसी अमर होवणौ है । अबै जीवांला ती साथै अर मरांला

तौ साथे । आप म्हांरी मुळगी चिंता छोड दौ । आपरै साबे ई म्हांरा सरब-सुख आणंद है ।

मोबी राजकंवर कह्यो—मरती वेळा मां म्हनै थां दोनां री घणी घणी भुळावण दी ही । जिण सूं मां रा बोल म्हनै अबारूं याद आयग्या ।

छोटकियौ राजकंवर बोल्यौ—नवी मां नै अपां सगी मां सूं ई सवाय में जाणी, कदैई उणरी बात नीं टाळी । उणरी खुद री छीयां रै प्रमाण हरदम हाजरी में ऊभा रह्या, उणरी सांनी माथे प्राण देवता, तौ ई वा अपां सूं औ कांई बदळी लियौ । अपां उणरौ कांई बिगाड़ियो । सगी मां रौ कह्यौ टाळ देवता, उणनै केई बार ओड़ी देवता, पण नवी मां वास्तै तौ सपना में दरसायोड़ी बात ई नीं टाळी । आपरा कपटझाळ सूं सगळी रैयत नै वा दुखी करदी, राजा नै काठो भरमाय लियौ । इणसूं उणरै कांई हाथ आयौ ! फगत बद-नामी रौ ठीकरौ अर रैयत री रोस ।

मोबी राजकंवर लाड सूं समझावतौ कह्यौ—माईतां रा काम में खोड़ अर चूक बाढ़णी टाबरां रौ काम नीं है । अपांनै तौ हमेसां औ ई सोचतौ रैवणी चाहीज के वारा सूं कदैई ऊंधौ काम नीं व्हे ।

सगळा भाई इण गत लारलो बातां रौ सूत उळझावता सुळझावता जावता हा के मारग में वाने अेक जंगी बड़ला रै हेट उदई रौ षड़बौ निगै आयौ । मथारै थोड़ी सी जटा बारै निकळियोड़ी ही । वं सगळा उणी सांयत समझग्या के कोई तपसी तापतौ हौ, वो आपरै ध्यान में मगन हौ के उणनै

उदई घेर लियो । तपसी तो फगत आपरा तप में डूबोड़ी हो ,
उणनै काया री कीं चेतो नीं रह्यो । सगळा डोल माथे चारूं
कांनी उदई लागगी । तपसी तो हिलियो नीं कोई डुलियो ।

राजकंवर होळें होळें उदई नै खेरी । नाडो री निरमळ
पांणी लायनै तपसो री काया नै संपाड़ी करायो । सात दिन
तक निरग्णा तिरसा रेंयनै वै तपसी रा पग दबावता रह्या ।

आठवें दिन तपसी पलकां उघाड़ी । जठिनै जोयो उठिनै
सूखा ब्रच्छ हरा व्हेगा । नवी कूंपळां नवा फूल अर नवा
फळां सूं सगळा रूख अर बांटका संवरग्या । सूखा झरणा खळ
खळ नीर रळकावता बहण लागा । बरसां सूं रड़वड़ती हाड-
कियां माथे निजर पड़तां ईं वै पूरण देह रें साथे जीवती
जागती व्हेगी । कठिनै ईं हाडकां रा हाथी बणग्या , कठिनै
कड़कोड़ां रा ऊंट बणग्या , कठिनै हंस अर बुगला बणग्या ।
देखतां-देखतां केई अजगर , केई सांप , केई सूवा , तीतर ,
कबूड़ा , कागला , गिरजड़ा , चीता , सूअर , सिंघ , स्याळ ,
छाळीनारिया , बळद गायां अर घोड़ा इत्याद भांत-भांत रें
जिनावरां री मेळो मचग्यो । हाथी तपसी नै सूंड सूं प्रणांम
करियो , नवी जीव बावड़ियां सिंघ तपसी रें पगां में लुटियो ।
सरप अर अजगर तपसी नै सीस नवाया । तपसी री दोठ री
औ अजब नजारो राजकंवरां नै सांप्रत दीसियो । राजकंवर तो
इण नजारा सूं चकन-बकन व्हेगा ।

तपसी री आदेस

आठूं राजकंवर हाथ जोड़ियां तपसी रै सांमी ऊभा हा । तपसी तो मूंडी देखतां ईं वारी सगळी बातां समझग्यो । आंख्यां रातीचोळ करतो बोल्यो—उण रांणी री कूख सूं जायोड़ां री नवी रांणी आ दुरगत करी । अर मूढ राजा इणरी बातां में बिलमायग्यो । थां सरीखा दूध रै धोयोड़ा राजकंवर आज ओ विखी भुगतै ! थें केवो तो अबारूं वांनं अेक दीठ में भसम करदूं ।

तपसी फेर ईं कीं आगे कैवती हो के आठ राजकंवर उणरै पगां पड़ता बोल्यो—बापजी , उण पैला तो आप म्हांनै भसम करदो । बेटां रै कारण माईत भसम व्हे , आ बात सुणतां ईं म्हांरो तो मरण व्हेगो । माईतां री हुकम ईं म्हांरै वास्तै राज अर सुख है ।

राजकंवरां री बात सुणियां तपसी अणूतो राजी व्हियो । वारै माथै हाथ फेरतां कह्यो—बारै बरसां तांईं म्हाँ इण विघ तापियो । डील माथै सगळं उदई जमगी जका री ईं म्हांनै चेतो नीं व्हियो । बिना खायां , पीयां अर सोयां म्हाँ भगवानं नै सिंवरती रह्यो तो ईं बारै बरसां में म्हाँ म्हारा रोस नै काबू नीं कर सकियो अर राजा रै घरं जलम लेयनै ईं थें रोस माथै फतै करली ; थें तो लारला जलम रा कोई लांठा रिसी मुनि दीसो । आज सूं म्हाँ थांनै म्हारा गुरू थरपूं ।

राजकंवर फेर तपसी रै पगां में माथी निवायनं कैवण लागा—आपरा स्त्री मुख सूं आप ओ कांई फरमावो । कीड़ियां

कदे ई मणां बंद बोझ झेल सकें । म्है तो आपरें पगां री छल हां । आप जेड़ा गुरू री सेवा रो मौकौ हाथ लाग तो जलम सुधरें । आपरी सेवा माथे दुनियां रा राज नै वार फेंकां । हाथ जोड़ने आपने म्हांरी आ इज अरदास है के म्हां जड़मतियां रा मन में ग्यांन रो जोत जगावौ । म्है आज सूं आठूं भाई आपरें सरणै हां ।

तपसी उदार मन सूं कैवण लागी—कदेई भगवानं म्हारें तप रा वरदान में थाने ई तो नीं भेजिया ? थारें हाथ रा परस सूं म्हारो भगती सुफळ व्ही । कठेई किणी कुमाणां सूं पांनो पड़ जाती तो सगळो तप अकारथ जावतो । भला , नेक अर सालस मिनखां सारू सगळी दुनियां घर रें उनमान है । थारो तो जावो उठे ई घर है , पछे कैणां देस निकाळो ! थारें वास्तै नीं तो कोई देस है अर नीं कोई परदेस ! थें कैवो तो थारें वास्तै अठे ई सोना रा आठ मेल चुणाय दूं , हीरा मोत्यां सूं भंवारा भराय दूं , फगत म्हारें ध्यान करनै चीतण री जेज है । थें ठोड़ ठोड़ क्यूं भटकता फिरो ?

राजकंवर कहाँ—आप तो म्हांरा गुरू हो , आपरा बोलां नै म्हें लोप नीं सकां । मिनख री सुख हीरा-मोती अर सोना में नीं है । दुख , विखी , फोड़ा अर कसाळा बिना मिनख री कंचन-काया निखरें कोनीं । मिनख री सुख नित रा जूझण में है । बिना कळाप रें सोना री भाखर हाथ लाग जावें तो इण में कांई सुख ! जे हीरा-मोत्यां रो नांव ई सुख है तो पछे मोत्यां रा खजांना भेळी संखियो खायने मरजाणौ ई सिरें है । मरियां पछे मिनख रा काम धंधा बंद व्हे । अर जे

कांम , धंधा अर कळाप नीं करणा री नांव ई सुख है तो इणरी पूरण आणंद मरणा सूं तुरत मिळै । जकी मिनख जीवतां ई कांम करणी बंद करने मौज मनावणी चावै , वो तो मरिया समांन है । कांम में हरदम थुड़णा री नांव ई जीवण है ।

तपसी मुळकनै कह्यो—बारै बरसां लग तपियो तो म्हैं, अर उणरी ग्यांन थारै हाथ लागी । म्हनै बातां करणी चाहीजै जकी थें करो । म्हैं तो हाल निपट ठोठ रंगो । फगत करामातां रा हुनर हाथ लागा । साचैली ग्यांन नीं मिळियो । चावूं जकी चावना पूरण कर सकूं । वेमाता रा लिखिया लेखै मेट सकूं । अणहोणी बातां कर सकूं । थारै अेक बरस वास्तै अणूंती विखो लिखियोड़ी है । थां चावो तो सगळी विखो मेट दूं अर चकवो राज सूप दूं , नींतर करमां रै हिसाब सूं थामें पूरा फोड़ा पड़सी । म्हैं थारी सेवा बंदगी सूं घणो राजी हूं ।

मोटोड़ी राजकंवर कह्यो—महै किणी लाळसा सूं आपरो सेवा नीं करो । महै तो फगत म्हांरी फरज निभायो । आप तो म्हांनै फगत औ आसीरवाद दो के महै सुपंथ चालता नीं डिगां नीं डरां , साच अर धरम माथें हमेसां डिढ़ रैवां , कूड़ , अधरम सूं मरियां ई पल्लौ नीं भेटां , लोभ अर मद रें गळा-कर नीं नीसरां , कर सकां तो किणी री भलाई इज करां । किणी नै संतावणा बिचै तो मरणी सावळ है ।

तपसी कह्यो—पूरो पतियारी अर विस्वास व्हेतां थकां ई म्हैं थारी सावळ परख करणी चावती हौ । सोना में खोट व्हे सकै पण थारा मिनखीचारा में कीं कसर कोनीं । म्हनै तो

इचरज न्है के राजघरांणा में पळियोड़ा कंवरां रा मन में अँ बिचार कठा सूं आया । औ सगळी पुरांणी रांणी री कूख री परताप है । थाने कीं आदेस करण री म्हें गरब नीं करूं, पण तो ई मौका माथे मन में कमजोरी नीं वापर जावे, म्हारी बात याद राखजो । दुनियां में आणंद फगत साच अर सुपंथ में ई है । म्हें तो बारें बरसां रा तप में आ इज बात जांणी है । थें बिना भगती अर तप रें ई म्हारा सूं वत्तो बातां जांणी । म्हें जांणियां पछै आरें माथे अमल करूंला पण थें जांणी ई हो अर वारें माथे अमल ई करी हो । पण मन री गत हमेस अेकसी नीं रेंवे । उणरी चंचळता अर लाळसा पग डिगाय देवे । उण वगत म्हारी बात याद राखजो के उदई खायोड़ी अेक तपसी, समाध उघड़ियां कीं सीख री बातां बताई हो ।

आठूं राजकंवर हाथ जोड़तां थकां कह्यो — आपरो आदेस म्है हमेसां याद राखांला । सूतोड़ा सपना में ई नीं पांतरां । म्है हाल अबूझ बाळक हां, आप जैड़ा गुरुवां सूं म्हाने घणी घणी बातां सीखणी है ।

इत्ती वंतळ करियां तपसी आळस मोड़ती ऊभो व्हियो । दो अेक उबासियां खायां पछै बोल्यो — बेटां, बारें बरसां सूं म्हें भूखो अर तिरसो हूं । थें म्हने आज घापने सिंघणियां री दूध पायदो ।

सगळा राजकंवर हुकम मिळतां ई सिंघणियां री सोय में वहीर व्हिया । अर थोड़ी ताळ में आठूं ई भाई आठ सिंघणियां लायने तपसी रें सांमी हाजर करदो । तपसी घापने

दूध पीयो । थोड़ी ताळ ताई सोच विचार नें कैवण लागी—
 बारें बरसां लग इण दुनियां सूं अळगी रह्यां पछे आ दुनियां
 घणी सुवावणी लागे । दुनियां रें जंजाळां सूं मुगती पावण
 सारू बारें बरस तप करियो, पण इण उपरांत आ दुनियां
 तो सांमी घणी मन मोयो । म्हनें तो इण अखंड मून समाध
 में फगत आ अेक छोटी बात समझ में आई के जप-तप, ध्यान,
 भगती इत्याद अे सगळी बातां इण दुनियां रें लारें ई आछी
 लागे । जीवणा सूं वत्ती सुख अर आणंद इण संसार में फेर
 कीं नीं है । कुत्ता री जूण जीवणी ई मरियां पछे सुरग अर
 देव लोक रा आणंद सूं घणी वत्ती है । मिनख रा जीवणा में ई
 सगळा धरम, करम, भगती अर ग्यान है । जीवणा जीवणा में
 फरक व्हे सके, आ बात म्हें मांनूं । सगळा संसार रें ग्यान री
 सार बात म्हनें तो आ इज निगै आई के कीकर ई करनें मिनख
 री जीवणी सुधरे । सुरग, नरक, भगवान, देवी देवता, धरम
 करम, पाप अर पुन सगळा इण दुनियां में ई है । मिनख
 री करामातां री छेह नीं है । वो चावे तो गिगन में अेक
 सूरज री ठोड़ दस सूरज बणा सके, अेक चांद री ठोड़ दस
 चांद बणा सके, चावे तो अेक पलक में दुनियां नें मार
 न्हाके अर चावे तो सगळा संसार नें अमर बणाय देवे ।
 मिनख ई इण दुनियां री बिरमा, विष्णू अर महेस है । वो
 ई इण दुनियां री परमेश्वर है अर वो ई इणरी विनास करण
 वाळी राकस है । बारें बरसां सूं म्हें जिण जीव री मुगतां
 करणी चावती, म्हारे फगत वो इज हाथ लागी । आ सगळी
 माया अर ओ सगळी परताप इण जीव री ई है ।

थोड़ी ताळ रुकने तपसी फेर कंवण लागी — थां लोगां ने म्हारी आ दूजो सीख फेर है के थें हमेसां आप जंडी पराय गिणजो । थारां जीव री खातर किणी दूजा रा जीव ने मत संताजो । जिण बात सूं थारा जीव नै दुख उपजै वो दुख कदैई किणी नै मत दीजो । जका हित्यारा जीवां नै संतावै वारा सूं हमेसां सांमनी करजो । तीजी बात थें खुद आछी तरह जांणी हो तो ई थाने बतावूं । थें कह्यो जकी बात सोळे आंना सावळ है के इण दुनियां में कळाप करणा अर दुख उठावणा री नांव ई सुख है । जूझणी मिटग्यो उण दिन समझलो के जीवणो ई मिटग्यो । थें आज सूं ई न्यारा न्यारा फंट जावो । न्यारा न्यारा जूझी अर न्यारा न्यारा ई कळाप करो । पूरो अेक बरस बीत्यां म्हारे कने आज रें दिन पाछा इणी ठोड़ आजो । आठूं दिसावां में मन करे उठीने जावो परा । सब आप आपरै आपै जूझो । किणी रा भरोसा माथे जीवण बितावणो निबळापणो है ।

सबसूं छोटकियो राजकंवर कह्यो — आप तो सांप्रत म्हारे मन री बात बांचली । म्हें खुद अझारूं आपने आ ई अरदास करणी चावती हो ।

मोटोड़ी राजकंवर कह्यो — म्हाने मोच नांव छोटोड़ा भाइयां री ई हो । म्हाने मां आंरी घणी घणी भुळावण दी । पण जद अे आपरै आपै जूझण सारू तैयार है तो म्हाने इणरो घणी मोद है । आपरा सगळा ई आदेस म्हारी सिर आख्यां माथे है ।

पछे उणी सायत आठूं ई राजकंवर तपसी रा पगां में

माथो निवायनै न्यारा न्यारा आठूं दिसावां में वहीर व्हेगा ।
पाछा इणी दिन उठै आवण रौ कौल करग्या ।

कोई बीसेक पावंडा वहीर ब्हियां पछै सगळ्या राजकंवर
अेकण सागै लारै मुड़नै फेर तपसी नै प्रणांम करण सारू जोयौ
तौ वानै उठै कीं निगै नीं आयौ । तपसी तौ जाणै कठै ई तुरत
लोप व्हेगो व्हे ज्यूं । विचारण लागा—आ कुण कांई माया रची ?



पैली राजकंवर

पैली राजकंवर झळ दिसा [जगूण] सांमी
वहीर व्हियो , दूजो परियाण कूट सांमी , तोजो
लंकावू दिसा सांमी , चौथो निरांत कूट सांमी , पांचवो आश्रण
दिसा सांमी , छठो पंचाद कूट सांमी , सातवो घुरावू दिसा सांमी
अर आठवो राजकंवर लांणी कूट सांमी वहीर व्हियो । तपसी
रें लोप व्हियां पछे वै सगळा भाई अेक दूजा रें सांमी अठी-
उठी देखण लागा । जळजळी आंख्यां अर होठां माथै मुळक रें
सागै वै अेक दूजा सूं बिछड़्या । थोड़ी ताळ पछे सगळा ई
आंख्यां री दोठ सूं मुळगा ई अदोठ व्हेगा । असैंधा अर अछेही
पंथ माथै आप आपरै आपै चालण हूका । इत्ता बरसां में
ई वै पैली वार न्यारा व्हिया हा । भाइयां रें विछोह अर मां
रें झुरावा नैं चीत्यां सगळा ई पंथ चालता ठळाक ठळाक
रोवण हूका । रोवता जावता अर पंथ चालता जावता । उण
वगत रोवणी अर चालणी दोनूं ई जरूरी हा । जे अेंडी वगत
ई आंख्यां नीं बरसैं तो पछे भिनख रें मन री ओ अदीठ अर
अथाग समंदर किण दिन वास्तै !

सगळा भाई आप आपरै दुख अर बिखा री राव - रत्तो
ध्यान नीं करने अेक दूजा री कुसळ - खेम मनावता , आगै
बघता जावता । माथै अछेही आभा में अेकली सूरज दीखती ही
अर धरती ऊपरां पगां हेटै रा अनंत मारग माथै अेकला राज-
कंवर आप आपरो पेंडो पार करता हा । झरणां री निरमळ पांणी ,
कंदमूळ अर बनफळां री अेंडी अकथ स्वाद व्हिया करै , इण पैला

वाने सपना में ई औ चेतौ नीं हो । वै सोचण लागा के भाटा डगगर खिड़कने मिनख क्यूं तो परकोटा चुणावै, क्यूं छातां बिछावै, क्यूं आंगणा घड़ावै । परकोटा सूं अनंत दिसावां बंधे, वारो अंत आवै, छातां बिछावणा सूं अछेही गिगन री छेह आवै, झिल-मिलता अणगिण तारा अर रूढ़ी चांद लोपीजं अर आंगणी घड़णा सूं अगम धरती रा घड़बा खांचीजं, कुदरत सूं नातो तूटै, बिरखा, हवा अर तावड़िया री तोटो भुगतणी पड़ै अर पंछी-जिनावरां सूं मोह-परीत तूटै ।

वां आठूं भाइयां री काया तो आठ ही । पण सगळां री जीव तो जाणें अेक इज ही । अळगा अळगा पंथ चालता थका वै सगळा अेक ई भांत री बातां सोचता-विचारता जावता । पण पैली राजकंवर सबसूं लांठी हो, इण कारण उणनै सातूं भाइयां री अणूतो ही सोच ही । वो चारूं कांनो निजर घुमाय अर माथो निवायनै हाथ जोड़तो थकौ कैवण लागो—इण धरती रा सगळा जीव जिनावर, पदारथ, रूख, बनराय, पवन, नखत, नद, नाडियां, झरणा अर समंदरां नै म्हारी आ इज वीणती है के म्हारा सात्यूं भाई जठै-तठै ई थांरा सूं भेंटै वारी सहाय करजौ, वाने फगत सुख अर आणंद ई दीजो । दुख अर जोखी उठावणियो म्है थां सगळां वास्तै ई उबरतो पड़्यो हूं । म्हारै थकां थें वाने किणी भांत रा फोड़ा मत भुगताजो । भगवान अर कुदरत सूं ई म्हनै फगत आ अेक इज लाळसा है । म्हारै मन अर म्हारी काया री तो म्हनै सोळै आंना भरोसी है के म्हारा हाथ सूं किणी जीव नै नीं कळपावूला । कोई किणी नै अणूतो संतावै तो उणनै बगसणी अधरम है ।

यूं सोचतां विचारतां दिन रै वघाण वो मारग हालतो ढबग्यो । कंदमूल खायनै झरणा रो मीठी पांणी पीयो अर मारग छोडनै निसंक सूरग्यो । थोड़ी ताळ ई में वो मीठी ऊंध में गैलीजग्यो अर घोर खांचण लागो ।

अगाढ़ ऊंध में सूती सूती ई वो फेर विचरण लागो । धूम तावड़ै भटकतां भटकतां उणरा कंठ सूखण लागो । अबै तो पांणी हाथ नीं आयां, मरण में कीं कसर बाकी नीं । कंठां में जाणै तीखी सूळां खुबण लागी । कंठां रो नळी में बळत रै कारण डीक ऊठण लागी । आख्यां आडा खीरा जगण लागो । नाड़ियां वाढ़नै लोई पीवणा सू ई तिस बुझै तो लोई पीणो पड़ेला । डोल रो सगळी नाड़ियां जाणै पींचीजण लागी । थाबा खावतो खावतो वो अणचींत्यो अेक बावड़ी रै पाखती पूगो । तांगियां खावतो वो पांणी रै अड़ौअड़ पूगो । भंवळ खायनै छपाक देतो रो वो पांणी रै मांय पड़ग्यो । पड़तां ई वो तो मूंडो फाड़नै गळळ गळळ पांणी खांचण दूको । पलक झपतां ई बावड़ी ने ठाली-ठळाक कर न्हाकी । तिस तो पूरी नीं बुझी, पण उणने खासो भलो चेतो बावड़ियो । इचरज सू अठी उठी जोयनै पगोतियां पगो-तियां नीचै चालण लागो ।

हालतां हालतां थोड़ी ताळ उपरांत उणनै अेक अनोखी ई बाग निगै आयो । अंड़ौ बाग आज पैली नीं तो वो कानां सुणियो अर नीं निजरां देख्यो । चांदी रा गोड, सोना रो डाळियां, सोना रा ई पांन अर मोत्यां रा झूमका । रूख रूख माथे सोना रा ई हंसला बंठा मोती चुगै । पाछी सोना मोत्यां रो बीटां करै । चिड़ी, कमेड़ी, सूवा, मोर इत्याद सरब पंखेरू

सोना रा । उडै , किलोळां करै अर मोती चुगै । अक लांठा
 रूख रै तळै अपछरावां री झूलरी निरत करणा में मगन हो ।
 जाडा डाळा रै माथै हींडी बंधियोड़ी हो । हीरा , मोती जड़िया
 सोना रा बंधणा सूं हींडी बंधियोड़ी हो । माथै अपछरावां
 री रूपाळी राजकंवरी बैठी मस्ताई सूं हींडती हो । राजकंवर
 हळफळियो होयने खाथो खाथो चालण ठूकी । पाखती आयने
 राजकंवरी रै उणियारा सांमी भाळियो—जाणै सोळा सूरज
 भळकिया । हींडती राजकंवरी बीजळियां रै उनमान पळाक
 पळाक करती हो । चौनिजरियां व्हैतां ई राजकंवरी मुळकी ।
 जाणै अणगिण तारा चिमकिया । राजकंवर तो फेर भंवळ
 खायने तड़ाच देती री हेटे गुड़ग्यो ।

गुड़तां ई राजकंवर री आंख खुली—कठे राजकंवरी ,
 कठे अपछरावां , कठे सोना रा रूख , कठे सोना रा पंखेरू ,
 कठे मोत्यां रा झूमका अर कठे बावड़ी । फगत आभा में
 पूनम री चांद मगसा तारां रै बिचाळै मुळकती हो । जाणै
 अपछरावां रा झूलरा बिचाळै वा राजकंवरी मुळकी । अँडी
 सपनी तो आज पैली कदैई नों आयी । राजकंवर शिझकनै
 ऊभो धियो । सून्याड़ निंदरोही में हवा री खेंवाड़ बाजती
 हो । थोड़ी ताळ घूम-घामनै राजकंवर पाछो सूयग्यो । सूवतां
 ई पाछो वो इज सपनी—वा इज आकरी तिस , वा इज
 बावड़ी , उणी भांत भंवळ खायने पांणी में पड़णी , वो इज
 सोना री बाग , वै इज सोना रा रूखड़ा , सागं ई पंखेरू ,
 वो इज अपछरावां री झूलरी , हींडा हींडती वा इज राज-
 कंवरी अर उणी भांत उणरी मुळकणी । वो फेर तिवाळी

खायन हेटे गुड़ियो । पाछी आंख खुली तो झिझकन देख्यो के रात मुळगी ई ढलन पो फाटण वाली है । पंखेरू चारूं दिसावां में चेचाट करे है । वो आळस मरोड़न ऊभो ब्हियो । ऊगता सूरज न देख्यां उणने अंडी लखायो जाणें बाग वाली राजकंवरी घूघटी आगो लियो । मन में सोचण लागी के घड़ी घड़ी सपना री ओ काई संजोग बणियो ।

नितनेम सूं निव्रत होयन, सिनांन संपाड़ी-करियां वो कंदमूळां री सिरावण करियो अर उणीज मारग आगे बघियो । जावतां जावतां थोड़ी ताळ पछे ई उणने मारग रे जीवणी बाजू अेक लांठी घेर-घुमेर पीपळी रे हेटे बावड़ी निगे आई । दिन मथारे आयी ही । बावड़ी ने देखतां ई उणने सपना वाली तिरस याद आई अर मारग सूं टळ परी ने बावड़ी सांमी चालण हूकी । बावड़ी री पाज माथे ऊभने वो पांणी सांमी भाळियो तो उणरी आंख्यां सांमी रातवाळी सपनी सुभट उघड़ियो । मन में सोचण लागी—काई आ सपना वाली बावड़ी है । पछे आपरी कालाई माथे विचार करियो अर हंसियो । भलां आ बात कीकर व्हे सकें ! सपना री बात सांप्रत कीकर देठाळी दे सकें ! मन में भरम उपजियो है । पांणी पीयने आगे चालणी सावळ है ।

बावड़ी रे पांणी सूं चारेक पगोतिया आंतरे उणने अेक नवी ई बात निगे आई । अेक काळिंदर मूंडी फाड़ियां थकां अेक मींडका री केड़ी करे है । मींडकी डाफाचूक ब्हियोड़ी अठी-उठी फदाकां भरती सांमी पगोतियां चढ़ती ही अर सांप सळवळ दौड़ती, फूफाड़ा करती उण मींडका ने खावण सारू

लारे लारे दौड़तो हो । यूं आपरी आंख्यां किणी नै मरती
अर किणी नै मारती वो कीकर देख सकै । पण कीं
जीवां नै तो भगवान् इण खातर ई बणाया है के वै
दूजा जीवां नै भखे ! दूजा जीवां नै मारियां बिना वै जीवता
ई नीं रै सकै । पछे वारी कसूर ! काळिंदर नै खायां
मींडकी मरे अर काळिंदर किणी जोव नै नीं खावे तो वो
मरे । पछे ओ संजोग कीकर टलै । मींडका नै खावण रा
कसूर माथे काळिंदर नै मारणी ई सावळ कोनीं ।

राजकंवर अेक पलक में इण बात माथे विचार कर
लियो के कीकर मींडका नै मारणा सूं बचायो जा सकै अर
कीकर सांप री ई काम सारियो जा सकै । अर आ बात
विचारतां ईं वो अणजेज कमर सूं बंधियोड़ी कटार काढ़ी ।
भच देणी आपरी पींडी री मांस तोड़नें काळिंदर रै सांमी
वगाय दियो । मींडका रै साव माथे आयनें वो उणनें खावण
सारू बाकी फाड़ियो इज ही के उणरा मूंडा सांमी मांस
री लोथी आयनें पड़ियो । वो फट अेक ई गपळका में
राजकंवर री पींडी री मांस खायग्यो । पण तो ई वो
उणरो केड़ी नीं छोड़ियो । लारे री लारे पाछो दौड़ियो ।
राजकंवर अबकी भलै लोथी फेंकियो । काळिंदर तो अेक ई
गपळका में दूजोड़ी लोथी ई खायग्यो । तद राजकंवर
तुरत अेक नवो उपाव विचारियो । वो मींडका री लारी
करता काळिंदर रै आडी ऊभग्यो । कह्यो—म्हें लोथा
काटणा सूं डरपूं कोनीं । पण अेकर ई बात सावळ
सज नीं आई तो मींडका री मौत किणी भाव टल नीं सकै ।

म्हारी हाथ जोड़नै फगत आ इज अरदास है के आप म्हारी बोटी बोटी खाय सकौ, म्हैं नाक में सळ नी लावूं । पण खुद री निजरां देख्यां पछं म्हैं कीकर मीडका नै मरतो देख सकूं ।

राजकंवर री इत्ती कंणो व्हियो नै मीडको तो आभा री बीज रै उनमान पळका करती अपछरा री रूप धारण कर लियो अर काळिंदर सेसनाग रा रूप में परगट व्हियो । आ तो उण सपना वाळा बाग में हींडती अपछरा है । रांम जाणै आ कांई माया है, कांई चाळी है !

राजकंवर आपरी पींडी सांमी जोयो तो उठे अेक ई बोटी कटियोड़ी नीं दीसी । नीं लोई रिसतौ निगे आयो अर नीं किरणी घाव री दरद लखायो । वो किण माया नगरी में फंसग्यो !

राजकंवर नै इण भांत विचार करतां देख सेसनाग कह्यो—म्हैं सेसनाग री अवतार हूं अर आ म्हारी बेटी । ठेट पयाळां म्हारी राज है । बरसां हेरघो तो ई इणरें जोग म्हनै वर नीं मिळियो । म्हारी बेटी नै दो बातां री प्रण हौ—उणमें अेक तो पूरी व्हियो । मीडका अर सांप दोनां री कांम सारण वाळा नै वा वरेंला । अर दूजो ओ प्रण के सपना में सखियां बिचाळै जको उणनै हींडती देखनै, उणारी मुळक माथे भंवळ खायनै हेटै पड़ै, उणनै वा वरेंला ।

सपना वाळी बात सुणनै राजकंवर मांडनै सगळी बात बताई । बतातां ई सेसनाग नै विस्वास व्हेगो । राजकंवरी रा दोनूं प्रण पूरा व्हिया । वो कैवण लागी—सेवट म्है, बाप

बेटी दोनू हतास व्हेगा हा के इण दुनियां में इण जोग वर मिळणी दूभर है । सांप मीडका नै खावै तो किण री कांई लियो । देख्यां लोगां रें तमासी बणै । किणी नै मीडका माथै दया आवै तो वो सांप नै मारण री चेस्टा करै । अक नै मारण सूं बचावण री खातर दूजा नै मारणी पड़ै । पण आपरै डील री मांस काटनै सांप रें सांमी फेंकणी अर मीडका नै बचावणी आ बिरळी बात है । म्है तो बेटी नै घणी ई समझाई के तीनू लोकां में थारै प्रण रें उनमान वर मिळणी दूभर है, इण प्रण रें आगें तो सगळी ऊमर धूं कंवारी रेंवैला । तद वा कह्यो—पछे वंड़ा ब्याव में म्हने काढ़णी ई कांई है । ढाढ़ा सूं ब्याव करियो अर नों करियो । म्है तो म्हारी प्रण निभावूला । अर वा आपरा प्रण री साच राखियो तो उणारी मंसा पूरण व्ही । आज म्हारी खुसी री पार नीं है ।

राजकंवरी अपूठी ऊभी ही । कड़ियां ढळियोड़ा सोना रा केस—जाणै सूरज री किरणां री झूमको बिखरियो । राजकंवर वां किरणां रा पळका नै आख्यां सूं पीवती हो के सेसनाग कह्यो— इण बावड़ी रें तळे पंयाळ में म्हारी राज है । म्है दोनू तो पांणी रें मांयकर ठेट पार व्हे सकां हां । म्है पांणी में सुण सकां, देख सकां अर सूखा ई रें सकां । पण आप पांणी रें मांयकर सूं पार नीं व्हे सको । इण खातर आपनै आ मिण देवू । इण मिण रा जोर सूं पांणी मर्त आपनै मारग देय देवैला । म्है पांणी में पग धरतां ईं लोप व्हे जावांला । अक पलक में म्हारै राज पूग जावांला । अर आप आ मिण

हाथ में लेयनै लारै रा लारै आय जाजो । डर करै जैड़ी कीं बात नीं । बाकी सगळी बातां म्हारा पयाळ-राज में पूग्यां करांला ।

राजकंवरी पांणी में पग धरियां पैली अेकर मुड़नै लारै जोयी । मुळकी । अर पांणी में लोप व्हेगी । राजकंवर तो जाण्यो के हाल ओ सपनी ई है । वो तो सपना रं भरोसै अणजेज पांणी में पग धरियो । पांणी दो फाड़ा में फाटतो गियो अर राजकंवर आगे बधतौ गियो । राजकंवर रं आगे पग धरतां ई पांणी लारै पाछी मिळतो जावतो । पांणी रं मांय राज-कंवर कित्तो हालियो, उणरो उणने कीं चेतो नीं रह्यो । अेक पलक हालियो के अेक जुग हालियो—कीं ठा पड़ी नीं । सात पांणी री, सात हवा री अर सात उजास री पोळां पार करियां सेवट पयाळ-लोक आयो ।

सात चांदी रो, सात सोना री अर सात हीरा मोत्यां री पोळां रं पछे राजकंवर नै सपना वाळी बाग परतख आपरी निजरां देखणा में आयो । सगळी बातां सपना रं हूबो-हूब ही । वो तो चकन-बकन व्हियोड़ी सगळा बाग में अठी उठी फिरण लागो । फिरतां फिरतां उणनै अपछरावां री सागे ई झूलरो निरत करतो निर्ग आयो । वो खाथो खाथो उठीनै चालण लागो । सपना वाळी राजकंवरी साचांणी आपरी सखियां रं बिचाळे हींडती ही । चीनिजरियां व्हेतां ई राज-कंवरी मुळकी । मुळकतां ई भंवळ खायनै वो डिगण लागो के वा फेर मुळकी । इण मुळक सूं राजकंवर आपरी आपो संभाळ लियो । झणझणातौ चेतो वापरियो । वो पाछी

मुळकियो । उणरें मुळकतां ई लाज रें कारण राजकंवरी रो मूंडो रातो व्हेगो । जाणें सूरज रें आडो रातो बादळो आयो ।

राजकंवरी हींडा सूं नीचें उतरी तो सगळी सखियां उठा सूं बोली बोली वहीर व्हेगो । पछें उण अजब-गजब रा बाग में फगत राजकंवर अर राजकंवरी ऊभा रह्या । थोड़ी ताळ पछे राजकंवरी नीची धूण करन होळें सूं बोली—आपरें लोक रो गळाई म्हारें अठें ब्याव नीं मंडिया करं । आ मुळक ई ब्याव रो सावो, ब्याव रा फेरा अर ब्याव रो चंवरी अर हथळेवो है । अठें मन रें मानणा अर जचणा रो नांव ई सगाई है । अपारें ब्याव रो समचो मिळतां ई म्हारा जीसा अठें आवेला अर अपाने राज रो सगळी जिम्मेवारी संभळावेला ।

राजकंवरी रें मूंडा सूं आ बात निकळतां ई सेसनाग उठीन ई आवतो निगे आयो । पाखती आतां ई दोनूं जणा वानें माथो निवायनं प्रणाम करियो । डोकरियो आसीस दियां पछें कंवण लागी—केई जुगां सूं इण लोक रो राज करतां करतां म्हें काठो कायो व्हेगो हूं । बेटी रें जोग वर सारू म्हें इण माया में झिलियो रह्यो । अबं म्हें भ्रत-लोक रो वास करणी चावूं । थें दोनूं ओ राज संभाळो । सो बरसां पछे सेसनाग रें अवतार रो रूप धामें परगट व्हेला । जितें तपणी पडैला ।

थोड़ी ताळ ढबनं वो फेर कंवण लागी—भ्रतलोक रो आइमी वरणा सूं अबं राजकंवरी रें आगें पांणी मतें ई मारग नीं देवेला । इण मिण रा जोर सूं दोनां रें वास्तं पांणी फाटैला । सावळ संभाळनं राखजो । गमाय दी तो घणा

घणा फोड़ा पड़ेला । पछे वी राजकंवर रें सांमी देखनै कैवण लागी—आपरं जैड़ी जोग राजा मिळणी तीनूं लोकां में ई दूभर है । अबै म्हनै नीं तो राज री चिंता है अर नीं बेटी री । फगत आतमा री कल्याण करणी चावूं । म्हारै कल्याण रें पंला थाने अेक सीख री खास बात बतावणी चावूं के कोरा सुख , आणंद अर हरख रें कारण दोनूं लोक दिन दिन परवारता जावै है । दुख , कळेस अर संताप बिना सुख अर आणंद री साचेली साव ई नीं आवै । दोनूं बातां रें मेळ सूं सगळी बातां सांतरी लागं । खोटा बिना खरा री मोल नीं , झूठ बिना साच री कीमत नीं , दुख बिना सुख री पूछ नीं । तोटा बिना लाभ री मोद नीं । देवलोक अर पंयाळ-लोक में कीं कमी कोनीं , कीं दुख-संताप कोनीं अर कीं कळेस कोनीं । इण खातर दोनां रा वासिदा निबळा , अंदी , माठा अर निकामा व्हेगा है । अबै सबसूं सिरें अर ऊंचौ अतलोक ई व्हेला । अतलोक में बसियां ईं साच , आणंद अर सुख री खास पिछाण व्हे । इकेवड़ी चीज री कठै ई कीमत नीं । दोवड़ा जोड़ा बिना सगळी आणंद अकारथ है । खारी-मीठो , ठाडो-ऊनौ बिस-इमरत , धरम-अधरम , सुख-दुख , जलम-मरण , सवार-सिइया , दिन-रात , सुद-वद इत्याद सगळी बातां जोड़ा सूं ई आछी लागं ।

पछे वी राजकंवर सांमी देखनै कहाँ—आप अतलोक रा वासी हो , इण खातर थोड़ा बरसां ताई आपनै पंयाळ-लोक री वासी आछी लागेला । हीरा-मोती , सोनौ-चांदी , देखनै आपरा मन में कदास हरख री पार नीं । पण म्है

तो घूळ, ठाडी अर भाटां सारू तरसूं । चिमटी घूळ वास्तै
 म्हैं अणगिण हीरा-मोती देय सकूं । -म्हैं अतलोक रा हीरा
 सूं हीण मांणस नै देवराज इंदर सूं घणो वत्तो समझू ।
 म्हां दोनूं लोकां रा वासिंदा नै साच, दया, भलाई,
 मोह-परीत री कीं कीमत नीं । नीं तो म्है आं सिरै
 बातां नै जाणा अर नीं समझां । म्है तो सगळा मरिया
 समान हां । मरियोड़ी लास नै किणी बात री अनुभव व्है तो
 म्हांनै व्है । जुगां सूं अखूट सुख अर आणंद में पळणा सूं म्है
 फगत सुख रै ई हिवा व्हैगा । आसीस देवती वगत सुख अर
 आणंद री बातां कंवणी पड़ै, परा म्हारा साचा मन री बात
 पूछी तो म्हैं म्हारी बेटी नै दुख-कळेस री आसीस देवणी
 चावूं । म्हैं तो अबै अत-लोक में जायनै पाछो जुगां तक विखो
 भुगतूं अर अणूता फोड़ा झेलू तो म्हारी जीवण सुफळ व्है ।

पछै वी आपरी बेटी रै सांमी देखनै कंवण लागी —
 बाप रा मूडा सूं बेटी वास्तै विखा रा बोल निकळै कोनीं
 पण म्हारी अंतस तो फगत आ इज बात चावै के थूं अणमाप
 तोटी, दुख, फोड़ा अर कळेस भुगर्तला जद इज साचैला सुख री
 साव पिछांणैला । इण राजकंवर नै देख्यां पछै तो म्हनै अठा
 रा आदमी, अठा री माया अर अठा रा सुख सगळा खावण
 नै दौड़ै । म्हारै वास्तै अबै अक पलक ई अठै सांस लेवणी
 दूभर व्हैगी । है कोई दोनूं लोकां में अंडी देवता जकौ इण
 विध मीडका अर सांप री काम अक सरीखी सार सकै ।
 अपारा देवता तो राकसां सूं ई दौय तळ इदका है अर अत-
 लोक रा पापी, अधरमी अपारै देवतावां सूं घणा सिरै अर

पूजनीक है । पंयाळ-लोक री राजा म्हैं तो आज इण राज-
कंवर सांमी पीढ़ियां री मंगती व्हे ज्यूं म्हारा मन में लागूं ।
म्हारी बेटी, थारी लारला भो री पुन्याई अणूती सांतरी करि-
योड़ी ही, जिणसूं थने औ वर मिलियौ । हमेसां याद राखजं
के पंयाळ-लोक रा राज सूं थारै वास्तै औ राजकंवर घणौ
वत्ती है । मिलण रें सुख री कीमत बिछोह बिहियां ईं ठा पड़ै ।
अबै तो अत लोक में गियां ईं म्हारी मुगती व्हेला । म्हैं जावू ।
म्हैं थारा बिछोह नै सुख जाणूला अर थू म्हारा बिछोह नै
सुख जाणजै ।

जद पंयाळ-लोक रें लोगां नै आ ठा पड़ी के वारौ
राजा इण लोक री त्याग करनें अतलोक में जावणी चावै,
तद वै अेक दूजा सूं सुरपुर करण लागा के राजा बावळी
व्हेगो है । अंडी सुख छोडनें वो दुख, संताप अर अधरम
अर अकरमां री लाय में सिळगण सारू मते कूदैं तो औ पर-
तख सुनपात ई है । लोगां घणा ई हाथ जोड़िया, पण सेस-
नाग तो धत पकड़ली जकौ पकड़ इज ली । सगळी मानखौ
अतलोक री पोळ तक राजा नै छोडण सारू आयी । राज-
कंवरो तो अरड़ां अरड़ां रोवण ढूकी । आज जीवन में पंली
वार उणनै ठा पड़ी के रोवणौ चीज कांई व्हे । सेसनाग री
ई आख्यां जळजळी व्ही ।

राजकंवर अर राजकंवरी ती ठेट बावड़ी तांई साथे आया ।
बारें निकळतां ईं अतलोक हो । बावड़ी रें बारें आतां ईं
सेसनाग बावळी सो होयनै धूळ में अठी-उठी लुटियौ—जाणें
हील री रोगी लुटै । धूळ सूं सिनांन करतो, माथा माथे

घड़ी घड़ी धूळ न्हाकती कैवण लागी—अबै इण धूळ सू म्है धान , रसाळां , सोनी-चांदी अर हीरा मोती निपजावूला । आपरा हाथ सूं अेक बूंटो ई उगावणा में कित्ती सुख है । आखी ऊमर कुदरत रा अखूट कोठार नै बिना हाथ-पग हिलायां भोगणो कित्ती लांठी अकरम है । हाथां निपजायनै भोगणो ई ती असली सुरग री राज है । पड़ियां भोगणो ती कीड़ा-मकोड़ां री जूण भुगतणी है । मजूरी करनै भोगण री असली आणंद लेवणो ती सबसूं ऊंचो सुख है ।

इण भांत माथा में धोबां धोबां धूळ उछाळती , हाथ-पग हिलावण रा सुख नै बिड़दावती वो अत-लोक में नाचती-कूदती रमग्यो । दोनूं जणा बावड़ो री पाज माथे ऊभा रह्या अर सेसनाग दीठ री मार सूं मुळगी ई अदीठ व्हेगो । अळगी भांय फगत वाने थोड़ी थोड़ी धूळ उडती अवस निगै आई । राजकंवरी राजकंवर रा गळा में हाथ घालनै डुसक्या भर भरनै घणी ई रोई । अर राजकंवर उणरा मोरां माथे हाथ फेरती उणनै थावस देती गियौ ।

पछै दोनूं जणा मिण रा जोर सूं बावड़ो रा पांणी में उतरिया अर सूखा खणक आपरा राज में पूगग्या । पंयाळ-लोक में अस्टपौर बत्तीस घड़ी दिन रैवती, उठै रातां व्हेती ई नीं । उठै नीं रितुवां बदळती, नीं हवा बदळती । अेक सरीसा दिन अर अेक सरीसी मौसम । राजकंवर आं बातां रै हेवा नीं हौ, उणनै अणूती अळखावण आवती । राजकंवर रा कैणा सूं अर उणरी अळखावण सूं राजकंवरी नै ई अटपटाई लखावती । वै नित रात रा अत-लोक में घूमण सारू

आवता । चांदणी रातां बिचै वानै अंधारी रातां घणो सुवा-
वणी लागती ।

राजकंवर नागकिन्या नै समझावती — नित सूरज रो ऊगण्णो,
नित आथमणो, चांद रो घटणो-बघणो, अंधारी रातां में तारां
रो टिमटिमावणो, रितुवां रो बदळणो, पांनां रो झड़णो, नवी
कूपळां रो निकळणो, कदेई साजो रैवणो, कदेई मांदो होवणो,
पल में सुखी होवणो अर पल में दुखी होवणो आ ई तो अत-
लोक री इदकाई है । इणो इदकाई रा परताप सूं मानखी
देवतावां नै खं में राख दिया है । मिनख जूण वास्तं देवता
तरसै कळपे । थांरा लोक में तो हालताईं जुगां पुराणा रूख,
है, नीं वै खतम व्हे अर नीं नवा घूटा ऊगै । नीं कोई मरै
अर नीं कोई जलमै । जुगां पुराणा जीव, जुगां पुराणा रूख,
जुगां पुराणी रितुवां, जुगां पुराणी हवा, जुगां पुराणी उजास,
जुगां पुराणी राज अर जुगां पुराणी रैयत — जुगां में ईं किणो
भांत रो कीं हेर फेर नीं । म्हारी जाण में असली नरक ओ
इज है । अठे तो मंसां व्हेतां ईं साध पूरीजै — आदमी नै
चुळणो ईं नीं पड़े, इणसूं वत्ती कळेस अर संताप इण दुनियां
में फेर काई व्हे । दुनियां में असलो आणंद उलटफेर रो ई
है । म्हने तो सूरज रा उजास, चांदणी रात अर चांद बिचै
अंधारी, सिंझ्या अर तारा आछा लागै । बसंत रै जित्ती ईं
पतझड़ सांतरी लागै ।

राजकंवरी जबाब देवती — आपरै विचारां सूं म्हारी अंतस
ईं बदळती लखावै । जे म्हैं वै दोय प्रण नीं करती तो रांम
जाणै किणसूं म्हारी पांनो पड़ती । संजोग अर करमां रो जोर

तो अबं म्हांरा राज में होवण लागी है ।

इण भांत री बातां-विगतां करता दोनू जणा वासो तो पंयाळ-लोक में राखता पण आणंद अतलोक री बातां सूं लेवता । सवार-सिइया सूरज री ऊगणी-आथमणी निरखता, रात रा नित घड़ी दोय घड़ी बारें विचरता, बिरखा में भीजता, किलोळां करता । राजकंवरी वास्तै तो अतलोक री सगळी बातां ई अनोखी ही, इण खातर वा तो बात-बात में आणंद लेवती । पंयाळ-लोक री थिरता अर अमरता न देखने राजकंवर ई अतलोक री बातां सूं राजी होवती । उठै गियां ई उणने आपरा लोक री सावळ पती पड़ियो । पंयाळ-लोक री जड़ थिरता सूं वो कायौ होवण लागगी ही । जे आपरा लोक में अक दिन ई विचरण नीं करै तो जोड़ै लगता दो दिन पंयाळ-लोक में काटणा दूभर व्हाै जाता ।

अकर काळी-बोळी विकराळ आंधी आई । राजकंवर अर राजकंवरी दोनू बावड़ी सूं बारें ऊभा हा । राजकंवरी छूळ स भरोजण री परवा नीं करने अठी-उठी आंधी में दौड़ती फिरी । उणरा गाभा, उणारा केस, उणारी आंख्यां अर भोपणा सगळा खंख सूं भूंडे ढाळें भरग्या तो ई वा किलोळां करती सगळी आंधी न आपरें डील माथै झेली । अकर वतूळियो देख्यो तो वा हरख सूं बावळी व्हाैगी । वतूळिया रें मांय उणरें सागं दौड़ण री घणी ई चेस्टा करी पण वतूळियो तो आडी-अंवळी सरणाट पार व्हाैगी । अकर वा बरसता गिड़ां में उघाड़ै माथै भीजी । गिड़ां रा थर माथै उरबाणें पगां जी घापनै दोड़ी ।

बादलों री गड़गड़ गाज सुणतां ई वा बिरखा नै उडी-
कती जकी पछे पांणी ठमियां ई उणरो भीजणो ठमतो । घड़ी
घड़ी राजकंवर नै कैवती—अेकर आं बीजळियां नै बाथ में
भरलू तो पछे म्हारा हरख री पार नीं रेंवें । पण अँ अच-
पळी बीजळियां बख में आवें ई नीं । झिलमिलाता तारां नै
देखनं कैवती—आपरै अतलोक रा लोग कित्ता बावळा अर
नासमझ है के वं आं तारां री दुनियां छोडने सुरग री लाळसा
करै । गिगन रा तारा तारा में सुरग है—समझवण बाळो
चाहीजं । बीज सूं पूनम तक बधता चांद अर पूनम सूं अमा-
वस तक घटता चांद रै सांमी बापड़ा सुरग री जिनात ई
काई है । घूटा री खूंख, खूंख री पाछो घूटो, कळी री फूल
अर सुरंगा फूलां री सौरम मार्य हजार सुरगां नै वारूं ।
अतलोक री मिनख कित्ती परालब्धी है के वो आठपौर बत्तीस
घड़ी अंडी दुनियां में वास करै । अर इणरी तुलना में थिरता
अर अमरता बिचाळे वास करण वाळा सुरग रा वासी कित्ता
निबळा, निपग्गा अर हीणपुन्या है के वं सुरग में कीं उलट फेर
नीं कर सकै ।

इण आणंद रें बिचाळे पलकां रें उनमांन दिन बीतता
हा । राजकंवरि तो अतलोक रा कांकरा नै आपरै राज रा
मोती सूं ई घणी वती समझती । पंयाळ-लोक रा नीं नीं
व्है जेड़ा अमरफळ छोडने वा बोर, ढालू, कंकेड़ा, केहूदा,
खिरणियां, पीपिया, भड़ोलिया, गुट्टा, पीलू, गूदा, गूदियां,
आंमलियां, गेंगणियां, डांणियां, घीतोला, मोथिया, केडूला,
खोखा, मांमालूणी, काचरा, काकड़ियां, खरबूजा अर मतीरां
फा. २८

वास्तै तड़फा तोड़ती ।

मतीरा वास्तै तो उणरी औ कैणी हौ के पंयाळ - लोक
री राज उणरी खातर छिन में छोड सकै । काती पूनम री
चानणी में मतीरा री खुपरियां में किरणां री इमरत घोळता
अर मतीरा री गिर खावता । बांवळिया रा गूद सारू ई
राजकंवरी री विसेस भावड़ ही । चिड़कल फुदकै ज्यूं वा गूद
खावण सारू फुदकती ही । पंयाळ - लोक रै सोना रा पंखेरू
उणनै अतलोक रै काग , गिरजड़ां सूं ई अणूता कोजा लागता ।

थोड़ा दिनां ताईं राजकंवर नै नवौ नवौ पंयाळ - लोक
लुभावणी लागी , पण उणनै मतै ई उणरी थिरता अळखावणी
लागण हूकी । सूरज रा अखंड उजास नै देखने उणनै अणूती
जूझल छूटती । बिना आथमियां किणी नै सूरज कीकर आछी लाग
सकै । उणनै रीस आवती के सूरज री किरची किरची करनै
ऊंडी जमीं में गाड दै । आयो फूठरी उजास री ठेकेदार !
राजकंवर रै मूंडा सूं पंयाळ - लोक री अणूती भूंडाई सुणनै
राजकंवरी कैवती — थानै तो थोड़ा दिनां में आपरी लोक आछौ
लागण लागग्यो , पण म्हनै खुद नै ई म्हारी लोक अणूती खारी
लागे अर आपरी लोक अणूती लुभावणी लागे । कठे ई आप
म्हारै माथे कांमण तो नीं कर दियो ।

राजकंवर मुळकनै पड़ूतर दियो — कांमण तो कुण किण
माथे करियो के तो वो खुद ई जाणै है के उणरी भगवान
जाणे ।

घणी वार तो दोनू सागै ई बारै घूमण सारू जावता ।
पण कदैई कदैई राजकंवर अकली ई घूमण सारू निकळ जावती

अर कदैई कदैई राजकंवरी अकली ई घूमण सारू निकळ जावती । पैला नित हमेस मोत्यां जड़ी सोना री कांघसी सूं आपरा केस सुळझावती ही, पण थोड़ा दिनां में ई जद पंयाळ लोक री अमोलक चीजां सूं उणनै ओक्या होवण लागी तो वा राजकंवर रै साथै अतलोक सूं अेक चन्नण री कांघसी मंग-वाई । पछे हमेसा वा उणसूं आपरी माथी सुळझावती । राज-कंवर सूं परणीजियां पछे वा सखियां कना सूं काम नीं करावती, अर आपरै हाथां आपरा काम निवेडती । सखियां उणसूं अणूती राजी ही । राजकंवरी घणी ई समझाइस करी तो ई वै पंयाळ-लोक सूं बारै जावण वास्तै राजी नीं व्ही । वै मरणा सूं डरती, बुढ़ापा सूं डरती, दुख-संताप सूं डरती । वानै पंयाळ री थिरता चोखी लागती ।

अेकर नागकिन्या बावड़ी में झीलनै, चन्नण री कांघसी सं सोना रा केस सुळझायनै पाछी आपरै लोक गो परी । पण भूल सूं कांघसी में उळझियोडं केसां री गूंची वा बारै ई पांतरगी । थोड़ी ताळ में ई संजोग री बात अंडी बणी के पाखती रै राज री राजकंवर सिकार रमनै बावड़ी रै गळा-कर निकळियो । उणनै तिरस आकरी लाग्योड़ी ही । थोड़ा सूं नीचे उतरनै वो खाथी खाथी पांणी पोवण नै उतरियो । निरांत सूं बावड़ी री कमोद व्हे जंडो ठाडो पांणी पोयनै वो पाछी जावण लागौ के सुतै ई उणरी मीट राजकंवरी रै केसां माथे पड़ी । वो फुरती सूं वां केसां नै उठाया । केस तो साचांणी ई सोना रा दीसे । जिण लुगाई रा केस सोना रा है, वा खुद कंडी रूपाळी व्हेला, उणरौ रूप तो कुण आंक सकै !

राजकंवर चोर री गळाई डरती डरती वां केसां नै लुकाया अर उठा सूं वहीर व्हेगौ । मारग में घड़ी घड़ी सोना रे केसां री गूंची देखती अर कळपती के आ अपछरा कीकर हाथ आ सकै । आपरा राज में गियां ईं वो किणी नै इण बात री चरचा नीं करी । केसां री गूंची लुकायने वो अेकर पैला केसांवाळी नै तपास करणी चावती । उण बावड़ी माथे वा फेर कदैई पाछी सिनांन करण सारू तो अवस आवैला ।

उण दिन सूं ईं वो दुमनो रैवण लागी । नीं किणी नै बतळावती अर नीं किणी सूं चलायने बात ईं करती । वो चारूं कांनो लुकती-छिपती बावड़ी रे फेरी देवती रैवती । पाखती रा घेर घुमेर बड़ला माथे चापळने बैठ जातो । आंख्यां फाड़ने केसांवाळी री उडीक में निरी ताळ ताईं उठे ईं भूखी तिरसी बैठी रैवती ।

सेवट अेक दिन नवोड़ा राजकंवर री उडीक भरै पड़ी । अेक वतूळिया रे लारे बीजळी रे उनमान पळपळाट करती, सोना रा केसां वाळी अपछरा दौड़ती निगं आई । वो तुरत बड़ला सूं हेटै उतरियो । सोना रा केसांवाळी उण अपछरा नै पकड़ण सारू उणरे लारे दौड़ियो ।

पराया मिनख नै इण विध आपरे सांमी दौड़ती देखने पैला तो राजकंवरी डरपी, पण पाछो तुरत ईं धोरज धारघी । अेकदम अपूठी घिरने बावड़ी सांमी भरणाट दौड़ी । सिकारी राजकंवर जाण्यो के अबै आ उणरे आगे कठै जावैला । बावड़ी में गियां तो सांमी सावळ बख में आवैला । कदास तिरसां मरती बावड़ी में पांणी पीवण सारू जाबै दीसै । सिकारी

कंवर तो ई लारें री लारें दोड़ती आयो । पाज माथें आयनं
 वो दो दो पगोनिया मलापती राजकंवरो नें झालण री पूरी
 मती करियो ई ही के बा तो पांणी में पग धरतां ई अदोठ
 बहैगी । पांणी उणनं तो मारग दियो पण सिकारी राजकंवर
 रें पग धरतां ई वो वत्ता हिलोळा खावण लागी । अबं वो
 पांणी में लारी करे तो कीकर करे । हाथ मसळती, मन में
 कळपती वो निरोताळ उठे ई ऊभो रह्यो । पण कोरी दुव
 करियां ई बात काई बणै । कीकर ई करने अपछरा री सोय तो
 लाधी । फेर कीं नवो उकरास लगावांला — आ विचार नें वो
 उठा सूं विलखी विलखी वहीर ब्हियो ।

मारग चालती सोचण लागी के जिण भांत पळापळ करती
 बीज तुरत देखतां देखतां पाछी बादळां में लोप व्हे जावें, उणी
 भांत वा सोना रें केसां वाळी इदक सरूप अपछरा बावड़ी रा
 पांणी में लोप बहैगी । वो खुद आपरी निजरां देख्यो के पांणी
 उणनं सांप्रत मारग दीनी । है तो अवस आ कोई करामाती
 अपछरा ।

राजमैलां में जायने वो तो रिसांणी करने ऊंडा भंवारा
 में जायने सूयग्यो । नीं तो पांणी पोवे, नीं थाळ अरोगे,
 नीं किणी सूं बात करे अर नीं किणी रें बतळायां बोले ।
 अकेआके राजकंवर यूं रिसांणी करने सूय जावें तो राजा नें
 चैन आवण री बात ई नीं ही । वो घणी ई अटकळां सूं
 पती पाड़णी चायो पण राजकंवर तो बात री भणकारी ई
 नीं पढ़ण दियो ।

सेवट खपतां खपतां मंत्री री बैटो राजकंवर सूं भेद री

साची बात जांणी । राजकंवर आपरा सिरांतिया सूं सोना रे बाळां रो गूंची निकाळियो । आपरा मित नै वो गूंची झिलायनै कंवण लागी—इण अपछरा सूं परणीजूं तो म्हारो संताप मिटे ।

पछे वो गळगळा कंठ सूं मांडनै सगळी बात बताई । बात सुणतां पांण मंत्री रो बेटो कह्यो—भलां म्हारा मित अर राजकंवर होयनै इण नाकुछ बात सारू आछो सोच करियो । आप तो अेक री बात करो, म्है अंडी अठारा बीसी अप-छरावां आपरै पगां लायनै पटक दूं । म्हारी जबांन रो आपनै थोड़ी घणो ई पतियारो है तो ओ रिसांणी फिटो करो, आगली अमावस रे पेला पेला आं केसांवाळी अपछरा नै आपरा रंग-मेल में नीं बिठाणूं तो म्हारो माथो कलम कर दिराजो ।

राजकंवर नै आपरा मित माथे पूरी भरोसो हो । उणरे कैतां ई वो आपरा काम-काज में लागी—सिकार रमणो, सोना रा थाळ में जीमणो, सोना री झारियां सूं पांणी पीवणो, सोना रा प्याला में दारू चूंपणो, सोना रा पिलंग माथे सूवणो अर परभात री वेळा ऊठतो वगत डावड़ियां सूं पग दबावणा । राजकंवर रिसांणी छोडियो तो सगळा राजदरबार में आणंद रो लंरां ऊठी । राजा तो अणूंती राजी व्हियो ।

दूजै दिन मंत्री रो डीकरो नगरी री सगळी दूतियां अर सिकोतरियां भेली करो । वाने पूछ्यो—के वै कांई कांई करा-मातां जाणं । केई कह्यो के म्हां आकास रा तारा तोड़ लावां । केई कह्यो के वै पलक में पंयाळ रा समंचार ले आवे । केई कह्यो के वै धरती अर आभा रे बीच री बातां झांप लावे । अेक जणी कह्यो के वा भाटा सूं तेल काढ़ लेवै ।

अक जणी कह्यो के वा सती नै वेस्या अर वेस्या नै सती बणाय देवें । अक जणी कह्यो के बळद नै धीजायनै उणसूं दूध काढ़ लेवें । अक बूढ़ी सिकोतरी कह्यो के वा सिंघणी नै उरणियो चूघाय देवें तो अक खंखर सिकोतरी कह्यो के वा सिंघ अर बकरी नै परणाय देवें अर परणायां पछे वारें ऊमर में ईं किरणी बात री रांझी नीं पड़े ।

उण खंखर सिकोतरी नै तद वो मंत्री री डीकरौ पूछ्यो—थूं सिंघणी अर गिडक री घर मांड सकैं कांई ?

वा गुमेज में हुंकारौ भरियो—इण में किसी बड़ी बात ! आ तो म्हारै वास्तै साव सैल बात है ।

पछे वो उण खंखर सिकोतरी नै राजदरबार में ढाबो अर बाकी सगळियां नै सोख देय वहीर करी ।

मंत्री री डीकरौ सगळी बात उण सिकोतरी नै समझायनै सोना रै बाळां री गूचो उणरा हाथ में झिलायो अर कह्यो—जे थूं ओ कांम पटाय देवें तो थारी सात पीढ़ी री दाळिदर अळगो व्हे जावैला । जाणै जकी सगळी विद्या, सगळी करामातां अर चाळा पतवांण लीजै, नींतर थारी म्हारी दोनां री सांन बिगड़ जावैला । सांन रै सागे मरणो तो निस्चै है ई ।

सिकोतरी कह्यो—इण छोटा सा कांम सारू आपनै इत्ती भुळावण देवण री जरूरत कोनीं । अकर तो म्हैं इण सोना रै बाळां वाळी नै राजकंवरां रै मैलां दाखल कर देवूला, पछे वे जाणै, वा बाळां वाळी जाणै, आप जाणो अर आपरो कांम जाणै ।

सिकोतरी रै मूंडा सांमी जोयां मंत्री रा बेटा नै पूरण

विस्वास व्हेगो के काम इक्कीस आंना बण जावैला, इण में कीं मीणमेख नीं । सिकोतरी री तोरुं व्हे ज्यूं लांबो अर पतली मूडो । तोरुं री धारियां रें उनमांन ई मूंडा माथें अणगिण सळ । मींडका री गळाई फींडो नाक । चौड़ी फुरणियां । कोडियां व्हे जंडी छोटी आंखियां । धोळा भंवारा । धोळा भोपणा । दोनू भंवारां बीच में मिलियोडा । दांत लांबा, जड़ियां उघ-ड़ियोड़ी । काळा मसोड़ा । मसोड़ा रें पाखती दांत ई काळा । नीचलो होट नोचें दुरियोडो । ओछा कान । ओछी गाबड़ । लांबा हाथ । कमर थोडो सी दोवडी । डील माथें ठोड़ ठोड़ अणगिण सळ — कूयोडा रींगणा रें उनमांन । मूंडा माथें पांच सातेक मस्सा इदकाई में । मस्सा में धोळा रूंगतां री तुगियां ऊगोड़ी ।

सिकोतरी री उणियारी देख्यां डर लागे । दपळा, चाळा अर छळ करणा में वा अणूती कुसळ हो । हंसणी अर रोवणी वा सागे ई कर लेती । अेक आंख साव कोरी अर अेक में आंसुवां री झड़ बरसें, वा अें हुनर जाणती । दया री वगत दया, रीस री वगत रीस, नरमाई री ठोड़ नरमाई, निब-ळाई रें मौके अणूती निबळाई तो उणरा सुभाव में मतै ई रळ जाती । जद उणरा मूंडा माथें दया व्हेती तो देखणवाळा नें अंडो लखावती के इण नें रीस तो सपना में ई नीं आती व्हेला । अर जद वा रीस रें पांण वाभरा-भूत व्हेती तो देखण वाळा नें अंडो लखावती के जाणें दया, ममता जेड़ी चीज सो कोसा ताई इणरे अळगी नेंडी नीं व्हेला । वा इण भांत री चात्रंग अर पाटक सिकोतरी ही । जद वा सोना रा बाळां

वाळी उण अपछरा नै सिकारी राजकंवर रै रंग-मैल में लावण सारू वहीर व्हो तो मंत्री री बेटी उणनै फेर भुळावण दी के कैड़ीक हुंस्यागी सूं सगळी काम पटावै, तद वा आख्यां में थोड़ी सी रंगत बदळनै बोली—आपनै म्हारै माथे इत्ती ई भरोसी कोनीं, आप थोड़ी घणी तो नेहचो राखी । खुद अप-छरा नै लावणी तो किसी बड़ी बात, आप फरमावो तो उणरी छीयां लारै छोडनै उणरो कोरी काया ई नै लें आवूं, अर आप फरमावो तो काया लारै छोडनै फगत उणरी छीयां लें आवूं ।

वा इण भांत रा गडका सूं बोली ही के मंत्री री बेटी धकै फेर कीं दपूचा नीं लिया ।

अठीनै राजकंवरी नै उचकावण रा अं छळ रचीजता हा अर उठीनै पंयाळ-लोक में दोनूं जणा पूरण रूप सूं नेखम निसंक हा । नागकिन्या जद डरती डरती कंवर नै सगळी बात बताई तो कंवर नै अंकाअंक उण बात माथे त्रिस्वास ई नीं व्हियो । वो उणनै थावस देवतां कह्यो—भलां आ ई बात कदैई व्है । थें कैवो जकी बात सोळें आंना साच मांनूं के कोई आदमी थारं लारै अवन दोड़ियो व्हैला । परा उणरा मन में किणी भांत री कोई कुटळाई थोड़ी व्है सकै ! वो किणी काम सूं थारं लारै लारै दोड़ियो व्हैला । पराई लुगाई री कोई मिनख री जायौ कीकर मंसा कर सकै ! म्हारा मन में तो आ बात ठूकै ई नीं ।

नागकिन्या कह्यो—आप भलांई कीं मन में मांनो अर जाण्यो वो दुस्ती तो खोटो मंसा सूं ईं म्हारो लारो करियो । मिनख
का. २९

रे अंतस री भावना कंड़ी ई गैली-गूंगी लुगाई सूं छिप नीं सकै । म्हैं तो अब बेठा-कुबेठा बावड़ी सूं बारें नीं जावूं ।

राजकंवर उणरा सोनल बाळां नै सहळावतो लाड सूं कह्यो—वा रावळी मरजी ! पण अँड़ी वेड़ी बात थें मन में ई मत लावो ।

लजाळू नागकिन्या निजर नीची करनै बोली—आप फर-मावो तो म्हैं मानूं ई हूं, पण आप तो आपरें मन परवांण सैं धौळी धौळी दूध ई जाणो ।

जिण वगत दोनूं जणा इण विध री बातां करता हा, उण वगत दूध रा झागां रें उनमान धौळां बाळां वाळी वा सिकोतरी बावड़ी री पाज माथें बेठी अकली ई अरड़ां अरड़ां रोवणो मांडियो । हाथ री गेडी नै पसवाड़ें पाज माथें धरनै, माथा रें दोनूं हाथ दियां वा तो रोवणो मांडियो जकौ रोवतो ई गी । रोवतां रोवतां उणरा सैं गाभा आला व्हेगा, तो ई वा नीं ढबी ।

सिंझ्या रा आथमता सूरज नै जोवण सारू दोनूं जणा बावड़ी रा पांणी सूं बारें निकळिया तो वानें पाज माथें बेठी अक डोकरी दीसी । वारें कानां उणरी अरड़ां अरड़ां रोवणो सुणीजियो । दोनूं जणा लपकनै उणरें पाखती गया । पूछ्यो—डोकर मां थांमें काई विखी पड़ियो, थूं रोवं क्यूं ?

डोकरी तो पडूत्तर में पाछी घणा जोर सूं रोवती ई गी । वै फेर गळगळा कंठ सूं कह्यो—म्हारा सूं अबै नीं तो थारी रोवणो सुणीजै अर नीं थनै इण भांत रोवतां देखीजै । व्हे जकी बात म्हानै तुरत बता, नींतर म्है खुद थारें सागें भेळा

बैठनै रोवां ।

इत्तौ धीजौ व्हियां पछै डोकरी डुसक्या भरती कैवण
लागी—महँ सेसनाग री बाई हूं । सौ बरसां पैली अतलोक
देखण री मंसा परगट करियां, म्हारो भाई अणूंतो खीझ करी
अर म्हनै सौ बरसां ताई अतलोक में रैवण सारू देस निकाळी
देय दियो । भाई री आदेस महँ कदेई नीं टाळियो । आज
वै सौ बरस पूरा व्हिया है । महँ सौ बरसां लग हेमाळे जायनै
तपी । देस निकाळा री अवधि में महँ नीं धान री दांगो ई
मूंडा में घालियो, नीं पांगो री छांट ई पी अर नीं आंख्यां में
नींद री कस ई लियो । महँ आज बीस घाट दोय सौ बरसां
री हूं । कीं तो बुढ़ापा रें कारण अर कीं निरणी, तिरसी रैवणा
रें कारण लारली सगळी बातां चेतै उतरगी, कीं आंख्यां आडा
झांवळा ई आवैं । म्हारा भाई रा राज में जावण वाळी बावड़ी
किसी है—महँ तो सागें ई जाणनै अठे आई ही । पण आयां
पछै कीं संका उपजगी । बावड़ी सागें ई व्हेतो तो म्हारो भाई
म्हारो रोज सुणतां पाण हजार काम छोडनै बारें अवस आवती !
वो नीं आयो जिणसूं म्हनै वेम उपजे ।

तद राजकंवरी गळगळा कंठ सूं बोली—भूवासा आपरो
वेम ई साची है अर आ बावड़ी सागें ई है, पण आपरा भाई
पंयाळ-लोक री राज छोडनै, हमेसां रें वास्तै अतलोक री वास
कर लियो । वै आपरा राज में व्हेता तो आपरें चितारतां ई
दौड़धा आवता ।

डोकरी बात आछी तरै सुणली तो ई ऊंचो मूंडो करने
बोली—बेटी, महँ कीं ऊंचो सुणूं हूं, इण वास्तै थानें जोर

सूं बोलण री तकलीफ करणी पड़सी ।

पछे राजकंवर ऊंची गळ सूं सगळी बात मांडने बताई । बतातां ईं डोकरी तो फेर अरडां अरडां रोवण ठूकी । छाती माथा कूट अर बावळी व्हे ज्यूं रोवती ईं जावें । रोवती रोवती ईं कैवण लागी—म्हारो भाई फगत म्हारे वास्ते ईं राज छोडनें गियो । अबे तो म्हें जीवतो ईं मरिया समान हूं । अबे तो खुद म्हें उणरी सोय में पाछी जावूला । म्हारो सो बरसां री तपणी अकारथ गियो । अवस म्हारा तप में कीं न कीं खांमी रेंगी है । म्हारो जीव जाण के म्हें सो बरसां लग कीकर म्हारा भाई री बिछोव झेलियो । दरसणां सारू पाछी आई तो वो म्हारी सोय में काली होयने निकळ-ग्यो । बिना कालाई रें कुण अंडो बावळो है जकी आपरें हाथां आपरें माथें धूळ उछाळें । म्हनें सुभट दीस के म्हारा झुरावा सूं उणरी चित्त उपड़ग्यो ।

पछे वा राजकंवरी रें सोनल बाळां सांमी देखने कह्यो—भाई रें बिना म्हनें पंयाळ-लोक मसांण ज्यूं लागेला । म्हें खुद पाछी अतलोक में जावूला । भाई नै हेरचां बिना पांणी पीवणी तो अळगो म्हें पांणी नै निजरां देखूला ईं नीं । थाने फालतू तकलीफ दी । अबे म्हें जावूं ।

आ कैयनें डोकरी गेडी हाथ में लेयनें ऊभी होवण लागी तद नागकिन्या कह्यो—भूवासा, म्हें आपरी भतीजी हूं । आपनें पाछा भवै ईं नीं जावण दूं । जीसा नै तो अतलोक सारू बैराग ऊठग्यो । वे पंयाळ-लोक रें राज सांमी पाछो मूंडो ईं नीं करेला । आप म्हारे साथै पंयाळ-लोक चालो अर म्हाने

आपरी सेवा-बंदगी री मौकी दो ।

सिकोतरी पैला री बातां सुणनै ई समझगी ही के आ सेसनाग री किन्या है, पण वा दरसायी कोनीं । गेडी नै हेटै पटकनै राजकंवरी नै बाथां में भरली । अरड़ां अरड़ां रोई । डुसक्या भरती भरती ई कंवण लागी—म्हारी बेटी, म्हारी लाडल बेटी थूं इत्ती ताळ म्हारा सूं चोज क्यूं राखियी । म्हनै तो उणियारी देखतां ई समझ जाणो हो । भलां तीनूं लोकां में अंडी बेटी म्हारा भाई रं टाळ फेर किणरै व्है सकै । पण म्हारो माथो तो साव भंवियोड़ी है । सुभट अर सीधी बातां ई दोरी समझ में आवे । बेटी, म्हारा भाई नै अत-लोक वास्तै कीकर बेराग सूझियो, अकर म्हनै फेर सावळ मांडनै बता । थानै वो म्हारी कदैई चरचा करी के नीं ।

राजकंवरी कह्यो—आपरी चरचा तो कदैई नीं हाली, पण अबै म्हनै ई ठा पड़गी के म्हारा जीसा क्यूं अतलोक वास्तै तड़फा तोड़ता । आपरी खातर वै मांय रा मांय सिळ-गता गया, कदैई भूल सूं ई चरचा नीं करी । पण वासदी रूई में कित्ता दिन ढांपियोड़ी रं सकै । आपरै वास्तै वानै पंयाळ-लोक री राज छोडणी पड़ियो ।

डोकरी फेर छाती माथा कूटती बोली—म्हारो भाई म्हारै वास्तै राज छोडनै बेराग धारण कर लियो अर म्है निरभागण हाल जीवती हूं । अबै म्है कांई करूं अर कांई नीं करूं । थें दोनूं जणा म्हारो कह्यो मांनो, बोला बोला पाछा आपरा राज में जावो परा । भाई बिना म्है तो अठै अक पलक ई रेवास नीं कर सकूं ।

पण दोनूं जणा घणा घणा नेवरा करंने भूवाजी ने आपरै साथै लेय आपरै राज सांमी वहीर व्हिया । भूवाजी पूरण ध्यान सूं सावचेती बरतता वारें लारें लारें चालण ठूका । मिण रा जोर सूं पांणी मतै ई मारग देवतौ हो ।

हवा, पांणी, उजास, सोना, चांदी अर मोत्यां री सात सात पोळां पार करियां पंयाळ-लोक री बाग आयौ । उठा री नजारो देखनं भूवाजी री तो माथो ई भंवग्यो । पण आपरा सुभाव सूं वं किणी भांत आ बात परगट नीं होवण दी के अं बातां वारें वास्तं नवी है । वं तो उठै गियां पछै ई आपरा भाई री सोच अणूतौ करता ।

पंयाळ-लोक में भूवाजी रै बिना कोई बूढ़ो नीं हो । सगळा जवांन अर रूपाळा । अक दिन भूवाजी मिसखरी रा भाव सूं राजकंवरो नै कह्यौ—भतीजी रै सरब सोना रा केस है तो भूवा रै ई सरब रूपा रा केस है ।

पछे वं अक ऊंडो निस्कारो न्हाकनं कह्यौ—जे सौ बरसां लग म्हें अतलोक में देस निकाळी नीं भोगती तो म्हारी अंडी गत क्यूं बिगड़ती । बेटो, वं ई दिन हा जद म्हें थारा सूं ई फूठरी हो । थारै जेड़ी तो म्हें साथणियां ईं को राखती नीं । पण बेटो म्हें थनं भेद री अक बात बतावूं के जवांनी री मजौ जवांनी में है अर बुढ़ापा री मजौ बुढ़ापा में । लाख जवांनियां साटै ई म्हें म्हारा बुढ़ापा री सोदो नीं करूं । इण लोक रा लोग कित्ता निरभागी है के वं बुढ़ापा री आणंद नीं लं सकै ।

पण भूवाजी आपरा मन में जवांन होवण सारू घणा ई

तल्ला तोड़ता, घणा ई कळपता पण अबे तल्ला तोड़ियां सांधी ई काई लागती । वे खरावण सारू राजकंवरी नै पूछता—अतलोक में बसियां म्हनै बूढ़ी व्हेणी ई पड़ियो अर अठे बसियां म्हें कठई पाछी जवान व्हेगी तो म्हारे दुख री पार नों व्हेला ।

राजकंवरी जबाब देवती—इण लोक री कायदी तो ओ इज है ।

भूवाजी माळा फेरण रे मिस अेकांत में दोय कांम छानै-ओलै करता । अेक ती आपरा घाघरा री चीण में हीरा-मोती भरता अर दूजी घड़ी घड़ी आरसी में आपरी मूंडी निरखता के जवांनी पाछी बावड़ै है के नों । वाने केई वार इण बात री भरम ई व्हे जाती ।

भूवाजी नै जोवण सारू पंयाळ-लोक री मानखी आवती अर वाने देखनै इचरज करती । भूवाजी री ढाळी देख्यां पछे ती वे सगळा ई अतलोक सूं अणूता डरण लागा । पण राजकंवर अर राजकंवरी नै भूवाजी री बुढ़ापी अणूती ई सुवावणी लखावती । वे खुद इण बात री लाळसा करता के दिनां परवाण वे ई बुढ़ापा री आणंद उठावे ।

थोड़ा दिनां में ई भूवाजी वाने पूरा धीजाय लिया । वे इण भांत लाड अर गडकां सूं बातां करता, जाण वारा सूं भली अर स्याणी मिनख तीनूं लोकां में ई नों है ।

पण भूवाजी रे स्याणापणा री थोड़ा दिनां में ई छेह आयग्यो । वे कदेई अेकला बावड़ी रे बारै घूमण नै जावता तो मंत्री रां बेटा नै चीण मांय सूं काढ़ काढ़ने मोती झिलाय देता । मोत्यां री लोभ नों व्हेती तो वे भतीजी नै कदेई

ठाणें लगाय देता । वै केई वार भतोजो रै साथै घूमण नै जावता । अेक दिन राजकंवर कह्यो—इण अमावस नै म्है दोनू घूमण नै जावांला । घणी रात ढळियां पाछा आवांला ।

भूवाजी ऊपरला मन सूं तो हां में हां मिळाई, पण मन रै मांय कह्यो—अबै अमावस री रात अेकला ई घमोड़ा लीजौ ।

तेरस री रात भूवाजी चीण खाली करियां पछे मंत्री रा बेटा नै कह्यो—कालें दोय टाळका घोड़ा लियां आप सांमूला बड़ला रै हेटे ऊभा रंजी । म्हारे हाथ मांयली मिण आपनै झिलातां ई राजकंवरी ने घोड़ा माथे बिठायनै सोरा रंजी ! म्है लारला घोड़ा माथे बैठनै लारै री लारं दीड़ती आवू हूं । चीण मांयला मोती दरबार में पूग्यां आपनै संभळाय देवूला ।

थोड़ी ताळ रुकनै पछे फेर कंवण लागो—साथै रह्यां भूडा भला री पिछांण व्हे । राजकंवर अर नागकिन्या री सुभाव बरतियां पछे वारें साथे घात करण रौ मन नीं व्हे । आपरो आदेस टाळ नीं सकू, इण खातर मन परबारी ओ काम तो करणी ई पड़ेला । पण राजकंवर री संगत सूं तो म्हारी काया ई पलटोजण लागगी । ऊमर में पैली वार म्हारा खोटा मन में भलाई री तिराण उछळी ।

मंत्री रौ डीकरो कह्यो—वा तिराण उछळी जका रौ चानणी म्हनै ई दीस है । थारा दूतीपणा री परचो म्हनै मत बता । थारो जोव डुळगौ व्हे तो वं सगळा हीरा-मोती थू ई राख लीजें । ओ वचन तो निभावणो ई पड़ेला ।

सिकोतरी कह्यो—म्है ऊमर में कदेई साच नीं बोली ।

छळ कपट अर चाळां सूं म्हारी रुं रुं डूबोड़ी है, पण आज तो अेक वार ई साच बोलनै म्हारी जीभ पावन करलूं के आं होरां-मोत्यां रो म्हनै मुळगो ई चाव नीं है । चोरी रो सुभाव नीं छूटै, इण खातर म्हैं चोर चोर नै मोती भेळा करिया । पण वारा सूं मांग लेवती तो इणसूं सो गुणा वत्ता मोती हाथ आय जावता । उठे तो मोत्यां बिचें बांणा रा कण रो घणी कदर है । वं थोड़ा घणा ई पाटक व्हेता तो घात करण रो ई आणंद आवतो । पण वारी अंतस इत्ती धौळो अर निरमळ है के वारें साथै छळ करतां संको आवै । लारला कुकरमां रें कारण ओ छळ तो मतै ई पार पड़ै है, पण पेली वार मन में संका उपजी जको आपनै दरसावूं ।

मंत्रो रो डीकरो सोच्यो के अं सगळा सिकोतरियां वाळा चाळा है । लोभ देवतां कह्यो—थारै राजी व्हियां बिना, म्हैं म्हारा राजकंवर नै नागकिन्या रो उणियारो ई नीं बतावूं । थूं निसंक रें ।

दूती कह्यो—आप मानौ, म्हैं तो ओ छळ नीं करियां सूं घणी राजी हूं । पण म्हारें राजी व्हियां काम नीं सरै । सगळी ऊमर जिणरो लूण-पांणी खायो उणने राजी करणी म्हारी पेली धरम है । अंदाता रो खुसी आगें म्हारें हरख रो काई जिनात ।

मंत्रो रो बेटी मुळकनै कह्यो—अेक घर तो डाकण ई टाळै, थूं म्हारें आगें थारी जाळ मत बिछा । हाल दूजी दुनियां ई घणी बाकी है ।

अबै वा खंखर सिकोतरी कीं जबाब देणो सावळ नीं
फा. ३०

समझियौ । मन में आ बात विचारन सबर करी के दूती रो बातां न जाळ नीं समझणौ ई तो नादांनी है । सोच्यौ के अबे मंत्री रा बेटा सू माथी लगावणी फालतू है । कीं पड़ूतर नीं देवण रौ तेवड़्यां उपरांत ई वा सांमी मुळकने उएरी बात न मानतां थकां कह्यौ — इण दुनियां में किणी आगे म्हारी दाळ नीं गळे तो फगत आपरे आगे । आपरे धके म्हारी सगळी करामातां ठाय रेंवै ।

मंत्री रौ बेटौ पाछी मिसखरी करतो कह्यौ — म्हैं ई ठोकरां थारी खाई हूं । म्हारी आ हुंस्यारी थारी इज बग-सियोड़ी है ।

सिकोतरी कना सू मोत्यां रो झड़ती लेयने वो ती रोजीना री गळाई आपरे ठांणे गियो ।

पण उण खंखर दूती रा मन में साचांणी ई अेक नवौ दूती जलम लियो ही । आज उएने इण नवा जलम रो थोड़ी घणी जाच व्ही ही । इण नवौ दूती रा चाळां आगे तो बरसां पुरांणी दूती न हार मानणी पड़े ।

पंयाळ - लोक में बड़तां मिण रा जोर सू पांणी फाटती हो अर दूती आपरा मन माथे हेमाळे रौ बोझ धरियां होळें होळें पाछी जावती ही । उणरा मन में हरख रौ नांव ई नीं हो । आज ऊमर में पैली वार उणने अेक नवौ अेलम ब्हियो के मन परबारी कीं खोटी काम करणा सू जकौ आतमा में कळेस उपजै, उणसूं वत्तौ दुख दुनियां में फेर कीं नीं है । राजी मन सू आज पैला कैड़ा कैड़ा लांठा अकरम करिया, जिणरौ कोई लेखी ई नीं, पण कळपणौ ती अळगौ, मन में

अणूंतो मोद अर हरख व्हेतो ।

इण भांत रे नवा विचारां री काचो सूत उलझावती
सुलझावती वा उठे पूगी तो राजकंवरी पूछ्यो—भूवाजी, आज
मोड़ा घणा आया । घूमण ने अळगी भांय गया कांई ?

भूवाजी होळें सूं पडूतर दियो—हां, बेटी हां ।

भतीजी कैवण लागी—आपरा अतलोक री छिब ई अंडी
है । उठे गियां पछे पाछो आवण री सोरे सास मन ई नीं
करै ।

भूवाजी रे काळजे फेर अक बळबळतो डाम लागो । वा
कांई काम सारू आई ही अर किण फंद में फंसगी । वा
अकांत में घणो ई इण बात माथे विचार करियो, पण वा
कीं निस्चै नीं कर सकी । मंत्री रा बेटा रो काम तो वा
माडांणी ई करणी चावती, पण मन में कळेस तौ बधती ई
जावै । आपरा अंतस में जलमी नवी दूती सूं वा काठी आंती
आयगी तो वा खमखरी खायने उणरो कंठ रोस न्हाकियो ।
अबै जायने उणरा जीव में सांयत वापरी । राम जांणे कंडी
अणूंतो गांगरत में पजगी । मन सूं ईं घड़ती अर मन सूं
भांगती । अक नाकुछ मामूली सा काम सारू कित्ता कळाप
व्हिया । सेवट नवी दूती रो कंठ रोसियां नेहचो व्हियो ।

अतलोक री चवदस रे दिन जद भूवा भतीजियां दोनूं
बारै घूमण सारू जावण लागी तो फगत भरोसो करण रे
मिस खंखर सिकोतरी राजकंवर ने यूं ईं पूछ्यो—आपरो मन
व्हे तो आप ई सागं चाली । अठे अकला बैठा कांई करीला ।

तद राजकंवर कह्यो—निरी वार अकली रैवणो ई जरूरी

है । सोचण सारू म्हारें गोडें केई बातां है । थें दोनूं जणियां ईं जावो । म्हा तो कालें अमावस रें दिन दोनूं जणा सगळी रात अतलोक में रेंवांला । कोई समझणो आदमो मिळें तो उणनं पूछजो के कालें अमावस ई है कांई । अठें वार तिथां री हिसाब राखणो अणूंतो दोरो है । म्हें घणो ई ध्यान राखूं तो ई पांतरौ पड़ जावें । कालें सूं ओ हिसाब थानें संपूंला ।

राजकंवर री इण भोळप सूं सिकोतरी रें काळजं फेर बळत ऊठी । पण वा पाछो कीं पडूत्तर नीं देयनं उलटी खाथाई कुरती भतीजी नें कह्यो—चालणो ई है तो पछें छेका चालो । फालतू मोडो करणा में कीं आंणी जांणी नीं । राजकंवरां नें तो अणूंती बातां घणो आवें । मतलब री बातां भगवानं जाणें वें कद सीखेला ।

आ कैयनं वा भतीजी री हाथ झालियो । उणनं तगतगायनं नें खाथो खाथो चालण ठूकी । मारग में भतीजी कीं बात करणी चावती तो ई भूवा कीं जबाब देवती नीं । सांमी झिड़कनं दोय तीन वार कह्यो—म्हारो जीव आज ठिकाणं कोनीं । थूं फालतू रा दपूचा मत लें । थूं चार पांच साल री अबूझ टाबर कोनीं जको अं मांमूली बातां ईं नीं जाणें ।

पण भतीजी तो ई नीं मांनो । टाबर री गळाई ठूजी वार फेर कह्यो—आप तो बात बात माथें चिड़ो घणा । थें ऊमर घणी पाई हौ, म्हनं सावळ समझायनं इण बात री म्यांनो दो के मिनख पराई लुगायां री लाळसा क्यूं करे । वें तो इण बात नें मुळगी मानें ई कोनीं । वानें तो विस्वास ई नीं न्है के तीनूं लोकां में अंडो ई कोई मिनख न्है सकें ।

उजास री पोळ आयगी ही । भतीजी फेर आगं कंवण लागी—पण म्हें तो अंकर भुगतियोड़ी हूं । अंक मिनख म्हारो लारो करती टेट बावड़ी रं पगोटियां पगोटियां मलापती आयो । मिण रा जोर सूं पांणी फाटनं म्हनं मारण नीं देवती तो म्हामें उण दिन जबरी व्हेती । उण बात नै आज ई चिताळूं तो म्हारा रूंगता ऊभा व्हे !

भूवाजी झालियोड़ा हाथ नै जंझेड़ता थका कंवण लागा—म्हारो माथो मत पचा । माठ कर । भगवानं थनं लुगाई री ठोड़ कागला री कुपाळी दी है । आठ पौर कांव कांव करती ई रंवे । अबं म्हारा कांन खाया तो चुट्टी पकड़नं किणी दूजा मिनख नै सूप देवूला । पछे थनं ठा पड़ेला के आदमी पराई लुगाई री मंसा क्यूं करं । इण बात री सावळ ठा पड़ियां पछे थूं दुनियां नै म्यांनो समझावती रंजै ।

भतीजी नै तो ई चेतो नीं व्हियो । वा जांण्यो के भूवाजी नै उणरी बातां माथै रीस आयगी है । पण तो ई वा भूवाजी री रीस सूं विसेस डरपी कोनीं । वा तो फेर अंक अणूती बात करी । कंवण लागी—भूवाजी नाराज नीं व्हो तो अंक खास बात बतावूं । उण मिनख रं लारो करियां पछे म्हारा मन री वेम मिटियो कोनीं । वेम तो वेम इज है । म्हारा मन री ओछापणो देखो के म्हनं सरूआत में आपरो ई वेम व्हियो ।

आ बात सुणतां ई भूवा री हाथ थर थर धूजियो । वा होळें सूं धूजतं कंठ पूछ्यो—काईं म्हारो वेम ?

भतीजी हंसती थकी जबाब दियो—हां आपरो वेम !

इण कालाई रौ म्यांनो म्हैं वांनं पूछ्यो । वे केई वार तो टाळमटोळ करता रह्या । पण म्हैं लारो ई पकड़ लियो । वांनं कह्यो के अपारा अं भूवाजी कठे ई अपारें साथे घात नीं कर बैठे ।

सांमी हवा री पोळ आवण वाळी ही । भूवाजी अणजाण ई में राजकंवरी रौ हाथ छोड दियो । बोला बोला उणरें साथे चालण लागा । भतीजी आगं फेर कंवण लागो — दुनियां में फेर इण भांत री केई बातां व्हे । म्हैं वांनं कह्यो के कदास इण बात माथे थोड़ी घणी तो विचार करी के अं भूवाजी उण मिनख रा ई भेज्योड़ा है । बातां बातां में भरमाय ने म्हारें साथे घात कर दियो अर अं दोनूं मिळ परा ने म्हने उडाय लेम्या तो थारो म्हारो कांई दोन व्हेला । मिण बिना थें बारें नीं आ सकौ अर मिण बिना म्हैं मांय नीं आय सकूं । आ दुरगत व्हियां म्हारो तो मगज कीं काम नीं देवला । थें ई बतावो के उण वगत म्हैं कांई करूं अर कांई नीं करूं ।

भूवा रें गळा में जाणं कोई डूजो फंसग्यो व्हे ज्यूं । नीठ होळें सूं बोलो — भली आदमण क्यू कांव कांव करे । थोड़ी ताळ तो मून राख । घणी चीं चपड़ करी तो थामें आज आ ई करने बतावला ।

भतीजी भूवाजी रौ हाथ झालियो अर हंसती थकी कंवण लागी — अबं थें म्हने किती ई डरावो तो ई म्हैं डरूं कोनीं । ओ वेम तो वां दिनां ही । आज तो म्हारा मन में वेम रौ लवलेस ई कोनीं । पण राजकंवरजी रौ मन तो रांम जाणें किण संचं ढळियोड़ी है के वं तो उण दिन म्हारें इत्ता केणा

माथे ई वेम नीं करियो । जद म्हें घड़ी घड़ी पूछयो के म्हें अंडा विखा में कांई करूं अर कांई नीं करूं म्हने आप कीं उपाव तो बतावो । तद वं अंडो उपाव बतायो के सुणतां ई म्हारो मगज तुरत ठिकाणें आयग्यो । उण दिन सूं ई म्हने कदेई किणी माथे वेम नीं व्हे ।

भूवाजी नै लखायो के वारी काळजी जाणें केकड़ा रा पंजा में झिलियोड़ी पींचोज है । वारी नाड़ियां में जाणें लोई ऊंधो बेवण लागो । बोलणी चायो तो ई वारा मूंडा सूं बोल नीं निकलिया । अबे पयाळ-लोक री सींव खतम होयने बावड़ी री पांगी सरू व्हेगो ही । मिण रा जोर सूं पांगी फाटें ज्यूं भूवा री काळजी ई फाटण लागो ।

भतीजी फेर धके कंवण लागी—वारें बतायोड़ी उपाव थें ई सुणो तो सुणतां रें जावो । वं सांमी म्हने समझावतां कहा—कदास थारें कंणा मुजब वेंड़ी अजोगती बात बण जावें तो थें किणी नै उण बात री चरचा ई मत करजो । बोला बोला लिजावणिया रें साथे जाजो परा । लोगां नै थोड़ी घणो ई भणक पड़गी तो पछें वं किणी गरीब दुख्यारा माथे कदेई भरोसो नीं करेला । अपां तो कीकर ई करने विखो काट लेवांला, पण वा बात परगट व्हियां थें ई बतावो दुख्यारां री कांई दीन व्हेला । वारा दुख-दरद माथे कुण पतियारो करेला !

बात सुणतां ई भूवाजी रा कांनां में तो जाणें अकण सागें हजार तोपां दागी । आख्यां सांमी जाणें सूरज तूटने बिखरग्यो ।

दोनूं जणा बावड़ी रें पांगी सूं बारें निकलनै अतलोक

में आयग्या हा । भतीजी री बातां सुणणा सूं भूवाजी तो आपरी सुध-बुध ई पांतरग्या । वानं इण बात री ई चेतो नीं रह्यो के अबं वानं काई करणो है अर काई नीं करणो है ।

भतीजी री कळाई सेंठी पकड़नै वै किड़किड़ियां चाबता कैवण लागा—आया बापड़ा दुखियारां री सोच करण वाळा ! दुनियां रा दुख्यारा थां दोनां रै ई भरोसे को है नीं । थें ढोल घुराय घुरायने सगळी दुनियां में उण बात री हाको करजो । थारो लारो करणियो सिकारो राजकंवर थनं लेवण सारू बड़ला हेटे ऊभो है । म्हैं छळ सूं थनं बारें भरमायनं लाई हूं । आया बापड़ा दुखियारां री दुख-दरद मेटण वाळा ।

आ कैयने भूवाजी तो कोई भली सोची नीं कोई भूंडी, दोनूं हाथां सूं भतीजी रें सोनल बाळां री चुट्टी झालियो अर उणन तगतगावता सीढ़ियां चाढ़ण लागा । उण वगत वामें घोड़ा जित्तो करार आयग्यो हो । वै घड़ी घड़ी किड़किड़ियां चाबता अर कैवता जावता—आया बापड़ा गरीबां री सोच करण वाळा ! थ छाती माथा कूटती सगळे डूंडी पिटवाय दीजै, दुनियां सूं छी म्हा गरीबां री विस्वास ऊठती ।

चुट्टी खांचतां खांचतां भूवाजी भतीजी नै पाज माथे लाया तो बड़ला हेटे ऊभो अक घोड़ी जोर सूं हींसियो । उणरी हींसणो सुणनं दूजोड़ी ई जोर सूं हींसियो ।

घोड़ा री हींसणो सुणतां ई भूवा नै अणूती कांपणी छूटी । वारा हाथां सूं अणजाण में मतै ई चुट्टी छूटग्यो । अक छिन में ई काया पलट व्हेगी । छबरां छबरां रोवता कैवण लागा—राजकंवर री बातां तो म्हारी सगळी अंस ई काढ़ लियो ।

जे थां जैड़ा लोगां री म्हनै संगत मिळती तो आज म्है ओ दूती री कांम वयू करती । फगत म्है ई जाणू के म्है कंड़ा कंड़ा अकरम करिया ।

घोड़ा फेर हींसिया । भूवाजी धूजता हाथ सूं उठीनै सांनो करता थका कैवण लागा—म्हारं कंणा सूं ई वो दुस्ती थनै उडावण सारू आयी है । पण अबे तो वो थारी छीयां ई कांई देखलं ।

भतीजी ने तो सोचण री कीं मौकी ई नीं मिळियो । के इत्ता में भूवाजी उणने कड़ियां तणी उंवायनै मोरां लारै ली अर पाछा आया उणी पगां दड़बड़ दड़बड़ दो दो पगोतिया मलापता बावड़ी में बड़ग्या । बावड़ी पार करियां जद हवा री पोळ आई तो वारा जीव में कीं नेहचौ ब्हियो । भतीजी ने दोवड़ी कमर सूं हेटै उतारनै थोड़ी कड़ियां पाधरो करी । कैवण लागा—अबे उण दुस्ती री कीं बख नीं लागे ।

पछे जड़ियां उघड़ियोड़ा लांबा दांत काढ़नै मुळकता थका कैवण लागा—म्है तौ जवांनी री ई लाळसा करती ही, पण इण पंयाळ-लोक में तो आज म्हारो नवो जलम ब्हियो । म्हारो नवो जलम ब्हियो ।

नवा जलम री खुसी में बावळा ब्हियोड़ा भूवाजी ताळ ताळ ऊंचा कूदण लागा । अर सुध-बुध पांतरियोड़ी भतीजी आख्यां फाड़्यां वारै सांमी टकटकी लगायनै देखतो री ।



दूजो राजकंवर

दूजोड़ी राजकंवर तपसी रै कना सू कोस डोढ़
कोस ई अळगो गियौ ब्रैला के उएने सांमो
अक गरीब बांमण धकियो । राजकंवर हाथ जोड़ने कह्यो—
पगा लागूं माराज ।

बूढ़ो पिंडत आसीरवचन कैयने उठे ई ठमग्यो । पूछ्यो—
बारै बरसां री समाध सूं ऊठनिया तपसी री आसण अठा सूं
अबै कितौक आंतरे है । म्है तो हालतो हालतो थाकग्यो ।

राजकंवर कह्यो— पिंडतजी अबै घणी भांय कोनीं । सांमलै
घोरे ढळतां ई आपने अक जंगी बड़लौ दोखला । उण बड़ला
हेटे ई तपसी री आसण है । आप हुकम फरमावो तो म्है
आपने उठा तक छोड़ने आय जावूं ।

पिंडतजी कह्यो— नीं बेटा, म्है आपरा स्वारथ सारू मारग
चालता बटावू नै क्यूं तकलीफ दूं । सुण्यो के किणी देस रा
आठ राजकंवर उठे आयोड़ा है । दया अर करुणा रा सागर ।
किणी दुखियारा री दुख तो वै देख ई नीं सकं । इण लोभ
सूं म्है वारै पाखतो जावूं हूं । म्हारै सात बेटियां हैं । रूप
अर गुणां री खान । पण नांणा बिना म्है अक रा ई हाथ
पीळा नीं कर सकियो । हाथां रमायोड़ी पाळियोड़ी बेटियां, बिना
परणायां खारी जेर लागे । अंटी में नांणो ब्रै तो लोग गधेड़ी
सूं हथळेवो जोड़लै । म्हारी बेटियां जंडी गुणवंती डावड़ियां
दुनियां में को लाधे नीं । पण नांणा रा जोर आगे तो किणी
री ई जोर नीं चाले । कांई करूं बेटा, दरजे लाचार होयने

म्हैं वां राजकंवरां री आसा में निकलियो हूं । थूं ठायो बताय दियो, अबे म्हारा करम म्हारे कने है ।

राजकंवर गळगळा कंठ सूं कह्यो—पण पिंडतजी वे आठूं राजकंवर तो काले ई तपसी री आसण छोड दियो । अबे पाछा बारें महीना सूं उठे भेळा व्हेला । वे सगळा वहीर व्हिया जद म्हैं उठे ई ही ।

पिंडतजी तो ओ समंचार सुणतां ई गोडां रे हाथ देयने उठे ई झरड देती रा बेठग्या । बोल्या—बाई री करम ई रांडची तो काई करे पांडची । लिप्टर लिप्टर करतो सतरें कोस पाळी आयो जद आ सुणावणी मिळी ।

राजकंवर थावस देवतां कह्यो—पिंडतजी यूं घरत्यां हाथ काई टेको । इण घरती माथे फगत वे आठ राजकंवर ई तो नीं बसें, भळे ई कोई मिनख बसता व्हेला नीं । सगळी दुनियां री काम वे आठ राजकंवर ई तो सारणा सूं रह्या ! म्हारे सांगे चालो, म्हैं थारे वास्तै अवस कीं न कीं जुगत बिठा-वूला ।

पिंडतजी भारी गळा सूं कंवण लागा—बेटा कोरी मिनख व्हियां ई काई व्हे ! यूं तो म्हारा चौखळा में ई घणा मिनख बसें । जकां कने नांणी है, वारे कने देवण सारू मन कोनीं अर जकां रे देवण सारू मन है, वारे कने नांणी कोनीं । झूठो किराने दोसण देवूं । म्हारी बेटियां रे तेल चढ़ण री जोग ई कोनीं ।

राजकंवर कह्यो—जोग री टीपणी बांच्योड़ी व्हेतो तो थे इत्ता डाफा क्यूं खावता । जोग अजोग री तो पैला किराी ने

कीं ठा पड़े नीं । हीमत हारनै बैठणा सूं तो कांम नीं सरैला ।

पिंडतजी मन परबारा ई राजकंवर रै सागै पाछा वहीर
 ब्हिया । घर-विद री बातां करता करता वैं चारेक कोस
 री पैंडो पार करियो व्हेला के वानें मगरा री ढळांत सूं हेटे
 किणी सिंघ रै डाढ़णा री आवाज सुणीजी । कांनां में आवाज
 पढ़तां ईं पिंडतजी रा तो धैं छिलग्या । वैं धूजता धूजता
 कैंवण लागा—आप सुणियो के नीं, कठै ई नैडो मारग माथै
 सिंघ गरजै है । सांमी गियां तो निस्चैं काळ है । बेटियां
 रै हथळेवा पैला सिंघ री हथळ पड़गी तो म्हारी सात पोढ़ियां
 रा सगळा ब्याव बिगड़ जावैला ।

सिंघ री आवाज लगौलग सुणीजती ही । राजकंवर कांन
 देयनै पूरा ध्यांन सूं वां आवाजां नैं सुणतौ ही । थोड़ी ताळ
 सोच विचारनै कह्यो—पिंडतजी, निस्चैं रूप सूं अैं आवाजां तो
 सिंघ री है, पण म्हनै लखावैं के ओ सिंघ गरजै कोनीं डाढ़ै
 है । इणरी आवाज में निबळापणी है । उणरा डील में कीं
 घाव के कीं अणूती पीड़ है, नींतर सिंघ यूं डाढ़िया नीं करे ।
 पाखती जायनै देख्यां सावळ ठा पड़े । बराती कोसिस उणनै
 मदत देवणी चाहीजै ।

पिंडतजी जांण्यो के कदास ओ आदमी तो सफा बावळो
 दीसै । म्हैं मिळियो तो म्हारी सहाय करण नैं तैयार अर
 सिंघ री डाढ़णो सुणियो तो उणरी मदत करण नैं आखती ।
 ओ मदत दे दी अर बेटियां रा ब्याव व्हेगा । मगज में वादी
 री असर दीसै । कह्यो—भाया, सगळी दुनियां री भलाई री
 ठेको थारै लियोड़ी है तो थूं अवस भलाई कर, थनै म्हैं नीं

बरजूं, पण म्हारे सात लिछमियां परणावणी है । इणसूं तो म्हनं सिंघ रं गरजणा अर उणरं डाढ़णा रो फरक समझ में नीं आवं । सिंघ रो कांई तो डाढ़णी अर कांई उणरो निबळा-पणी । थारी बातां तो अजब ऊंधी है । म्हें थारा कना सू मदत भरपाई । थूं थारं मारग जा अर म्हें म्हारं मारग जावूं ।

राजकंवर नरमाई रं साथे कहचो— पिंडतजी जकी आदमी मदत लेवण नं त्यार व्हे उणने वगत माथे पाछी मदत देवणी ई चाहीजे । सिंघ कुदरत सू ई करारो बणियोड़ी है इणरो तो वो ई कांई करे, पण डील में पीड़ रो दरद तो उणने ई लखावे । जे वो भूखी अरड़ावती व्हेला तो अक सू वत्ती घात नीं करेला । म्हारं थकां आपरी बारी नीं आवण दू । धाप्यां पछे वो आपनं अल ई नीं पुगावला । आप मन में धोजो राखी ! मन में डिढ़ता अर साच व्हे तो कठे ई कीं जोखी कोनीं । मिनख रो खोलियो धारियो हौ तो जीव मातर माथे दया विचारो ।

पिंडतजी ई मनांग्यांना विचार कर लियो के बेटियां रो ब्याव नीं करियां म्हें तो मरियां समान हूं । जीवतो ई नीं जंड़ी । अर इण बिचाळें सिंघ मार न्हाकियो तो भरम तो बणियो रंवेला । लोग कंवैला के बापड़ी पिंडत जीवतो तो कीं न कीं जुगत अवस बिठावतो । आ सोचने वो राजी-खुसी राजकंवर रं साथे व्हेगो । ऊपरला मन सू माथे ठोसो राखतां कह्यो—बख लागतां जे मिनख किणी ने मदत नीं करे तो वो सिंघ अर सांप सू ई गियोबोतो है ।

दोनूं खाथा खाथा चालण ठूका । राजकंवर रो बात

साव साची निकळी । अक वाळ्हा में आडो पड़ियो सिंघ अर-
डावतो ही । उणरा आगला दोनूं पंजां में थोर रा कांटा
भागगा हा । राजकंवर रै पाखती जातां ई वो नीठ बेठी
व्हियो । आख्यां में आंसू ढळकावतो कंघण लागी — थारै
पाखती कोई तीर कबाण व्हैतो म्हारै सांमी छाती मार दी ।
ओ कांटा री दरद म्हारा सू सहन नीं व्है । के तो म्हारी
दरद मेटी के म्हारा प्राण मेटी । प्राण नीं नीसरै इण खातर
पड़ियो पड़ियो डाढूं हूं । सिंघ डाढ़ण लागे ती बात साव
खूटगी ।

पिंडतजी थोड़ा सा अळगा बांटका रै ओलै लुक्योडा ऊभा
हा । राजकंवर ने निरांत सू बातां करतां देख्यो तो वं दुळक
दुळक उठे आयग्या । राजकंवर खामचाई सू कांटा काढ़ण
लागो ।

पंजा सू कांटा निकाळतां ई जाणें जगजगाता खीरा बारै
निकळिया । तुरत पंजां री बळत मिटगी । सिंघ लप बेठो
व्हैगो । पूछ हिलायने राजकंवर रा पगां में दो तीन वळा
लुटियो ।

राजकंवर पूछ्यो — पंजां माथे हालणा में अबकाई आवती
व्है तो म्है मोरां माथे उखणने ये माथे पुगाये दूं ।

सिंघ मुळकने कह्यो — असली सिंघ हूं तो जीवूं जितें
आपरी औसाण पांतरूं कोनीं । जे घड़ी ताळ ये नीं आवता
तो म्है कुत्ता री मौत अरडावतो मर जातो । आज म्हनें
नवो जमारो मिळियो ।

थोड़ी ताळ रुकने वो फेर कह्यो — आपनें म्हारी ये ताई

अक तकलीफ तो भळै करणी पड़ैला । उठै हीरा मोती अर मोहरां री अक चरू गडियोड़ी है, वो म्है आपरै निजर करणी चावूं ।

राजकंवर कह्यो—म्है इण लोभ री खातर ओ कांम थोड़ी ई करियौ ही । पण पिंडतजी वास्तै बात नांमी भरै पड़ी । आज तो थें म्हारी लाज राख दी ।

तीनूं जणा बंतळ करता सिंघ री थै माथे पूगा । सिंघ आपरा कैणा रें मुजब पंजा सूं उकराळनै आखी चरू वारै हवालै कर दियो । पछै राजकंवर रें सांमी देखनै जळजळी आंख्यां कैवण लागी—कांटा काढ़ती वगत पंजा माथे आपरी आंगळियां रा परस सूं म्हनै म्हारो मां री याद आयगी । आपरा परस में म्हनै मां वाळी भावना लखाई । ओ चरू तो चीज ई कांई है ! म्हारें कनं परगट करण सारू बोल कोनीं । इण खातर आप म्हारा आंसुवां सूं म्हारै मन री बात समझ जावो ।

आ कैयनै वो सिंघ छबरां छबरां रोवण ठूकौ, जको ठमियौ ई नीं । राजकंवर दोनूं हाथां सूं आंसू पूंछती जावती अर सिंघ ठळाक ठळाक आंसू ढळकावती ई जावती ।

चारूं वेदां रें जाणकर पिंडतजी री निजर चरू माथे ही । वे मनांग्यांना हिसाब करण लागा के चरू में कित्तौ कांई माल न्है सकै । इण चरू रा धन में तो सगळा चौखळा री कंवारी धोवड़ियां परणीज सकै । तड़कै सुगन ई नांमी न्हिया हा । राम जाणै ओ बटाळ कित्ती पांती पटकावेला !

सेवट दोनूं जणा उठा सूं वहीर न्हिया । पिंडतजी माथे

चरु उखणण लागा तो राजकंवर कहाँ—आप बडेरा हौ, इण वास्तं पूजनीक हौ । म्हारे थकां आपरो बारी नीं आवे । ओ भार ऊंचायनं म्हैं आपनं ठेट आपरें घर पुगावूला ।

पिंडतजी घणी ई पालापूली करी तो ई राजकंवर आपरो हठ नीं छोडियो । सेवट सिध पिंडतजी नं कहाँ—आप मन में किणी बात रो संको मत आणो । अं भार उखणण रं सिवाय चरु मांय सू कोई पांती नीं पटकावैला । म्हैं जिनावर होयनं जकी बात सुभट समझग्यो, वा हाल तांई आपरी सुमझ में नीं आई ।

सिध री बात सुणनं पिंडतजी कीं लचकांणा पड़्या । होळें सूं बोल्या—ओ सगळी धन आंरा परताप सूं ई हाथ लागो । सगळी ई राखें तो म्हैं बरजरियो कुण व्हूं ।

रांम जाणें कांई सोच विचारनं सिध कहाँ—पिंडतजी बुरी नीं मानो तो अक बात कैवूं ।

पिंडतजी माडांणी मुळकता थका कहाँ—आपरी बात रो म्हैं बुरी मानूला, ओ वेम आपरा मन में कीकर उपजियो । अक छोडनं बीस बातां कैवो तो ई म्हैं बुरी क्यूं मानूं ।

सिध कहाँ—आपरी निजर अर आपरी उणियारी देखनं म्हनं इण बात री अलम व्हियो के घणकरा मिनख म्हां जिना-वरां सूं हीण अर अधम व्हिया करे ।

पिंडतजी फोटा पड़नं कहाँ—आप फरमावो तो बात साचो ई व्हेला । हाथ रो आंगळियां ई किसी सरोखी व्हे । किणी रा जीव में तो कुण जीव घाल सकें । म्हैं तो म्हारी जाण में आज दिन तांई किणी री बुरी चीत्यो कोनीं ।

राजकंवर देख्यो के कठई कोरी बातां बातां में बात नीं बध जावै, इण खातर अणजेज माथै चरू उखणनै उठा सूं वहीर विह्यो । मौकी देखनै पिंडतजी ई टुरग्या । सिंध दोनूं जणा नै खासी भांय ताई पुगावण नै आयो । ठेट मारग लग आयनै वो आपरी थै सांमी मुड़ियो । राजकंवर री बात याद करनै अकली ई बड़बड़ायो—जंगल रा जिनावरां नै तीर कबांरां सूं अनाघात मारणिया ई मिनख है, ओ कांटो काढ़-णियो ई मिनख है अर तिलक छापा वाळो ओ पिंडत ई मिनख है ।

माथै चरू उखणिया बटाऊ रा बारा में सोचता सोचता पिंडतजी तो गताघूम में पड़ग्या । आपरा अणूता लोभी मन रै जोड़ै करनै नापता तो वानै वो अणूतो चात्रंग लखावतो । हाल ताई ओ भरोसो नीं विह्यो के ओ चरू वारं हाथ आय जावैला । के तो ओ असंधो बटाऊ साव बावळो अर सितंगियो है । मारग में कठई रूंगी आयगी तो टूंपो देयनै मार न्हा-कैला । के ओ पूरण अघोरी है—लोभ, स्वारथ अर डर में कीं समझै ई कोनीं । जिण ममता सूं वो सिंध रै कांटा काढ़िया, अँड़ी ममता तो घरवाळां सूं ई नीं न्है । पिंडतजी पुराणा सास्तर याद कर करनै उणरी पिछांण करण सारू घणा ई खपिया, पण कीं बात बणी नीं । इण भांत अण-चींत्या अमोलक खजांना री कुण त्याग कर सकै—पिंडतजी रै कीं समझ बैठी नीं । चरू तो राजकंवर माथै हो, पण उणरी हजार गुणा बोझ पिंडतजी नै आपरै माथै लखायो । पिंडतजी रै हाथ ओ खजांनो आवैला के नीं, बेटियां री ब्याव न्हैला

के नीं, पिडतजी पूरण रूप सूं कीं निस्चै नीं कर सकिया ।

अर उठीनै राजकंवर तो मन में अणूतो ई राजी हो ।
जे मारग में सिघ वाळी आ अणचीतो तोजी नीं बैठती तो
आठ राजकंवरां रै भरोसे आयोड़ा इण बांमण नै कीकर मदत
बण आवती । आज तो लाज बची पण बची ।

यूं न्यारा न्यारा सोचता विचारता अर भेलो बातचीत
करता वं दोनूं जणा आधी ढळियां अेक बेरा माथे आया ।
पांणी पीयां पछै राजकंवर आगं हालण री मतो करियो तो
पिडतजी कह्यो—महैं बूढ़ो आदमी हूं, म्हारी ऊमर में ई
अेकण सागं इत्तो पेंडो नीं करियो । बिना बिसाई खायां हालणो
दोरो है । इण सूं ठावकी ठोड़ फेर कांई व्हे । थोड़ा हाडका
पाधरा करलां । झांझरकै वंगा ऊठनै फेर वहीर व्हे जावांला ।
पछै आपरी मरजी ।

इत्तो देर साथ रह्यां बटाऊ रा सुभाव रा बारा में
पिडतजी आ बात तो आछी तरें जाणली ही के वारें थाकैला
री केणा सूं ई ओ बिसाई वास्तै ठैरैला । अर वारी बात
साव साची निकळी । राजकंवर कंतां पाण हुंकारी भर लियो ।
हुंकारी भरतां ई वो तो बेरा री पाज माथे निसंक होयनै
सूयग्यो । हीरा मोत्यां वाळी चरू पगांतिये पड़चो हो । सूतां
ई वो तो घोर खांचण ढूको । अर पिडतजी सूवण री मिस
करनै सूय तो गिया पण वारी आंख्यां में नींद कठे ! वं तो
अणूता आळ-जंजाळां में फंसग्या । बीच बीच में सास्तरां रा
केई मंतर घोखिया, पण वारा जीव नै सांयत नीं मिळो ।

पिडतजी मन में विचार करण लागा के धन री जड़ ठेट

काळजा में व्हे । जे म्हनै नींद आय जावें अर ओ बिचाळे जागने चरू उखणनं ढळ जावें तो म्हांमें कंड़ी कुजरबी बीते । कांई ठा ओ घोर खांचण री मिस ई करतो व्हे । किणी रा जीव में कुण जीव घाल सकें । वानें तो आपरा जीव री ई पतियारी कोनीं, पछे दूजा रे मन री कुण कांई कै सकें । धन सू किणनं परीत नीं व्हे ! पण ओ चात्रंग ठगोरी हाल तांई आपरो साचेली सुभाव परगट नीं करियो । जे ओ नींद री मिस करतो भच देणी ऊठनं म्हने बेरा में थरकाय देवें तो पछे म्हांमें कंड़ी भूंडी बीते ।

थोड़ी ताळ में ई पिंडतजी नै पूरो निस्चं व्हेगो के आज तो बेरा में पड़ियां ई सरंला । धन अर प्राण दोनूं गमावणा में अबं कीं मीणमेख नीं । आपरो जावतो आपरें कने है । आप मरियां बाप किणने याद आवें । बिना कपट व्हियां ओ इत्ती भांय चरू उखणनै क्यूं आवतो । महा छळगारी ठगोरी कठारी ई !

पिंडतजी खमखरी खायनै भच बंठा व्हिया । अर घोर खांचता उण बटाऊ नै बेरा में थरकावता इज निगें आया । माथे फेर ठोसो मारियो—अबं बेरा रे मांय जायनै सावळ घोर खांचजे ।

पछे धूजता हाथां सूं धन री चरू माथे उखणनै वेदां रा मंत्र घोखता आपरें गांव री मारग लियो । घड़ी घड़ी मन नै समझावता के आज ती बचिया पण बचिया । भरोसा री जमांती ई कोनीं । कुण जाण सकें के इण अबूझ बावळा मिनख रा पेट में हाथ हाथ लांबी छुरियां व्हे सकें । मिनख

नै आपरी छीयां री ई भरोसो नीं करणी चाहीजें । म्हैं किस्ती भोळी हूं जको असंधा बटाऊ माथे विस्वास करियो । बेटियां रें भाग री बचग्यो, नींतर आज मरण में कीं कसर बाकी नीं ही ।

पिंडतजी नै भळें अेक वेम उपजियो के अंडा दुस्ती कोई सोरें सास मरिया नीं करे । ठाली-भूलो लारें री लारें दौड़नै आयग्यो तो म्हनें जीयामोत मार न्हाकैला । आ मोचनै अेकर तो वै अणूता आंचे दौड़िया । पण बुढ़ापा रें कारण सो अेक पांवंडा दौड़तां ईं हांफणी चढ़गी, सास चढ़ग्यो । वानें मतें ईं ढबणो पड़ियो , खेजड़ी रें हेटें ऊभनें लारें जोयो के कठेई वो आवे तो नीं है । अळगी भांय लग कोई चिड़ी री बिचियो ई आवतो नीं दोस्यो जद जायनें वारो काळजो ठरियो ।

अर उठीनै पांणी माथे पड़तां ईं जोर सूं हविंदो सुणियो तो राजकंवर री नींद तूटी । आपो संभाळियो । हाबगाब होयनें तिरण सारू झांपळियां मारी । दो तीन गुच्छकिया खायां पछै बातड़ी बख में आयगी । पैली ई विचार ओ आयो के सिर-कतो सिरकतो वो आपे ई बेरा में गुड़ग्यो । पण भगवान सहाय करी के प्राण बचग्या । पिंडतजी हविंदो सुणने अवस जागिया व्हेला । बारें निकाळण सारू अबारूं उपाव करैला । थोड़ी ताळ तांई तो वो पिंडतजी रा उपाव नै उडोकतो रह्यो । परा उणने कीं खटपट नीं सुणीजी तो वो जोर जोर सूं हेला पाड़िया — पिंडतजी, पिंडनजी !

पिंडतजी उठे व्हे तो सुणें । वै तो खेजड़ी हेटें ऊभा बिसाई खावता हा । पगां गोडे पड़िया चरू नै देखनें वै विचार

करियो के अंकर सगळी घन ऊंघायनं देखूं तो सरी । खांधा माथायली घोटड़ी बिछायनं वै चरू खाली करियो । घन री नजारी देखियो तो वै देखता ई रह्या । हरख सूं दो तीन वार मूंफाड़ फाड़नं कह्यो—दुनियां में भगवानं है तो खरी, दुनियां में भगवानं है तो खरी । सेवट गरीब री हेलौ सुणियो । अर हेलौ ई अंडौ सुणियो के सात री ठोड़ सात सौ छोरियां रा थाट सूं ब्याव करूं तो ई ओ धन नों खूटे । म्हैं खुद बांमणी थकां ई मन करूं जित्ता ब्याव भळै कर सकूं । उण में अबै घणौ कस को रह्यौ नों ।

पण इण बिचाळै ई अंक नवी बात वानं फेर सूझी—लाख रिपियां री रसम अदा करने राजव्यास रें पद पूग जावूं तो पछे काई पूछणौ ! अंक मोती रा मोल में ओ पद मिळै । चरू में पाछी घन घालती वगत वै दो तीन वार बड़बड़ाया—म्हैं राजव्यास बणूला, राजव्यास बणूला । अर राजव्यास रा मंसोबा बांधता वै फेर खाथा खाथा आपरै गांव सांमी व्होर भ्रिया ।

अर उठीनं बेरा में थरकीजियोड़ी राजकंवर बेरा सूं बारै निकळण री तजबीज सोचण लागी । तिरतां तिरतां कायो होयनं वो अंक खोखाल में वड़नं बंठग्यो । बेरी अंडौ सफोट बंधियोड़ी ही के हाथ भरियो ई ऊंचो चढ़णी नों आवं । पांणी रें मथारें पक्कौ भाटौ व्हेणा रें कारण दो तीन खोखालां ही ।

बूढ़ा पिंडत रें राजव्यास री अणचींती तोजी सजी तो बेरा सूं बारै निकळण सारू राजकंवर रें भाग री ई जुगत

बैठगी । लक्खी बिणजारा री बाळद उण बेरा रें गळाकर नीसरी तौ वो आपरा रथ सूं हेटै उतरियो । आदेस करियो — आज सिद्ध्या तक पड़ाव अठै ई करांला । ओ बेरो छोडियां धकै बाईस कोस तक पांणी नीं है । बाळद नें सावळ पाय, साथै पखालां, लादियां अर दीवडियां भरली ।

लक्खी बिणजारा रें साथै बेरा सींचण रा सगळा संज हा । आदेस मिळतां ई लाव, चड़स अर पंजाळी बेरा साथै आई । अर हांकरतां बेरो जुतियो । खामीड़ी सरण रें आघेटै पूगी के सिचारू बेरा रें मांय झांकियो — ओ कांई नवो तोतक ! चड़स रें मांय कोई मिनख बैठोड़ी दीसे । वो डरियो । खामीड़ा नें बळद ढाबण रो कह्यो । पछे बेरा में भाळनै पूछ्यो — थू कुण है, कोई भूत के पलीत ?

चड़स मांय बैठ्यो मिनख ऊंचो मूंडो करनै कह्यो — म्हैं नीं भूत हूं अर नीं कोई पलीत । थारें सरीसौ ई मिनख हूं । रात रा पाज माथा सूं सूतो सूतो नींद में मांय थर-कीजगो । इण चड़स रो भंग देखनै मांय बैठग्यो । आपनै कीं तकलीफ व्ही तौ माफी चावूं ।

सिचारू कह्यो — भाया, इण में तकलोफ रो किसी बात ! मिनख ई मिनख रें वगत साथै आडो आवे है ।

पछे वो खामीड़ा नें कह्यो तौ वो बळद हांकिया । राजकंवर पाज साथै चढ़तां ई अठी-उठी जोयनै पूछ्यो — अठै अक बूढ़ा पिंडतजो नें को देख्या नीं । वें म्हारै साथै हा ।

पण उठै पिंडतजो व्ही तौ कोई देखें । मारग ढळतां रा वारा खोज सुभट दीखता हा । राजकंवर तुरत लखग्यो के वो

मते बेरा में नीं पड़ियो । पिंडतजी घन रा लोभ में घात करग्या । वं म्हनें सावळ पिछाण नीं सकिया । मन रा भरम भरम में ओ खेली करग्या । तो ई वो किणी न आपरा मन री बात दरसाई कोनीं ।

पाज सूं ताचकने सीधो पांणी माये पड़णा सूं राजकंवर री डोल जरकोजगो हो । बारें आतां ई उणरो सांधो सांधो कुळण लागो । जाणें कोई मोटा गिड़ा रें हेटै उणरो डोल दबग्यो व्है ज्यूं ।

बिणजारी सतवाड़ा तांई उठे ई डेरो राख्यो । राजकंवर री सावळ पाटा-पोड़ करी । आठवें रोज राजकंवर पूरण रूप सूं भलो-चंगो व्हैगो । बिणजारी वहीर व्हैती वगत राजकंवर न अेक भुळावण फेर दी । कह्यो—ओ मारग टाळनै थें जीवणी बाजू जाजो । इण मारग रें धकला राज री सींव में वड़तां ई थानै राज रा सिपाई पकड़ लेवैला । लारला दस बरसां सूं कोई बटाळ उण राज री सींव में पग ई नीं धरें । उणरो राजकंवरी अेक अनोखी ई प्रण लियो है । नौ दिन निरणा सिंघ रा पींजरा में पकड़ियोड़ा बटावुवां ने न्हाकें । जकौ सूर-वीर के तो आपरी ताकत सू सिंघ ने मारें के सिंघ खुद उणारा तेज आगें हार मानलै, फगत उण मिनख रें साथे वा ब्याव करेला ।

बिणजारी अेक ऊंडी निस्कारो न्हाकने धकै फेर कंवण लागो—इण प्रण रा थोथा गुमेज में वा राजकंवरी सैकड़ूं मिनखां नै हकनाक मराय दिया । भूखी सिंघ होकारां भरती ताचकने हत्थळ वावें अर थर थर घूजती मिनख मरती वगत

कूकें जद गोखड़ा में बैठी राजकंवरी खिल खिल हंसें । उणारी हंसणी ढबियां पंली पैली सिंघ पींजरा बाळा मिनख री बोटी बोटी खाय जावे । भूल में ई इण राज री सींव में पग मत घरजौ । पछे रोयां-रीक्यां कीं कारी नीं लागैला ।

बिणजारा री वाजिब सीख री ओ नतीजौ व्हियो के राजकंवर उणरै मूंडे मूंड ई कह्यो—आपरी घणो महरबांनी के म्हने मरण सू बचण री सीख दीवी । पण आ बात सुणियां पछे तो म्हने उण राज में जावणो ई पड़ेला । ओ ई कोई जुलम है । म्हने अचुंभौ व्हे के उठारी रेंयत चुपचाप इण अन्याव नें झेलं कीकर है । के तो म्हें वो अन्याव मेटूला अर के भूखा सिंघ नें हार मनावूला । मन में साच, डिढ़ता अर निसंकता व्हे तो सिंघ ई कीं नीं बिगाड़ सकें । आ बात सुणियां पछे अठे अेक पलक ई ढबणो म्हारै वास्तं अधरम है । म्हें हाथ जोड़ने माफी चावूं के म्हें आपरी भुळावण नें टाळूं । सगळी बाळद नें खोटी करने थें म्हारै ओखद करी, इणरी ताजिदगी औसांण मानूला । अबे आप हुकम दिरावो तो म्हें उण राज री सींव में वड़ने कीं न कीं तूमार जोवूं ।

बिणजारो कह्यो—म्हारै पालतां पालतां मरण री तूमार जोवो तो आपरी मरजो । पण मरियां पछे पाछी जीवण री तूमार जोवण री मन में ई रेंवैला ।

राजकंवर कह्यो—म्हने तो मोड़ी-वेगी अेकर मरणी है, जको म्हें तो मरणा नें अजोगती बात नीं गिणूं । जिणने कदेई नीं मरणी व्हे वो भलाई अेड़ी बातां माथे विचार करे तो उणरी मरजो ।

राजकंवर तौ सेवट उणरै जची ज्यूं ई करी । अर उण राज रा सिपाई वांन ज्यूं कह्योड़ी हौ त्यू करियो । राज री कांठी लांघतां ई वै राजकंवर नै पकड़ लियो । सांकळां सूं कांठी जरू करने राज दरबार में लेगा । राजकंवर घणौ ई कह्यो के उणनै बांधण री कीं जरूरत कोनीं । मन रै मत ई जठे कंवीला उठे हालण नै तयार हूं । किणी सिपाई री निगराणी री ई जरूरत कोनीं । पण सिपाई उणरो कंणौ नीं मानियो । बरजतां बरजतां जरू कर दियो ।

राजदरबार में पूगियां पछे दो घड़ी ताईं वौ उणी भांत बंधियो रह्यो । हाथी सिंघ री पींजरी खांचने दरबार में लायो उण वगत उणरो सांकळां खोलोजी । नीं दिनां री भूख सूं तड़फा तोड़तौ सिंघ मार हौकारां माथे हौकारां भरतौ हौ । अळगा ऊभां रा ई थरणा कांपता ।

दरबार में अणगिण मानखो ऊभौ हौ । राजकंवरी साथ-णियां रै साथे सब सूं आगे गोखड़ा में बैठी हौ । राजकंवर रै पाखती चार हथमार आया । बाहूड़ा झालने वै उणनै सिंघ रा पींजरा में न्हाकण सारू खांचण लागा तद वौ हूचटो देयने आपरा हाथ छुडाय लिया । मुळकने कह्यो—महैं म्हारं पगां हालने पींजरा में जाय सकूं । थानै मदत करण री जरूरत कोनीं । महैं थारी ओ औसाण आगला जलम में कद उतारूंला ।

पछे वौ अड़वड़ता अणगिण मानखा नै हाथ ऊंचो करने कंवण लागी—भूखा सिंघ री हथळ सूं मरण वाळा मिनख री तमासीं जोवण सारू थें लोग अठे भेळा ब्हिया हौ । अबै वौ तमासी सरू होवण वाळी है, थें आखता मत ब्हो । महैं

थाने अबे घणा खोटी नीं करुंला । पण इण तमासा रे पेली म्हें थाने अक बात कंवणी चावूं । थें अलेखूं मिनख आज भेळा व्हियोडा ही । जे अकण साथं सगळा फूक ई मारी तो लांठा सूं लांठा राज री पायो उलट सकें । म्हने अचुंभो आवे के थें कोड सूं ओ तमासो कीकर देखी ! इण भांत मिनख री मरणो आपरी आंख्यां अणूत कांड देखणा सूं तो पंला थां लोगां री मरण है । जीवता मिनख आंख्यां सांमी ओ अन्याव कदैई नीं देख सकें । म्हें तो म्हारी जाणूं थारी बातां थें जाणो । इण अन्याव नै तमासा ज्यूं बरती तो मिनख री खोळियो लाजें । अबे म्हें चलायनै पीजरा में जावूं थें खुसी खुसी ओ खिलकी जोवी ।

मिनख नै पीजरा सांमी आवती देख्यो तो सिध जोर सूं पीजरा माथे हत्थळ मारी । जोर जोर सूं गरजियो । देखण वाळां रा सास ऊंचा चढ़ग्या । आज पेली वां लोगां नै इण भांत सीख देवणियो मिळियो नीं हो । सीख समझ में आयां पछे ई वे जोर काई करे । है तो ओ जबरदस्त अन्याव । आंख्यां सांमी मिनख नै यूं मरतां देखां अर कीं बदळी नीं लै सकां, अँडा जीवणा में धिरकार है । के इत्ता में पीजरा री आगळ खोलनै वो मिनख मांय पग धरियो । सिध अकर जोर सूं गरजियो । हत्थळ मारती वगत सिध उणरे मूंडा सांमी मूंडो करियो तो वो अकदम धोमी पड़ग्यो । होकारां करणी मुळगी ई बंद करनै उणरें सांमी पूंछ हिलावण लागी । उणरा पगां में दोय तीन वळा लुटियो ।

लोगां ओ खिलकी देख्यो तो वे देखता ई रंग्या । साचा

मिनख री तेज अँडो ई व्हिया करे । गोखड़ा में बँठी राज-
कंवरी उणरे सांमी देखने मुळकी । लोग खुसी में बावळा
व्हेगा । सिंघ मन में पिछतावो करण लागो के जे खुद राजकंवर
पींजरा में आवे तो भलां वो अक वार ई हौकारो करे !

राजकंवर लाड सूं सिंघ रा डील माथे हाथ फेरण
लागो । पछे पींजरा रो किवाड़ खोलने वो सिंघ ने बारै
काढ़ियो । बारै आवतां ई लोग तो बख लागे उठोने मत
मते दौड़िया । दरबार में खलवळ मचगो । राजाजी दौड़णो
चायो तो वारा उठे ई पग चिपग्या । थर थर धूजता केवण
लागा—यूं कायर री गळाई दौड़ी कांई हो । ओ सिंघ कीं
नुक्साण नीं करेला । भला आदमियां पाछा आय जावो, पाछा
आय जावो ।

पछे राजाजी राजकंवर रे सांमी देखने धूजता कंठ सूं
केवण लागा—आप किणी बात री संका मत करो, म्हैं आज
ई राजकंवरी साथे आपरो ब्याव कर देवूला । म्हारे माथे
विस्वास करो, इण सिंघ ने जल्दी पाछो पींजरा में घालने सेंटी
आगळ झड़ो । लोग डरे घणा । देखो म्हैं तो अकण ठोड़
ऊभो हूं । पण रेयत रे डरणा री ध्यान राजा ई नीं राखेला
तो पछे कुण राखेला ।

राजकंवर राजा रे सांमी जोयो तो वो भूँडे ढाळे थर
थर कांपतो हो । राजा धूजता कंठ सूं भळे कह्यो—आज
सिंघ्या पैलो पैली सांतरो सावो देखने म्हैं आपरो राजकंवरी
साथे ब्याव कर देवूला । आप मन में किणी बात री संको
मत लावो । म्हारो केणी मानो, इण सिंघ ने पींजरा में वाड़ो ।

लोग डरें घणा ! भलां सिंघ सूं डरण री कांई बात ! पण अबूझ लोग इत्ता समझें कोनीं ।

राजकंवर पङ्कतर दियो—महैं तो म्हारा हाथ सूं इणनै पीजरा में रोड़ूं कोनीं । इणरी मरजी व्है जठें ओ जा सकें । राजकंवरी घणा खेला कराया, उणनै आपरा रूप माथें गुमेज अर भरोसो व्है तो सिंघ नै पीजरा में घाल देवें ।

राजकंवरी तो सिंघ रै बारें आतां ई बेचेतें व्हैगी ही । सिंघ दो तीन वळा राजकंवर रा पगां में लुटनै जंगल री सोय करी । नगर रा किणी मिनख अर जीव नै वो हांण नीं पुगाई । पण तो ई केई मिनखां री चित्त उपड़्यो । उण में घणकरा सिकारी हा ।

सिंघ्या रा गुदळकिये सावै धूमधाम सूं राजकंवर री ब्याव राजकंवरी रै साथें व्हैगो । राजकंवरी री जीव तठा तक ई ठाणें नीं आयो । वा घड़ी घड़ी झिझकनै सिंघ सिंघ वेलण लाग जावती ।

पण चंवरी री वगत अेक अजोगती बात फेर बणी । राजब्यास तिलक करण सारू वींदराजा रै मूंडा सांमी भाळियो तो वो थर थर धूजण लागी । अरे ! ओ तो धन री चरू दिरावणियो सागैं ई बटाळ है । बेरा सूं जीवतो बारें निकलनै ओ तो राजकंवरी सूं ई ब्याव कर लियो । अबं तो म्हनै घांणी में पीलाय देवैला । मार मारनै फेर मारैला । पिंडतजी घणी ई चेस्टा करी तो ई धूजता हाथ सूं लिलाड़ माथें तिलक नीं कर सकिया ।

राजकंवर वानै थावस बंधावण सारू मीठी गळ में कह्यो—

पगां लागूं माराज !

पछै फेर होळै सूं कह्यो—आप धीरज राखी, म्हैं आपनै
किणी भांत री हांण नीं पुगावूंला ।

पण पिंडतजी री धूजणी तौ ई नीं ढबी ।



तीजौ राजकंवर

तपसी रै अठा सूं बिछड़तां ई तीजोड़ा राज-
कंवर रै साथै अेक अैड़ी अनोखी बात बणी के
सुणियां अेकाअेक किणी नै ई विस्वास नीं व्हे । वो मारग में
सोचती जावती के अेक व्हेणा सूं ई कोई निबळी नीं व्हे जावै ।
आभा में सूरज किसान दो है । सगळी दुनियां नै उजास पूरै ।
चांद किसान दो है । सगळी दुनियां में चानणी छितरावै ।
तारा अणगिण अलेखूं है पण आप सूं आगै उजास री मार कोनीं ।

इण भांत रा विचारां में रुंधियोड़ी वो मारग चालती हौ
के उणनै आपरै धकै अेक पंखेरू री छीयां दीसी । वो ऊंचो
जोयो । अेक चील ऊपर चकारा देवती हौ । थोड़ी सी आगै
जावतां ई बिल सूं अेक ऊंदरी बारै निकळियो । चील उण
माथे ताचकी । टूच में झिलियोड़ी चीज छिटकनै पाधरी राजकंवर
रा गळा में आयनै पैरीजगी । राजकंवर झिझकियो । गळा
मांयली चीज हाथ में लेयनै देखी । नवलखौ हार !

अर चील ऊंदरा माथे झपटी तौ ऊंदरी तुरत पाछौ बिल
में वढ़ग्यौ । चील पाछी ऊंचो उडनै गिगन में चकारा देवती री ।
राजकंवर ई देखती रेंग्यौ । अणचींती आ काई बात बणी ।
हार नीं तौ गळा में राखणी आयी अर नीं फेंकणी आयी ।
राजकंवर नै अमोलक हार हाथ आवण री हरख नीं होयनै
फगत इचरज ब्ह्यौ । राम जाणै चील औ हार कठा सूं उच-
कायो ! क्यू उचकायो ! उचकायो तौ म्हारा गळा में क्यू
आयनै पड़यो !

हार रा बारा में यूँ भांगतोड़ बिठावती हो के मारग में उणनै अक चिड़ीमार सांमी धकियो । उणरा जाळ में अक तीतर फंसियोड़ी हो । तीतर जाळ रें मांय फड़फड़ावती हो । चीं चीं करनै कुरळावती हो । राजकंवर उणरो कुरळावणी सुणियो तो उणनै अणूती दया आई । चिड़ीमार नै पूछ्यो— भाया, थारा पेट री खातर थूं आं भोळा पंछियां रा प्रांण क्यूं लेवें ?

चिड़ीमार कह्यो— म्हेँ नीं मारूं तो काई, आंनै कोई न कोई तो मारैला ई । पछे म्हेँ ई क्यू चूकूं । आज तो घणी ई माथा फोड़ी करी, तो ई ओ अक तीतर हाथ आयो । म्हारै घरै सात जीवां री भारीगरी है । इण अक तीतर सूं कीकर पार पड़ला, म्हने तो इण बात री सोच लागो । अर आप कैवी के म्हेँ आं भोळा पंछियां रा प्रांण क्यूं लेवूं । पंछियां नै भोळा तो आप ई कह्यो । अँड़ा चात्रंग है के जाळ रें तो नँडा ई नीं आवे । खप खपनै मर जावूं तो ई म्हारो डाव नीं लागे । जाळ रा दांणा री तो रांम जाणै आंनै वास आवे । पंछियां जेड़ी चात्रंग जात तो इण दुनियां में कोई कोनीं ।

आपरो ग्यांन दरसाय नै वो हो ही हंरण लागो । जाणै कागली हंसियो ।

राजकंवर दुजी झिकाळ करणी वाजिब नीं समझी । सीधो पूछ्यो— थूं कीं करियां ई इण तीतर नै छोडें !

चिड़ीमार कह्यो— छोडूं क्यूं नीं । म्हारा गुजारा लायक कीं चीज देवता भो हो तो अक री ठोड़ दस वळा छोड दूं ।

आ बात करती वगत उणरी निजर राजकंवर रे गळा रा नवलखा हार मारथं पड़ी । वो काळा उणियारा रे बीच धौळा दांत काढ़ती कह्यो—इण माळा रा बोस मिणिया देवो तो ओ तीतर आपरे सांमी अठे इण वगत ई छोड दूं ।

राजकंवर मन में राजी ब्हियो के ओ तो सस्तो ई सोदो ब्हियो । वो तो लप दस मोती गिराने झिलाय दिया । पछे भुळावण देवतां कह्यो—अबूझ जाणने थनं कोई ठग नीं लेवें । अक अक मोती लाख लाख सूं वत्ती है । थूं अबे किणी पंछी नें मत मारजें ।

चिड़ीमार लाख री बात सुणतां ई डरियो । मोती पाछा झिलावतां कह्यो—अंदाता, म्हैं अंड़ा अमोलक मोत्यां री कांई करूं । म्हैं तो गुजारा सारू दोय सेर धान मांगतो हो । आपरा अं मोती पाछा लिरावो ।

तद राजकंवर कह्यो—कित्ता ई अमोलक व्हेतां थकां ई आं मोत्यां री कीं न कीं मोल अवस है, पण इण तीतर रे प्राणां री कांई मोल ! सगळो हार देवूं जे थूं मरियोड़ा तीतर में पाछा प्राण घाल दे तो ! अपां इणरे प्राणां री कीमत नीं आंका । पण इणने पूछी के दुनियां रा राज साटे ई ओ मरणो चावें कांई ।

इत्ता में तीतर बोल्यो—आप तौ फगत दुनियां री बात करी, प्राणां साटे तीनूं लोकां री राज मिळे तो ई कांई काम री । पण कांई करां मिनख रा हुनर आगे म्हांरो बस नीं चालें । म्हांरा प्राणां नें छूळ सूं ई सस्ता वो बणाया है ।

तीतर री बात सुणने राजकंवर री आंख्यां बळजळी व्हेगी ।

वो गल्लगळा कंठ सूं कह्यो—छोड दै बाबा, इण तीतर नै तुरत छोड दै । जाळ रें मांय इणरी जीव तड़फें ।

चिड़ीमार ओछी काटी । राजकंवर रें कंतां ई तीतर नै जाळ सूं छोड दियो अर अंटी में दसूं मोती खोसनै वो आपरें मारग वहीर दिह्यो ।

तीतर राजकंवर रें पाखती आयनै कह्यो—महें इण देस रें तीतरां री राजा हूं । आप म्हारा प्राण बचाया । भगवान करे आप में कदै ई बिखो नीं पड़े । सता पड़ जावे तो उण वगत म्हनै चितारज्यो । म्हारी सरधा मुजब पाछो बदळो उता-रणी चावूं ।

राजकंवर मुळकनै कह्यो—थारा बोल हमेसां याद राखूंला । जे अंडी ई कोई वगत आई तो थनै अवस याद करूंला । महें तो इण बात नै मानूं के मौका माथे ईली ई जको काम सार सकें वो हाथी सूं ई बण नीं आवे ।

पछें तीतर कह्यो—आपरी हुकम व्है तो महें अबै जावूं । म्हनै धरें उडोकता व्हेला । रमण नै बारें निकलियो हो के इण जाळ में फंसग्यो । म्हारा साथी म्हनै घणो ई बरज्यो तो ई महें वारी बात नीं मानो, जिणरी हाथोहाथ परचो भुगत लियो । दो टांगां माथे हालणियो औ जीव मिनख, दुनियां में कंड़ा कंड़ा जाळ रचिया है । सगळी दुनियां माथे राज करे तो ई उणरी तिसणा नीं बुझी । लाखूं मण धान निपजायनै ई उणरी भूख नीं मिटी तो म्हां भोळां जीवां नै मारधां उणरें कांई सांधो लागेला ! आप आपरा बेलियां नै समझावो कोनीं के वो जिनावरां री क्यूं हित्यावां करे ।

राजकंवर कह्यो—समझावूँला, जरूर समझावूँला । परण मिनख आपरी समझ सूँ ई चाले, दूजां री समझ कद माने ! थूँ जाणे के म्हैं समझावणा में कीं कसर छोड़ूँला !

तीतर उडतां उडतां ई कह्यो—आप जैड़ी समझ रा मिनख इण दुनियां में व्हे जावे तौ वाने कीं समझावण री ई जरूरत कोनीं । पछे म्है भोळा जिनावर मिनख सूँ कदे ई नीं डरां ।

राजकंवर नै तीतर री बातां साव साची लागी । बां बातां सूँ उगरी मन भारी व्हेगौ । दिलगीर व्हियोड़ी मारग चालती हो के उणने गंगाट करती नदी री कळकळ आवाज सुणीजी । वो मारग सूँ टळ परी नै नदी री आवाज कांती वहीर व्हियो । नदी री आवाज सुणतां ई उणने तिरस लखाई । वो मन में सोचती जावती के पंख, पग अर जीव बिना दुनियां में दो चीजां हरदम चालती रेंवे—हवा अर नदियां । कुदरत री छिब री आणद कुदरत में ई है ।

राजकंवर नदी रें ढावें पूगी तो उठे कांई देखे के अक मच्छीमार नदी सूँ जाळ बारे खांच है । जाळ रें मांय अक लांठी माछली छटपटाट करती बारें आई । राजकंवर सोच्यो—मिनख नै ओ कांई हिड़कियो सूझियो है के वो गिगन में उडता पंखेरू नै जीवती छोडे नीं, धरती माथे विचरण करता जीव नै देख्यां छोडे नीं अर पांणी में तिरता जीवां नै बख लाग्यां जीवता छोडे नीं । कांई वो आपरा भाग में आई बात लिखा-यने लायो के दूजां जीवां री जीव लियां बिना वो किरणी भांत जीवती नीं रें सके । वो धरती री छाती चीरने अणमाप

घाँन उगावै भांत भांत रो रसाळां निपजावै तो ई उणरै पेट रो खाडो नीं भरीजै । ओ आपरा जीव रो गळाई दूजा जीव नै क्यूं नीं गिणै, आपरा लोई रै उनमांन दूजा रा लोई नै क्यूं नीं जाणै, आपरा सास रै सरोखौ दूजा रा सास नै क्यूं नीं मानै अर आपरी पोड़ रै समान दूजा रो पोड़ नै क्यूं नीं कूतै । पछे मिनख रो मिनखोचारो किण बात में है । जे ग्यांन रा उजागर मिनख सूं ई अं बातां बण नीं आवै तो पछे जिनावरां नै दोसण देवणी बिरथा है ।

वौ मच्छीमार रै पाखती जायनै कह्यो—म्हारा भाई, पांगी में तिरती मछरां करती इण माछळी नै जाळ में क्यूं पकड़ी ? आ थारो कांई बिगाड़ करियो ?

मच्छीमार झाळ नै संवटतो संवटतो ई बोल्यो—अंडी भोळी बात आप म्हनै कांई पूछी ! आप किसी दुनियां में बसो ! इत्ती ई बात नीं जाणौ के आ तो म्हारी रोजी है । मछळियां मारनै नीं बेचूं तो म्हारै घरवाळां रो पेट कीकर भरीजै ।

तद राजकंवर कह्यो—बात तो थारी साव साची है । पण थोड़ी ताळ वास्तं सोच तो खरी के मछळियां भूखां मरती व्हे तो थूं थारं डील रो मांस काटनै वाने चुगा सकं कांई । मरणा रो दुख तो सगळा जीवां नै अेक सरोखौ व्हे ।

राजकंवर रो बात सुणनै मछियारो डग डग हंसियो । हंसतो हंसतो ई बोल्यो—आ बात म्हारै सोचण रो नीं है, मछळियां रै सोचण रो है । वाने मरणा आंहजौ लागे तो वं आपरो जाब्तो करै । म्हनै म्हारी रोजी कमावणी है जको म्हैं कमावूं । मछळियां कांई सोचै अर कांई नीं सोचै, इणरो जिम्मी

म्हें कीकर लै सकूं ।

राजकंवर कह्यो — मिनख री खोळियो धारण करणवाळा ने सगळी दुनियां री जिम्मो है । उणनें सगळां रे साथे मरणो जीवणो है ।

मछियारी कह्यो — म्हें परतख मिनख हूं, पण म्हारो तो ओ जिम्मो कोनीं । म्हें तो म्हारा जीवणा सूं आगे कीं सोच ई नीं सकूं । सगळी दुनियां नै मारचां म्हारो पेट भरीजैला तो म्हनें मारणी पड़ैला । म्हारा पेट आगे तो दुनियां घृणी छोटी है ।

मछियारा री समझ रे परवाण उणरी बातां साव सीधी अर साची ही । पण मिनख आं साची बातां सूं कद ऊपर ऊठैला ! इण साच सूं ऊपर ऊठियां सूं ईं तो मिनख मिनख बण सकै, नींतर वो सदा जिनावर रैवैला ।

मछियारा री बातां सूं राजकंवर नै अेक नवो ग्यांन व्हियो के सगळी दुनियां सूं वो कदे ई न्यारी नीं व्हे सकै । इण दुनियां में कठे ई किणी ठोड़ हित्या व्हे तो वो खुद हित्यारो है, कठे ई कोई मिनख अन्याव करै तो वो खुद अन्यायी है, कठे ई किणी ठोड़ पाप व्हे तो वो खुद पैला पापी है, कठेई कोई गरीब है तो वो पैला गरीब है अर इण दुनियां रा किणी खुणा में कोई दुखी है तो वो पैला दुखी है । उणरो जिम्मो फगत उण तांई सिंव-टियोड़ी नीं है । उणरा जिम्मा री नीं कोई माठ है अर नीं कोई सिंव ।

राजकंवर मछियारा नै सावळ समझावण री चेस्टा करतां थकां कह्यो — थूं कीं करियां इण मछळी नै पाछो नदी में

छोड़ण रो बात मानें ।

मछियारी अकड़ाई जतळावती कह्यो—महें कोई मंगतो थोड़ी ई हूं जकी किणी रें दियोड़ा सांमी हाथ पसारूं । म्हारी भुजावां रो कमाई सांमी ई महें मूंडी करिया करूं । अर आज तो किणी रो कैणी मान ई लूं, पछे रोज रोज मनावण नें कुण आवेलां ! सेवट तो म्हारे मानणा मूं ई म्हारी काम मरेला ।

राजकंवर कह्यो—थूं मंगता वाळी बात गिणाई तो म्हने ई जबाब में पाछी वैड़ी ई बात कैवणी पड़े के इण मछळो रो जीव किसी थारी है । आ मरने थने पाळे । इण सूं वत्ती मंगताई फेर कांई व्हे । ओ तो थारी समझ रो फरक है । थूं फगत अक ई बात मान लेवें तो पछे सगळी बातां आपे ई सलट जावें के दुनियां में आप जेड़ो पराय मानणी । आपरे जीव रें समान ई दूजा रो जीव मानणी ।

मछियारी फेर हंसने जबाब दियो—भलां आ बात ई दुनियां में कदे ई व्हे सकें । आ तो फगत कैवण रो बात है करण रो नों । अ मछळियां किसी आपरे जीव ज्यूं दूजा रा जीव नें जाणें । अ तो पांणी में हरदम छोटा छोटा जीवां रो भक्सण करती रेंवें । इण खातर साचो बात आ इज है के म्हारी जीव तो मछळियां नें खावण सारू बणियो है अर मछळियां रो जीव म्हारी रोजी कमावण सारू अर पेट भरण सारू बणियो है ।

राजकंवर कह्यो—आ तो जिनावरां रो कुदरती समझ है । पछे मिनख रें ग्यान रो कांई इदकाई ।

अबकी फेर मछियारी जोर सूं डग डग हंसियो । कह्यो—भाया, म्हने तो थारी ओ ग्यान फगत ढपला अर छळछंद

ई लखावै । इण ग्यांन रै उपरांत मिनख कांम वै इज करै जको जिनावर करै । म्है तो मछळियां मारती मारती फगत आ बात जांणी हूं के मिनख अेक कपटी, जाळी अर ढोंगी जिनावर है । वो दया नीं करै दया रो ढोंग करै, वो धरम नीं करै फगत धरम रो जाळ फंलावे । मिनख तो कबूड़ा रो ढोंग करने सिघ रा सगळा कांम करै, दया ममता रो झूठी बातां करने सांप वाळी सगळी घातां करै । मिनख बिचं तो सिघ अर सांप ई घणा सावळ जको वै भलाई रो दिखावो तो नीं करै । म्है तो अेक छोटी सी बात जाणूं के दुनियां में कोई अमरता रो परवांणो लिखायने नीं लायो । जीवां ने मारतां मारतां अेक दिन खुद ने ई मरजांणी है । मरियां पछे किणी ने नीं मारणो । जीवण अर मरण रो तो आपस में मेळ है

मछियारा रो बातां राजकंवर रै पूरी हीयें ठूकी । पण जाळ में लटपट लटपट करती मछळी रो कस्ट उण सूं नीं देखीजियो । वो मछियारा ने हाथ जोड़ने कह्यो — घरे लिजायां पैली अबारूं ई क्यूं इणने संतावें । बातां करां जित्तै तो जाळ ने पांणी में रैवण दे ।

मछियारो लिलाड़ रै हाथ लगायने कह्यो — भाया थूं तो साव भोळी अर अबूझ है । मरियां पैली अेकर इणने जित्ती लटापट करणी है वा तो करैला ई । भलाईं अबारूं करी भलाईं पछे करो । थारै केणा मुजब तो इणने मरियां पैली दो बार लटापट करणी पड़ैला । पण तो ई थूं केवै तो थारी बात मान ई लू ।

आ कैयनै वो जाळ पाछो पांणी में ढेर दियो । राज-
कंवर गळा मांयली हार मछियारा ने झिलावतां कह्यो—म्है
थनै लाखूं रिपियां रो ओ हार देवूं, थूं मछळियां मारणी छोड़
दे तो ।

मछियारो हार नै आपरा हाथ में लेयनै मोत्यां नै देखतां
कह्यो—भाईड़ा, अबकी बात थूं पता री करी । पण तो ई थूं
है साव अधगेली ! पेट भरणा में कसर नीं रं तो पछे कुण
निकूच जीवां री हित्या करै । म्हनै जीव मारण री कोई आड़ो
के कोई कोड थोड़ी ई है । म्हारा जीव नै पोखण सारू म्हनै
आंरा जीव लेणा पड़ै । मिनख री जीव सै जीवां सूं ऊंचो
है । उणरी खातर किणी री जीव लियो जावे तो वो पाप
कोनीं ।

राजकंवर कह्यो—क्यूंकै वै मिनखां री गळाई झिकाळ
नीं कर सकै, क्यूंकै मिनखां री गळाई वै समरथ कोनीं !

मछियारो कह्यो—बातां में अबै थारा सूं कुण पड़पै,
माथो लड़ावै । पण ओ मोत्यां वाळो कांम थूं नांमी करियो ।
अबै कदै ई सपना में ई मछळियां नीं मारूं । घर में कोकळ
घणी । आंनै मारण री धंधो नीं करां तो जीवां कीकर ?

आ बात कैतो कैतो ई मछियारो जाळ नै बारै काढ़ियो ।
मछळी नै पाछी नदी में छोड़ दी । पछे जाळ नै ई पांणी
में वगाय दियो । कह्यो—ओ थारै सांमी जाळ नदी में वगावूं ।
मिनख हूं तो पाछो इरणै हाथ में नीं झेलूं ।

राजकंवर हरख सूं कह्यो—ओ तो म्हनै थारै माथे पूरो
विस्वास है । थारी बातां सूं आज म्हनै नवो ग्यांन च्हियो ।

आ कैयने राजकंवर वहीर होवण वाळी ही के वा मछळी पांणी सूं मूंडी बारं काढने बोलो — राजकंवर, म्हें मछळियां री रांणी हूं । थूं म्हारा प्राण बचाया । इणरी औसाणं तो कांई परगट करूं, म्हारौ जीव जाणे है । कदं ई कोई अबखी पड़ जावं तो उण वगत म्हने चितारजं ।

राजकंवर कह्यो — इण में इत्ती भुळावण देवण री कांई जरूरत । वगत माथं थनं अवस चितारूंला । थें जिनावर वगत माथं जको भली कर सकौ, वो मिनखां सूं कदं ई बण नीं आवें ।

तीनूं ई जणा अणूता राजी होयने उठा सूं अळगा म्हियो । मारग चालती राजकंवर सोचण लागी — जे चील री टूंच सूं अणचींत्यो ओ हार हाथ नीं लागे तो तीतर अर मछळी रा प्राण कीकर बचता । कुदरन री कोई काम बिना सार रें नीं व्हे । राजकंवर इचरज करती जावती के मछळियां मारण री काम करण वाळी अबूझ मछियारी कंड़ी ठेळबंद बातां करी ।

मछियारा री बातां माथं विचार करती करती राजकंवर दूजा राजा री सींव में वड़ग्यो । उण वगत सांझ पड़गी ही । वो रातवासी नगरी में ईं लियो । दूजें दिन धकें जावतां वो राजदरबार रें गळाकर नीसरियो तो वो उठे अणगिण भीड़ देखी । पूछ्यां पती लागी के राजकंवरी री स्वयंवर होवण वाळी है । तमासी जोवण सारू वो ई भीड़ में अेक ठोड़ ऊभो रेंग्यो । सूंड में माळा लियां हाथी आखी भीड़ में घूमैला । वो जिण किणी रा गळा में माळा पेंरावें, उणरें सागें ई राजकंवरी री ब्याव व्हेला ।

राजकंवर आज पैली इण गत री खिलकौ नीं देखियो

हो, इण खातर वो अणूता कोड सूं सगळी तमासी देखणा में मगन हो । सूंड में माळा लेयन हाथी मस्ताई सूं चालण लागी तो सगळी भीड़ में अंकर खळवळ मचगी । वो मिनखां रा उणियारा देखती आगं बधती जावती । उणरें आगं बघणा रें सागं लोगां रा मूंडा उतरता जावता ।

हाथी घूमतो ई गियो, घूमतो ई गियो । किणी रें गळा सांमी वो माळा नीं करी । केई राजा, माराजा, सेठ-साहू-कार नीं नीं व्है जैडा बणाव में अड़ीजंत ठसियोडा राजकंवरी नें वरण सारू ऊभा हा । पण हाथी गळाकर नीसरनं जद आगं बधती तो वारें माथें जाणें घड़ां घड़ां पांणी पड़ जाती ।

हाथी सगळी भीड़ में घूमग्यो तो ई वो माळा पेंरावणी तो अळगी सूंड नें नीची ई नीं करी । राजा, रांणी रा काळजा ई ऊंचा चढ़ग्या ।

घूमतां घूमतां हाथी राजकंवर रें पाखती आयनं ठमियो । सूंड सूं तीन वार प्रणाम करनं उणरा गळा में माळा पेंराय दी । भीड़ में अंकर फेर खळवळ माची ।

राजकंवर घूळ सूं भरियोडी हो । गाभा फाटीडा । लिगतरा फाटीडा । उणियारा रो रूपाळी व्हैतां थकां ई उणरो लिवास गरीबी रो हो । उणनं माळा पेंरावणी सगळां नें खटकी ।

भीड़ मांय सूं घणकरा लोग हाकी करियो—कदास ओ हाथी मतवाळी है, ओ हाथी मतवाळी है । दूजो हाथी लायनं फेर घुमावो ।

सगळा दरबारी इण बात री ताईद करो । राजा रांणी रें ई बात पुरी जचगी । आदेस व्हैतां ई दूजो हाथी आयो ।

सगळी भीड़ में माळा लेयनें घूमियो । किणी नै ई माळा नीं संधाई । राजकंवर रै पाखती आतां ईं वो सूंड सूं तीन वार प्रणाम करियो अर उणरा गळा में माळा पेंरायदी । भीड़ में फेर अणूती खळवळ माचो । हाकौ व्हियो के ओ ई हाथी मतवाळी है । दूजो हाथी फेर घूमणो चाहीजें । राजकंवरी रै चाकर वास्तै ई जकी मंगती नीं फबै, राजकंवरी उणनै वरैला ! ओ अन्याव म्है नीं देख सकां !

राजा रांणी फेर आदेस करियो । तीजो हाथी आयो । वो ई माळा लेयनें सगळी भीड़ में चकारा दिया । किणी रै सांमी मूंडो करनें ई नीं जोयो । वो तो पाधरो जायनें राजकंवर रै पाखती ढबियो । उणरा पगां में सात वार प्रणाम करनें वो उणरा गळा में माळा पेंराय दी ।

भीड़ में फेर हाकौ व्हियो—ओ अवस कोई झाड़ागर है । हाथियां नै आपरा बस में कर लिया ।

राजा-रांणी रै कांनां में भीड़ रो हाकौ ई सुणीजतो हो अर वै आपरी आंख्यां तीन वळा राजकंवर रा गळा में माळा पेंराइजती देखी ही । वै किण चीज माथे डिढ़ रेंवै ! राजदरबार रा केई दांना आदमी कह्यो—रैयत रै हाका करणा सूं कांई न्है । जे खुद धणियां री जबान आंठियां खावें तो पछे रैयत रा कांई हाल न्हैला । राजा नै तो आपरा बचनां माथे डिढ़ता राखणी चाहीजें । केई नवा दरबारी कह्यो—माळा पेंरणिया री थोड़ी घणी तो घसकी न्हैणी चाहीजें । राजकंवरो नै दीखती आंख्यां बेरा में कीकर थरकाय दां । जद खुद राजकंवरी इण स्वयंबर सूं बेराजी है तद उणरा गळा में

औ डाळी कीकर फंदायी जावे ।

राजा उणमणें भाव सूं पूछ्यो—अं बातां तो म्हें ईं जाणूं । अबे करियो कांई जावें । साव सोधी सोधी तो नटीजें ई कोनीं । बचनां री मरजादा ई नीं तूटे अर ओ सनमन ई टळ जावें, कोई अंडी जुगत बिठाओ । म्हारे तो कीं समझ में नीं आवें के कांई करणी अर कांई नीं करणी ।

अेक चात्रंग मंत्री कह्यो—समझ में तो म्हारे पूरो बैठणी है, जे आप सगळा ई म्हारी बात मानता व्हो तो ! अंदाता रें बचनां री मरजादा ई रें जासी अर इण झाड़ागर री पापो ई कट जासी ।

मंत्री होळें होळें नेठाव सूं बतावण लागो—माळा रा इण दस्तूर रें सागें दो बातां फेर पजायदां । वें दो बातां पूरो करियां राजकंवरी रें साथे इण आदमी री ब्याव कर देसां । अेक बात तो आ के सो मण राई सात कोस री भांय में दांणी दांणी छिटकाय दां ! जे कालें दिन आथमियां पैली सो मण राई धूळ सूं काढ़नं भेली नीं करै तो इणनें सूळी कबूल करणी पड़ैला । तीनूं लोकां में ईं ओ काम किणी सूं पार पड़णा री कोनीं । कालें दिन आथमतां ईं सूळी रें साथे इणरा फेरा व्है जावैला । जे भोळप सूं वो आ बात कबूल ईं करलें तो पछी दूजी बात आ के रायां भेली ब्हियां हजार मोती सात कोस री भांय में नदी रें मांय अेक अेक करनै वगाय दिया जावें । जे पिरसूं सिझ्या पैली ओ पाछा वां इज हजार मोतियां ने भेळा करनै नीं लावें तो भळें सूळी त्यार । कं तो अे दोनूं बातां सुणतां ईं ओ मूंडी लेयनै अठा सूं न्हाट जावैल अर जे

इएनै मरणी है तो दोनूं बातां कबूल करेला ।

मंत्रो रो बातां सगळां रै ई होयै ठूकगी । राजकंवर नै बुलायने उणनै दोनूं बातां सुभट सुणाय दी । राजकंवर कह्यो— राजकंवरी रै साथे ब्याव करण सारू म्हेँ कोई कोडायो नीं हूं ! पण हाथी तीन वार ई म्हारा गळा में माळा पैराय दी, इणरो तो म्हेँ ईं कांई करतो । जे ओ संजोग सजणी है तो थें भलांई किस्ती ई आंटियां पजावो, आ बात भवै ई टळै नीं । अर जे आ बात नीं व्हेणी है तो म्हेँ किस्ती ई ताखुड़ा तोड़ूं, ओ जोग बणैला नीं । किणी कांम सारू नटणी तो म्हेँ जाणूं ईं नीं । आप लोगां री ओ दोनूं बातां ईं म्हनै मंजूर है । पार नीं पड़ियां सूळी चढ़णी म्हनै कबूल है । जको कांम पार पड़े ज्यूं व्हे, वो तो पार पड़ेला ई ।

सगळा दरबारी उएरी बात माथे हंसिया । सगळां नै विस्वास व्हेगी के ओ आदमी गेली है । उणनै समझावतां कह्यो— ओ कांम कोई थारा सूं पार पड़ सकै, क्यूं हाथां करने मौत निवतै । नामंजूर होयने जान री खैर तो मना ।

राजकंवर कह्यो— मौत तो बिना निवतियां सगळां री सिगरथ पांवणी है । नीं किरणी रै पालियां ढबे अर नीं किणी रै निवतियां वगत सूं पेला निवतो मानै । उणसूं सांमनी करियां कीं वार लागै नीं अर नीं उणसूं डरियां कीं सांधी लागै । म्हनै समझावण री जरूरत कोनीं । आपरी ओ दोनूं बातां म्हनै सो वळा मंजूर है ।

अटकल बतावणियो मंत्री कह्यो— साची बात बतायने अपां इणरो फरज चुकायो । हाथां करने मौत बुलावै, उणनै बचा-

वणी किसी सारै है । ओ खुद मरणी चावै तो खुसी खुसी मरण दी । अपां बरजणिया कुण व्हां !

राजकंवर रै कबूल करतां ईं सौ मण रायां सात कोसां लग राज रा आदमी धूळ में आपरें हाथां खुदोखुद छांट दी । घड़ी रायां ईं सात दिनां में भेली नीं व्हे ।

राजकंवर कांकड़ में जायनै बेफिकर होयनै बैठग्यो । के थोड़ी ईं ताळ में राजकंवर नै अेक सरणाटो सुणोजियो । आभा में ऊंचो भाळियो । अलेखूं पंछी उडता आवता हा । आभो तो सगळी छायग्यो ही अर धरती माथै बादळां री व्हे ज्यूं छीयां व्हेगी ही । तेज उडणा री सरणाटो ईं अेक अजब सरणाटो ही । राजकंवर पंछियां रा इण अनोखा नजारा नै देख्यो तो देखतो ईं रंग्यो । अरे ! अैं तो सगळा ईं तीतर है । अेकए सागें इत्ता तीतर तो सपना में देखणा ईं दूभर है ! इत्ता भेळा होयनै रांम जाणै कठा सूं आया नै कठै जावै है !

के इत्ता में अेक तीतर न्यारो टळनै राजकंवर रें पाखती उडती उडती आयो । उणरा खांधा माथै बैठनै कंवण लागी — म्हनै ओळखियो कोनीं ! म्हैं तीतरां री राजा हूं । म्हनै आप जंगळिया रा जाळ सूं छुडायो ही । आप किणी बात री चिंता मत करी । म्हैं सवालाख तीतरां नै लेयनै आयो हूं । घड़ी पलकां में सौ मण रायां भेली करनै ढिगली देय देवांला । हजार मण व्हेती तो ईं काढ़नै को देवता नीं । आप नेखम निसंक री ।

राजकंवर देखतो रह्यो अर हांकरतां तीतरां री राजा सौ मण रायां री दांणी री दांणी भेली कर न्हाकियो । राजा

रांणी नै ठा पड़ी तो हाक्या-बाक्या रेंग्या । थोड़ा घणा डरण ई लागा । कठई मंतर फूकन ओ सगळा राज नै ई भसम नीं करदै । तो ई वं डरता मंत्रियां रे कैणा सूं मोत्यां वाळी परख फेर करी । हजार मोती सात कोस नदी में पटक दिया । राजकंवर निसंक होयनै नदी रा डावा माथे बंठी ही । के इत्ता में अेक मछळी पांणी सूं मूंडी बारै काढ़नै बोली — राजकंवर, थें म्हनै ओळखी कोनीं काई ! म्है मछळियां री रांणी हूं । थें म्हनै मछियारा रा जाळ सूं छुडाई । आज थारै काम पड़्यो तो चुप कीकर बंठणी आवै । अं ती अेक हजार मोती है, लाख मोती व्हे तो ई काढ़नै नीं देवां । आप किणी बात री चिंता मत करी, म्हां हजार मछळियां रे अेक अेक मोती पांती आवेला ।

मछळियां पांणी में जको रीठ उडायी के सिझ्या पेली पेली सागै ई हजार मोती अेकठ कर दिया । पछे तो चात्रंग मंत्री ई अणूती डरियो । वो आगं होयनै अणूती कोडायी दोनां री ब्याव कराय दियो । राजा, रांणी अर राजकंवरी तीनूं उरण माथे खीज करो के वो फालतू अेड़ा देवता नै ताया । तद वो बात बणायनै तीनूं जणा नै समझाया — म्है ती जाणतो ई ही के राजकंवर अणूती, करामाती अर ऊंचो तपसी है । पण बिना पतवांणिया म्हारो बात री कुण पतियारी करती । पण म्हनै काच में दोखे ज्यूं साफ दीखती ही के अं दोनूं काम वारै वास्तै साव सेल बात है । हाथोहाथ परचा देख्यां पछं तो सगळी देस वाने माने । सगळा देवता मिळनै ई अं दोनूं काम नीं कर सकता, वं वाने चुटकियां में संपूरण कर दिया । म्है

बिना सोच्यां समझ्यां कीं काम नीं करिया करूं । आ म्हामें खास भूंडी लत है ।

धूमधाम सूं राजकंवर अर राजकंवरी री ब्याव व्हेगी ।
वौ चात्रंग मंत्री सगळा दरबारियां सूं सवायी कोड दरसायी ।
हाथियां नै माळा पंरावती वगत जका मिनख वद वदनं हाका करता हा, वें सबसूं घणी खुसियां मनाई ! राजकंवरी तो इण निसंक भाव सूं मिळी, जाणं वारी जुगां जूनी प्रीत व्हे । राजा रांणी दोनूं उणरा पगां में पलकां बिछाय दी । अर राजकंवर आपरा हाल में ई मस्त हो ।

राजकंवरी पूछ्यो—म्हने तो हाल ताईं समझ में नीं आवें के दोनूं काम आप कीकर करिया । म्हने व्हे जकी साची बात बतावौ । म्हैं किणी रै कानौकान ई भणक नीं पड़ण दूं ।

तद राजकंवर कह्यो—अे बातां लुकावण छिपावण री नीं है । थें निसंक ढोल घुरावौ । किणो रै साथै सपना में करियोड़ी भलाई कदे अैळी नीं जावें । चाहै मिनख व्ही, चाहै पंछी व्ही अर चाहै कोई दूजो ई जिनावर व्ही । फगत आ छोटी सो बात मिनख हमेसां ध्यान में राखें तो वौ कंडी ई लांठी काम भरै पटक सकैं । पण भलाई खुद आणंद है अर भलाई करणी ई खुद मोठी फळ है । भलाई खुद आपरी चानणी है ।



चौथी राजकंवर

तपसी रै अठा सूं वहीर ग्हियां पछै थोड़ी
ताळ तो चौथी राजकंवर आपरी मां, नवी-
राणी, राजा, राजदरबार, आठूं भाई अर तपसी रा बारा
में विचार करतो रह्यो। किणी वगत वो अणमाप धरती रो
राजकंवर हो अर आज चार आंगळ जमीं ई उणरी कोनीं।
मिनख रो ऊमर में किण वगत कांई पासो पलट जावैं, इणरी
कीं जाच पड़ै नीं। आ तो घटत बढ़त रो छीयां है।
मिनख जमारी अर कुदरत आं दोनां रो उतार-चढ़ाव अक सरोसी
है। आं बातां नै उथापतौ उथापतौ वो कुदरत रा बारा में
विचार करण लाग्यो। नित हमेस वगत माथे आपरै ठायै
सूरज रो ऊगणी अर आथमणी कित्ता इचरज रो बात है।
तपता सूरज रो अखंड उजास देखनै कुण अंदाज लगा सकै के
इण उजास रो माठ है अर इणरी ठोड़ अंधारी प्रगटला।
रात रा फेर अखंड अंधारी देखनै कुण अनमान लगा सकै के
ओ खूटला अर इण रो अंत आवैला।

चालतां चालतां अक विकराळ जंगी बड़ला माथे उणरी निजर
पड़ी। राजकंवर भर निजर उणने निरखतो ई रह्यो—जाणै
पैली वार वो इण चीज नै देखो है। राई जिंसा इण छोटा
सा बीज में बड़ला रो ओ जंगी रूप कठै लुक्योड़ी हो—अं जड़ियां,
ओ गोड, अं डाळा, अं अणगिए भड़ोलिया अर अं झूलती
साखां! समझ, ग्यांन अर विचारां रै बिना देखणी आंधा रो
असुझपणी है। बाळक रा छोटा सा डील में जवानो अर

बुढ़ापी दिन लाग्यां कीकर प्रगटे ! जांणतां थकां ईं अेक डोकरा नै देख औ विस्वास नीं व्हे के कदेई औ अेक अबूझ नादांन बाळक हो । किणी चीज री जलम चाहे बनस्पति व्ही, चाहे पंछी-जिनावर व्ही अर चाहे मिनख व्ही — कित्ता इचरज अर आणंद री बात है । किणी नवी चीज रें जलम सूं वत्तो आणंद अर इचरज दुनियां में फेर कांई व्हे । बरसाळा री बिरखा — आ ई कांई कम इचरज री बात है — आडंग, बादळा, बीजळियां, गड़ गड़ गाजणौ अर आभा सूं धारौळां री ओसरणी, नाळा, परनाळा, वाळ्हा, खाळा, नदियां री चालणौ अर नाडियां री हिलोळां चढ़णौ, पंछियां री मीठी बोलणौ, मींडकां री गावणौ, कुदरत री लीलौ बणाव, ममोलियां री सुरंगो रंग — कोई इण बिरखा नै समझ सूं देखलै तो वौ सपना में ईं सुरंग रें आणंद री बात नीं करै ! विणास अर मरण री दरद अवस कळपावै, पण ग्यांन री मीट सूं देख्यां औ भरम लोप व्हे सकै । वगत परवांण विणास अर मरण तो नवा जलम रा बघाळड़ा है । इण दुनियां में सबसूं सिरै अर सार चीज है — मिनख री समझ, मिनख री ग्यांन । मिनख री आ समझ अर औ ग्यांन दुख, कळेस, संताप री आंच बिना जग-मगं कोनीं । जूझियां बिना बधै कोनीं । कुदरत अर आपरा अंतस नै समझणौ ईं मिनख री सबसूं ऊंचौ समझणौ है । इणरें बिना सगळी समझ अेक जंजाळ है अर मिनख री अस्ट-पोर थुड़णौ साव अकारथ अर निरफळ है ।

राजकंवर रें विचारां री कांठळ इण विध चढ़ती गी, गाजती गी, चिमकती गी अर बरसती गी । वौ लगातार चालती फा. ३६

ई रह्यो । चालतां चालतां नवा राज रो सीव में वड़ग्यो । सूरज री उगाळी अेक छोटा सा गांव में वासो लियो । गांव में वड़तां ई घड़ा माथे अेक कुमार री ग्वाड़ी ही । अणचींत्यो ई वो उण कुमार रें घरें पूगो तो उठै मार कूकारोळी मच्चोड़ी । सगळा घरवाळा रोवै अर छाती माथा कूटै । राजकंवर वानै थावस देवतां पूछ्यो—थां लोगां में अंडी काई विखो पड़्यो, म्हनै बताओ तो खरी । थें सगळा ई इण भांत रोवो क्यूं ।

जबाब में वे फेर वत्ता ई रोवण ठूका । सेवट डोकरी छबरां छबरां रोवती ई बोली—बटाऊ, थूं म्हारो न्याव निवेड़ दे । आंरा कीकर हीया फूटा, म्हारें तो कीं समझ बेंठे नीं । म्हारी कुण सुणै ! ओ म्हारो बेटो है । काले ई परणीजन आयो । हाल तो कांकण-डोरड़ा ई नीं खुल्या, तो ई ओ दुस्ती कैंव के देंत रें भख सारू बारी म्हैं साजूंला । बेटा रें मरियां म्है तीनूं तो पैला ई मरग्या । आ म्हारी बींदणी है । हाल तो घर में आयनै घूँघटो ई नीं उघाड़ियो । तो ई बैरण कैंव के देंत रें भख सारू बारी म्हैं साजूंला । ओ तीजो म्हारी घर-घणी है । भाटा नै ई पूछलौ के म्हारें थकां इणरी बारी कद आवे ! तो ई लैणायत कैंव के बारी में साजूंला । म्हैं बारी साजूं तो सगळी घर भरियो-तरियो रेंवै । बेटो मोट्यार काटी है, हथणी व्हे जैड़ी बींदणी है अर म्हारा मोट्यार सूं ग्वाड़ी री मरजादा बणी रेंवैला । म्हैं तो अबं वालियोड़ी खत हूं । काले पोता आंगण में थड़ियां करण लाग जावैला । तो ई ओळचाकड़ा कैंव के म्हैं नीं जावूं ! म्हनै दीखै के इण ग्वाड़ी

रो आंकी आयग्यो ।

राजकंवर रै कीं समझ बंठी नीं के किसी देंट अर कैड़ी बारी । घर में आ कांई झोड़ पजो । वो पूछ्यो — मां, म्हनें सावळ सोजी नीं बंधो के बात कांई है ! थारै किण बात री तळतळावण है ! किण बात री रांझी है !

डोकरी डुस्किया भरती ई बोली — म्हारी तो ग्वाड़ी री विण्णास व्हे है, अर भाया हाल थनें सोजी ई नीं बंधो ! पण थनें सोजी बंधायनें म्हानें लेणी ई कांई है । ज्यूं म्हारा करम व्हेला, व्हे जावेला ।

बेटो सगळी बात मांडनें बताई — इण राज में अक अलाम देंट रंवे । वो मिनखां री अणूतो बिगाड़ करतो । राजा उणनें समझाइस करी तो वो अक बात माथे राजी व्हियो । दिन आथमतां ई सिझ्या रा देंट रा मेल में अक आदमी पूग जाणो चाहीजे । बारी आयां घर पूठियो अक आदमी । कालै लाखापांना न्हाकीजिया । म्हारा घर री बारी आई । इण बात री ई म्हारा घर में तळतळावण है अर इण बात सारु ई रोवणी रींकणी है । घर में च्यार जणा है । सगळा ई आप आपरी खांचे — वो कैवे के म्हें जावूं अर वो कैवे के म्हें जावूं । अबे आप ई न्याव री बात बतावो के म्हारें थकां म्हारा बूढ़ा माईतां री बारी कीकर आय सकै ।

पछे वो आपरी बहू रै सांमी हाथ करनें कैवण लागो — आ निरभागण कैवे के वा हर सूरत में देंट री बारी साजेला । आप ई बतावो के इणरा घरवाळा इण वास्ते म्हारें लारै करी के वा इण भांत अणचींती मारी जावे । आ तो म्हारा

घर री लिछमी है ।

इत्ती ताळ नीठ बींदणी लाज रें कारण बोली बोली ऊभी ही । अबे लाज सरम अळगी वगायने वा होळे सूं बोली — म्हारो पगफेरो ई इण घर में खराब व्हियो । म्हें खूडपग्गी हूं । घणी रें मरियां पछे लिछमी री ठोड़ म्हें डाकण बाजूला । अं जीवता रह्या तो इण ग्वाड़ी में नवी बींदणी आय जावला । म्हारें मरियां कीं फरक पड़े नीं । देंत रें पाखती म्हारो जावणो ई सावळ है ।

अबकी डोकरो किड़कतो बोल्यो — आया बापड़ा म्हारें थकां घर री फिकर करण वाळा ! किणरो मूंडो मगदूर के म्हारें बंठां घर री कोई सोच करे ! म्हें जीवू जित्ते तो ग्वाड़ी री सुख-सांयत री जिम्मी म्हारो है । म्हारा कैणा नें कोई लोप नीं सकै । किणरी मां अजमी खायो जको म्हनं ओड़ी दे सकै । कांन खोलनं सुणलो, देंत रें भख सारू म्हें जावूला, म्हें जावूला । घणी ताळ व्ही थानें लपका करतां नें । चुपचाप घर री काम संभाळो । म्हारें मरणा री कोई चिंता मत करो ।

डोकरी राजकंवर रें सांमी देखने कैवण लागी — देखी आनें अपळ-गपळ बोलतां नें सरम ई को आवें नीं । आरें जित्ती ई म्हारो इण घर में सारी है । घर में सुख-सांयत बणी रेंवें, इणरी आघी जिम्मी म्हारो है । अं अकेला ई इण घर रा ठेकेदार कीकर बणें । म्हारें मरियां तो इण ग्वाड़ी री सुख-सांयत में किणी बात री भंज नीं पड़ैला । म्हें कदैई झूठ नीं बोलूं । आप म्हारी बात माथें विचरानें न्याव करो ।

सगळा ई मतलबो है । सै आप आपरी तांणै । आप समझ-
दार आदमी हो । थोड़ी घणो तो आप विचार करो के म्हारै
मरियां इण घर में काई हांण पड़ेला । समझदार आदमी नै तो
म्हारै पखै बंधणो ई पड़ेला ।

डोकरी फेर अरड़ां अरड़ां रोवण दूकी — राजकंवर रे
पगां पड़ती कैवण लागी — बापजी, आप कीकर ई आंनै सम-
झावो । म्है आंरो काई बिगाड़ करियो जको म्हनै अं दुख
देवे । म्हारै साथे ओ किण भो रो आंटी साजे । अं सगळा
ई मान जावै तो म्है हंसती गावती देंत रे पाखती जा
सकूं । म्हनै कोई इण बात रो डर थोड़ी ई है ! म्है तो
कळपूं के अं म्हारी बात क्यूं नीं मानै । आखी ऊमर म्है
आं सगळां रे वास्ते फोड़ा भुगतिया, इणरो म्हनै ओ फळ
देवे ! आंनै मनावो तो आपरी बळिहारी है ।

चारूं घरवाळां रो औ अजीब रासो देखनै राजकंवर रो
ई आंख्यां सूं ठळाक ठळाक आंसू ढळकण लागे । इण विध
रो रांझो, इण विध रो आंमनी अर इण विध रो लड़णो तो
वो आज ई देख्यो । सगळा घरवाळा अके दूजा रो ठोड़
मरण सारू कित्ता कळपे है, कित्ता रोवै है । मौत नै इण
विध हरख सूं भेटणी तो आज पैलो कदेई नीं सुणी । जे
खुद मौत रे जीव व्हेतो तो वा ओ रांझो देखनै लाज सूं मर
जावती । आं लोगां सूं भेट्यां तो राजकंवर रो जीवण सार-
थक ब्हियो । उणरो मिनखजमारो सुफळ ब्हियो । राजकंवर
सोचण लागी के घर नांव इणरो है । ग्वाड़ी रो मरजादा यूं
निभिया करै !

पण सगळा घरवाळां नै यूं झूरतां कळपतां देख उणसूं गाढ नीं राखीजियो । कह्यो—आप सगळा इण रांझा नै सुळझावण वास्तै म्हनै पंच थापो तो म्है न्याव निवेडूं । म्हनै वाचा देवो के थें सगळा म्हारी बात मांनोला ।

आपस में मामली नीं निवड़ती देखने वानै नवो पंच थापणी ई पड़्यो । सगळा राजकंवर नै वाचा दिया के कोई उणरो बात नीं टाळैला । टाळै तो वो जलम जलम नरक री भागी बणे ।

तद राजकंवर निरांत भाव सूं कैवण लागो—म्है किणी देस री राजकंवर हूं । म्हारे राज री त्याग करने म्है संजोग सूं ई अठे आयो । म्हारी घण सोभाग के म्है इण जलम में थां लोगां रा दरसण करिया । थांरी ग्वाड़ी में जको आज म्हनै ग्यांन मिलियो उण माथे म्है वेड़ा लाख राज वार सकूं । आज म्हारी परम कल्याण अर परम मुगती व्हेगी । म्हनै अबे इण दुनियां में कीं चावना बाकी नीं है । थांरा घर में म्हारी निजरां म्है जको नजारो देखियो, इण सूं कोई सिरै अर लांठी चीज मिनखां री दुनियां में फेर ई कीं व्हे सकै, म्है इणरी कल्पना नीं कर सकूं । मिनख जूण रा हजार जलम पावूं तो ई म्है आज रा ग्यांन नै पांतर नीं सकूं । म्हारी काया री रूं रूं आज सुफळ व्हियो । जे म्हारी ठोड़ मोत आपरी निजरां ओ नजारो देख लेती तो उणरो ई जमारो सुधर जावतो । उणरो सगळो गरब-गुमेज धूळ में मिळ जातो अर उणरो असली कल्याण व्हे जातो ।

डोकरी आखती पड़ती थकी बोली—थूं अँ फालतू रां

क्यूं पंपाळ कूटे । थारा सूं व्है जकी मतलब री बात तुरत बता । म्हनै दीखे के अबं म्हारी चित्त उपड़ण वाळी है ।

राजकंवर मुळकतो थकी केवण लागी — मां, मन में थोड़ी घणी तो निरांत राख । म्हें अबारूं थां सगळां री बातड़ी ठाणें बिठाय देवूला । पण पंच थपियां पछे थारा मांय सूं कोई म्हारी बात उथपी तो म्हें अठे थारी गवाडी में ई आपघात करने मर जावूला । थें म्हने इण बात री सोळे आंना विस्वास दिरावो तो म्हें म्हारी बात परगट करूं ।

चारूं जणा ई अेकण सागै विस्वास दिरायो के वं जीवियां ई उणरी बात नीं टाळें । तद राजकंवर कह्यो — थां लोगां री बातां सुणियां पछे म्हने थारै जोग फवती ई न्याव करणी पड़सी । इण गवाड़ी री सुख-सांयत वास्तै थां च्यारूं जणा री जीवण अमोलक है । कोई किणी री घाटो नीं पूर सकें । पण साथै री साथै बारी वाळो जोग ई सजणी चाहीजें । मिळजुळनै राज रा सगळा लोग जकी बात कबूल करी उणनै लोपणी ई वाजब कोनीं । लाखापांना में थारा घर री बारी आई, उण पेटै अेक जीव री जांणी ई जरूरी है । म्हें इण राज री वासो कोनीं । बटाऊ हूं । थारो बारी रै आंगे म्हें देंत रै पाखती जायने बारी री गेड़ी पार पटकूला । थारै रांझा री इणरै अलावा न्याव दुनियां में ई दूजी नीं व्है सकें । थें राजी खुसी मानो तो थारी मरजी है, नींतर थारै बचना-प्रमाण थें बंध्योड़ा हो, म्हें तो देंत रै पाखती जावूला ई ।

ओ न्याव सुणतां ई च्यारूं जणा री लोई जांणे अेकण सागै सगळो री सगळी धोळी पड़ग्यो । वं रुंध्योड़ा कंठ सूं

राजकंवर अणूतो कोडायो खुसी खुसी देंत रा मेल में पूगो । देंत उण वगत अेक मिनख री भख करने डकार खावतो हो । अेक दूजा मिनख नै फेर आवतां देख्यो तो वो दांत काढ़तो, पेट माथे हाथ फेरतो पूछ्यो—आज दो जणा कीकर आया । भै बिना प्रीत नीं । नगरवासियां नै घणी सुमत आयगी दीसें । मोटघार तो नांमी टाळकी अर सरूपवान भेज्यो । खायां आणंद आय जावैला । पण अबारुं तो गळा तणो धाप्योड़ी हूं । आज तो बारी सर मिनख काई आयो, कोई छोटी मोटी घोड़ी हो । नीठ खायनै पूरी करियो । उणरा डील माथे मांस री वाखर तो अणूतो हो, पण मरणा रा डर सूं उणरो लोई तो पांणी सूं ई पतळी पढ़्यो । लोई बिना खावण री स्वाद नीं आयो । मांस ई वादी झिलियोड़ी हो—लुकथुकी ! अणूती चरबी छायोड़ी । सात आठेक लोथा खाया जित्तै मूडे आयग्यो । अैड़ा डरकण अर कायर मिनखां नै खावणा सूं म्हारा मन में ई निबळापणो उपजै । पण मिनख जित्ता मरणा सूं डरै उता किणी बात सूं नीं डरै । मरियां पैली ई मर जावै । वै साफ जाणै के वं अमर कोनीं, तो ई मरणा सूं डरै । मिनख जैड़ी मूरख जिनावर तीनूं लोकां में ई सोध्योड़ी नीं लावै । आं मूरखां री भक्सण कर करनं म्हनै दीखे के म्हारो माथो ई भंवग्यो है ।

आ कैयनै वो पूरी मूंफाड़ फाड़नै हंसियो । ऊंट गाजे ज्यूं गळळ गळळ करतो कंवण लागी—पण आज थूं वगत रै पैला कीकर आयो, म्हनै इणरो म्यांनो तो बता ।

राजकंवर निसंक भाव सूं पड़ूत्तर दियो—कालै सिंझ्या

रा म्हारो वारी है । दूजो कीं कांम हो कोनीं । इण खातर सोच्यो के पैला ई चालूं परी । देंतराज सूं कीं वंतळ ई करालां । अेक बात भळे सोची के वगत माथे जांणा सूं तो देंतराज भूख रे कारण सीधो खावण नै ई ताचकंला । बात-विगत करण रो कोई मौको ई हाथ नीं आवै । म्हें आपसूं केई सवाल पूछणी चावतो । आप बुरी नीं मानौ तो म्हें आपसूं जबाबां री थोड़ी घणी आसा कर सकूं ।

देंतराज आज आपरी मस्ताई में हो । कह्यो—थारै दाय पड़े जकी बातां पूछ, म्हें जबाब देवूंला । पण घणी झिकाळ म्हनै आछी नीं लागै । म्हनै निसंक, निडर अर मस्त आदमी पसंद है । म्हारो बस चाले तो कायर अर गांजरा मिनखां नै खावूं ई कोनीं, पण ओ खण करियां तो म्हनै घणकरी भूखां ई मरणी पड़े, आज रा मिनखां में डिढ़ता अर निसंकता रो लवलेस ई कोनीं । म्हें तो सोच सोचनें कायो व्हेगौ तो ई म्हनै हाल तांई इण बात री सावळ जाच नीं व्ही । थूं जाणतो व्हे तो बता के थारी जात मरणा सूं इण भांत डरपे क्यूं ? मौत री नांव सुणतां ई वांरा प्राण निकळे । म्हें पूछणो चावूं के काला मिनखां प्राण सूं वत्ती तो मौत ई नीं मांगे । मौत रा डर सूं मरणी अर मौत रे हाथां मरणी—दोनूं अेक ई तो बात है । आज थूं वगत रे पैला ठीक आयो । बता म्हने के थें लोग मरणा सूं इत्ता डरो क्यूं ?

राजकंवर कह्यो—क्यूंके म्हानें मरणा रे जोड़े जीवण अणूतो वाल्हो लागै । म्हें फगत मरणा सारू ई जलम नीं लेवां—म्हानें नित नवा अर अनोखा कांम सोचणा है अर नित

नवा नवा काम करणा है ।

देतराज अक उबासी खायन बोल्थो—बात तो थारी साचो है । थें लोग थुड़ी तो अणूता ई हो । थारें कळापां रो खट-पट म्हारें तो समझ में नीं आवे । म्हानें तो आराम अर अदीपणा सूं लांठो आणंद ई फेर नीं दीस । जादू-मंतरां सूं म्हैं खुद अनोखा अनोखा काम करलां, पण डील सूं आफळणो म्हानें खारी जैर लागे । अर थें लोग हाथां धान निपजावो, हाथां कपड़ी बुणी, हाथां इमारतां चुणी, हाथां वासदी चेतुन करी अर हाथां रसोई बणावो तो ई थाको कोनीं । म्हानें तो देख्यां घणो इचरज व्हे के दो वेंत रो मिनख सिंघ नें मार न्हाकै, हाथी नें हांकै अर घोड़ा रो असवारी करे । अळिया अर अलाम थें लोग ई कम नीं हो । थारो बख लागे तो सारी कुदरत नें ई फते करलो । हवा अर पांणी नें तो थें धारो ई कोनीं । पण भांत भांत रो खटापट सूं काई सार निकळे । सेवट अक दिन थां सगळां नें मरणो है ।

राजकंवर मुळकतो थको कह्यो—म्हां सगळां नें अक दिन मरणो है, इण खातर ई थें मौत रें विडू बंध बंधनं म्हानें मिनखां नें वेगा मारण रो तजबोज करी । आ तो आपरो बड़ी मेहरबानी है ।

देत राजकंवर रो बात सुणनै डग डग हंसियो । जाणें बादळा गाजिया । बोल्थो—अंडी बात तो नीं है । पण अब मिनखां रो लोई म्हारें होठां लाग्यो । हाथे नीं आवे तो म्हैं रंजू ई कोनीं । म्हारी बेटी रें समझायां कदेई कदेई पिछतावो ई करूं पण जीव बस में को रेवें नीं ।

आ बात कयनै दैत बेटी बेटी करनै हेलौ मारियो ।
हेलौ सुणतां ई बेटी वारै पाखती आई । जाणै आभा री
बीजली खुद पगां चालने आई व्है । आ तो परतख रूप री माठ
है ! इणसूं वत्ता रूप री कल्पना ई नीं की जा सकै ।
औ रूप अर इण दैत रै कब्जै ! राजकंवर देखतां ई चकन-
बकन व्हैगो ।

दैत री बेटी राजकंवर सांमी देख्यो तो उणरी ओप निर-
खनै उणरी काळजो फड़कां चढ़ग्यो । इण रूपाळा मोटघार नै
भूख लागतां ई दैतराज समूळी गिट जावैला । इण खातर वा
कदैई अँड़ा मौका माथे आवती ई कोनीं । मरतोड़ा मिनख
री रंगत देखनै उणरी जीव अणूतो कळपतो । दैत सोगनां
माथे सोगनां खायनै ई पाछो मिनखां वास्ते मन विटळाय लेतो ।
वा घणी वार ई समझावती के नीं नीं व्है जँड़ी तेवड़ करनै
रात दिन थाळ जीमावती रूँ जे मिनखां नै खावणा बंद करदे
तो, पण बात निभावणी तो दैत रै हाथ ही ! सेवट वा ई
हारनै तिथ छोडदी । वारी वाळा मिनख रै आवतां ई वा
लुकने बैठ जावती । आज दैत री हेलौ सुणने वा आय तो
गो, पण उणसूं उठै ऊभौ रैवणी नीं आयो । वा थर थर
धूजण लागी ।

दैत लाड सूं पुचकारनै कह्यो—थूं डर मत बेटी, म्है
हाल इणनै खावूं थोड़ी ई हूं । औ तो वारी सूं आठ पौर
पैला ई आयग्यो । इणरी बातां म्हने सांतरी लागे । के तो
ऊमर में पैली वार म्हने थारै माथे ममता आई के आज दूजी
वार इण मोटघार माथे लाड आयो । ह्जारूं मिनखां नै पत-

वारण रौ मौकी लागी, पण इण जेड़ी निडर आदमी म्हारा देखणा में नीं आयी । इणनै मारण री बात मन में सोचूँ तो जीव कटमटी व्हे । म्हैँ तो इण मोट्यार नै आवतां ईं कह्यो के डरकण मिनखां नै खावणा सूं म्हैँ खुद डरकण सुभाव री बणग्यो ।

राजकंवर कह्यो—अपां तो बातां बातां में कठारा कठीनै उछरग्या । म्हैँ कैवणी चावती के वगत आयां मौत सब जीवां रा प्राण लेवै, पण उणनै इण वास्तै अकरमी अर अच्यार्ई नीं कै सकां । वा तो आपरो फरज पूरो करै । पण मौत रा इण फरज में हाथ बटावण वाळा दुनियां में सब सूं लांठा पापी अर अधरमी है ! जकी वारो काम नीं उण में वै क्यूँ हाथ घाले ! म्हैँ थानै पूछूं के अक ईलो नै पिचड़ियां पछे उणनै पाछा प्राण सूंवणा आपरै हाथे नीं है तो आप अण-गिण मिनखां नै मारण री कांई हक राखी ? उणरै मरियां पछे ई सांयत कठे व्हे—सगळा घरवाळा बरसां तक रोवै, रीकै अर कळपै । उणरी याद में झुरै । घरवाळां नै ओ संताप देवण री थानै कांई हक है ?

देत कह्यो—म्हारी बात तो थूं छोड । म्हारै पाखती इमी री कूपली है । बरसां पुराणी हाडकियां माथे छांटा न्हाक दूं तो वां में पाछी साचेली जीव बावड़ जावै । म्हैँ मार सकूं, म्हैँ जीवाड़ सकूं ।

तद राजकंवर ठीमर बणनै पूछ्यो—अ दोनूं बातां व्हेतां थकां ईं थें म्हनै इण बात री लेखी बतावो के थें आज दिन तांई जीवाड़िया कित्तां नै अर मारिया कित्तां नै ।

देत लचकाणो पड़नै पड़ूत्तर दियो—मारिया ती अलेखूं
मिनखां नै, पण जीवाड़ियो अेक नै ई नीं । इमो रा कूपला नै
तो म्है पांतर ई गियो ।

राजकंवर इचरज सूं कहाी—मरियोड़ां नै पाछा जीवता
करण री करामात हाथ में व्हेतां थकां ईं थें फगत मिनखां
नै मारण री ई आदत पोखता गिया, बड़ी गजब री बात
है । राजकंवर नै अेकाअेक इण बात माथें भरोसी नीं व्हियो ।
वो देत नै दो तीन बार ऊार सूं नीचें तक देखियो ! इण
विडरूप जिनावर सूं फेर काईं आसा की जावें ! खेजड़ी रें
लगें टगें डीगो । आडुवां री गळाई माथें दो सींगड़ा—तीखा
तच्च । सेवळा री सूळां रें उनमानं माथा रा केस, जटा बिख-
रियोड़ी, भेंसा जेड़ी माथो, आंगळ डोढेक री लिलाड़ी, सांमां
आंवळिया खाता भंवरा, रींछ रें भपीभप रुंवाळी, गो रें
जिसी खाल, घोर खोदणिया जिनावर री गळाई तीखा नख—
सीपनियां जिसा लांठा । गधा रें प्रमाण डीगा कांनड़ा, सांयड
री गळाई लटकता अर ढीला होठ, बिलाई रें कूंटिया जिसा
दांत, मगरमच्छ री गळाई खुरदरा अर काठा मसूड़ा, जरख
जेड़ी लपरका करती जीभ, गडसूरड़ा री दाईं फींढी नाक, दीव-
टिया जित्ती लांठी आख्यां, खैर रा खीरां रें प्रमाण जगमगता
डोळा, गेंडा रें सोना सूं ईं सवायो सीनो, ढोल रें परवाणें
पेट, जाळकी रें गोड जेड़ी साथळां, गांठां पड़ियोड़ी सकरकदां
जिसी आंगळियां, धापड़पगो, ह्थाळियां अर पगथळियां जाणें
सांप्रत रींछ री, गोडां री ढकणियां ऊंट रा माथा जेड़ी, भेंपोड़ां
रें समानं गिरिया, आरणियां छांणा जेड़ी अेडियां, डोल में

खाज खिणियां गोगीड़ा जँड़ी लीकां अर मींडकां जिसी जूवा थचाक थचाक खिरै । इण विडरूप जंगी खाका नै देख सास तो पैला ई ऊँची चढ़ जावे । मौत रो रूप इण सूं तो कीं ढाळै ई व्हेला । इमी रो कूपलौ अजमावण रो इण डील में किण ठोड़ अर कंठ भावना व्हे सकै !

राजकंवर नै इण जंगी डील में मिनखां रो अणगिण आंखियां ठळाक ठळाक रोवती निगै आई । दँत रै पेट रो आंतड़ियां हाल वानै सावळ पचा नीं सकी । राजकंवर नै लखायो के आंसू ढळकावती वै आंख्यां जाणै उरणे पूछै है : म्हारै घरवाळां रा कीं समंचार लाया व्हौ तो बतावो । म्हारै बूढ़ा माईतां रा काई हाल है, म्हारै टाबरां रा काई हाल है ! पाछा जावो तो वानै कंजो के म्हारा नांव नै अबै रीकै कोनीं । सावळ घर रौ जाव्ती राखै ।

राजकंवर हाक्यौ-बाक्यौ रैग्यी । वो दँत नै कह्यौ— भळै थें मिनखां नै अलाम अर कुबदी बतावो ! थारै मूंडे आ बात ओपे कोनीं । इण इमी रा कूपला सूं थें दुनियां रो कित्ती कल्याण कर सकता, पण इण बात नै तो थें मुळगा ई पांतरग्या । थें तो फगत मिनखां नै खावणो याद राख्यो । थारा इण अथाग पेट में म्हनै मिनखां रो अणगिण आंख्यां ठळाक ठळाक रोवती दीखै ।

के इत्ता में राजकंवरी बेचेतै होयनै गुड़गी । देखतां ई दँत रै मूंडा रो रंगत ई बदळगी । रीस रै पांण सणण सणण करतां उणारी रूंबाळी अकदम ऊभी व्हेगी । उणारी आंख्यां रा कोया भणण भणण फिरण लागा । फूफां फूफां

करती उणारी सांस जाणै उफणण लागी । डील री सांधी सांधी कड़ड़ कड़ड़ करती बोलण लागी । देखतां देखतां उणारी देह सूं बाफां निकळण लागी । राजकंवर रै सांमी देखनै कह्यो—रीस तो अंडी आवै के चंडाळ री कापी कापी करने खाय जावूं । पण म्हारी बेटी री थोड़ी घणी विचार आवै । आ इत्ती डरकण सुभाव री है के किणी मिनख नै आपरै सांमी मरती नीं देख सकै । इणारी काळजी तो साव काची है । चंडाळ मीठी मीठी बातां में अंडी जैर घोलियो के म्हारी बेटी बेचेतै व्हेगी ।

देतराज मलापनै राजकंवरी रै पाखती गियो । दोनूं हाथां सूं उंचायनै आपरा खोळा में ली—जाणै रीछ रा हाथां में गुलाब री फूल । वो उणनै जंझेड़ती कह्यो—बेटी, म्हारी लाडली बेटी, थूं विस्वास कर के म्हैं अबे सपना में ई मिनख री हर नीं करूं । अबकी खंडण करूं तो थूं कदेई म्हारा सूं मूंडे मत बोलजै ।

देत री आंख्यां सूं आंसू दुळकनै राजकंवरी रै गालां माथे पड़ण लागी । वा झिझकनै आंख्यां खोली । निस्कारो न्हाकनै पूछ्यो—बारी वाळी वो मिनख कठै ? उणनै म्हारी आंख्यां सांमी लावो । उणारी उणियारी देखतां ई म्हामें डिढ़ता पाछी बावड़ जावै ।

देतराज उणरै गालां माथे हाथ फेरनै कह्यो—बेटी थूं निसंक रै, म्हैं उणरै हाल ताई नख ई नीं लगायो । थारै बेचेतै व्हेतां ई म्हनै रीस तो अणून्ती आई, पण जीव माथे काबू राखियो । देख ओ थारै पसवाड़े ई ऊभो है । राजकंवरी

पसवाड़ी पलटनै जोयी—हां साचांणी वो मिनख उभो हो । वा हळफळाई बेठी व्ही । राजकंवर रै सांमी देखनै कह्यो— आप बारी सूं इत्ता पेली क्यूं आया ? म्हैं तो आगं ई अणूती दुखी ही । आप पंला आयनै फेर वत्ती दुखी करदी । आपनै कदास इण बात री तो पती कोनीं के अठे आयां कांई दुर-गत व्हे । मरणा री डर तो आपरै नैड़ी आगो ई कोनीं !

राजकंवर मुळकतो थकी कंवण लागो—जे आप उरा कुमार रै घर री रासी देखता तो आपरे अचंभा री पार ई नीं रैतो । बारी साजण सारू वें च्यारूं जणा इण भांत ताखड़ा तोड़ता हा जाणें वें जमराज रै पाखती ऊमर रा दिन बधावण सारू जावें है । मरणा री अँडो कोड तो म्हैं आज पेली कदैई नीं सुणियो ।

पछे राजकंवर मांडनै सगळी बात बताई । दैतराज तो काळा भाटा री मूरत रै उनमाने उणरी बातां सुणतो रह्यो । अणजाण ई में उणरी आख्यां सूं आंसू टपकनै छाती रा रुंगता में रिसता गया । वो दो तीन वार बीच में बोलणो ई चायो पण उरा सूं बोलीजियो कोनीं । गळा में जाणें कोई काठी डाट आयग्यो ! अबकी तो वो जोर करनै पूछ ई लियो—अठे मरण नै आवण सारू वें च्यारूं माहौमाह लड़िया ?

राजकंवर कह्यो—हां, जाणें जित्ता लड़िया । आप आपरा हक में च्यारूं ई साचा हा । डोकरी तो अठे आवण सारू ताखड़ा तोड़ती ही—जाणें नानेरें जावण री आड़ी लियो व्हे ज्यूं । सेवट री बाजी म्हारै माथे सगळी बात आयनै झिली । सगळा जणा म्हनै न्याव निवेड़णा सारू पंच थापियो । म्हैं

पेला ई वां सगळां नै खराय खराय ओ बचन ले लिया हा के वांनै म्हारी बात कबूल करणी ई पड़ेला । अर तद पूरी पतियारी ब्हियां ई म्है ओ न्याव करियो के वांरी वारी माथे म्हनै जावणो ई वाजब है ! उण रांझा री इणरै सिवा दुनियां में फेर कीं न्याव नीं व्हे सकतो हो । इण भांत रा मरणा नै म्है मरणो नीं समझूं, हजार हजार जलम समझूं । वां सगळां नै तोटा में राखनै म्है म्हारी ओ अणचींत्यो कल्याण करियो हूं । पण म्हारा मूंडा सूं ओ अनोखो न्याव सुणनै वारो तो जाणै अंस ई निकळग्यो । वांनै इण बात सारू काई दौरा मनाया, म्है जाणूं के म्हारी जीव जाणें ।

देंत अटपटी वांणी में पूछ्यो—थूं आपरा हाथ सूं ओ न्याव करियो ! चलायनै मोत रे मूंडे आयो !! बावळा अंडो न्याव तो आज पैली दुनियां में कोई नीं करियो व्हेला !

राजकंवर मोद में कह्यो—पण इण भांत री मरण ई दुनियां में कितरां रा भाग में लिखियोड़ी व्हे । म्है तो इणनै मरण नीं मानूं । म्है तो अमरता रा लोभ सूं कोडायो अठे आयो । ओ न्याव करने म्है म्हारी ई कल्याण करियो हूं ।

ओ काई ! देंतराज तो अणछक भूं भूं करने रोवण लागी । डील रा रूंगता तोड़ती तोड़ती कंवण लागी—बेटी, जे म्है इणनै खाय जातो तो म्हारी काई गत व्हेती ? ऊमर में आज पैली वार आं आंख्यां सूं आंसुवां री मेळ ब्हियो । म्हनै अंडी लखावे के इण मेळ सूं म्हारी आंख्यां में अक नवो जोत कसमसावण लागी । आं आंसुवां अर इण नवो जोत री सोगन खायनै कंवू के म्है अबे कदेई किणी री जीव नीं लेवूला ।

पण आ बात कंता ई वो जरड़ जरड़ रूंगता री लटियां तोड़ण लागी । आपरा ई नखां सूं आपरो गळौ टूंपनै अपळ-गपळ कैवण लागी—म्हारो जीव म्हारा बख में नीं । म्हारो सोगनां री कीं सिंघन नीं । म्हैं घड़ी घड़ी सोगनां खाई अर घड़ी घड़ी विटळियो । म्हारा जीव री कीं पतियारी नीं । इण खातर आपघात करने मर जावूं तो पाप कटै ।

वो जोर सूं नखां नै भींचिया । लोई री तूताड़ियां छूटण लागी । राजकंवरी दौड़नै उणरा हाथ खांचिया । खुद मरण री धमकी दी तद वो मानियो ।

थोड़ी ताळ ताई सगळा ई बोला बोला बेठा रह्या । कोई किरणी सूं बात नीं करी । आख्यां मसळती मसळती देंत ई बोल्यो—म्हारो ग्यांन ओछो है, म्हारा सूं घणो बोलणी नीं आवे । औ राजकंवर म्हारो जित्तो कल्याण करियो, वो म्हैं जलम जलम नीं पांतरूं ।

आ कंयनै वो फेर भूं भूं करने रोवण हूको । पछै डुस्किया भरतो फेर कैवण लागी—आप राजकंवर हो तो आ ई राजकंवरी है । म्हैं राजा रा मेल सूं इणनै खावण सारू उचकाई । पण इणरो रूप देखनै मारण री मन नीं ब्हियो । उण दिन सूं म्हैं बेटी री गळाई इणनै पाळी हूं । इत्ता दिन इण डर सूं ई इणरो ब्याव नीं करियो के आ म्हनै छोडनै परी जावला । म्हैं मन में जाणतो के म्हैं अक पलक वास्तै ई इणरो बिछोव नीं झेल सकूं । आज अणचींत्यो जोग सजियो । भलाई आप न्याव निवेड़ियो अर भलाई अठे आया । आप हरख सूं मरण नै आया अर म्हनै जीवाड़ दियो ! म्हारा

डोल री कापी कापी करने आपरा पगां में बिछावूं तो ई आपरी ओसांण नीं उतरे । पैला संजोग सज जाती तो इता पाप नीं करतो ।

आ कैयने वो जोर सूं दो तीन वार किड़कड़ियां चाबी, जाणै बीजळी किड़की । आपरी कळायां रै दो तीन बटका तोड़ने वो कैवण लागी—राजकंवर, म्हारा सूं हीण अर अधम जिनावर दुनियां थपियां पछै ई नीं कोई ब्हियो अर नीं कोई व्है । छोटा कंवळा टाबरां रै मांस री तोजी बैठे उण वगन म्हारा डोल री सगळी नाड़ियां अजेज नाचण लागे । म्हारी तो सगळी बातां ऊंधी । जीवण रा सगळा सराजाम सूं म्हने अणूती चिड़ है । लुगायां रै कूख री थंलियां अर हांचळां रै मांस री म्हने अणूती भावड़ है । मांस रै हिमाब सूं अे सांमी भूंडी चीजां है । कूख में जीवण सांचरे, हांचळां सूं जीवण री पोसण व्है, इण खातर म्हारा पापी मन में आंरी अणूती चावना है । अेकर बारी माथे दो-जीवां लुगाई आई । उणरै नवमी महीनी हो । तो ई दया री ठोड़ म्हने अणूती चंडाळो छूटी । म्हारा हाथ में व्है तो म्है दुनियां सूं जीवण अर उपज री जड़ियां ई काट दूं । म्हारै सिवाय म्है दुनियां में किणी न जीवती देखणी नीं चावूं ।

बाहूड़ा रै जोर सूं अेक बटको भरने वो फेर आगं कैवण लागी—वा लुगाई तो म्हने देखतां ई चिराळियां करण दूकी । आख्यां आडा हाथ देयने वा बकण लागी—म्हने दूजा जलम में ई फेर खाय जाजे, पण म्हारा पेट रा बेटा रै हाथ मत लगाजे । म्हारै बेटा रै हाथ मत लगाजे । पण म्हने जलम

अर जीवण नांव माथे तो झाळ झाळ ऊठे । आ लुगाई तो गेली व्हे ज्यूं चिराळियां करतो री अर म्हें सरूपोत उणारी पेट ई चीरियो । कूख री थेंली समेत उणरा बेटा नें बारें काढियो । नाळेर री काची गिरियां सूं ई कंवळा बाळक रौ म्हें खूब चबाय चबायनें साव लियो । अर लुगाई रा प्राण निकळिया जठा ताई वा — म्हारी बेटो म्हारी बेटो रोवतो री ! कूख रो थेंली अर बाळक रें पछें म्हें जरड देतो उणरा हांचळ तोडनें खाया । अक अक गपळका में ई दोनूं हांचळां नें गिटग्यो । लुगायां रा माथा सूं म्हनें अणूती चिड है । कदे ई नीं खायो । वामें अकल अर समझ री तो लवलेस ई नीं व्हे । जे वारा माथा खावणा सूं वेडी समझ बण जावें तो मरणा बिचें ई घणो खोटो । लुगाणां रा काळजा रें ई हाथ लगाया नीं करूं । वारी आंख्यां रा डोळा ई नीं खाया करूं । मीडका अर बिसांदरा सूं डरपण वाळी काळजो खा जावूं तो म्हारी ई काळजो काची पड जावें । बात बात में आंसू ढळकावण वाळी आंख्यां खा जावूं तो कदास म्हारी ई रोवणा री आदत बण जावें । राजकंवर अेडा पापी विचार म्हारें अकला रें ई पांती क्यूं आया ? म्हारें अकला रें ई पांती क्यूं आया ? म्हनें जलम अर जीवण माथे इत्ती जूजळ क्यूं छूटें ? कांई मरियां बिना ई इण हीण भावना सूं म्हारी लारी छूट सकें ? नीं नीं आ बात ई कदे व्हेणी है ! अकडोडियो कदे ई बोर बण सकें ! पण राजकंवर म्हारा मन में घड़ी घड़ी ओ विस्वास पसवाडा फेरें के आपरो साथ म्हनें दस बरसां पेली मिल जाती तो म्हें इण अधम गति रें ठेट तळें क्यूं पूगतो ! राजकंवर आपरो

उणियारौ देख्यां जलम अर जीवण रै वास्तै म्हारौ अणूतौ कोड बधैं । म्हारा हाथ में व्हे तो म्हैं इण दुनिया सूं अबै किणी जीव रौ विणास नीं होवण दूं । म्हारा प्राण देयने ई म्हैं नवा जलम रौ पोसण करणी चावूं ।

के इत्ता में वौ अणछक उछळियो । छात सूं माथी टकरायो । आंख्यां में आंसुवां री पांण अर होठां माथै मुळक री सांन चढ़ावतौ बोल्यौ — इमी रौ कूपलौ, इमी रौ कूपलौ !

इमी रौ कूपलौ घोखतौ घोखतौ वौ मलापतौ बारै गियो । हांकरतां मलापतौ मलापतौ पाछी आयौ । उणरा हाथ में इमी रौ कूपलौ हो । अजगर री गळाई सास खांचतौ वो कंवण लागो — करियोड़ा पाप तो इण सूं नीं धुपै, पण आज सूं जीवाड़ण रै अलावा म्हैं कीं दूजौ काम नीं करूंला । किणी कीड़ी नै ई अबै म्हारा सूं डरणो नीं चाहीजे । नीचै रा सगळा भंवारां में मरियोड़ा मिनखां री हाडकियां हैं । सगळी हाडकियां नै पीसने सौ मण गावा घी में इण सीयाळै म्हारै संधीणी करणी चावतौ हो । हाडकां रा सांधा घणा दूखे । जान्ता सूं अंवेरनै सगळा हाडक राख छोडचा हा । आप देखता जावौ अेक पलक में सगळां नै पाछा जीवाडूं ।

हाडकियां माथै इमी रै छांटां री परस व्हेतां ईं वै जीवता मिनखां रौ रूप धारण कर लेवती । बाळक, मोट्यार, लुगायां, बूढ़ा-ठाडा भांत भांत रा अणगिरा मिनख, हा ही, हा हो करता मेल में भरग्या । मेल री तो रंगत ई बदळगी । ज्यूं ज्यूं जीव बावड़तौ दैतराज हरख सूं किलकारियां करतो । खाकां पिदावतौ । घड़ी घड़ी बीच में लाळां पटकतौ पटकतौ

ई बोलती—हे भगवान, म्हेँ इत्ता दिन कैड़ी बावळी अर पापो हो के जीवाङ्गण री काम नीं करने मारण री काम करती ।

इमी री गळाई उणरी लाल री छांटो पड़तां ई हाडकियां मिनख बण जाती । ढोल रै उनमांन आपरा पेट नै दोनूं हाथां सूं ठपकारती कैवण लागी—हे भगवान, इत्ता सा पेट में म्हेँ इत्ता मिनखां नै डकारग्यी !

चकन-बकन व्हियोड़ा राजकंवर अर राजकंवरी तो ओ खिलकौ देखता ई रह्या ।

के इत्ता में देंतराज खाकां पिदावती वारें पाखती आयी । राजकंवरी रा माथा माथै हाथ फेरने कैवण लागी—म्हेँ जाणती के म्हारी बेटी री जान में जानिया कठा सूं लावूला । इण सूं लांठी जान तो फेर काई व्है ! समटावणो में जानी दीठ अक अक सोना री कळस मोत्यां सूं भरियोड़ी देवूला । आज पेली तीनूं लोकां में ई जंडी ब्याव नीं व्हियो, वेड़ी म्हारी बेटी री ब्याव रचावूला ।

लाज री मारी राजकंवरी नीचो माथो कर लियो ।

देंतराज लाड सूं पुचकारती कैवण लागी—म्हारी बेटी रै लाज अणूती इज है, म्हारी बेटी रै लाज अणूती इज है ।

पछे राजकंवर रा पगां में जोर जोर सूं लिलाड़ रग-इनै कैवण लागी—जे भख री बारियां साजण री ओ पाप म्हेँ नीं करती तो आपरो संजोग कीकर सजतौ ? म्हारी कल्याण कीकर व्हैती ?

पांचवीं राजकंवर

मारग चालतां चालतां पांचवा राजकंवर री
निजर आपरी छीयां साथै पड़ी । चढ़ता सूरज
रै साथै छीयां मतै ई घटती ही । सूरज मथारै आयो जद छीयां
साव पगां में आयगी । अर आधूण दिसा सांमी सूरज ढळण
लागो तद छीयां उगूण दिसा सांमी बधण लागी । उणरा
मन में जाणै कांई धुन जची जको वो घड़ी घड़ी पाछल फोरनै
लारै छीयां नै देखती । छीयां साथै री साथै ही । नीं कठै
ई लोप व्ही अर नीं कठैई लारै री । वो सोचण लागी—
फगत इण छीयां त्रिनां सगळां री साथ छूटगो । आ साथै
रह्यां मिनख साव अकली तो कोनीं । अर यूं ई मिनख कद
अकली व्हे ! मन मानै तो वो हजार मिनखां भेलो ई अकला
ज्युं है अर मन मानै तो अकली ई सगळी दुनियां रै साथै
है । मारग चालतां मारग री कण कण साथै, मारग रा
चीला साथै, बांटका साथै, धड़ा, मगरा, धोरा अर भाखर
साथै, उडता पखेरू साथै, चरता विचरता जीव जिनावर साथै,
दिन रा गिगन में तपती सूरज साथै, रात रा अंधारी, तारा,
अर चांद साथै ।

सूरज ढळतो ढळतो भाखर रै ओलें ढळग्यो । क्यूं ओ
सूरज ऊगै अर क्यूं आथमै । उजास रा अथाग समंदर रै साथै
ऊगै अर आथमतां ई सगळा समंदर नै संवेट खुद अदीठ व्हे
जावै । सगळी दुनियां में अंधारा री समंदर छौळां मारण
लागे । छीयां री साथ ई अंधारा में लोप व्हे जावै ।

अणूता आड़ंग रै कारण राजकंवर परसेवा में घांण
वैगौ । देखतां देखतां उतराद सूं काळी कांठळ उमड़ आई ।
जाणै भाखर रा भाखर उमगिया व्है ज्यू । के तो बादळां में
नगारा बाजण लागा के बादळां री गुफावां में लुक्योड़ा सिंघ
गाजण लागा । थोड़ा घणा उजास रै कारण बीजळियां मगसी
चिमकती ही । लांबा बळ खाती बैरण बीजळियां झबूका भरती
ही ।

आभा रै चारुं दिसावां में काळी कळायण पाथरुगी ।
जाणै धरती री समंदर ई आभे चढ़ग्यौ । समंदर ओसरियो ।
गाजां बाजां रै साथै धरती उएने बधायो । पछे आभे चढ़धा
समंदर रै हरख री कांई पार ! परताळियां पांणी पड़ण
लागो । राजकंवर अेक घेर घुमेर आंमली री आसरी लियो ।
धरती साथै कड़ियां तणी पांणी बहण लागो, जाणै खुद समंदर
पगां हालियो । सगळे जळबंब ई जळबंब । आज तो इण
जळबंब में भीज्यां सूरज हमेसां रै वास्तै ठाडो व्है जावैला ।
इण डर सूं वो तो तुरत लुकग्यौ । पण अंधारा नै ठाडा
पड़ण री कीं डर नीं हो । वो तो छांट छांट नै आपरी
बाथां में भरली । अर झपाझप करतो वो आपरी बीजळ
आख्यां बहता समंदर नै निरखण लागो । बीजळियां रा सळावा,
उएने निरखण सारु माहीमाह होड मारता हा ।

राजकंवर री आख्यां तो जाणै सळावा भरती वां बीज-
ळियां सूं ई चिपगी व्है । वो सोचण लागो—मिनख जमारो
आं बीजळियां रा सळावा जित्तो ई है । खिवणा रै साथे ई बुझ
जावै । इण पळापळ करता झबूका रै मांय मिनख नै अमो-

लक मोती पोवणा है । कांकरां रें मांय रळियोड़ा मोतियां री पिछांण करणी है, चुगणा अर पोवणा है । चुगणा अर पोवणा री बारी तो पछे आवै पैला पिछांण री निजर चाहीजै ।

इण मिनख जमारा रें आणंद री सेवट माठ कठै है ? कांई करियां उणरा मन में आणंद सांचरै । धन री पोती बघायां के धरती री सींवां जीत्यां के मिनखां माथै ठौर जतायां के किला परकोटा बणायां के काया री पोवण करियां के आत्मा री कल्याण करियां अर के मन में ग्यांन री उजास चेतायां ! आपरै खातें जीवणी अर मरणी आ तो जिनावरां री जूण है । मिनख इण जूण सूं तिरनै कीकर तीर माथै जा सकै । मिनख वास्तै सोचण री बात फगत आ इज है, ग्यांन री बात फगत इत्ती इज है ! पण ओ सोचणी अर ओ ग्यांन आवै कीकर ? अर ग्यांन आयां इणरी अमल कीकर व्हे ?

पांणी रें साथै अंधारो ई बघती गियो । राजकंवर डाळा माथै चढ़नै बैठग्यो । थोड़ी ताळ में पंखेरुवां री फड़ाफड़ सुणीजी । बातचीत री कीं सुरपुर ई सुणीजी । चकवा चकवी री जोड़ी आळा में तड़फड़ तड़फड़ करती हो । छांटों री घमरोळ अर फांफां री फटकारां सूं आळी मार झोला खावण लागी । चकवी कह्यो—इण बोछाड़ अर आं फांफां में सूवणी तो अळगो, रात काटणी ई दोरी व्हेगी । थें सिझ्या सूं ई दुमना हो । बोलो नीं कोई चाली । पूछ पूछनै कायी व्हेगी, पण थें तो मून ई धार लियो । म्हनै आज ठा पड़ी के थें म्हारा सूं ई चोज राखी । माथै ओ प्रळै बरसै, आळी झोला खावै अर थें सिझ्या सूं ई मून धारधां चापळियोड़ा बैठ

हो । म्हारा मन री म्है इज जाणूं ।

चकवो कह्यो—थारा सूं काई चोज राखूं ! पण बात दरसायां काळजो फाटे ! जोभ चीरीज ! आ बात इज अंडी है । थूं रूसणो मांडे तो थनै बताणो ई पड़सी । थनै बतावणा रें साथे कोई रांणी-पांणी वाळी मिनख सुणै अर आपरो जान जोखम में घालणी तेवड़ले तो वां बापड़ियां री फंद कटे । पण म्हनै अंडी अपरबळी आदमी इण दुनियां में दोख कोनों ।

राजकंवर कांन देयनै सुणण लागो । चकवो निस्कारा न्हाकतो बोल्यो—इण नदी रें मांय अक विकराळ देंत रेंवे । वो जित्ती पतळी अर डीगो है, उत्ती ई कमीण अर चंडाळ है । दया-माया तो उणरी सो पीढ़ी में ई नीं व्हेला । उणरें पाखती लाखूं हीरा-मोत्यां री माया है । कदास इण सूं धनवांन दुनियां में दूजो कोई नीं व्हेला । पण तो ई उणरी तिसणा री पार नीं है । मोतो निपजावण री उणरें पाखती अक अनोखो ई अेलम है । सात भाइयां री बेन नै वो चंवरी माथा सूं उचकावे । उणरी माथो वाढ़नै ऊंवो कड़ा रें टेर देवें । पांणी रा हौद में लोई रा टपका पड़ । हौद में पड़तां ई वं टपका पळकता मोती बण जावें । वां मोत्यां नै वो भेळा कर करनै भंवारां में भरें । सातमो भंवारी भरण वाळो है । अक अक मोती उणरें गिणियोड़ी है । साकळे सगळा भंवारां खोल खोलनै वो मोती संभाळें । हा हा करनै हंस, मोत्यां में लुटे । सगळी दुनियां नै खरीदण री उणरी मंसा है । इत्ती संपत रें उपरांत वो मूंजी इतरी है के अक मोतो सूं जे हजार मिनखां रा प्राण बचता व्हे तो वो मोती नीं खरचै । अ मोती बणै

जित्ते उणने हाथां कमायोड़ी कमाई खावणी पड़ें, इण खातर वो घणकरो भूखी ई रैवे ।

राजकंवर नै अंडी लखायी के जाणै कोई उणरो ई माथो वाढ़ लियो है । वो तो चेताचूक सो व्हैगो । चकवो धकै फेर कैवण लागी—कट्योड़ा उण माथा सूं बत्तीस घड़ी लोई झरै जित्ते वा मूंडकी मूंडे बोलें, कांनां सुणें अर निजरां देखें । तरवार रें अंडी बूटी लगायनै वो झटकी करे के नीं तो उणरें कीं पीड़ व्है अर नीं प्राण निकळें । पण बत्तीस घड़ी रें पछे लोई टप-कियां जद वो मूंडकी री चुट्टी झालने भंवारा में फेंकें तद उणरें अणूतो दरद व्है । वा जोर जोर सूं अरड़ावें । भंवारा में पट-कियोड़ी मूंडकियां बारें मईना ताईं अरड़ावती रैवे । वांने अर-ड़ावतां सुणें तो देंत जोर जोर सूं हंसै । जे टपकियोड़ा लोई री अेक मोतो उण मूंडकी नै गिटाय देवें तो उणरें कीं दरद नीं व्है, पण उण दुस्ती सूं अेक मोती ई खवाड़णो नीं आवें । जिण बेन रा टपकता लोई सूं वो हजारूं मोती बणावें, वो पाछो उणरो दरद मिटावण सारू अेक मोती ई नीं दे सकें । बारें मईनां ताईं मूंडकियां कूकतो रैवे तो ई उण मूंजी नै दया नीं आवें ।

राजकंवर रा रूं रूं में जाणें सुइयां खुबण लागी । चकवी री ई सास ऊंचो चढ़ण लागो । उणनै अेड़ी लखायी के कोई बाज आपरा पंजा सूं उणनै रोसै है । अटकती अटकती चकवी बोल्यो—कट्योड़ी डोचरो हौद माथें टेरनै वो दूजी बेन री फिराक में निकळें । वतूळियो व्है ज्यूं भंवती फिरै । सात भायां री अेकाअेक बेन अर उणनै वो चंवरी माथा सूं उचकावें तो

लोई रा मोती बणें । वो केई बेंनां रा माथा यूं हकनाक ई वाढ़ न्हाकिया । अक बेंन री माथी वाढ़ने ऊंचो टेरियो, पण उणरा टपकां सूं मोती नीं बणिया । होद री पांणी लोई सूं रातौ व्हेगौ । बाद में पती लागौ के सात सगा मां जाया भाया व्हेणा चाहीजें । उण बेंन रे छ तौ सगा भाई हा, पण अक सावकौ भाई हो । अक बेंन रा लोई सूं फेर मोती नीं बणिया तौ वो देंत पती लगायो के भाई तौ नो जलमिया हा, पण अबारूं फगत सात ई जीवता है । लोई सूं मोती बूणरा सारू फगत सात भाई जलमणा चाहीजें । अर जलमियां पछें सात्यूं ई जीवता रेंवणा चाहीजें । मोती नीं बणता तौ वो सांमी वारें माथे चिड़ती । ठोकरां मारती । बड़बड़ाटा करती—म्हारे अलेखूं रिपियां री नुक्सांण कराय दियो । रोस तौ अँड़ी आवे के इणरी सात पीढ़ियां नें ई मार न्हाकूं । मोती नीं बणणा रा नुक्सांण री खातर वो आगोलगी सात आठ बेंनां वत्ती राखती । नवी बेंनां री तलास में वो ह्वा रें समचे दुनियां में चकारा देवे । हाथे आतां ई वो उणी वगत आपरा डेरा में आय जावे । पण हाथे नीं आवती तौ ई वो घड़ी रात थकां पाछी वळ जाती । रोस में नाड़ियां उफसियोड़ी रेंवती । सूरज ऊगियां पेली पेली ठोक वगत माथे नवी भोडक काटने लटकाय देती । उणरे बस पूगतां वो अक मोती ई कम नीं पड़ण देती । नवी भोडक लटकायां पेली वो हळफळायो धोबा भर भरने सगळा मोती बारें काढ़ लेती । होद में चिमकियां मार मारने वो मोती हेरती । उणने पांणी रें मांय ई साफ दीखें । किणी बेंन रें लोई कम व्हेणा सूं

मोती कम बरता तो वो अणूती गाळियां काढ़तो । इण बात रे कारण म्हें सिझ्या सूं ई दुमनी हूं अर थूं म्हनें चोज राखण रो ओळबी देवं । भलां आ बात सुणियां किणरो जोव दुख नीं पावे । चंवरी सूं अकाअक बैन ने उचकायां पछे उणरें माईतां अर उणरें भायां री कांई हालत व्हेती व्हेला । जको तो वाने मोती बणावण री बात रो पती ई नीं पड़े, नीतर वारें दुख री कुण अंदाज लगाय सकं । म्हारो मन तो करे के जगता वासदी में पड़नें बळ जावूं ! कोई रांणी-पांणी वाळी मिनख सुणती व्हे तो म्हें उणनें केई बातां बतावूं । मिनख रे लोई सूं मोती निपजावणिया अं देत तो सगळी धरती रो ई पापो काट न्हाकेला । आज मिनख रो लोई तो कितो सस्ती व्हेगी अर उणसूं निपजिया मोती कित्ता मूधा व्हेगा ।

सगळी बात चुपचाप सुणियां पछे अबकी चकवी मूंडे बोली—इण देत ने मारनें ओ अन्याव मेटियां बिना म्हें तो टूच में चुगो-पांणी ई नीं झेलूं । भूखां-तिरसां मरनें प्राण देवणा सैल है, पण ओ अकरम नीं सुणीजे ।

राजकंवर ने लखायी के जाणें वो अजगर रा आंटां सूं छूटो है । माथो ऊंचो करनें बोल्यो—रांणी-पांणी वाळा दूजा मिनख ने कठे जोवता फिरोला । म्हें हूं जेड़ी त्यार हूं । आ बात सुणियां पछे अक पलक बितावणो ई अधरम है । म्हनें उण अधम देत रो ठायी बतावो । म्हें उणनें मारियां छोडूला ।

चकवी कहाँ—आप इत्ती तेवडली ही तो ओ काम अवस पूरी व्हेला । पण उण देत ने मारणी इत्ती सैल काम नीं है । ग्याबण लूकी अर कागला रा लोई में सात बार खोळियोडी

हिरण री सींगड़ी उणारी छाती में खुबायां बिना उणारी बाळ ई बांकी नीं व्है । आ सींगड़ी हाथ आतां ई उणारी सगळी अंस निकळ जावैला । नींतर अेक हजार सिंघ ई उणारी कीं नीं कर सकै ।

राजकंवर कह्यो — उणनै मारण वास्तै पैला ग्यावण लूंकी अर कागला नै मारो ! अे क्किणी री कांई बिगाड़ियो । म्है ओ काम तो नीं करूं । म्हनै ठायो बतावो जकी बात करो । म्है अजेज उण सूं भेंटरणी चावूं ।

चकवो अर चकवो उणारी बात सुणनै अणूता राजी व्हिया । वानै पूगै पतियारो व्हैगो के ओ अवस उण दैत री सांमनो कर सकैला । जकी आपरै प्राणां री परवाह नीं करनै लूंकी अर कागला रै प्राणां री इत्तो ध्यान राखै, इणसूं लांठो अपर-बळी आदमी इण दुनियां में फेर दूजो कुण व्है मकै !

चकवो कह्यो — सांमला भाखर री ढाळ में अेक नदी गंगाट करती बेवं । नदी रा उरला ढावा माथे अेक पीळा भाटा री मुड्डो रोप्योड़ी है । उणसूं सात हाथ अळगो डावी बाजू वो दैत बारै निकळै । अर उण ठोड़ सूं ई पाछो मांय वड़े । मांय वड़ती वगत जीमणा हाथ रा अंगूठा रै वो चीरो देयनै नदी में लोई रा टपका पटकै । वां टपकां रै साथे ई वो नवोड़ी बँन री चुट्टी पकड़नै धेंग देय देवं । अर सीधो आपरा मेल में पूग जावं । पूगतां ई हौद सूं मोती री मोती बारै काढ़नै कोठारां दाखल करै । झटका सूं नवो भोडक काटनै हौद रै माथे कड़ा में टेर देवं । भोडक सूं टपक टपक छांटा पड़ता रैवं । जे इण बिचाळै भोडक उतारनै घड़ सूं चेप

देवै तो वा बैन पाछी जीवती व्है जावै !

चकवौ थोड़ी ताळ रुकनै फेर कैवण लागी— ग्याबण लूकी अर कागला नै नीं मारणी चावो तो उण देंत री सांमनी करण री अेक दूजी अटकळ फेर है । पण इण सूं वो मरैला कोनीं, निबळी अर अपळंग व्है जावैला । डावो सींगड़ी रै मरोड़ी देयनै खींचणा सूं उणरो सगळी करार खतम व्है जावै । अबे थारी समचौ मिळियां ईं म्है दोनूं चुगो पांणी लेवांला !

राजकंवर कह्यो— म्हारो बड़ भाग के आज म्हैं आंमली रै डाळें थारी बातां सुणी । अंडी बात सुणियां पछे कुण अंडी आदमी जको निरांत सूं बैठ सकै । बात सुणै जका री बैन री ई माथी बढ़िया करै । मिनख जूण री सार तो ओ इज है । अन्याव री बात सुणियां पछे उणने सहन कर-णियो घणी अन्याई है ! म्हारी मां री म्हांनै हमेसां आ इज सीख ही, ओ इज आदेस ही । अबे म्हारा बेलियां, जीवता रह्या तो फेर मिळांला । थारी ओ ओसांण कदेई नीं पांतखं के थें म्हारो मिनख जमारो सुफळ अर सारथक करियो । भलांई आ बरसात व्हो अर भलांई म्हैं इण आंमली रै हेटै आयो । अबे अेक पलक ई फालतू ऊभो रेवूं तो वो पाप है ।

चकवौ अर चकवौ दोनूं आसीस देवतां कह्यो— आप जंडा मिनखां सूं ईं आ दुनियां टिक्योड़ी है, नींतर कदेई पोखाळी व्है जाती । भगवान आपरी हजारो ऊमर करै, दुनियां नै आप सूं सुख अर आणंद मिळै । म्हैं अठै बंठा आपरी बाट न्हाळा हां ।

बरसतै मेह राजकंवर उठा सूं वहीर ब्हियो । कड़ियां
फा. ५०

तणा पांणी में छपाक छपाक करती वो सांमला भाखर री सोय में चालतो रह्यो । बीजळियां रा झबका में सांमला भाखर री उणनं झबकी पड़ जाती अर वो पांणी फाड़ती उठीनं चालतो ई रह्यो । नीचं कड़ियां तणी आडं मारग बेवती पांणी, माथे पांणी रा धारौळा, अंधारी रात, बादळां री गाजणी अर बीजळियां री किड़कणी, इण प्रळें रें बिचाळें वो अन्याई देंत सूं सांमनी करण सारू वहीर व्हियो । वो घड़ी घड़ी आपरें माथा माथे हाथ फेरती, जाणं उणरो माथो कटियोड़ी व्हे । तड़ातड़ बरसती छांटां उरणे लोई रा टपकां ज्यूं लखाई । वो सोचण लागी—काई लोभ इत्तो आंधो है के वो मिनखां रा लोई अर मिनख रा आंसुवां नै ई नीं देख सकें । काई लोभ इत्तो बोळी है के वो रोवता मिनखां री चिराळियां ई नीं सुण सकें । काई लोभ इत्तो मूरख अर बावळी है के वो आपरा अर पराया में इण भांत री फरक जाणें !

कड़कड़ाट करती जोर सूं बिजळी किड़की । बहता पांणी अर बादळां रें बिचाळें चानणा री अेक लींगटी मंडगी । मंडतां ई लोप व्हेगी । कांतां में कड़कण री आवाज गूंजती री । राजकंवर सोचती रह्यो के मिनख इत्तो मूरख, आंधो अर बोळी क्यूं व्हेगी, कीकर व्हेगी ? इण मांदगी सूं वो पाछो कद साजी व्हे सकैला ?

आडा पांणी नै चीरती, माथा में विचारां नै चीरती वो बीजळियां रें पळकं चकवी बतायो उण ठाणं पूग ई गियो । नदी रें ढावें पीळा भाटा री मुड्डो रुप्योड़ी हौ । उणसूं सातेक हाथ जीवणी बाजू वो पांणी में तुरत अंगूठो चीरनं टपका न्हा-

किया । अर वो अजेज पांणी सूं कूदनं पांणी में घमाक दें दी । आभा में ऊंची फेंक्योड़ी कोपरियो नीची आवें ज्यूं वो नदी में सरर सरर नीचें जावण लागी ।

कित्ती ताळ अर कित्ती भांय लग वो हालतो रह्यो इणरी तो उणनं कीं सोजी नीं बंधी, पण सेवट पांणी रें पछे काठेड़ी आतां ईं उणनं ढबणी पड़्यो । काळा पगोटियां री गोळ नाळ दोसी । वो बिना सोच्यां विचारियां ईं नाळ सूं हेटें उतरण लागी ।

नाळ सूं उतरतां ईं अक लांठी आंगणी आयी । आंगणा में पग घरतां ईं उणनं मूंडकियां री चिराळियां सुणीजण लागी । उणरी माथी चकरी चढ़्यो । भंवळ खायनं वो हेटें पड़ण वाळो ही के मतं ईं आपो संभळ्यो । चिराळियां रें समचें जाणं आंसुवां री परनाळां उणरा डील में उतरण लागी । उणरी आंख्यां ईं जळजळी न्हैगी । वो खुदोखुद ईं होळें सूं बोल्यो—बैनां, थोड़ी देर धोरज धारो । म्हैं थारो आठवो भाई हूं । थारा आंसू पूंछण री, थारी चिराळियां नें किल-कारियां में बदळण री कीं न कीं जुगत बिठावूला । नींतर विस्वास राखी म्हारो खुद री मूंडकी थारें भेलो ईं चिराळी करंला, थारें भेलो ईं रोवला । थारो घड़ कट्योड़ी है तो म्हारो ईं साबत नीं रेंवला । म्हारो लाडलो बैनां थोड़ी ताळ बोली री, म्हारा सूं थारी अं चिराळियां सुणीजं कोनों । म्हारी छाती अणूंती काची है ।

वो तांगियां खावतो अललटिप्पै अठी उठी हालतो रह्यो । के इत्ता में उणनं अक चिराळी ऊंची सुणीजी । कौ तुरख

उठीनै ई गाबड़ ऊंची करी । अक मूंडकी छत सूं लटकियोड़ी ही । नीचें होद में टपक टपक छांटा पड़ता हा । वो हळ-फळियो दौड़नै होद रै पाखती गियो । ऊंचो भाळियो । मूंडकी डग डग हंसी ।

राजकंवर पूछ्यो — वाल्हा, थारो मूंडकी कट्योड़ी लटकै अर थूं हंसै, थोड़ी ताळ पैला तो थूं चिराळी करी ही ।

मूंडकी बोली — म्है तो अबे अरड़ां अरड़ां रोवूं तो ई कांई सांधो लागे ! पाखती रा खोडां सूं रात दिन चिराळियां सुणूं तो माडांणी ई म्हारा मूंडा सूं चिराळियां निकळे । आज नवमो दिन है म्हने ओ कूकारोळी सुणातां नै । काल वो म्हारी घड़ वाढ़ने म्हने ऊंची टेरी है । म्हारे लोई रा टपकां सूं होद में मोती बणै । थूं आं मोतियां रा लोभ में अठे आयो तो परो, पण अठे आयां थारे लोभ रो कांई दुरगत व्हेला । आ सोचनें म्है मतो तो रोवण रो करियो हो, पण म्हने माडांणी ई हंसी छूटगी । बटाव, वो दुस्ती देत आतां ई थने उकळता कड़ाव में थरकावैला ! थूं ओ नीं व्हेतो लोभ क्यू करियो ? म्हारी तो गत बिगड़ी जको बिगड़ी ई । चंवर सूं उचकायां रै सात दिन पछे म्हारी मूंडकी इण विध मोती निपजावै है ! म्हारो बूढ़ो बाप, म्हारी बूढ़ी मावड़ी अर म्हारा सात्यूं भाई म्हारा नांव नै रोय रोय मरग्या व्हेला ।

आ कैयनै वा मूंडकी ठळाक ठळाक आंसू ढळकावण लागो । होद में पड़तां ई आंसू अमोलक लालां बणगी ।

राजकंवर उणने थावस बंधावतो कह्यो — थूं रो मत म्हारी बाई, म्है थारो आठवो भाई हूं । म्है मोत्यां रा लोभ सूं अठे

नीं आयी । म्हारी बैनां री चिराळियां सुणनै आयी हूं । के तो चिराळियां नै मेटूला के म्हैं खुद मिट जावूला । दुनियां रा किणी खुणा में अे चिराळियां सुणीजै तो मिनखां री जीवणी बिरथा अर अकारथ है ! म्हारी बाई, म्हारा तो भोळा सुभाव में आ बात दूक के दुनियां रा किणी खुणा री दो आख्यां में आंसू है तो पछे दूजा लोगां नै हंसणी कीकर पोसाव ? कोई अेक जणी ई दुखी है तो पछे दूजा लोग सुख री साव कीकर लं सकै ? म्हारी बैन री माथो वढ़ियोड़ी लटकै है तो पछे म्हारा साबत माथा में धड़ है । अंडा जीवणा बिचे तो मरणी घणी सिरै । म्हारी बाई, थूं म्हनै इत्तो कुमाणस जाण के थारा लोई सू बणियोड़ा मोत्यां री म्हैं सपना में ई लोभ करूला !

मूंडकी बोली—म्हारा वीरा दुनियां में आज मिनख रं लोई री मोल ई काई है ! टकै घड़ी ई मूँघी । हजार मोत्यां सारू तो लाखूं मिनख मर सकै अर लाखूं मारिया जा सकै । खेर छोड़ी आं बातां नै । म्है तो सगळी मरी जको मरी ई । अबं घड़ी डोढ़ घड़ी मोती बणै जित्तो ई म्हारी मूंडकी में लोई है । वो दुस्ती कोई नवी बैन री चुट्टी हाथ में झेल्यां आतो ई व्हेला । उणरी निजर पढ़्यां पछे उकळता तेल में थारो फूलो बणतां कीं जेज नीं लागैला ।

राजकंवर कह्यो—म्हैं तो तेवड़नै ई आज फूलो बगणा सारू आयो हूं । थूं म्हारो कीं फिकर मत कर । थारी धड़ कठे पड़ी है जको म्हनै तुरत बता । म्हैं म्हारी बाई नै वरी में ठसियोड़ी लड़ाइम देखणी चाव ।

मूंडकी आख्यां सूं सांनो करने कह्यौ—उण सांमली साळ में म्हारी धड़ पड़ी है । मूंडकी जोड़तां ईं म्हें पाछी साबत व्है जावूला ।

इत्तौ सुण्यां पछे राजकंवर रै काई जेज ! वो तुरत मूंडकी उतारन धड़ चेपदी । चेपतां ईं वा तो गवर रै उणि-यार जीवती व्हैगी । राजकंवर थुयको न्हाकतां सोच्यौ—म्हारी इण बैन री आ दुरगत ! माथे मोत्यां रा हजार भंवारा वारनै फेंक दूं तो ई कम है ! उणरी मूंडकी रा लोई सूं मोती बणावणियो वो देंत कित्तो पापी है । मिनख रै डील रा कटथोड़ा न्यारा अंग कित्ता डरावणा अर कोजा लागं । जीवता मिनख री काया सूं फूठरी अर सिरै चीज फेर काई व्है सकं । मिनख रा डील नै सपना में ईं घात पुगावणा सूं लांठी पाप म्हारो समझ में तो दूजो कीं नों व्है सकं ! इण देंत नै म्हें आ बात कोकर समझावूं । कुदरत रै बिचाळै जीवतो रैवणौ ई सबसूं लांठी अर सिरै आणंद है । चाहै वो सिंघ री जीवणौ व्हो, चाहै देंत री जीवणौ व्हो, चाहै कीड़ी री जीवणौ व्हो अर चाहै मिनख री जीवणौ व्हो । इण जीवण री पोसण करे जकी देवता है अर इणरी विनास करे, उणरा बघाव में रोड़ा अटकावे, उणने दुखी करे, संतावे वो देंत अर राकस है । इण पाप रा डंड में प्राण खोसणा सूं तो जीवण री अनादर व्है । पापो रा प्राण तो आदर री चीज है । पापी सूं उणरी पाप छुडावणौ है । प्राण छुडायां तो फेर पाप री बचापो करणौ है । पछे इण पाप री अंत कठै ?

नवा प्राण बावड़ियोड़ी बैन कह्यौ—आप काई सोच में

उलझियोड़ा हो । दंत अबे आयो क आयी । आतां ई आपरी मरणी अर बलणी साथे ई व्हेला । अर म्हनें दूजी वार मरणी पड़ेला । आप म्हारे खातर मरणा री ओ जोखो क्यूं उठायो ?

खोडां में रड़वड़ती मूंडकियां री रोवणी-रीकणी चालू हो । राजकंवर ऊंडो निस्कारी न्हाकती कह्यो—म्हारी बाई, किणी रा प्राण लेवणा सूं लांठी कीं पाप कोनीं, पण प्राण लेवणा रा डंड में पापी रा पाछा प्राण लेवणा, ओ तो साचो न्याव कोनीं । पापी, प्राणां रै पेटे पाप सूं कीकर छूट सकें, म्हें तो इण सोच में पड़्यो हूं !

बैन कह्यो—जे अक रा प्राण लेवणा सूं हजार प्राण बचता व्हे अर अक ने जीवतो राखणा सूं हजार जीवां में जोखम पड़ती व्हे तो ई उण अक प्राण वास्तं आपने इत्तो सोच विचार करणी पड़ेला ?

राजकंवर कह्यो—दीखणा में आ बात जित्ती सुभट लागे, उत्ती साचांणी आ सुभट नीं है । अक काया में तो फगत अक ई जीव ब्हिया करे । उणारे खतम ब्हियां तो उण वास्तं सगळी कुदरत मरिया समान है । अक रै मरणा री दरद तो लाख मिनखां नै व्हे सकें । पण लाख मरियोड़ां री दरद कोई दो मरियोड़ा नै कीकर परस कर सकें ! गिणती रा हिसाब सूं हजार अक सूं सदा वत्ता है, पण हजार प्राणां वास्तं अक प्राण नै खतम व्हेणो पड़ेला, आ बात म्हारा मन में सावळ दूकें कोनीं । कठेई न कठेई म्हनें इण में खांमी लागे । प्राणां री विचार करती वगत गिणती री विचार छोडणी पड़ेला । म्हारी बैन, म्हें थने सावळ समझा नीं सकूं,

पण म्हारै तो कीं अंडी ई समझ में बँठोड़ी है । इण समझ रें आगें म्हनै हार मानणी पड़ । जरूरत परवाण म्है म्हारा प्राण तो तुरत दे सकूं, परा किणी रा प्राण लेवणा रो म्हनै हक नीं है । आ बात आछी तरै म्हारी समझ में आयगी । म्हारी मां सूं म्हानै आ ई सीख मिळी अर म्है हमेसां इण सीख नै याद राखूला ।

वरी में लड़ाझूम व्हियोड़ी बँन थोड़ा घणा मोसा रा भाव सूं मुळकनै बोलो—पण अठै आवण रो कस्ट करियो तद मां री इण सीख नै आप कीकर पांतरग्या ! आपरी इण समझ रें कारण अेक ई जूण में म्हनै दो वार मरणा रो ग्यांन व्हेला, इणरी औसाण म्है आपरै सांमी कीकर परगट करूं । वो दँत आतां ई म्हनै दूजी वार मारैला तद आप मां री सीख नै घोखता रँजो अर उण सीख नै घोखता घोखता ई खुद रा प्राण गमाय दीजो । ओ दूजी वार प्राण मिळियां म्हनै जीवण रो अणूंतो लोभ व्हियो, मरणा रो घणो वत्तो डर लागण लागो । ओ आपरी समझ रो ई परताप है, आपरी मंसा व्हे तो लुळनै इणरा वारणा लेवूं ।

राजकंवर निरमळ भाव सूं कह्यो—म्हारी बाई, म्हारी मां री सीख थारी समझ में सावळ बँठी कोनीं । इण सीख सूं ऊंची सीख आज पेली नीं तो दुनियां में व्ही है अर नीं कदेई व्हेला । आ सीख म्हारा मन सूं नीं डिगै जित्तै म्हनै किणी बात रो डर कोनीं ।

मूंडकी वाळी बँन कह्यो—दँत रें आयां पेली थें जित्ती ई निडरता री बातां करी थानै छाजें । उणरै आतां ई थारै

निसंकपणा री अर मां री सीख री पतियारी व्हे जावला । म्हारी कंणो मांनो तो आप आपरा हाथ सूं म्हारी गळी वाढनै म्हारी मूंडकी पाछी कड़ा रें टेर दो । उण दुस्ती री म्हनै डर अणूतो लागे । म्हनै लखावै के म्हारी मूंडकी मतें ई उछळनै पाछी सागं ठोड़ टिर जावला । इत्ती ताळ रें मोत्यां रा घाटा सूं वो देंत बावळी व्हे जावला ।

के इत्ता में वतूळिया रें वेग फूफां फूफां करतो देंत आयी । खाली हाथ आवणा रें कारण उणरी रीस री तो पार ई नीं हो । कीं घड़ी आध घड़ी री अबेळी ई व्हेगो हो । लोभ अर रीस रें कारण आंधो व्हियोड़ी वो सीधो होद माथें ई पूगो । वां दोनां माथें ई उणरी निजर नीं पड़ी । होद में लोई रा टपकता छांटां सूं मोती बणता नीं दीस्या तो वो हळफळायो ऊंचो जोयो । छात सूं टिरियोड़ी कठई मूंडकी नीं दीसी । तो ई उणनै विस्वास नीं व्हियो । जोर सूं आंख्यां मसळनै ऊंचो जोयो । मूंडकी उठे व्हे तो निगं आवं । अंड़ी बात ती आज पैला कदेई नीं व्ही ।

डाफाचूक व्हियोड़ा देंत री उण वगत रंगत देखनै राज-कंवर नै हंसी आयगी । हंसती हंसती ई वो बोल्यो—म्हारा भाई, इण वास्तं इत्ती दुख अर अचुंभो करण री किसी बात, वरी रा वेस में लड़ाझूम व्हियोड़ी वा मूंडकी तो आ म्हारें पाखती उभी ! आपनं तो उल्टी खुसी मनावणी चाहीजें के अेक कटियोड़ी मूंडकी नै पाछी आपरी साबती काया मिळी ।

देंत इण अणचींत्या मिनख री हंसी अर उणरा बोल सुणनै गाबड़ री झटकी देयने उठी जोयो । रीस रें बळ भचकें ऊभो फा. ४१

न्हियो । मूंडकी अपूठी ऊभी हो । पाखती ऊभी अेक आदमी निसंक भाव सूं थोड़ी थोड़ी मुळकतो हो । मिनख नै इण भांत हंसतां तो वो पेली वार देखियो । उणरो विडरूप जंगी रूप देखनै लोग थर थर धूजै, कांपं, रोवै, अरड़ावै, धोळा पड़ जावै अर देखतां ई आधा मर जावै, पण ओ मिनख तो सांमो ऊभी निसंक हंसे । कठई अणचींत्यो म्हारो काळ तो नीं आयग्यो । पण म्हारो मरण तो जमराज रै ई सारै कोनीं । जे काळ इत्तो सरूपवांन अर लुभावणो भै तो लोग उणसूं इत्तु डरै क्यूं ? तो पछे आ कांई बला है । नंदी रो तळो पार करियां कंडी अबखी ठोड़ म्हारो रेवास है । उण रेवास में निसंक आयनै मूंडकी नै घड़ सूं चेपणी अर यूं म्हारै सांमी मुळकतो जोवणो, अवस आ कोई देंतां उपरली माया है । वो साव-चेती सूं राजकंवर नै ऊंचा सूं नीचं लग जोयो । कठई ग्या-बण लूंकी अर कागला रा लोई में सात वार खोळियोड़ी हिरण रो सींगड़ी तो उणरै हाथं नीं आयगी ।

अे सगळी बातां अेक पलक में ई देंत सोचली । वो गताधूम में पड़ग्यो । कांई करै अर कांई नीं करै, इणरो वो कीं निस्चै नीं कर सकियो । तीखा नखां सूं माथो खुज-ळावण लागो । थोड़ी सो मूफाड़ फाड़नै वो टग टग राज-कंवर रै सांमी जोवण लागो । जे थोड़ी घणो ई डर निजर आवै तो इणनै यूं मुळकण रो मजो बतावूं ! पण राजकंवर तो खुद टग टग उणरो विडरूप खाकी निरखण लागो । निरखतो जावतो अर मुळकतो जावतो । अजब उण देंत रो बणावट हो । माथा सूं पगां लग दो तीन वार वो उणनै आछी तरै

देख्यो भाळियो । राजकंवर नै मुळगी ई डरतो नीं देख देंत खुद खासी डरण लागी ।

अंडी अनोखी जिनावर राजकंवर सपना में ई नीं देख्यो हौ । बांस रें ज्यूं पतळो अर डोगी । घड़ली रें उनमान तोखो अर ऊंचो माथो । ठोड़ ठोड़ चांयलो । माथें हिरण रें जैड़ी दो पतळी सींगड़ियां । कुलड़ी रें पींदा जैड़ी उफसियोड़ी छोटो लिलाड़ । आंख्यां ऊंडी, आमली रें कूधा जैड़ी, सांप सी डरावणी । बकरी रें ज्यूं लटकता कांन । भींगी व्हे ज्यूं रांटो अर भंवियोड़ी नाक । गवारपाटा री कोर जैड़ा पतळा अर कंटोला होठ । संखिया री गळाई गोळ अर तीखा दांत, आंटा खायोड़ा । गोईड़ा जैड़ी जीभ । जबाड़ी अर हिचकी जाणें हळ री तूंडी । गिरजड़ा री गळाई गाबड़ । अंकोड़िया रें ज्यूं निकलियोड़ी गिलणी, नाड़ियां उफसियोड़ी । बोरड़ी री गांदळां जैड़ा पतळा हाथ । बांवळ री हिलारियां रें उनमान आंगळियां । लंगूर रें जैड़ी छाती । बेवला री गळाई टांगां । बांदरा जैड़ी पगथळियां । सगळा डील माथें अमरबेल ज्यूं लिपटियोड़ी नाड़ियां । खाती-चिड़ा री टूंच रें उनमान बधियोड़ा नख । अजगर जैड़ी खाल । ऊंट री खाल रौ जांमौ । ठोड़ ठोड़ फाटोड़ी । गघा री खाल रा फाटोड़ा लिगतरा । डील माथें मेल री पड़पड़ियां जम्बोड़ी । अमर बकरा री गळाई उणरी डील भूंडे ढाळें बासतो ।

राजकंवर देंत री खाकौ देख्यो तो देखतो ई रैग्यो । सोच्यो — भलां किण सुख अर आरांम री खातर ओ अणगिण मोत्यां रा भंवारा भरचा है । उणनै फेर वत्तो हंसी छूटगी । राजकंवर री हंसी सूं देंत रौ काळजो सुरक सुरक करण लागी ।

राजकंवर डग डग हंसती थकी कह्यो—मूरखां रा पातसाह ! निरमल पांणी में अकर थारो गसको तो जोयो व्हेतो । थारो इण भांत बिगड़ियोड़ी सिग्या देखनं थनं सरम को आवं नीं । अंडी लागं के रोटी खायां नं थनं केई बरस व्हेगा है ।

देंत फेर लचकांणी पड़ग्यो । उणसूं कीं बोलणी ई नीं आयो । इण मोट्यार रं सांमी देंत री आ रंगत देखी तो मूंडकी वाळी बेन नं ई कीं थावस व्हियो । उणरो डर खासो भली मिटग्यो । देंत रं सांमी मूंडी करनं बोली—पांणी रं लगावण सूं इकांतरं लूखा टुकड़ा खावं । सात दिन तो व्हिया म्हनं देखती नं ।

देंत कीं बोलणी चायो तो उणनं असळूर आयगी । थोड़ी देर में अटकतो अटकतो बोल्यो—तकतूळो व्हे ज्यूं थाकोड़ी भलाई दीसूं, पांणी रं लगावण सूं लूखा टुकड़ा भलाई मटोटूं, पण थें मोत्यां सूं भरचा म्हारा भंवारा नीं देख्या । छ तो भरग्या, अबं सातवो ई भरण वाळी है । थें म्हारे आज अलेखूं मोत्यां री नुक्माण कर दियो । इणरो भरणी कुण भरंला ? तो ई चाली म्हें थानं मोत्यां सूं भरियोड़ा भंवारा बतावूं । पछे थानं म्हारा गसका री ठा पड़ंला । थानं इण बात री तो थोड़ी घणी जाच व्हेणी चाहीजं के म्हारी जित्ती माया तीनूं लोकां में ई किणी रं पाखती जुड़ियोड़ी कोनीं । म्हारी माया री गसको देखी तो थारो आख्यां ऊंची लिलाड़ में चढ़ जावं ।

देंत मन में जाण्यो के इत्ती माया री लेखी बतावणा सूं इण आदमी नं उणरो रुतबो मानणी ई पड़ंला । माया रा जोर सूं ई थोड़ी घणी दबं तो पछे इण में मन जांणी करूं ।

इण खातर मोत्यां रा भंवारा बतावण सारू वो इत्ती अंतावळ दरसाई । आपरी माया री बिडद बखाणती वगत वो आपरा संख्या जेड़ा दांतां नै काढती फेर कैवण लागी—कोई चावै तो ऊमर में इत्ता कांकरा ई भेळा नों कर सकै जित्ता म्हें मोती भेळा करिया हूं । इण मूंडकी नै जीवती करणा सूं म्हारें कित्ता मोत्यां री घाटो पड़्यो, इणरो ई थानें कीं ध्यान है । अबे ओ घाटो कोकर पूरीजला । घणो ई भंवतो फिरियो तो ई आज कोई हाथै नों आई । भोळी सेंण दुस्मण री गरज साजें । थें आ कांई भोळप करी के मूंडकी नै धड़ सूं चप दी । म्हनें अबे पाछी मूंडकी होद माथे टेरण दी, पछे थानें निरांत सूं मोत्यां रा सगळा भंवारा बतावूला । आज पैला म्हें किणी नै ई म्हारा खजांता री पती नों पड़ण दियो ।

देंत री बात सुणतां ई मूंडकी वाळी बैन राजकंवर रं पाखती सरकनै अड़ीअड़ ऊभगी । राजकंवर नै लखायी के वावरी रं मांय थोड़ी घणी कांपण लागी है । उणरो ओ डर कोकर मेटणी आवै ! होळें सूं उणनै धीजी बंधावतां कह्यो—अब इण छत में टिरैला तो पैला म्हारी मूंडकी टिरैला, म्हारी बाई, थूं किणी बात री कोई चिंता मत कर ।

पछे वो देंत रं सांमी चारेक पांवडा धकै सिरकनै कह्यो—ओ थारें मोत्यां री घाटो नों है, मन री घाटो है । म्हें आज थारें मन री घाटो ई पूरण वास्तै आयो हूं । बता थनै मोत्यां सूं भरियोड़ा कित्ता भंवारा चाहीजै ? अबे मन में कीं बाकी मत राखजें । म्हें अेक पलक में हजारूं भंवारा भराय दूला । बावळा इत्ता दिन थूं हकनाक बैनां नै चंवरियां सूं

उचकाई अर वारा गळा वाढ़िया । बता थनै कित्ता भंवारा चाहीजै । भंवारा नीं व्है तो पैला भंवारा खुदाय दूं । गिणती नीं आती व्है तो म्हारा कना सूं सोख लोजै, म्है थनै भणाय देवूला । म्है आज थारी मंसा अर लाळसा पूरण वास्तै ई अठे आयी हूं । मन में मत राखजै, अेकर बतायां पछे फेर थारी तिसणा चेतगी तो पछे अणूंतो पिछतांणी पड़ला ! थारा आं भंवारा में भरियोड़ा मोती नवो तिसणा चेतण व्रैतां ई सगळा मींगणियां बण जावैला । पछे थूं करमां रे हाथ देयनै रोवैला तो ई सांधी नीं लागै । ग्याबण लूकी अर कागला रै लोई सूं सात वार खोलियोड़ी हिरण री सींगड़ी सूं मारण री तज-बीज जाणतां थकां ई म्है आज थारी मंसा पूरण सारू आयी हूं । बोल, बोल थनै मोत्यां सूं भरियोड़ा कित्ता भंवारा चाहीजै ।

ग्याबण लूकी अर कागला रै लोई रो बात सुणतां ई देंत तो थर थर धूजण लागी । मूंडा रै झाग आयग्या । तीखा नखां सूं जरड़ जरड़ चांय ने खुजळावती कैवण लागी— ओ तो आपरो माईतपणो है । आं दो चीजां री नांव ई मत ली, म्हारा प्रांण सूखै । मोत्यां वाळी बात तो म्है सगळी पांतर-ग्यो । म्है तो पैला आपनै देखतां ई समझग्यो आ कोई देंतां ऊपरली माया है । म्हारी बात साव साची निकळी । परा हाथ जोड़नै आप सूं म्हारी आ इज वीणती है के मोत्यां री बात चाले जित्ते आप वां दोनूं चीजां री चरचा ई मत कर-ज्यो । अेकर मंसा परवाण भंवारा भरण दो, पछे आपरी दाय पड़े ज्युं करज्यो ।

राजकंवर कहाँ — पण थें भंवारां री गिणती बतावो तो

खरी । इण बार मन में राखी तो पछे मोत्यां री मुळगी ई मन में रै जावैला । बतावो कित्ता भंवारा भरूं ।

देंत थोड़ी नैड़ी आयनै खुसी सूं उछळतौ बोल्यो—काई साचांणी थें म्हारी मंसा पूरण करदौला । पछे तौ काई चाहीजें ! म्हैं अबारू आपनै भंवारां री गिराती बतावूं । पण भंवारा पैला सूं कीं लांठा व्हे तौ कीं हरज तौ कोनीं ।

राजकंवर मुळकनै पड़ूतर दियो—कीं हरज कोनीं । अक एक भंवारी सौ भंवारां जित्ती लांठी व्हे तौ ई कीं हरज कोनीं । पण थारै पाखती कित्ता भंवारा बराण री मुकळाई है, पैला इण वात रौ ग्यांन तौ सावळ करल्यो ।

देंत तौ खुसी में चितबंगियो व्हेगो । बोलती वगत राफां सूं झाग उफराण लाग़ा । कह्यो—हां, आ बात आपरी सोळें आंना ठीक है । पैला म्हैं भंवारा बराण री मुकळाई तौ देखलूं । भंवारा जित्ता लांठा अर कम बणै, उता ई सावळ । बीचली भीतां यूँ ई मोत्यां री ठीड़ रूंधेला । काई मतलब ? चाली अपां तीनूं जणा चारूंमेर पैला भंवारां री तजबीज करां ।

आ कैयनै बेवला पगो देंत उचक उचकनै आपरै रैवास री सगळी जमीं देखण सारू वहीर व्हियो । दोनूं ई उणरै साथे चाल्या । देंत आपरा सगळा रैवास में दोय तीन चकारा दिया । सेवट ऊंडा ऊंडा निस्कारा न्हाकती कैवण लागो—पण अबं काई जुगत बेठावूं । म्हारै गोडें भंवारा बणण सारू जमीं साव कम है । इण में तौ सौ भंवारा नीठ बणैला । अर दूजी ठीड़ बरायां लोगां नै पतौ पड़ जावें । अबं करूं तौ काई करूं । आप थोड़ी देर नेहचौ राखजो । म्हैं पैला

मोती राखण रो जुगत तो बिठायलूं ।

राजकंवर कह्यो—म्हने तो नेहचो इज है । धें म्हारी तो चिंता इज मत करो । सावळ निरांत सूं सगळी बातां सोच विचारलो । म्हें तो फगत हुकम मिळतां ईं मोत्यां सूं भंवारा भरण रो सीरी हूं ।

देंत पूछ्यो—काई ठेट पूरी छात तक भर देवोला !

राजकंवर कह्यो—हां, भरण ठूकां पछे काई ! म्हने मोती किसान समंदर सूं भेळा करणा पड़ें । अबे तो फगत थारें सोचण रो इज बात है । जल्दी सोच विचारने जबाब देवो ।

देंत मूंडी टेरेन बोल्यो—देवूं, अबार जबाब देवूं । दिमाग में सगळी बातां सावळ जमण तो दो ।

आ कैयनें वो भंवारां रो गिणती रा बारा में सोचण लागो । बड़ी गताधूम में फंसग्यो । कित्ता भंवारां रो मंसा परगट करूं । नवा भंवारा बणण में देर ई लागेला । अबारूं तो साव मांमूली भंवारा है ! सो भंवारा बणावणा में खरचो ई लागेला । सो सूं तो हजार भंवारा घणा व्हे ! हजार सूं दस हजार घणा वत्ता व्हे । इण गिणती रो काई मथारो । लाख, दस लाख, करोड़ ! दुनियां में इत्तो गिणती नीं व्हेती तो कित्ती आराम व्हेती । उण कमसल रो नास व्हेजो जको हजार सूं वत्ती गिणतो बणाई ! वो बणाई तो काई व्हे ! म्हें खुद क्यूं इत्ती गिणतो सीखी । आज इत्ती गिणती नीं जाणतो तो फट म्हारी मंसा दरसाय देतो । अबे इण भला आदमी ने काई जबाब देवूं ?

मोत्यां रो आमद रं पैली देंत ने भंवारा बणावण रा

खरचा री ध्यान आयग्यो । वी मंगता री दीठ सू राजकंवर रै
सांमी देखने पूछ्यो—अ मोती बण जित्तै म्हने म्हारे हाथां
कमायोड़ी घन खरच करणी पड़ला । पछे भंवारा बणावण री
खरच कठा सू लावूं । आं मोत्यां रै मांय सू तो म्है अक टको
ई खरच नीं सकूं । इण खरचा री जुगत कीकर बिठावणी
आवै । म्है अक वार में तो म्हारी मंसा परगट कर नीं सकूं ।
जित्ती गिणती जाणूं उता भंवारा नीं भरीज जित्तै म्हारी लाळसा
पूरी ई नीं व्हे । अर इत्ता भंवारा आवे ई कठा सू । म्है इण
हिसाब में भूँडे ढाळें कळग्यो । ज्यू ज्यू बारें निकळण सारू
झांपळियां मारूं त्यूं त्यूं वत्ती कळूं । आप तो मंसा पूरण सारू
त्यार हो, पण म्हारा सू म्हारी मंसा री कूंतो ई नीं व्हे ।
म्हने थोड़ी ताळ फेर सोचण री मौको दिरावो ।

अबकी मूंडकी वाळी बैन बोली—सोचण सारू मौको तो
अं थाने मांगो जित्ती ई देय देवेला । मोत्यां सू मंसा मुजब
भंवारा भरण वाळा म्हारी जाण में वगत री कोताई तो कांई
करैला !

पछे वा राजकंवर रै सांमी देखने कह्यो—आप आंने
पूछी तो खरी के सात भायां री बैनां रा गळा वाढ़ने वांरा
लोई सू बण्या अणगिण मोत्यां री अं करैला कांई ? सातवो
भंवारी भरण वाळो है । अर आंरी लाळसा री तो कोई छेह
ई नीं है । इण अथाग माया नै अ क्यूं भेळी करणी चावै ?

मूंडकी वाळी बैन रा अं सवाल सुणने दैत घोगू री
गळाई हंसियो । खासी ताळ हंसतो ई रह्यो । पछे हंसतो
हंसतो ई जबाब दियो—म्है जाणतो के लुगायां में अकल
फा. ४२

रो लवलेस ई नीं व्हे, आ बात तो सोळें आंना साची
 निकली । थूं म्हनें पूछे के म्हें इत्ती माया रो कांई करूंला ? थूं
 म्हनें पाछी इणरो जबाब दे के माया सूं कांई नीं व्हे ?
 माया जुड़ियां पछे दुनियां रा सगळा कांम साथे ई सरै !
 थूं जाणणी चावें तो ले म्हें थनें बतावूं के म्हें इण माया सूं
 कांई कांई करणी चावूं ! इण माया रा जोर सूं म्हें तीनूं
 लोकां नै म्हारे कब्जा में करणी चावूं । इण माया सूं म्हें
 तीनूं लोकां रो तमांम रूप खरीदणी चावूं । म्हारा सूं फूठरी
 म्हें किणी नै नीं देखणी चावूं । इण माया सूं म्हें तीनूं लोकां
 रो सगळी आसावां अर वांरा सपना खरीदणी चावूं ! दुनियां
 रो सगळी हंसी खरीदणी चावूं । म्हनें किणी रो हंसणी नीं
 सुवावें । सगळा टाबरां रो रमणी खरीदणी चावूं ! इण रमणा
 साथे म्हनें अणूती चिड़ है । म्हें सगळी मानावां रो कूखां
 खरीदणी चावूं । सगळी दुनियां सूं ऊगता घूटा अर नवो कूपळां
 खरीदणी चावूं । म्हनें नवा जलम साथे अणूती चंडाळी छूटे ।
 मौत नै म्हें साव छुट्टी फिरण देवणी चावूं । सगळा लोकां रा
 माथा में फोटा भरनें म्हें वांरी अकल, वांरी पीढ़ियां रो ग्यान
 खरीदणी चावूं । मिनखां रा सगळा काळजा खरीदनें वांरी ठोड़
 बघेरां रा काळजा घालणी चावूं । जिण सूं वांरा काळजा में
 रिसियोड़ी ममता, उमंग, दया, वीरता अर छळकती प्रेम, कोड
 अर साहस मुळगा ई लोप व्हे जावें । इण माया रा जोर
 सूं म्हें आभा रो चांद, गिगन रा नवलख तारा अर सूरज
 नै खरीदणी चावूं, आख्यां रो जोत खरीदणी चावूं । लोग
 अंधारा में भटकें तो म्हें अणूती राजी व्हूं । सगळी दुनियां दे

लोगां रा हाथां सूं वांरो हुनर अर वांरी करामात खरीदणी चावूं । म्हैं इण दुनियां रो सगळी दूध, सगळी हरियाळी, बादळा, बीजळियां अर बिरखा नै खरीदणी चावूं । बावळी, इण दुनियां में जकी सांतरी अर सिरै चीजां है वै म्हैं सगळी रो सगळी खरीदनै म्हारै काबू करणी चावूं । पछै तीनूं लोकां में म्हारो कुण मुकाबलो कर सकैला ! अबै थनै ठा पड़ी के इण माया रा जोर सूं कांई कांई बातां व्है सकै ।

अणूंता जोस रै मांय अं सगळो बातां गिणायां पछै वो राजकंवर रै सांमी देखनै कैवण लागो— म्हैं गिणाई जकी बातां नै खरीदण सारू म्हनै कित्ती माया रो जरूरत है, इणरो म्हनै सावळ हिसाब करण दो । कठेई माया कम पड़गी तो म्हारी मन चाही नीं व्हेला । चूक जावूं तो कांई आप म्हने दूजी-वार मंसा परगट करण रो मौकौ देवौला ! म्हैं म्हारी ऊमर में ई इत्ती विचार नीं करियो । लागै के म्हारो माथो कठेई फाट नीं जावै । आप म्हनै आछो तरै सोचण रो वगत फेर दिरावो ।

राजकंवर नै उणारी बातां सुणनै अणूंती ई दया आई अर अणूंती ई इचरज ब्हियो । माया रा इण जोर रो तो उणनै आज ई ठा पड़ी । दैत रै गळाफड़ा सूं झरता थूक रै सांमी देखनै वो कह्यो— हां, इण माया रो सुभाव अर रंग इण गत रो इज है । इत्ती माया रो घणो मन माथै सावळ आंकस नीं राख सकै तो पछै उणनै माया रो ओ रंग लागै इज । थूं कोई अजोगती बात नीं करी । माया रा बस में ब्हियोड़ा गुलांम रो वांणी अंडी इज ब्हिया करै । माया

नै बस में राखणिया सूरमा बिरछा ई लाधे । इत्ती ताळ
 औ थूं नीं बोल्यो, थारै माथे चढ़नै औ माया री गुमेज बोल्यो
 हो । थारी निजर में माया री कीमत अणूती व्हेला, पण
 म्हैं तो उण साटे धूळ रा अेक कण री सोदो ई मूंघो गिणूं ।
 म्हारो निजर में कीमत नांव वगत री है । थनै थारी मंसा
 परवाण मोत्यां सूं भरघा केई भंवारा आसांनी सूं देय सकूं,
 पण वगत री देवणो लेवणो म्हारा हाथ में नीं है । वगत
 अमोलक अर सिरं चीज है । दुनियां री सगळी माया साटे
 बित्योड़ा पल नै पाछो नीं लायो जा सकै । इण खातर वगत
 रा छोटा सूं छोटा पल नै आछा सूं आछा काम में बरतणो,
 आ मिनख जूण री सारथकता है । थूं थारै साथै म्हारो वगत
 फालतू मत गंवा । म्हैं लाख भंवारां रा मोत्यां सूं उणरो घाटो
 नीं पूर सकूला । अबै थूं अणजेज थारी मंसा दरसावै जकी
 बात कर ।

राजकंवर फुरती री कह्यो तो दैत फेर वत्तो गताधूम में
 पजग्यो । वो जोर जोर सूं चांय कुवरण लागी । तो ई मगज
 में कीं बात बणी नीं । उणने लखायो के उणरा माथा में सी
 अेक कीड़ी-नगरा कळवळ कळवळ करै है । माथा री नसां
 जाणै तिड़ण लागी । वो आपरा चांयला माथा में आंगळियां
 रा नख गडायनै नीचै बैठग्यो । यूं नखां में माथो काबू नीं
 करियो तो वो उछळ जावला । माथा में अेकण सागं जाणै
 अणगिण भट्टियां चेतन व्हेगी । उणने आपरी तिसणा री कीं
 छेह लाधे तो मंसा ई परगट करै ! सांमी ऊभो आदमी मोत्यां
 रे भंवारां री गिणती बतावण सारू खथावळ करै अर वो उणरो

कीं जबाब नीं दे सकें । आ कैड़ी ऊंधी पजी !

वौ सुनपात में आयोड़ी व्हे ज्यूं बक़ण लागी— देखी अबं
महें बतावूं जित्ता भंवारा मोत्यां सूं ठेट छात लग पूरा भर दीजौ ।
अक हजार, नीं नीं दस हजार, नीं नीं अक लाख भंवारा,
दस लाख भंवारा ! महें जठें बोलती बोलती ढबूं वौ आंकड़ी
आप पकड़ लीजौ । पैला थें म्हेनै पूरी गिणती सिखाय दी ।
जठें गिणती खतम व्हे, उता ई भंवारा तुरत भर दी । पछें
महें ठाट सूं दुनियां माथै राज करूं ।

मूंडकी वाळी बैन अर राजकंवर दोनूं देंत रा इण खिलका
सूं हाक्या-बाक्या व्हेगा । औ यूं आपरी सुध-बुध कीकर पांतर-
ग्यो ! घड़लो व्हे जंड़ा उणरा चायला माथा सूं ऊंडा नख
गडणा रै कारण चारूंमेर लोई झरण लागी ।

देंत अणछक जोर सूं डाडियो— म्हारो माथो फाटें !
म्हारो माथो फाटे !

यूं डाडतां डाडतां वौ आंगणें गुड़ग्यो । आंगळियां रा
नखां सूं माथो ती ई नीं छूटच्यो । वौ भूं भूं करने रोवण
लागी । रोवती रोवती ई बीच में अकाध वार अपळ-गपळ
बोल्या— पैला पूरी गिणती सीख जावूं, पछें भंवारां रो आंकड़ी
बतावूंला । आंमली रै कूंधां जैड़ी उणरो आख्यां आसुवां में
डूबगी । भींगी री गळाई उणरो रांटो नाक रातो लाल व्हेगो ।
मिरगी री रोगी थर थर धूजें अर तड़चां बावें ज्यूं वौ धूजण
लागी ।

राजकंवर दीड़ने उणरें पाखती आयी । हळफळियो होयने
तीखा नखां सूं उणरा चायला माथा नै छुडायो । ह्याळियां

अर पगथळियां आपरा हाथ सूं मसळी । मूंडा माथे पांणी रा छापका दिया । देत झिझकने बैठी व्हियो । बगनी व्हे ज्यूं अठी उठी देखने बोल्यो—म्हने अंडी लखावे के म्हारो माथो पगां में आयग्यो अर म्हारा पग माथा री ठौड़ आयग्या । सगळीं मामलो ई जाणें उलट गियो । म्है आज पांणी रा होद में म्हारो मूडो जोयो । म्हारी आ कांई दुरगत व्ही !

पछे वो अचाणचक री अकदम उछळियो । माथा नै दोनूं हाथां सूं कूटती अरडावण लागी—म्हारा माथा में कोई सेवळी वडगी । नम नम में उणरी सूळां पार व्हेगी । कोई सेवळी नै बारें काढी ! कोई सेवळी नै तुरत बारें काढी ! म्हारा प्राण निकळे !

वो अठी उठी चकारा देवती दौडण लागी । पछे लंगूर जेडा आपरा सोना नै कूटती कूकण लागी—म्हारा काळजा में धपळ धपळ भट्टी सिळगं । कोई बुझावो रे इण सिळगती भट्टी नै बुझावो ।

इण विध कूकती कूकती वो होद में घेंग दै दी । दोनूं हाथां सूं झांपळियां मारती होद में फुरती सूं कीं हेरण लागी । गुचळकिया खावती अरळ-विरळ बोलण लागी—म्हारा मोती कठे, म्हारा मोती कठे ? आज पैला मोत्यां री नागा तो कदेई नीं व्ही !

बांदरा री गळाई छलांग मारने वो होद सूं बारें उछळियो । बावळा मिनख री गळाई बडबडाटा करती सीधो मोत्यां रे भंवारां सांमी दोडियो । म्हारा मोती, म्हारा मोती वेळती वो मोत्यां रा ढिगला में मार अठी उठी लूटण लागी ।

राजकंवर दूजी वार जीव बावड़ियोड़ी बैन रं सांमी देखनै कह्यो—कठे ई बापड़ा री चित्त तो नीं उपड़ग्यो । म्हनै तो इण गरीब दुख्यारा माथै दया ई अणूती आवै । म्हैं इणनै मारणी अवस चावतौ, पण ओ तो आपरै मतै ई जरूरत सूं ज्यादा मरग्यो । अँड़ी नीं व्है के पाछो साजी व्है ई कोनीं ।

मूंड की वाळी बैन कह्यो—इण देंत री चित्त उपड़ियो परा म्हनै दीखै के म्हारो ई माथो भंवण वाळी है । आप इण देंत माथै ओ काई कांमण करचो । आपरो मुळक देखतां ई उणरो तो जाणं अंस ई निकळग्यो । म्हैं तो खुद कणाकनी गताधूम में पजगी । अबे आपरो मां री सीख री म्यांती म्हारो समझ में थोड़ी थोड़ी बँठण लागी है ।

राजकंवर उंतावळ करतो बोल्यो—इण सीख रा बारा में तो पछे सोच विचार करांला, पैला मोत्यां रा भंवारां में जाय इणनै सावळ संभाळां तो खरी ।

दोनूं जणा साथै रा साथै उण भंवारा में गया । देंत हिचकी ताईं मोत्यां में गड़ियोड़ी ऊभी ही । वारा निवास सूं उणरो थोड़ी घणो जीव ठाणं आयो । घड़ली व्है ज्यू उणरो चायली माथो खूँटा रं उनमांन गड़ियोड़ी दीसतौ ।

दोनूं जणा नै आपरै सांमी आवता देख्या तो मोत्यां रं ढिगला सूं आपरा पतळा हाथ बारै काढ़नै खाकां पिदावतो बोल्यो—अँड़ा अँड़ा छ भंवारा तो भरचोड़ा है । छातां तक तो पूरा च्यार ई भरीजै । सातवी हाल थोड़ी खाली है । थें आज खासो डाफो दियो, तो ई आशा घणी बंधाई ।

वो मोत्यां सूं बारै निकळनै वारै पाखती आयो । कैवण

लागी — भंवारा री गिणती में म्हारी तो मगज ई भंवग्यो । आज तो माथी फाटणा में के उछळणा में की कसर बाकी नों रो । म्हनै तो पक्को निस्चं व्हेगो हो के आज तो बंदो बिना मौत मरग्यो । जे म्हें आज मर जाती तो अेक मोती ई म्हारै साथै नीं चालतो । अे सात भवारा म्हारै कीं काम आवता नीं । अर नीं किणी दूजा रै ई काम आवता । म्हारी भेजो आज भट्टी सूं तपनै बारै निकलियो है । आज पैली वार म्हारा मन में ख्याल आयी के मरियां अेक मोती ई म्हारै साथै नीं चालै तो म्हें अणगिण बेनां रा गळा क्यूं वाढ़िया ? वारा लोई सूं बणियोड़ा आं मोत्यां री कांई सारथकता ? हौद रा पांगी सूं म्हारा मगज में कीं तो ठाडोळाई वापरी अर कीं मोत्यां रा निवास सूं म्हारी जीव ठाणै आयो । म्हें तो जाण्यो के अबे हिड़कियो ऊठ्यो, अबे हिड़कियो ऊठ्यो । अबे आप म्हनै भंवारां री गिराती रा जाळ सूं बारै काढ़ी अर रावळी मरजी व्हे जित्ता भंवारा मोत्यां सूं भर न्हाकौ । म्हारी मंसा तो म्हनै दीखे के अबे पांगळी व्हेगी ।

राजकंवर कह्यो — मंसा तो थारी ई काम आवेला । म्हें तो धूळ रा कण नै मोत्यां सूं घणी वत्तो समझूं । म्हें तो फगत आ बात चावूं के मोत्यां सूं आपरी पूरी मन भर-जावे तो बेनां रा गळा बढ़ता तो डबै । म्हारी निजर में अेक छांट लोई री मोल थारै सात्यूं भंवारां रै मोत्यां सूं घणी वत्तो है । पण म्हारी समझ थारै काम कांई आवै । बेनां रा गळा तो थारी मंसा पूरण गिह्यां ई बढ़ता डबेला ।

देत मोळी पड़तो थको बोल्यो — म्हें निरमती मूढ़ हूं ।

घणी बातां म्है समझूं बूझूं कोनीं । ती ई अेक बात सुभट समझ में आयगी के म्हारै मरियां अे सात्यूं भंवारा म्हारै साथै नीं चालता, अठै ई दब्योड़ा पड़घा रै जाता । अे मोती बणाय बणायनै भेळा करण वास्तै म्है कंड़ा कंड़ा कळाप करिया, इणरौ लेखी लेवूं तो म्हारी मगज जाणै ठसण लागै । आज दोय घड़ी सुभट लखायो के म्हारी लोई नाड़ियां में सरणाट ऊंधौ चाल्यो । सूरज रो किरण रो परस पातां ई इत्तो अपरंपार अंधारौ अेक दम कठं लुक जावै, म्है तो सोच सोचनै बगनौ व्हैगौ तो ई इण बात रो म्यांनो नीं पा सक्यो अर सूरज रै आथमतां ईं वो अणचींत्यो कठा सूं आयनै पाछो सगळे उणो भांत पाथर जावै, इणरी ई म्हनै सावळ ठा पड़ी नीं । पण म्हारा मगज में इण जैड़ी ई बात आज व्हो । मगज रो अंधारौ किसो किरण सूं अर कोकर लोप्यो इणरी तो सावळ ठा कोनीं, पण वो लोप्यो अवस । इण उजास आगै अे मोती म्हनै पंला जित्ता ऊजळा नीं लागै । पण हाल तांई आंरौ मोह छूटै कोनीं । केई बरसां सूं इण अंधारा रै हेवा होवण रै कारण इण अणचींती किरण रै उजास मूं हाल म्हारी आंख्यां चूंधीजै है, म्हनै इण उजास में सावळ दोसै कोनीं । म्हारी काचो आंख्यां हाल ओ उजास झेल नीं सकै । पण ओ उजास म्हनै सांतरौ लाग्यो, इण में कीं मीणमेख नीं ! म्हनै आज ई सावळ ठा पड़ी के मरियां तो म्हारी काया ई साथै नीं चालेला, पछै मोत्यां रो बात तो अळगी बांरी मंसा रो ई साथै चालण रो भरोसी कोनीं । म्हारै जीवतां थकां म्हारी लाळसा मर जावेला, आ बात म्है सपना में ईं नीं जांणी ही । म्है तो

अब कीं मंसा परगट नीं करूं, आपरी मरजी व्हे जित्ता भंवारा मोत्यां सूं भरदौ । छात लग भरी तो रावळी मरजी, आधा खाली राखी तो रावळी मरजी ।

राजकंवर कह्यो—म्हारी मरजी सूं थारी गरज कीकर सरंला, म्हनै इण बात री कोई उकरास नीं लाधो पण अक बात वळे कर सकूं—थारा खुद रा हाथ सूं अक भंवारी खरच व्हेतां ई पाछा उणी वगत इग्यारं भंवारा वैडा ई भर जावैला । थानै जित्ता भंवारा भरणा व्हे, उण हिसाब सूं जल्दी जल्दी खरच करता रैजो । मतै ई थारी मंसा पूरण व्हे जावैला ।

देंत आपरी बधियोड़ी गिलणी नै खांचतौ कह्यो—खरच ! खरच री तो आप नांव ई मत ली । म्हैं तो म्हारा हाथ सूं अक मोती ई खरच नीं कर सकूं ! खरचणिया री गसकी अड़ो व्हे काई ! म्हैं तो आज दिन ताईं सावळ धापनै रोटी ई नीं खाई ।

अबकी मूंडकी वाळो बैन देंत रै सांमी देखनै कह्यो—थारा केणा मुजब लुगायां में अकल री लवलेस ई नीं व्हे, तो ई अक लुगाई व्हेतां थकां ई म्हारं जकी बात साव सुभट समझ में बैठगी, वा हाल ताईं थारी समझ में नीं आई ! बिना खरचियां थारा अ सात भंवारा नीं मानौ तो धूळ बिरोबर है अर मानौ तो सात लाख भंवारा जित्ता है । गरीब इण वास्तं भूखां मरै के उणारै पाखती घन कोनीं अर थें इण वास्तं भूखां मरौ के मोत्यां रा सात भंवारा व्हेता थकां ई वानै खरचण री मन नीं करे । अ सात भंवारा तो दुनियां में किणी रा ई व्हे सकै अर यूं अक रा ई कोनीं । इण

अकल रा जोर माथे ई थें लुगायां री अकल नै कुराई !
 नमो है थारी इण अकल नै ! जे अकल नांव इणारी है तो
 म्हांमें इणारी लवलेस नीं व्हेणो तो घणो चोखो ! आ माया
 थारै कीं कांम नीं आई अर थें अणगिण बैनां रा माथा इणनै
 भेळो करण सारू वाढ़ न्हाकिया । थोड़ी घणी तो अकल लड़ावो
 के थारै हाथां ओ कांई कांम ब्हियो ? चांयला माथा री
 गळाई कदास थारी अकल ई चांयली व्हेगी है । पण म्हने तो
 दीखे के इण विध माया भेळी करण वाळा रै अकल व्हे ई
 नीं सकें । आवण वाळी उणरी पीढ़ियां में ई अकल नीं व्हे
 सकें । म्हारी दूजी वार गाबड़ वाढ़ो तो ई म्हें आ बात
 केवती डरूं कोनीं !

देत मोळी पड़तो थको होळें सूं बोल्यो — इण में डरण री
 किसी बात ! थारी अक बात ई झूठ कोनीं, साव साची
 लखावं । अब तो म्हें खुद म्हारा सूं डरण लागी हूं । आज
 ठा पड़ी के अक गोगीड़ा में अकल व्हे तो म्हांमें व्हे ।
 कित्ती सोरो बातां है । अक जलमता टावर रै ई समझ में
 आ जावै, म्हारै इत्ता बरस वयूं नीं समझ में आई !

पछें राजकंवर रै सांमी देखने मुळकण री चेस्टा करतो
 थको कंवण लागो — आप म्हारी बात मांनो ! म्हने अंडो लखावै
 के म्हारी गाबड़ माथे पंला री माथो वढ़ने कोई दूजी चिप्यो
 है । म्हने समझावो तो खरो के बिना लोई आयां म्हारी ओ
 माथो बढ़ियो तो बढ़ियो ई कीकर ? माथो बढ़ियो तो ई
 म्हारी चांय तो नीं मिटी । इण बेरण सूं तो मरियां ई पिंड
 छूटला ।

आ बात कंयने वो दबती दबती हंसण लागी, जाणें ऊंदरी हंसियो । राजकंवर ई पाछो हंसने जबाब दियो—होळें होळें सगळी बातां मतें ई समझ में आय जावेंला । अक दिन में ई सगळी री सगळी बातां समझण री चेस्टा करी तो नवा माथा री नसां तिडकण लाग जावेंला । पछें कंवोला के माथा में सेवळी वड़गी, भट्टी चेतन व्हेगी ।

देंत आपरा घड़ली व्हे जेड़ा चांयला माथा नें हिलावती कह्यो—नीं नीं, जद नीं ! होळें होळें छी समझ में आवती । म्हने इत्ती कांई आंचो है । पण दूजी वार वंडी गत बिगड़णा बिचें तो मरणी सावळ है । उण वगत तो म्हने नीं नीं व्हे जेड़ा कस्ट व्हिया । कदेई लखावती के म्हारा माथा नें कोई उकळती कड़ाई में तळें है, कदेई लखावती के कोई हजारेक काळि-दर म्हारा माथा में फूफां फूफां करे है, कदेई लखावती के किणी मोटा भाखर रें हेटे दबने पींचीजे है, कदेई लखावती के कोई समंदर म्हारा माथा में हिबोळा मारती गरजे है अर कदेई लखावती के जाणे अलेखूं टांटिया छिड़ने म्हारा माथा में भणण भणण करे है । म्हें आपने कांई बतावूं, बतावणी आवे ई नीं ।

राजकंवर कह्यो—बतावण री जरूरत ई कोनीं । म्हें सब समझूं हूं । अर म्हारी आ बैन म्हारा सूं ई वत्ती समझे है ।

देंत ई मुळकियो । वा बैन ई मुळकी । थोड़ी ताळ तीनूं ई चुप रह्या । के इत्ता में खोडां में रड़वड़ती मूंडकियां री चिराळियां सुणीजी । आज पेली तो वो देंत चिराळियां सुणने

डग डग हंसती अर बड़बड़ाटा करती वाने गाळियां काढ़ती । पण अबालू चिराळियां री आवाज कांनां में पड़तां ईं खुद अरड़ां अरड़ां रोवण लागी, फदाफद करती कूदण लागी अर गांदळां व्हे जेड़ा आपरा हाथां सूं दबादब माथी कूटण लागी । जोर सूं डाडियो—म्हारा माथा री नस नस में तोपां छूटे, म्हारे माथा री किल्ली किल्ली व्हे जावेंला । म्हारी गाबड़ माथे आज ई तो नवी माथी चिपियो अर आज ई वो बिखर जावेंला ! थोड़ा दिन तो इण नवा माथा री साव लेती ! जे आज ई इण माथा नें तोपां रें धकें व्हेणो हौ तो वो म्हारे माथे चिपियो ई क्यू ? म्हारे माथे चिपियो ई क्यू ? आप देखता जावो, म्हारी नवी माथी बिखरें जितें म्हें सगळी बेनां री मूंडकियां पाछी चेप देवूला । म्हारी माथी बिखरग्यो तो आं बेनां रा कांई दीन व्हेला !

आ कैयनै वो उठा सूं ताचकियो । अर पछे वो कांई कांई करतब करिया, उण सूं उणरा रांती व्हे जेड़ा डोल रा करार री पती पड़ियो । खोडां माथा सूं सी सी मण रा खिला-पटा वो कोपरियां री गळाई भरणाटे आगा वगाय दिया । आपरा दोनूं हाथां री आंगळियां वाढ़नै वो खोडां में रड़वड़ती मूंडकियां माथे लोई रा छांटा न्हाकिया के अपछरावां रा झूलरा खोडां मांय सूं बारें निकळणा सरू व्हिया जकी तीण बंधगी । झबाझब पळापळ करती सगळी बेनां खोडां सूं बारें निकळगी ।

परतख दीठ रें सांमी आ साची वारता ती दुनियां रा सगळा सपनां नै कूड़ा साबत कर दिया । बापड़ा सपनां री

किस्तीक जिनात के वै इण साचैला नजारा नै पूग सके ।

देत हरख सूं किलकारियां करतो बोल्यो—अबे जायनै
म्हारा माथा में तोपां छूटणी बंद व्ही है ।

आ कैयनै वो आपरा माथा नै संभाळियो । दो तीन
वार आपरा माथा माथे हाथ फेरिया । उणरो कटघोड़ी आंग-
ळियां सूं हाल लोई झरतौ हो । उणरी चांयलो माथो ठोड़
ठोड़ लोई सूं रातो व्हेगो । वो मसखरी रा भाव सूं हंमतो
थको बोल्यो—लोई रा ठोड़ ठोड़ तिलक करने ओ तो नवा
माथा नै बंधावणो है !

ठोड़ ठोड़ तिलक करघोड़ा उणरा नवा माथा में अणछक
अक नवी बात सूझी । सीजती हांडो री ढकणो फुद फुद करै
ज्यू वो उछळतो कह्यो—आं मोत्यां रा सात्थूं भंवारां नै म्हें
बेनां रा दायजा में देवूला । म्हारी लाडली बेनां रा दायजा में
देवूला ।

पछे आपरा नवा माथा री खुद ई तारीफ करतो कैवण
लागो—इण नवोड़ा माथा में तो म्हने अकल निसंवार दीसै ।
वो पुराणो माथो तो भंवारां री गिणती में चकरी चढ़ग्यो हो,
पण ओ माथो तो मोत्यां रै खरचण सूं अणूतो राजी व्हे ।
माथा माथा में इत्तो फरक व्हिया करै, इणरी तो म्हने आज
ई सावळ ठा पड़ी ।



छठी राजकंवर

अक दूजा री निजर सूं अदीठ धैतां ई छठा राजकंवर नै मां री कहघोड़ी अक बात याद आयगी । वा आठूं राजकंवरां नै केई वार उण बात री सार सम-झावती । बात नै फगत सुणणा अर याद राखणा सूं कीं नीं धै । बात रा सार नै आपरा करमां में बरतणी ई ती खास बात है । वा बात यूं ही — अक भांड भांत भांत रा स्वांग में अंडी प्रवीण हो के उणरा स्वांग आगे असली अर साची बात स्वांग जेड़ी लखावती । अक ई स्वांग नै केई दिनां तक राखती । जद वो खुद ई परगट नीं करती जित्त किणी नै ई स्वांग री जाच नीं पड़ती । सो भांत री ती वो बोल्यां जाणती । जिनावर री आवाजां हूबोहूब आपरा गळा में बिठाण लेती । खुद जिनावर नीं पिछाण सकता के ओ कोई मिनख आवाजां काढ़े है । सेठ, भील, जंगलियो, साधु, राईको, गूजरी अर सांई इत्याद रा अंडा सांग लावती के देख्यां ई बणती । देखती अर सुणती जको ई इण बात री ती ताईद करती के अक उणियारा री ठोड़ उणरें सो उणियारा है अर बोलण वास्ते अक गळा री ठोड़ उणरें पाखती जांणे सो गळा है ।

अकर वो भांड अक पोंच्योड़ा साधु री सांग लायौ । घणकरा साधु-मातमा ई उणनं देखनं चकरीजग्या के इत्ता दिन ओ करामाती साधु कठे लुक्खोड़ी हो । अचांगक इण भांत अणचींत्यो कठा सूं अवतरियो ! वो अक सेठ रे अठे चतरमासी करियो । पाखती री सगळी चौखळी उणरा दरसणां वास्ते अड़-

वड़ियो तो वो अड़वड़ियो के भांड रा मन में हमेसां रै वास्ते साधु बणण री जचगी । पण तो ई वो मन माथै काबू राखियो । दरसणां वास्ते आयोड़ा भगतां नै आतमा , परमातमा , धरम , मुगति अर कल्याण रा बारा में आपरा स्त्रो मुख सूं अंड़ा आदेस करती के वारी काया उण वगत पिघळती सो लखावती । सेठ रा घरवाळा तो उणरी बातां सुण सुणाने अर उणरी आचरण देख देखने बावळा व्हेगा । अंड़ी संजोग तो लारला भी री तपस्या सूं मिळिया करै । सेठ री तो गिरस्ती अर दुनियां रा माया-जंजाळ सूं जीव ई उपड़ग्यो व्हे ज्यूं । अक दिन वो ओडियां रै मूंडे सोनो-चांदी लायने साधु रा पगां में राळियो । हाथ जोड़ने कह्यो—बापजो , भगत री ओ परसाद कबूल करो तो म्हारा जीव री मेल धुपे । अं तो फगत भावना रा फूल है । म्हारी हस्ती ई कांई के म्है आपरी कीं बंदगी कर सकूं !

साधु मुळकने सान्त भाव सूं कह्यो—बेटा , थारा डोल री ओ धुप्योड़ी मेल म्हारा मूंडा माथै क्यूं चोपड़ें । थूं गिरस्ती होयने जिण माया री त्याग करै , म्है साधु होयने उणरै वास्ते हाथ पसारूं तो म्हारा साधुपणा नै धिरकार है । थूं म्हने इत्ती अबूझ जाणै है कांई !

सेठ कह्यो—म्है गिरस्ती किण वगत माया सारू मन बिटळाय लेवां , कीं पतियारी नीं । आप आपरा हाथ सूं इण मेल नै सुक्कारथ लगावो ।

साधु रा पगां में ओडियां रै मूंडे माया बिखरियोड़ी पड़ी हो । पण उण सांमी वो मीट ई नीं करी । सेठ रा घरवाळा

नै पक्की निस्चै व्हेगी के साधू रा भेख में ओ ती सांप्रत पर-
मेसर ई दीसै । इत्ती माया नै छूळ सस्ती जाणगिया साधू
ती दुनियां में ई बिरळा लाधे ।

सेवट चौमासा रै उपरांत अेक दिन साधू आपरै स्वांग
रौ भेद परगट करनै भांड री गळाई गाल बजायनै जाचना
करी । सेठ रै सांमी हाथ जोड़नै कह्यो—गरीब री भांडाई
माथे रीझ करनै बगसीस करो अंदाता । म्हैं रावळौ भांड हूं ।

आ कैयनै वो खाकां बजाई । आपरा गाल बजाया ।
सेठ ती आपरा परमेसर रै मूंडा सूं बगसीस री जाचना सुणनै
चितबंगियो व्हेगी । इत्ता दिन ओ काई खिलकौ व्हियो !
घरवाळां री सगळी भगती निरफळ गो । चतर भांड कैड़ा
भरमजाळ में फंसाया । थोड़ो ताळ सोच विचारनै सेठ कह्यो—
बावळा, म्हैं ती थारा पगां में ओडियां रै मूंडे माया बिखेरी
ही । साधू रा रूप में म्हारी वो परसाद लेयनै व्होर व्हे
जातो तो म्हैं म्हारा बडभाग समझतो । म्हनै तो इण स्वांग
रौ ऊमर में ई भेद परगट नीं व्हेतो । म्है तो थारा नांव री
माळा फेरता । हाथां आयोड़ी माया रं ठोकर मारनै अबै भांडाई
री बगसीस सारू हाथ जोड़ ! म्हैं देयनै मूरख बणियो, ती थूं
माया ने भोळप सूं ठुकराय मूरख बणियो । थनै आ काई
ऊंधो सूझो ।

भांड गाल बजावतां नरमाई सूं कह्यो—अंदाता, आपनै
जकी बात ऊंधी निगै आवै, वा म्हारै वास्तै साब संवीं है ।
म्हैं इण वगत साधू बणियोड़ी माया रै वास्तै मन बिटळाय
दूं ती साधू रौ भेख लाजै ! अणगिण माया व्हेतां थकां ई
का. ४४

आ म्हारे वास्तै अकरम री कमाई है । फगत भांडाई री बगसीस री ई म्है हकदार हूं । साधू रा भेख अर आचरण सूं आप धोखा में आयग्या तो काई, म्है तो धोखा में नीं हो । असली बात म्हारा सूं तो छांनी नीं ही । चार मईनां सूं घरवाळा बाट न्हाळै है । गरोब भांड ने खुला हाथ सूं बगसीस दिरावो ।

अठा तक पूरी बात सुणायां पछे राजकंवरां री मां आपरै आठूं बेटां ने समझावती — वौ भांड साधूपणा रें भेख री कित्ती लाज राखी । साधू री भेख तो डील माथै राख रमायां, चंदण रा तिलक छापा करियां अर कपड़ां ने भगवा रंगावण सूं ई व्है जावें, जिणरी लाज बचावण सारू वौ भांड पगां में बिखरियोड़ी अलेखूं माया ने ठुकराय दी । इण हिसाब सूं मिनख जमारा रें खोलिया री लाज री तो कुण कूतौ कर सकै ? पण पग पग माथै ई मिनख जमारा रें खोलिया री लाज बिगड़ें तो ई कुण उणरी परवा करै ! साधू रा भेख री काई, दिन में पांच वार बदलियो जा सकै, पण मिनख जमारा री खोलियो अकर छूट्यां हमेसां रें वास्तै छूट जावें । थें दुनियां री होडाहोड मत करज्यो । म्हारी कूख अर थारै खोलिया री लाज उण भांड री गळाई राखज्यो । थानें म्हारी आ इज सीख है ।

छठी राजकंवर मारग चालतां चालतां मां री इण बात अर मां री इण सीख ने चितारतौ रह्यो । मां री दिवंगत आतमा ने आदर सूं माथी निवावतां कह्यो — मां, थारै आठूं बेटां वास्तै थारी आतमा में कदेई कळेस मत उपजाजै, मरियां

पछे गिरजड़ा के स्याळ आं खोलियां री भलाईं बिगाड़ कर सकें पण जीवतां थारी कूख सूं जायोड़ा खोलियां रें कदैई दाग नीं लागैला ।

वो पंचाद कूट सांमी आड़ी अंवळी डांडी माथे चालती ई रह्यो ! चालतां चालतां वो अेक विकराळ जंगळ में दिया-वली व्हेगो । जंगळ में रुंखड़ां री जाणें जाळी तणियोड़ी व्हे ज्यूं । डांडी तो पतळी पड़ती पड़ती खुद जंगळ में रमगी । अठी-उठी जोयां डांडी री सोय तौ लाधैला ई । आ सोचनै राजकंवर जंगळ रा उण जाळा में मारग सोधण सारू अळूझग्यो ।

डांडी जीवण रा अळूझणा में ई अेक खास आणंद है । राजकंवर सोचण लागो मारग रा चीला पगां हेटै आय जावै तो अेक आंधो ई आसांनो सूं चाल सकें । सीधा मारग माथें चालणी, आ तो मारग री बळिहारी है पण आड़ी, अंवळी अर गमियोड़ी मारग सोधणी के नवो पंथ मांडणी, आ चालणियां री इदकाई है ।

वो निसंक भाव सूं जंगळ रा रुंखड़ां रें परकमा देवती हो के अेक सूवटी उडतौ उणरें सांमी आयो । बोल्थो— रांम रांम बटाऊ, रांम रांम !

राजकंवर ई सूवटा सूं पाछा जवारड़ा करिया । ओ तो कोई अनोखी ई सूवटी है । साव पाखती आयने सूवटी तो बिना किणी डर रें कंवण लागो—बटाऊ, मारग भूलग्या काई ! इण जाळी छायोड़ा जंगळ में आवै जको ई डाफाचूक व्हे जावै । हेर हेरन हार जावै तो ई वानें मारग को लाधे नीं । इण थट लाग्योड़ा रा जंगळ में मारग बतावण री सेवा म्हें करिया

कलं । म्हारें लारें आवो, म्हें आपनै तुरत मारग रो सोय बताय देवूला ।

राजकंवर मुळकनै कह्यो—हाल म्हनै घणी जेज नीं ध्ही, म्हें मतै ई सोय करलूं तो सावळ है !

सूवटी कह्यो—म्हां नाकुछ पंछियां रो मदत लेवतां थानै संका आवै तो बात न्यारी है !

राजकंवर कह्यो—नीं, नीं, संका जंडी बात म्हारा मन में कीं नीं । म्हें तो सगळा जीवां नै अक सरीखा जाणूं । पण सगळा जीव अक सरीखा व्हेतां थकां ई, म्हें मिनख आचरण में थारां सूं घणा हीण अर अधम हां । थारो सुभाव तो कुदरत सूं बणियोड़ी है जको है । थें छळ, कपट, ढोंग अर जाळसाजी तो नीं करो । म्हें मिनख थारी होड कीकर कर सकां ! यूं सगळा ई पंछी म्हनै अणूंता आछा लागै पण सूवटा, कबूड़ा, चिड़ियां, कोयलां अर कमेड़ियां तो म्हनै अणूंती इज सांतरी लागै ! म्हें मिनख लोग थारा आचरण नै पूग जावां तो पछे चाहीजै ई कांई ! म्हें तो खुद म्हारें आपे मारग रो सोय करणी चावती, थारा सूं मदत लेवणा में म्हनै संकां रो कांई बात ! थनै म्हारी बात खारी लागी व्हे तो म्हें माफी चावूं । अबै म्हें थूं बतावै उठीनै ई चालण वास्तै त्यार हूं ।

पण राजकंवर चालण वास्तै त्यार न्हियो तो सूवटी मोळी पड़ग्यो । वो कह्यो—थोड़ी ताळ इण जंगळ में बिसाई खावो । म्हें आपनै सगळी बात मांडनै बतावूं । आपरी बातां सुणनै म्हें तो गताधूम में पजग्यो । थें मिनख लोग खुद तो अकरम अर ऊंवा कांम करी जका करी ई हो, पण म्हां पंछियां नै ई

आपरी मतलब सारण वास्तै ऊंवा कांम सिखाय दिया । म्हैं तो हा जँड़ा हा । पण मिनख म्हांन ई छळ, कपट अर जाळ-साजी री ग्यांन करवाय दियो । थांरी बातां सुणियां पछे थांरें साथे घात करण सारू म्हारी मन पाछो पाछो व्हे । म्हैं थाने जंगळ री गमियोड़ी डांडी री सोय बतायने मोत रें मारग ले जावणी चावतो हौ । अठा सूं दोय कोस आंतरें ठगां री टाळकौ गुड़ो है । म्हैं ठगां रें सिरदार री पाळियोड़ी सूवटो हूं । वो म्हने बोलण री अर मिनखां साथे छळ करण री नवो ग्यांन करवायो । इण जंगळ में डांडी घालणी अर अठे डांडी नें रमा-वणी आ सगळी ठगां री इज करतूत है । पथ भूल्या बटाऊ नें अठा सूं बारें काढ़ने ठगां रें गुड़ा री मारग बतावणो ओ म्हारी कांम है । ठगां रें सिरदार बाळो ग्यांन तो म्हैं घणी दोरो सीखियो, क्यूंके म्हांरी पीढ़ियां में इण नवा ग्यांन री कांम को पढ़्यो हौ नीं । इणने सीखण वास्तै म्हैं किती दुख उठायो अर किती मार खाई, उणारी पीड़ म्हैं जाणूं के म्हारी जोव जाणें । वो सिरदार सीखणा में भूल व्हेतां ई म्हारा पंजा में सूळां खुबावतो, पांखां आगी लेयने ताकळा रा गोदा देवती अर म्हारी जीभ माथे लूण अर मिरचां भुरकावतो । मिनखां री इण बोली अर मिनखां रा इण ग्यांन नें सीखण वास्तै म्हैं कांई कांई फोड़ा भुगतिया वानें जद कदैई याद करूं तो म्हारी काळजी सुरक सुरक करे । उण सिरदार री मार री म्हने इत्ती ऊंडो डर बेठोड़ी है के इण जंगळ में साव छुट्टी अर आजाद व्हेतां थकां ई म्हैं किणी दूजी ठोड़ उड नीं सकूं । दुनियां रें किणी छेड़े वो म्हने छोडैला नीं । थें मिनख लोग आपरा स्वारथ री

खातर म्हां भोळा पंछियां नै ई विटळाय दिया । आज दिन ताई थारै इण नवा ग्यान रै आसरै म्है कित्ता बटावुवां रै साथै घात करिया, इणरो म्हनै आज सावळ चेतो व्हियो ! पण थें मिनख ई माहौमाह अेक दूजा सूं पड़प सकौ । जकौ जोरावर व्है वौ आपरो कांम सार लेवै । थां लोगां सूं पूग आवणियो इण दुनियां में कोई नीं । होळै होळै सेवट म्है ई नवा ग्यान रै सेंगत व्हैगो । किणी बटावू रै सागै घात के छळ करणा में म्हनै कीं दुख नीं व्हैतो । मिनख मिनख सगळा अेक मज्जना रा है । थां मिनखां में कुण तौ चोखौ अर कुण भूंडी ! थें आपस में ई अेक दूजा रै साथै घात करौ तौ इण दुनियां में दूजो थाने कुण समझा सकै । थारो तौ सगळी धरम, ग्यान अर सगळी करामातां विटळियोड़ी है । अबे म्हां पंछियां नै ई आपरै सांचे ढाळणा सरू कर दिया । पण आपरी बातां सुणनै म्हारो नवोड़ी ग्यान लोप व्हैगो । अबे आपरै साथै घात करणा सरू किणी भांत म्हारो मन नीं मानै । ठगां री सिरदार म्हनै छून तो छी छूनतो । आप आया जिणी मारग पाछा जावौ परा, म्है आपनै ठेट तक मारग बतावतो चालूला ।

राजकंवर कह्यो—म्हारा भला री खातर थारै प्राणां री जोखौ म्है कीकर ओढ़ सकूं । म्है तौ अै सगळी बातां सुणियां अवस ठगां रै गुडै जावूला । आपरा हाथ सूं किणी नै ठगणो आ सरम री बात है । पण खुद ठगावणा में किण बात री सरम । ठगणो अधरम व्है सकै पण ठगावणो तौ अधरम कोनीं । थें पंछीड़ा ई मिनखां री सीख सूं इण भांत छळ अर जाळसाजी सीखग्या तौ सगळी दुनियां री बसणो ई अकारथ

अर निरफळ व्हे जावला । लीला सूवटा ! थूं निसंक हवा, जंगळ अर आभा में विचरण कर, थारो कुण ई कीं बिगाड़ नों सकै । थारी कुदरती इच्छा अर सुभाव सूं थारो जीवन बिता । मिनखां रें नवा ग्यान नें हमेसां रें वास्तै पांतरजा । म्हारा ग्यान अर म्हारी करामातां सूं म्हानें ई विटळण दी, थें पंछी जिनावर तो अछूता रेंवो ।

सूवटो कह्यो—थें मिनख लोग म्हानें अछूता रेंवण दी तो ! थें भलाईं नित नवा हुनर सीखो, नित नवो थारो ग्यान बधावो, पण इण बधापा सूं म्हां पंछी जिनावरां रें प्राणां री जोखम क्यूं बधे ? थें म्हानें कीकर अर कित्ता जल्दी मार सकौ, कांई थारो ग्यान इणी बात में है । जे इणरो ई नांव ग्यान है तो पछे म्हारी अग्यान घणो वत्तो ।

सूवटा रें मन री खार इत्ता दिनां पछे आज उगटियो । सांमी कोई सुणणवाळी आदमी व्हे तो सुणावणा में ई आणंद है । सूवटो धक फेर कह्यो—आप समझी जिण सूं म्हें आपनै इत्ती बातां सुणाई हूं । म्हारो केणो मानो तो ठगां रें गुडें जावणा में कीं सार नों । आप अठा सूं ई पाछा आपरें ठाये वळ जावो । म्हें खुद अबे ठगां री संगत छोडनै आपरें साथे चालूला । म्हनं सुभट लखावें के आपरें साथे चालूं तो म्हनं किणी भांत री कीं जोखम कोनीं । हमेसां सखरी अर ग्यान री बातां सीखण री मौकी मिळैला ।

राजकंवर कह्यो—ओ तो थारो बडापणो है । पण अेकर तो ठगां रें गुडें जावूला ई । म्हें जाणूं के जल-मतो टाबर नों तो चोरी करै, नों ठगाई करै, नों किणी रें

साथे घात करै, नीं छळ करै अर नीं जाळ-साजी करै । नीं ठगां री कोई न्यारी जात ई व्हे । मोटी व्हियां पछे मिनख नै किणी कारण सूं अं सगळा अकरम सीखणा पड़ै । म्हनें पक्की बिस्वास है के किणी कारण सूं अं हीण अकरम सीखीजै, तो किणी कारण सूं पाछा मिट ई सकै । मिसाल देणा सूं थारै आ बात सावळ समझ में आवैला । थारी खुद री ई बात लें । थूं जलम सूं भूंडी थोड़ी ई हौ । ठगां रें सिखावणा सूं थामें भूंडायां सांचरी । थारै कैणा मुजबुद्दहारी बातां सूं थामें पाछी सुमत चेतगी अर अक छिण में थारा मन री हीण भावनावां मिटगी । उणो भांत ठगां रा मन में ई पाछी सुमत वापर सकै ।

सूवटो कह्यो—म्हनें तो मिनखां में सुमत वापरणा री रक्त भर ई भरोसी कोनीं । पछे आपरें दाय पड़ै ज्यूं करो ।

राजकंवर मुळकनै कह्यो—थारी भरोसी नीं करणो ई वाजब है, पण म्हनें पूरी भरोसी है ।

आ बात कैयनै राजकंवर सूवटा नै भर निजर जोयौ । कसूंबल टूंच । लीली पांखां । कित्तो सोवणी पंछी है । मिनख रा ग्यांन में ओ कांई विस उगटियौ के वो अड़ा भोळा पंछी नै ई छळ अर जाळसाजी रा पाठ पढ़ाय दिया । ओ सुरंगौ पंछी मिनखां रा बारा में कड़ा हीण भाव राखै ! अबे इण दुरगत री माठ कठै है ?

सूवटो कह्यो—आपनै भरोसी व्हे तो पधारी, म्हैं आपनै पालूं कोनीं । आप आवौला जित्तै म्हैं इणी जंगळ में आपरी बाट जोवूला । पाछा वळतां म्हैं आपरें साथे चालूला ।

राजकंवर कह्यो—जरूर जरूर ! म्हारो घण सोभाग के म्हनै थारी संगत मिळैला ।

सूवटो राजकंवर नै जंगल रा जाळा सूं बारै काढ़तां कह्यो—ओ धूम मारग है । सीधो ठगां रै गुड़ै जावैला । कीं अबखी पड़ै ली म्हनै चितारज्यो । हूं तो नाकुछ पंछी पण म्हारी सरघा मुजब आपरै काम आवैला ।

राजकंवर हां ना री कीं जबाब नीं दियौ । सोचण लागी—मिनखां रा गुड़ा में जावतां मिनख नै जोखी है, अर उगए अबखी माथे जंगल री पंछी मिनख रै काम आवैला ! मिनख री ग्यान सेवट इग ठोड़ आयनै छूटो ! घणा रंग है मिनख नै अर घणा रंग है उणरा ग्यान नै ! थोड़ी ताळ पछे उणनै ध्यान आयो के वो सूवटा नै तो पाछी कीं जबाब ई नीं दियौ । अचांणक झिझकनै कह्यो—जरूर चितारुंला म्हारा सूवटा भाई, थनै जरूर चितारुंला । थां पंछियां नै म्हें नाकुछ नीं समझू, म्हां मिनखां सूं घणा सिरै समझूं ।

ठगां रै गुड़ै जावण वाळा उण धूम मारग माथे राज-कंवर खाथी खाथी चालण लागी । जल्दी पूगण सारू उणरा मन में अणूती कोड, अणूती उमंग अर लाळसा हो । चालतां चालतां उणनै मारग माथे अेक बगेची निगं आई । बगेची रै पाखती आतां ई अेक हिरण मारग रै आडो फिरनै कह्यो—रांम रांम बटाऊ, रांम रांम !

राजकंवर हिरण सूं पाछा जवारड़ा करिया । हिरण फेर धकै कंवण लागी—बटाऊ, यूं टलिया टलिया कोकर जावो हो । तिरस लागी व्हे तो मीठो इमरत व्हे जंड़ी पांणी पीवो ।

नीं लागी व्हे तो इण बगेची में धमेक बिसाई खावो । बँठोड़ा रं तो ऊभोड़ी ई पांवणी व्हे । इण तपती में म्हारी बगेची रं गळाकर नीसरी, अर म्हने पांणी पीवण जोगी ई नीं समझी । भलां आ बात कीकर व्हे ? जाणता व्हो तो म्हने कीं ग्यांन री बातां बतावो । अर यूँ हवा रं वेग थें म्हारें लारें दोड़ी तो ई हाथे नीं आवां । म्हें चलायने आपरें पाखती आयो । जद म्हें आप सूं नीं डरां तो आपनें तो म्हारा सूं डरण री वास्ती ई नीं ।

हिरण बोलती रह्यो जित्तें राजकंवर उणरें सांमी हरख सूं जोवती ई रह्यो । कित्तो रूपाळी जिनावर है ! खबसूरत आख्यां जाणें इमरत रा प्याला । मांदी आदमी देख्यां साजी व्हे जावें । ओपती सींगडियां । पळकतो डोल । रेसम ने ई सात वार मात करे जेड़ी कंवळी रुंवाळी । पतळी अर लुभावणी मूंडो । आं पतळी पतळी टांगां में परतख वेग ने ई लारें राखण री करार है । मिनखां री वास सूंघने अँ चरता ई हवा रें समचें दोड़ जावें । जको म्हारें पाखती ऊभो पांणी पीवण री मनवारियां करे । जीवण में अँड़ी सुख फेर कद आवेला । ठगां रा सिरदार गोडे जावणी तो जरूरी ई है, पण धमेक इणरी संगत री ई आणंद लेलां ।

सूवटा री सगळी बातां सुणियां पछे हिरण री मीठी बातां रें मांयला खार री राजकंवर ने तुरत पती पड़ जावणी चाहीजतो । पण वो तो सगळीं ने आपरें सस्तें इमरत जाणती । हिरण री बातां सुणने उणरा मन में तुरत आ बात आयगी के जे आ ई ठगां रें सिरदार री जाळसाजी है तो सूवटी

उणनै अवस इणरी जाणकारी देवती । परा मुद्दा में साची बात आ ही के सूवटा नै हिरण बाळा छळ री कीं पती नीं हो अर नीं हिरण नै ई कीं सूवटा बाळी बात री अेलम हो । ठगां री सिरदार इण बात नै आछी तरै जाणती के अेक दूजा रै अेलम री आपस में ठा पड़िया कीं न कीं गड़-बड़ होवण री अंदेसो है । मिनख ई मौका माथे गलती कर जावै । पछे पंछी जिनावरां री किस्तीक जिनात ! वो मन में फेर विचार करियो के वेम करियां अर नीं करियां फरक ई काई पड़ै । वो तो खुद चलायनै ठगां रै गुड़ें आपरी मरजी सूं जावै है । अंडा भोळा जिनावर माथे वेम करणी खुद रा मन री ई ओछापणी है ।

हिरण रै बोलणा री अर उणनै निरखणा री आणंद मन में लेवतां लेवतां ई राजकंवर उण बिचाळें अे सगळी बातां आपरा मन में विचारली । हिरणां सूं मिनखां रै डरण री बात सुणनै वो मुळकतो थको कह्यो—बावळा, थूं हिरण होयनै सांप्रत जम रै पाखती चलायनै आयग्यो तो पछे जम नै थारा सूं डरण री तो बात ई काई । म्हे मिनख थां हिरणा वास्तै तो जम बिरोबर ई हां । हिरण जंडा भोळा अर संत जिनावर सूं तो अेक फूंदी ई नीं डरै । जे थूं मीठो इमरत व्हे जैडो पांणी नीं पायनै हळाहळ जैर पावै तो ई म्हे हरख सूं पीवूं । मिनख रै हाथां नित अलेखूं हिरण मरें, जे इण खातै हिरण रै हाथ सूं अेक मिनख मर जावै तो इणसूं वत्ता सौभाग री फेर काई बात व्हे । थां हिरणां री फरज तो म्हे अेकर दुनियां रा सगळा मिनख मरनै ई नीं उतार सकां ।

हिरण आपरी रूपाळी आंख्यां नै अठी-उठी फेरती राज-
कंवर रा मूंडा सांमी दो तीन वार जोयी—जाणै वो आपरा
मन में पक्को निस्चै करणी चावती के वो मिनख है के कोई
दूजो भलौ जिनावर है । है तो साचांणी मिनख ई । पण मिनख
भला कद सूं व्हिया ! इण खातर घड़ी घड़ी मन में वेम
उपजै । ओ कदास किणी भली दुनियां री मिनख दीसै ! मिनख
किणी ई दुनियां रा व्हे तो काई ! तूरड़ा री किसी कोर मीठी !
मिनख री रूप धारियां ओ अवस कोई दूजो जिनावर है ।
इणारी आंख्यां में काळ कठै रमै ? इणारा उणियारा माथे जम
री छीयां कठै ?

वो आपरी छोटी सी पूंछ नै हिलावता कह्यौ—मारग
माथे अठै तावड़ा में क्यूं ऊभा ? चाली बगेची में चालां ।
देखी तो खरी के म्हारी बगेची री छिब किसीक है ?

राजकंवर कह्यौ—म्हने आंचो तो अणूंतो है । पण थारी
मनवार कीकर टाळूं ।

आ कैयनै वो हिरण रे साथै साथै बगेची में आयो ।
बगेची देवता रमै जेड़ी । सगळी बगेची में फगत गुलाब रा
फूल अर नींब रा रुख । दूजो हरियाळी री कोई पांन ई नीं ।
कंडी रमणीक जागा है ! राजकंवर री मन गुलाब रं फूलां
ज्यूं खिलगो । वो अणूंतो कोड सूं कह्यौ—थारी मया व्हे तो
म्हें पाछो वळतौ अवस इण रमणीक बगेची में थोड़ा दिनां तक
सुरग री आणंद लेवणी चावूं ।

हिरण मन में कह्यौ—अबै पाछा तो थारा फूल ई नीं
आवै । आछा करम करिया है तो सुरग री आणंद सुरग ई

में लेजें । नीतर नरक रो दुख, संताप तो भोगणो है इज !
मिनख सुरग में जावें तो पछे नरक किण खातर बणिया ! पण
आपरा अंतस री बात वो बारें दरसाई कोनीं । ऊपरला मन
सूं हंसनै कहाँ—इण बगेची में रंवरण सारू म्हारी मया री
काई जरूरत, ओ तो आप लोगां रो ई घर है । म्है तो आप
लोगां रो हाजरी सजायन म्हारी आगली जलम सुधारणी चावूं ।

आ कैयनै हिरण अक नीबड़ा रे हेटे आयनै ऊभग्यो ।
राजकंवर ई उणरै पाखती वेकळू रेत में बैठग्यो । के इत्ता में
अक कबूड़ी नीबड़ा री डाळी माथें बैठनै गटरगूं गटरगूं करण
लागो । हिरण रे साथे राजकंवर ई ऊंचो कबूड़ा सांमी भाळियो ।
कबूड़ी घांटी हिलायनै गटरगूं करती हो । दूध रे उनमान उणरी
घोळी रंग । गुलाबी पंजा । गुलाबी आंख्यां रे मांय भूरी टिप-
कियां अर गुलाबी टूंच । उणरी घोळी अर कंवळी पांखां देखनै
राजकंवर नै लखायो के जाणें वो बरफ रा थर मांय सूं निक-
लनै सीधो अठे आयो है । राजकंवर थुथकी न्हाकनै कहाँ—
कित्तो रूपाळी कबूड़ी है ! मन करे के इणनै बरसां लग देखतो
ई जावूं ।

कबूड़ी अर हिरण दोनूं जणा सोच्यो के इण भोळा बटाऊ
नै आधी ढळियां ई मरणो पड़ैला अर ओ बरसां लग जीवण
रा सपना देखें ।

राजकंवर कहाँ—मन तो करे के सपना में ई आ बगेची
छोडनै कठई दूजी ठोड़ नीं जावूं, पण अबारूं तो म्हनै मन रे
परबारी ई जावणी पड़ैला । आणंद अर हरख बिचे मिनख रो
फरज वत्ती है ।

पछे राजकंवर वां दोनां नै जंगल में मारग गमण री अर सूवटा वाळी वारता सगळी मांडने बताई । हिरण राज-कंवर रै मूंडा सांमी टग टग जोवती सगळी बात सुणतो रह्यो । वो तो बात रै बिचाळे आपरी पूछ ई नीं हिलाई । भाटा रो घड़ियोड़ी व्हे ज्यूं ऊभो रह्यो । अर नीं कबूडो ई बात रै बिचाळ गटरगूं करिया । वो तो आपरी पांखां चेप अर घांटी नीचे करनै राजकंवर रै मूंडा सूं निकळियो अक अक आखर पीवतो रह्यो । डाळा माथे वो तो खुद काठ रो बूणि-योड़ी व्हे ज्यूं बंठी रह्यो । बात संपूरण व्हियां हिरण अर कबूडो दोनूं अक दूजा रै सांमी देखियो । दोनूं ई अकण सागे जाणं काई सोचने राजकंवर नै पूछयो — काई थें खुद चलायने टगां रै गुड़े जावो ? उठे जायने मरण वास्तं ई काई थें इत्ती ताळ आंचो करता हा !

राजकंवर कह्यो — प्राणियां रै हाथे व्हे तो वं लाख बरसां ताईं मरणो नीं चावे । पण जलम अर मरण दोनूं ई वारें हाथे कोनीं । मोत नै हाथ जोड़ां अर पग पकड़ां तो ई वा अक छिण वास्तं ई बगसे कोनों, पछे मरियां सू डरियां काई सांधो लागै । इण खातर मिनख जमारा री सारथकता इणी बात में है के जलम री गळाई मरणो ई मंगळीक मांजीजै ।

राजकंवर धके फेर ई कीं कैवणी चावतो हो के हिरण बाच में ई बोल्यो — अठे आप थोड़ा सा झूठ बोलग्या । म्हाारी जाण में मिनख जमारा री सार फगत इणी अक बात में के वो आपरी खुद री काया रै बिना दूजा नै मारणो मंगळीक जाणै । म्हे पछी जिनावर तो म्हांरें वास्तं मोत अर काळ

तो मिनख नै ई मांनां ।

राजकंवर मोळी पड़नै कह्यो—हां भाई, बात तो थारी साव साची है । पण पंछी जिनावरां नं मारतो मारतो सेवट मिनख खुद पंछी जिनावरां नै इण मारण रा कांम में आपरै साथे लै लिया है । सूवटा जैडा भोळा पंछी नं कीकर वो आपरा कांम में भेळो लियो, समझणी चावूं तो ई म्हारै सावळ समझ में को बैठे नीं । म्हैं ठगां रं गुड़ं जायनें वाने वत्ती नीं तो कम सूं कम आ बात तो समझाय देवणी चावूं के भला आदमियां छळ, कपट, जाळ-साजी अर हित्यावां बिना थारो गुजारी नीं व्हे तो थें अँ अघरम करो तो करो, पण थारै आ अकरमां में भोळा पंछी जिनावरां नं क्यूं फांदी । जे अँ छळ कपट सोखग्या तो इण दुनियां री ऊपरली पांनो कदेई नीं आवेला !

हिरण कबूड़ा रं सांमो देखनें कह्यो—हाल आपनें सूवटा री ई ठा पड़ी है । खुद म्हैं अर ओ कबूडो ई ठगां रं सिखायोड़ा इण बगेची में बटावुवां साथे छळ अर घात करां हां । अठा सूं टळ परी नं कोई पाछो नों जावे परी, ओ जिम्मी म्हारी है । मीठी मीठी बातां में भरमाय, इमरत व्हे जैडो मीठी अर ठाडो पांणी पाय अर इण बगेची में सावळ बिसाई खवाय सीधो ठगां रं गुड़ं रवाना करदां । बटाऊ रं रवाना व्हेतां ईं ओ कबूडो उडनें ठगां रं सिरदार नै समची दे आवे । समची मिळतां ईं वे आपरा कांम वास्ते त्यार व्हे जावे ।

पण सूं सींगड़ियां रं बिचाळें ख्राज खिणनें वो फेर कंबण

लागो—अब आप सूं काई छिपावां । आप खुद चलायन उठे जावो ई हो, पछे म्हांरा छळ सूं ई काई गरज सरै ! आप म्हांरै सांमो आपरो निरमळ अंतस परगट करियो तो म्हांने ई सगळो बातां दरसावणी पड़ें । नींतर मिनखां माथें तो म्है अणूता इज खार खायोड़ा बंठा हां । आगला जलम में सिध री जूण हाथ आय जावें तो इण दुनियां सूं मिनख जात रो अंस ई मेट दूं । म्हारा माईतां ने म्हांरें देखतां देखतां तीर सूं बींध न्हाकिया । ठगां रें भाग री म्है अकलौ बचग्यो । उण वगुत री अरड़ावणो सुणियां तो सिधां रा ई काळजा पिघळ जावें, पण मिनख रा डोल में दया री लवलेस ई कोनीं । वो तो जिनावरां री अरड़ावणो सुणनें वत्ती राजी व्हे । उण दिन न्हाय छूटघां पछे म्है ठगां रा जाळ में फंसग्यो । अर ठगां री सिरदार जद म्हनें मिनखां रें साथें छळ करण री बात बताई तो म्है अणूतो राजी व्हियो । उणरी सिखायोड़ी बातां अर उणरा नवा ग्यान नें म्है तुरत सीखग्यो । म्हांरें हिड़दा री ओ साच देखनें सिरदार म्हांरें साथें अणूतो राजी व्हियो ।

गटरगूं करने कबूड़ी बीच में बोल्यो—पण म्है मिनख री बोली अर उणरा ग्यान नें घणो दोरो सीखियो । घणो ई खपतो तो ई म्हांरें वे बातां समझ में ई नीं आवती । घोखतां घोखतां ई भूल जातो । म्हांरी जात में ई कोई छळ अर जाळसाजी करणी नीं जाणै, पछे मिनखां री बातां म्हांरें कीकर हीयें ठूकें । पण ठगां री सिरदार तो म्हारो लारी छोडियो ई नीं । सेवट अणूतो कायो व्हियां पछे वो अक नवी अटकळ विचारी । अक मिनकी नें सगळा पाठ पढ़ायां

पछे म्हारी गरू बणाई । मिनकी रै गोरकां अर उणरा पंजां रा डर सूं म्हनै मिनखां रो बोली अर वारो ग्यांन माडै ई सोखणी पड़्यो । कांई मिनखां रा ग्यांन सूं दुनियां रो विणास ई व्हे सकै, उणरा ग्यांन में भलाई रो मुळगी लवलेस ई कोनीं ?

राजकंवर गळगळा कंठ सूं कैवण लागी—थाने कांई बतावूं ? म्हारे ग्यांन अर म्हारी अकल रा अं नतोजा व्हेला, म्है सपना में ई आ बात नीं जाणी ही । थे म्हारी बातां रो ऊंधो मतलब मत लेजी । म्है मिनख थां पंछी जिनावरां नै मारण रो नित नवी अटकळां विचारां अर म्है थाने भलाई रो सीख देवूं, थांरी समझ परवाण ओ ई म्हारी छळ व्हे सकै ! इण खातर थाने भलाई रो बातां बतावती संकूं । थाने मारणा रो बदळी थे अवस मिनखां सूं ली, म्है थाने पालूं कोनीं । थांरा बदळा सूं म्है सगळा मिनख ई इण घरती सूं खूट जावां, इण बात रो म्हने रत्ती ई चिंता कोनीं, पण हिरण जेड़ा संत जिनावर अर कबूड़ा जेड़ा संत पंछी मिनखां रै सिखायां वारो छळ, कपट, जाळसाजी अर वारो ग्यांन सीख - गया तो पछे आ दुनियां जीवण काबल नीं रेवंला । म्है मानूं के म्है लोग जीवण रै काबल कोनीं, पण आ दुनियां तो जीवण जोगी है । अबे थां पंछी जिनावरां रै ई हाथ है के आ दुनियां जीवण जोगी बणी रेवं ! म्है तो फगत आ बात जाणूं हूं के इण दुनियां सूं कबूड़ां रो गटरगूं, सूवटा अर कोयलां रो बोलणी, चिड़ियां रो चहकणी, हिरणां रो मलापणी खतम व्हेगी तो इण दुनियां रो बसणी ई अकारथ व्हे जावंला ।

सिंघ, स्याळ, बघेरा, बिसांदरा, सांप, मकड़ियां, बाज, सिकरा, गिरज अर मिनखां रे भरोसै आ दुनियां कित्ता दिन तक टिक सकैला ? कबूड़ा ! थूं मिनखां री बोली अर बांरा ग्यांन नै पांतरजा अर थारी मीठी गटरगूं नै ई याद राख, याद राखै जैड़ी बात तो फगत आ इज है । अर म्हारा लाडला हिरण थूं थारो मलापणो भूलनै मिनखां वाळी चाल मत सीख, थारो भोळी आख्यां में मिनखां वाळी रंगत मत ला, नीतर इण दुनियां री सगळी आणंद ई खतम व्हे जावैला ।

कबूड़ी उडने राजकंवर रा खांधा माथै बैठग्यो । गटरगूं गटरगूं करण लागो । हिरण उणरै अड़ीअड़ ऊभनै उणरा डील सूं खसण लागो । राजकंवर री आख्यां जळजळो व्हेगी । हिरण रा डील माथै हाथ फेरण लागो । कबूड़ी कह्यो—जे मिनकी म्हारी गरू नीं बणती तो म्हैं अ बातां कदैई नीं सीखतो, पण कांई करूं उणरा गोरकां आगं म्हारो बस नीं चाल्यो । पण अबै म्हनै रोस रोसनै मार न्हाकै तो ई म्हैं थारी बोली अर थारा ग्यांन नै नीं सीखूं ।

हिरण माथो ऊंचो करने कह्यो—कांई करूं, म्हारै माईतां री अरडावणो सुणूं तो म्हनै सिंघ बणणा री लाळसा करणी ई पड़े । म्हारो काळजो आप चीरने देखी तो आपनै म्हारा मन री साची बातां ठा पड़े ।

राजकंवर कह्यो—साची बातां जाणण वास्तै म्हनै काळजो चीरण री जरूरत कोनीं । थारा म्हारा काळजा किंसा दो है ।

थोड़ी ताळ तीनूं जणा ई बोला बोला ऊभा रह्या । पण उण अबोलपणा में वैं अेक दूजा सूं घणी घणी बातां

करी । जाणें काईं सोचने कबूड़ी अर हिरण दोनूं अेकण सांगे कह्यो — म्हारो कैणो मानो तो थें ठगां रें गुड़े मत जावो । थारी बातां म्हारें हीयें ढूकी ज्यूं वारें हीयें नीं ढूकला । वैं ठग तो अंडा दुस्ती है के मिनख रा लोई में चूरने रोटी खाय जावें तो ईं वानें इण बात री घिन ईं को आवें नीं । थें अठा सूं ईं पाछा वळ जावो । म्है ईं साथे चालण सारू तयार हां ।

राजकंवर कह्यो — उठें गियां म्हारें मरणा सूं तो वत्ती कीं जोखी कोनीं । पण इत्ती बातां सुणियां पछें उठें नीं जावणो तो मरणा बिचें ईं घणो कावळ है । अर मरणा री इणसूं सिरें मौकी फेर कद आवेला । राम जाणें इण मौका री घाटो कद पूरोजैला । आपरा मरणा बिचें मिनख नै दुनियां रें जीवन री घणो ध्यान राखणो चाहीजें । खासो ताळ व्हेगो, अबे म्हनें जावण ईं दौ । थारी संगत री आणंद म्हैं जीवूं जित्तें पांतळूं कोनीं । पाछो आवूं जित्तें इण बगेची में ईं रंजी ।

कबूड़ी अर हिरण दोनूं राजकंवर नै मारग तांईं पुगावन नै आया । राजकंवर वानें उठें ईं छोड धकें वहीर व्हेण लागो तो दोनूं जणा आंसू ढळकावतां कहाँ — कोई संकट पडें तो म्हानें चितारज्यो । आपरें काम आवणा सूं वत्ती म्हारें प्राणां री ढूजी फेर काईं सारथकता व्हे सकै !

राजकंवर ईं आपरा आंसू पूंछतो थको कहाँ — जरूर जरूर याद करूला थानें । अबे म्हैं जावूं । थें इण तावड़ा में ऊभा मत री, बगेची में जावो परा ।

राजकंवर अणूतो खाथो खाथो चालण ढूकी । दोनूं जणा

ऊंडा निस्कारा न्हाकतां थकां कह्यो—जे सगळा ई मिनख अंडा
व्हे तो आ दुनियां कीं री कीं बण जावें ।

चालतां चालतां राजकंवर गुडा रें गोरवें आयो । उठे
मारग रें जीवणी बाजू उणनें अेक झूंपो बणियोडो दीस्यो ।
उठे जायनें ठगां री सावळ ठायो पूछ लेवैला, जिणसूं वो सीधी
ई सिरदार रें घरे जावें परी, फालतू कठे ई खोटी नीं व्हे ।
झूंपा रें पाखती आतां ईं अेक धोळी खिरगोसियो फदाकां भरतो
उणरें गोडे आयो । बोल्यो—जे रांम जी री, बटाऊ वीरा
जे रांम जी री ।

राजकंवर चालतो चालतो ई पाछा जवारडा करिया ।
खिरगोसियो फदाकां भरतो आडो आयनें कह्यो—बटाऊ वीरा !
इत्ता खाथा खाथा सिध जावो हो ! म्हारी ग्वाड़ी रें गळाकर
नीसरो अर अठे पांणी-लूणी ई नीं करो, भलां आ बात कीकर
व्हे ! मेह अर पांवणो कद कद आवें ! आज दिन तांईं म्हें
किणी बटाऊ नें सरबरा बिना धरुं नीं जावण दियो । आपरें
जोग तेवड करण री तो म्हारी ठरको कोनीं, पण तो ई
आपनें ग्वाड़ी री आंगणो पवित्तर करण री मेहरबांनी तो
करणी ई पडैला ।

राजकंवर मुळकनें लाड सूं कह्यो—ठगां रा सिरदार रें
उठे पुगावण री के उणनें समचो देवण वास्तें ई थारी आ
सगळी सरबरा है तो पछे इण खातर तो थूं फोडा उठाजें ई
मती । म्हें खुद चलायनें म्हारी मरजी सूं उठे जावूं हूं ।
फालतू क्यूं अबेळी करे ।

आ बात सुणतां ईं खिरगोसियो अेकदम फीटो पडग्यो ।

मूँडो नीचे करने धूक गिटती कैवण लागी—किसा ठग अर किसी ठगां री सिरदार ! म्हनै ठगां सूं काई तल्लो मल्लो । म्है सगळा घरवाळा भला अर म्हांरी ग्वाड़ी भली । म्हनै तो आ ई ठा कोनीं के अठे कोई अळगा नेड़ा ठग ई रेवे ।

राजकंवर कह्यो—थें खिरगोसिया कद सूं झूठ बोलण लागी । हाल थूं छळ अर जाळसाजी में मिनखां री गळाई पारंगत को हुवो नीं । थारो उणियारो साफ थारो कह्योड़ी बात री खंडण करै !

खिरगोसियो माडांणी मुळकण री चेस्टा करती थकी कैवण लागी—कूड़ तो थें ई कम नीं बोलो । ठगां रै गुड़े सांमी चलायनै कोई ठगोजण वास्ते जावैला, थें जांणी के म्है इत्ती मूरख हूं, जकी इण बात माथे भरोसो करलूं !

राजकंवर ई पाछो डग डग हंसने जबाब दियो—ठगां रा सिरदार कना सूं ग्यान सीखियां पछे थारो भरोसो नीं करणी ई वाजब है । भोळा खिरगोसिया थूं तो वेगो चात्रंग बणियो ।

पछे वो खिरगोसिया नै आपरी खाक में उंचायनै उणरा कंवळा बाळां माथे हाथ फेरनै कैवण लागी—म्है तो म्हांरा ग्यान सूं विटळिया जकी विटळिया ई, पण थारै जेड़ा भोळा जिनावर मिनखां री गळाई अकलवान व्हेगा तो इण दुनियां में सास लेवणी ई दूभर व्हे जावैला । म्है आ ई बात ठगां रा उण सिरदार नै समझावणी चाबूं । मिनख रा आचरण माथे थां जिनावरां री भरोसो करण वाली बात खुद मिनख ई आपरा हाथ सूं खुटाई है । इणमें थारो कीं कसूर नीं । पैला

महें थारा सूं मसखरी करी ही । थारें जंडा भोळा जिनावर नै इण भांत छळ करतां देख महें घणी ई रोवणी चावूं, पण म्हारी आंख्यां में इत्ता आंसू कोनीं, इण खातर माडें ई हंसनै आंसुवां री कमी पूरी करूं ।

राजकंवर रें हाथ री परस पातां ई खिरगोसिया नै मां री याद आयगी । पछें उणसूं ढबीजियो कोनीं । डुस्किया भर भरनै रोवण लागी । रोवती रोवती ई बोल्यो — म्हारी मां अर म्हारा बाप नै म्हारी आंख्यां सांमी मरता देख्या अर महें मारण बाळा मिनख री कीं नीं कर सकियो । म्हारी मां रा पेट में अेक लांबी तीर बिधियोड़ी हो । पेट सूं घकळ घकळ लोई छूटती हो । तीर अर लोई री कीं परवा नीं करनै वा म्हारा मूंडा सांमी देखनै कहाँ — बेटा, आ मिनख री बिद्या है । महें मरी जकी तो मरी ई । थूं अेकर म्हारा मूंडा माथे वाल्ही देयनै दोड़जा । पाछो लारें मुड़नै ई मत देखजें । म्हारी मां तो इत्ती कंयनै उठेई ढिगली व्हेगी । म्हारै वाल्हा री कदास उणनै अेलम ई नीं ब्हियो व्हेला । मिनख री आ बिद्या म्हारा बाप रें, सांमी लिलाड़ आपरी परचो बतायी । उणसूं तो कीं बोलीजियो कोनीं । वो अेक छिण पेला जीवती हो अर अेक छिण पछें मरग्यो । कदास आज दिन तांई म्हारा बाप नै मरणा री ग्यान नीं ब्हियो व्हेला । पण उण दिन म्हनै मरणा री जकी ग्यान ब्हियो अर मिनख री बिद्या री जकी अेलम ब्हियो वो महें हजार वार मरूं तो ई भूल नीं सकूं । उणरी बिद्या री वळें अेक अेलम व्हेणी बाकी हो । वो अेलम पूरी ब्हियो म्हारी घरवाळी नै मरतां

देखनै । जद मिनख री विद्या सणसणाती म्हारी जोड़ायत रा पेट में लागी तो उणरौ पेट बेंत भर चीरीजगौ । पेट चीरी-जतां ई दो बिचिया उणरा पेट सूं बारें पड़िया । गिगन में तो फगत अेक चांद है , जकौ सगळी दुनियां नें रात रा उजास पूरे , पण म्हारी घरवाळी रें पेट सूं दो चंदरमा बारें पड़िया । मिनख री विद्या री परस वानें जलमियां पैली ई मार न्हा-किया । म्हारी घरवाळी अर म्हारा बिचियां री आ हालत देखनै ई म्हनै उठा सूं दौड़णी पड़ियो । अर आंख्यां मींचनै दौड़तौ ई गियो । आंख्यां खुली राखूं तो म्हनै म्हारी मां , म्हारी बाप , म्हारी घरवाळी अर म्हारा बिचिया सगळा मरता निगें आवता । पाछी आंख्यां खुली तो म्हैं ठगां रा सिरदार रा जाळ में तड़फड़ तड़फड़ करती हो । मिनख री विद्या सूं म्हैं कठे ई नीं बच सकियो । पण जद वो मिनखां साथे छळ , कपट अर घात करणा री विद्या म्हनै सिखावण लागी तो म्हैं अणूंतौ राजी ब्हियो । उणनै कह्यौ—आं छोटी छोटी बातां सूं कीं नीं ब्हे , कोई अंडी विद्या सिखावौ के म्हैं दुनियां रें सगळा मिनखां री खातमी कर सकूं । ठगां री सिरदार म्हनै भरोसी दियो के वो होळे होळे म्हनै सगळी विद्यावां सिखाय देवैला । म्हैं खूब मन लगायनै उणरी विद्यावां सीखी । थोड़ा दिनां में ईं खासौ भलो पारंगत ब्हेगौ । इए झूपा में बैठी घणा कोड सूं बटावुवां रें साथे छळ कपट री आणंद लेवतौ हो के इए बिचाळें थें म्हारी आसावां साथे पांणी फेर दियो । म्हनै आज ठा पड़ी के इण दुनियां में आप जैड़ा मिनख ई है । थें सगळा मिनखां नें आप जैड़ा करदौ तो म्हैं वानें मारण री पाप क्यूं करूं !

म्हां खिरगोसियां री तो सगळी जात अेक सरीखी है, किणी कीड़ी नै ई अेल नीं पुगावां । पछे थां मिनखां में इत्ती फरक क्यूं ?

आ कैयनै वो फेर डुस्किया भर भरनै रोवण लागी । राजकंवर री आंख्यां ई बरसण लागी । कह्यो—म्हें खुद ई हाल इण बात री जबाब नीं जाणूं तो पछे थनै कांई बतावूं ! पण अेक बात साव सुभट म्हारी समझ में आयगी के म्हे मिनख तो हां जंड़ा पापी हां, पण म्हारी विद्या अर म्हारी ग्यांन सीखनै खिरगोसिया जंड़ी भोळी जिनावर चावंग अर कपटी व्हेणो तो पछे इण दुनियां री खातमो व्हेणो ई सावळ है । ठगां रा सिरदार नै म्हे आ ई बात पूछणी चावूं के वो सूवटा, हिरण, कबूड़ा अर खिरगोसिया नै मिनखां रै सांचं ढाळण री पाप क्यूं करियो ? इण पाप पळे तो दुनियां जीवण काबल ई नीं रैवैला ।

खिरगोसियो राजकंवर रै मूंडा सांमी देखनै कह्यो—ठगां रा सिरदार नै हाल थें जांणी कोनीं । थारें समझायां वो कीं नीं समझैला । वो मिनखां री लासां माथें नेखम नींद लें सकै । उठे गियो जकी मिनख आज दिन तांई पाछी नीं आयी । दुनियां तो अंड़ा ठगां सूं भरी पड़ी है । आप किण किणनै समझावौला । मिनख भोळा खिरगोसिया कोनीं जकी कंतां ई फट समझ जावै । म्हारै घरवाळां री मोत नै चितारूं तो मिनखां नै हजार जलम ई माफ नीं करूं । पण आपरी बोली म्हारै माथें अंड़ी कामण करियो के म्हे वैं सगळी बातां भूल-ग्यो । इण दुनियां में सगळा ई आप जंड़ा मिनख व्हे तो

महँ आज म्हरा घरवाळां रे साथे जंगल में मछरां करती ।
मिनख नै आपरी अकल अर आपरे ग्यान रो अणूतो गुमेज है,
पण म्हनै उणारी अकल अर उणरा ग्यान में कीं लूण-लखण
दीखिया नीं । रांम जाणै खुद मिनख आपरे ग्यान अर आपरी
करामातां रो भरम कद समझैला ।

राजकंवर अेक ऊंडो निस्कारो न्हाकनै कह्यो—समझैला
रे भाई समझैला । अेक दिन वो अवस आपरा भरम नै सम-
झैला । थां पंछी जिनावरां रो आसीरवाद रह्यो तो वो अेक
न अेक दिन जरूर समझैला ।

खिरगोसियो कह्यो—वो म्हांनै आसीरवाद देवण वास्तै
जीवता राखै तो !

राजकंवर इणरी कीं जबाब नीं दियो । खिरगोसिया नै
पुचकारतां कह्यो—महँ अेकर ठगां रे गुड़ै जावूला तो खरी ।
थूं म्हारै वास्तै किणी बात रो चिंता मत कर । दुनियां में
साच, न्याव अर भलाई सूं लांठी अर ताकतवर चीज दूजी
कोई नीं है । इण दुनियां में भलाई कित्ती ई अधरम, अन्याव
अर पाप फैल जावै, पण आ साच, न्याव अर भलाई रे साथे
ई पूरण रूप सूं टिकियोड़ी है । जिण दिन अधरम, अन्याव
पाप अर कूड़ रा जोर आगै घरम, न्याव, भलाई अर साच
हारग्यो उण दिन दुनियां आबाद ई नीं रेवैला, आ थूं निस्चै
जाण !

खिरगोसियो कह्यो—आपरी बोली में तो जाणै काई इम-
रत छुलियोड़ी है के म्हनै आप कैवो जकी बात साथे आपे ई
भरोसो व्है । पण आपनै अेक बात कैवू, मांनो तो आपरी
फा. ४७

मरजी है, नीं मांनो तो आपरो मरजी है । आपरें प्राणां री जिम्मी फगत आपरो ई नीं है, म्हांरो ई भेळी है । आपरें मरियां लाखूं जीव मर जावेंला अर आपरें जीवियां अणगिए जीवां रा प्राण बचेंला, इण खातर जठे कठे ई आप आपरा प्राणां ने जोखम में नीं घाल सकी । आप जैड़ा मिनखां रें प्राणां री हिफाजत राखण री म्हांरो करतब अर हक दोनूं ई है । पछे ई आप जिद्द निभावो तो आपरो मरजी है । म्हां नाकुछ जिनावरां रें कैणा री कुण गिनरत करे !

राजकंवर थुथको न्हाकतां कह्यो—सुसिया थूं तो थोड़ो ई दिनां में अणूतो हुंस्यार अर पाटक व्हेगो । थारी बातां आगे तो म्हांरो बातां साव मांमूली लागे । नीं सुणियो जित्त तो म्हें करतो ई कांई, पण सगळी बातां सुणियां पछे ठगां रें गुडें नीं जावूं तो ठगां रा सिरदार अर म्हांमें फरक ई कांई । थूं राजी खुसी जावण री मया देवें तो म्हांरो मन ई राजी व्हे । नींतर थनं विलखी देखूं तो म्हांरो मन ई कटमटो व्हे । थूं अेकर मुळकनै राजी मन सूं म्हने जावण री मया दे दे ।

खिरगोसियो मुळकने कह्यो—बातां में तो कोई आप सूं जीत ई सके, पण आपरा आचरण आगे दुनियां ने ई निवणो पड़ें, पछे म्हांरो तो जिनात ई कांई । अबे म्हनै साव सुभट समझ में आयगी के आप जैड़ा मिनखां री जलम ई इण वास्तं ब्हिया करे । अर जलमियां पछे आपरें वास्तं जलम अर मोत में कीं फरक नीं रेंवें । आप खुखी खुसी पधारो, अबे म्हें बरजण री भूल नीं करूं ।

दोनूं ई अेक दूजा रें सांमी देखनै मुळकिया । पछे राज-

कंवर अजेज ठगां रै गुड़ा सांमी बहीर ब्हियो । खिरगो-
सियो मारग माथे बैठी उणने चालतां देखती रह्यो । मन में
दो तीन वार अकलौ ई बड़बड़ायो — जे सगळी दुनियां अंडा
मिनखां सूं आबाद ब्हे जावें तो अके पलक में दुनियां रा
सगळा खारा संमदर दूध रा बण जावें । पछे सगळी दुनियां
दूध सूं न्हावें-घोवें तो ई संमदरां रौ दूध नीं खूटे । पछे
दूध री ई बिरखा बरसे अर दूध री नदियां अर दूध रा
ई वाळ्हा चाले । सगळी घरती माथे दूध ई दूध । कोरी दूध
ई दूध !

उण खिरगोसिया ने दूध री भावड़ अणूती इज ही ।
दूध री बिड़द बखांणती केई वार कंवती के देवतावां रौ इम-
रत दूध री होड थोड़ी ई कर सकें !

गुड़ा में वड़तां ई अके दो ठोड़ पूछ्यां पछे राजकंवर
सीधो ठगां रै सिरदार रै घरे पूगो । सिरदार उए वगत
बारली चांतरी माथे बैठी सिनांन करती हो । अणचींत्यो किणो
बटाऊ ने आपरें सांमी आवतां देख्यो तो वो हळफळायो होयने
ऊभो ब्हियो । हाथ जोड़ने राजकंवर सूं जवारड़ा करिया ।
मन में इचरज करण लागी के आज आ काई बात ब्ही !
इत्ता बरसां में ई हिरण, कबूड़ी अर खिरगोसियो पुस्ता समची
दियां बिना को रह्या नीं, आज वारा काम में आ खांमी
कीकर री । चारुं मारगां माथे उएरौ माकूल बंदोबस्त करि-
योड़ी है, पछे आ अजोगती बात कीकर ब्ही ! ओ बटाऊ
कोई हवा में उडने आवणा सूं तो रह्यो । कोई ठगां उप-
रलो ठग तो नीं है । ओ इत्ती निघड़क होयने कीकर आयो !

पण कुण ई व्हो, म्हें कांई दाद देवूं । इणरी मोत इणनै अठै लाय फंसायो दीसै । वा फंसायो है तो उणरी आदेस सिर आख्यां माथै । पण ठगां रें मन री बात कदेई होठ, आख्यां अर बांरा मूंडा माथै नीं आवै । पछे वो कोई मांमूली ठग नीं हो, ठगां री सिरदार हो ।

वो राजकंवर रें सांमी चमचेड़ री गळाई हंसनें पूछ्यो—
आज इण गरीब री झूपड़ी कीकर पधारणी व्हियो ।

राजकंवर निसंक भाव सूं जबाब दियो— गरीब री गरीबी मिटावण सारू ठगीजणनै आयो हूं । म्हनें ठा कोनीं के कीकर ठगाइजें । आप जल्दी ठगाई करो तो म्हनें ई कीं नेहचो व्हे ।

ठगां रें उण सिरदार जेड़ी दुनियां में ईं कोई दूजो लांठो ठग नीं हो । ठगाई में उणरी अकल अणूंती ई फिरती । पण ठगाई री कोई मांमली व्हे तो ! सीधापणा रें आगें उणरी कीं बख लागतो नीं । आज ओ कांई खिलको व्हेणो है ! सगळा रा सगळा टूंकियां रें आज कांई बळग्यो । खिर-गोसियो तो भवे ई भूल नीं करे ! सांमी ऊभो ओ तो निसंक कैवे के वो खुद चलायनें ठगीजण सारू आयो । आ बात तो सपना में ईं कीकर मांनणी आवै ! फिड़कली फिरै ज्युं अे सगळी बातां ठग रा मगज में फिरगी । पण वो बारै कीं दरसायो कोनीं । टीलोड़ी रें उनमांन हंसनें कहाँ— ओ हो, थें भूल सूं अठै आयग्या । ठगां री गुड़ी तो धकें परली बाजू रेंगी । नैड़ा रैवणा रें कारण कोई वेम ईं करे तो वामें दोस नीं । अठै भूल सूं ईं आया तो ईं भलां पधारिया । आपरी

घर है । पण आपनै ठगीजण रो इत्तो कांई कोड लागी ?

राजकंवर मुळकने कह्यो—बात तो आप सिरदार जोगी इज करी हो, म्हैं बुरी मानूं ई क्यूं ! घणा बरसां सूं ठगाई करणा रै कारण किणी माथे आसांनी सूं भरोसी करण रो आपरो सुभाव मुळगी ई खतम व्हेगो, आ बात ई म्हैं जाणूं हूं । पण भरोसा री बात माथे भरोसी नीं करणी, आ हुंस्यारी री बात कोनीं । आप जेड़ा सिरदार ने ई साच-झूठ री सावळ जाच नीं व्हे, तो आ आपरै जोग फबती बात कोनीं । आप भरोसी करी, म्हैं साचाणी ई म्हारी मरजी सूं ठगीजण ने आयो हूं ।

ठगां रो सिरदार आपरा डील माथे हाथ फेरतो फेरतो ई कह्यो—मरजी सूं ठगीजणी तो हाथां दांन करणी व्हियो । असली ठग तो दांन दियोड़ी चीज भेटे ई कोनीं । म्हारी जाण में ठग लोग इए भांत री मरजादा राख्या करै । जे आप भूल सूं ई म्हने ठगां रो सिरदार गिणी, तो म्हैं दांन के भीख दियोड़ी चीज ने म्हारा गुड़ा में ई नीं राखण दूं । आप चलायनै ठगीजण सारू आयग्या पण ठगणी तो म्हारै हाथ है । आप खुद ई इए बात ने तो जाणता व्हीला के ठग अर चोर में तो घणी फरक है । कोई अबूझ बाळक सोना सूं लदियोड़ी अकली ई धकै पड़ जावं तो ठग सपना में ई उण बाळक रै साथे धोखी नीं करे । बराबरी रा मोटचार साथे ठगाई रो आणंद है । आप मरजी सूं चलायनै ठगीजण वास्तं आया तो किणी मंगता रै पाखती जावणी हो के किणी बांमण रो घर सोधणी हो, अठे आयनै तो आप भूल ई करी । ठगां रा जल-

मता टाबर नै ई इण बात री गुटकी मिलिया करै । म्है आपरें साथै किणी भांत रो धोखो नीं करूं तो ई अठे आयनै आप धोखो तौ खायग्या । म्हनै इण धोखा रो ई पिरास्चित करणौ पड़ैला ।

राजकंवर सिरदार रा मूंडा सूं अं बातां सुणनै अचुंभा में आयग्यो । वौ दो तीन बार मीट गहायनै उणनै जोयो । छोटा कद रो धुगधुगो आदमी । आपरी ठोड़ माथे गमछो लपेटियोड़ी । बाकी सगळी डील उघाड़ी । माथे पळफ्लाती टाट । डील माथे कठेई रूंगतां रो लवलेस नीं । भोपणा अर भंवारा में ई बाळां री कोताई । फगत मूछधां रा नांव माथे आधी-दूधी तुगियां, चीता री गळाई धकै बधियोड़ी । इणनै घड़ती वगत बेमाता कदास रूंगतां री बात मुळगी ई पांतरगी । म्याळमिन्ना री गळाई कायरी आख्यां । ऊंदरा रै उनमान छोटा कांन । पीपळी री उगती कूपळ री गळाई पतळी अर छोटी लोळां । ओछो गाबड़ । सूंठ रा गांठिया जंड़ी छोटी अर गोळ नाक । टीलोड़ी री गळाई दांत । पतळा अर चितकबरा होठ । सीना री ऊपरली हाडकियां उफसियोड़ी । ओछा हाथ । मूंगफळियां जंड़ी छोटी आंगळियां । डोयली रै उनमान छोटी टांगां । ओछी फाबो । आंगळियां छोटी, हळदी रा गांठियां जंड़ी । झूमी सांप री गळाई छळगारी उणियारो ! उणियारो घड़ी घड़ी बदळती निगै आवै । ठगां रै सिरदार रो डील निरखनै राजकंवर नै अंड़ी लखायो, जाणें इणनै घड़ती वगत बेमाता रा कोठार में सगळी चीजां रो तुठार आयग्यो न्है । राजकंवर सोचण लागी के इण आदमी में अंड़ी काई खासियत

है के गुड़ा रा ठग इएनै आपरो सिरदार थापियौ ।

सिरदार ई राजकंवर रें मन री बात तुरत लखग्यौ ।
टीलोड़ी रें उनमांन आपरा दांतां सूं हंसनै कह्यौ— डील देख्यां
म्हारी सिरदारगी री कीं पतौ नों पड़ै, इणरा परचा तौ
वगत माथे ई मिळिया करै । अब आप सूं कांई चोज राखूं ।
आपरी दया सूं म्है ई इए गुड़ा री सिरदार हूं । चलायनै
ठगीजण सारू आया, इण खातर आज तौ छोड़ूं हूं, पए
कदैई म्हारी ठगाई रें हथ्यं चढ़ग्या तौ पछे दूजी बार ठगीजण
री थारै मन में रैवेला ।

आ कैयनै बी सिरदार बेटी बेटी करने दो तीन हेला
मारिया । हेलौ सुएतां ई बेटी सिरदार रा गाभा लेयनै आई ।
इए सिरदार री अर आ बेटी ! बेमाता सूं ई घणी बार
भूल व्है जाया करै । राजकंवर नै अँड़ी लखायो जाणै कोई
गुलाब री फूल थोड़ी ताळ वास्तै इण बेटी री रूप धारण
करनै आयौ है । बादळां सूं छूटता पालर पांणो री गळाई
निरमळ अर पावन ! बापड़ी ओपमावां री कांई जिनात के
बेटी रें किणी अंग री वै मुकाबली कर सकै ! बेमाता तबि-
यत सूं इण डील रें सांचं आपरो ओ पैलौ नमूनौ घड़ियो है ।

ठगां री सिरदार आपरी बेटी नै मसखरी रा भाव सूं
कह्यौ—बेटी, आंरो भोळापणौ तौ देख के अं खुद चलायनै
अठै ठगीजण सारू आया है । बिना किणी समचं अपांरा गुड़ा
में ओ पैलौ आदमी आयौ । सगळा रा सगळा टूंकिया अकण
सागै कठैई मर तौ नीं गिया । नीं मरिया है तौ आज सिंझ्या
रा बारी खैर नीं । मरग्या जकी तौ छूटग्या, नींतर वामें

मरणा बिचै ई भूँडी बीतला । जे यूँ भोळप व्हे जावें तो ठगां रा गुड़ा नें कोई घरती माथे टिकण देवें ! चलायनं भरोसा सूं मतें ठगीजण नें आयग्या है तो बेटी आंरी सरबरा में कीं खांमी मत राखजें । अं काई याद राखेला के ठगां रें सिरदार गोडें गियो तो ही ।

सिरदार रें संपाड़ी करियां पछे उणरा घरवाळा अर राजकंवर सगळा मैड़ी में आयनं बैठ्या । पैलपोत खुद सिरदार ई बोल्यो—महें सोच सोचनें कायो व्हेगी तो ई महें इण बात री सावळ म्यांनो नीं काढ़ सक्यो के दुनियां रा सगळा ठग चलायनं ठगाई तो करे, पण आज ताईं आ बात सुणणा में नीं आई के कोई आदमी मरजी सूं खुद चलायनं ठगीजण वास्तें ठगां रें गुडें गियो व्हे ! ज्यूं ज्यूं विचार करियो त्यूं त्यूं सांमी वत्तो पजियो । आप खुद चलायनं अठें ठगीजण सारू आया तो घणी आछी बात, अब आप खुद चलायनं इण बात री म्यांनो म्हांनं सावळ समझावो तो आपरी बड़ी मेहरबानी है ।

मैड़ी में सिरदार रा दो बेटा, अक बेटी, उणरी घरवाळी अर अक मिन्नी ही । वा मिनकी ई मिनखां री गळाई ठीमर बरणे अठें बातां सुणण सारू बंठी ही । सिरदार रा बेटा बेटी सगळा आपरी मां रें उणियारें हा । बेटी वाळी आब अर पसम तो मां में नीं ही पण दोनों री उणियारी खासो मिळतो ही ।

राजकंवर मांडनं विगतवार सगळी बातां बताई—जंगळ में डांडी रमणा सूं लेय, सूवटा, हिरण, कबूड़ा अर खिर-गोसिया तक । इण बिचाळें किणी रें मूंडा सूं सास लेवण री

ई आवाज नीं सुणीजी । कोरियोड़ा चित्रांमां री गळाई सगळा बोला बोला बैठा रह्या । ठगां रा सिरदार री आंख्यां जळ-जळी होवण लागी ती वी आंख्यां नें गमछा सूं पूंछतां होळें सूं कह्यो—आंख्यां में चार पांच दिनां सूं खाज घणी चालें, इण सूं हरदम पांणी पड़ती रेंवै । म्हें ती पूंछ पूंछनें कायी व्हे जावूं ।

बेटी डबडबाई आंख्यां सूं राजकंवर रें सांमी देखनें बोली—म्हारा काका रें ऊमर में आज पेंली वार आंसुवां री काम पड़्यो, इण खातर वानें बतावतां संको आवें । आप वां री झूठी बात री कीं ख्याल मत करज्यो ।

आ बात कैयने वा अपूठो मूंडो करनें बैठगी । आगे कीं बोली नीं कोई चाली । सगळां नें इण भांत बोला बोला बैठा देखनें मिनकी कह्यो—म्हारें भणायोड़ा पाठां नें कबूड़ी फेर भूल गयी । कदैई भेटका व्हेगा ती जाणं जैड़ी बितावूला । कबूड़ा जैड़ा ठोठी पंछी ती म्हें आज दिन ताईं नीं देख्या । अकल री आंमें वास्तो ई नीं व्हे । म्हें ती सिरदार नें घणी ई वार कह्यो के ओ कदैई कदैई अवस घोखी देवूला । जको इज बात व्ही । चंडाळ घरें आवें ती उणरी फींदी फींदी बिखेरियां बिना नीं छोड़ूं ।

वा आगे ई कीं कैवणी चावती ही के सिरदार रीस में दांत पीसती उणरें सांमी देखनें कह्यो—रांड, थूं बोली को बळें नीं । कबूड़ा री ती फींदी बिखरती बिखरती बिखरंला, म्हें अबारूं थनै पिछांटनें मार न्हाकूला । बीच में पंचायती मत कर ।

सिरदार री घसळ सुणनें मिस्त्री ती अकदम चापळनें बैठगी ।

पाछी चुंकारो ई नीं करियौ ।

पछे राजकंवर कंवण लागी — अबे तो आप सगळी म्हारै ठगीजण री म्यांनो सावळ समझग्या । घणी बातां आप लोगां रै समझ में नीं आवे तो नीं सही, पण म्हारो अेक अरज तो मानणी ई पड़ेला के आं भोळा पंछी जिनावरां नै मिनखां वाळी ठगविद्या मत सिखावौ । अपां मिनखां री पुन्याई तो खूटी जकौ खूटी इज, पण आं पंछी जिनावरां नै तो बगसौ ! लांबा चौड़ा ग्यांन री इण में कीं दरकार कोनीं, साव मामूली बात है, समझणी चावौ तो फट समझ में आय जावेला । थारै साथै कोई ठगाई करै तो थारा मन माथै कंड़ी बीतै ? वंडी री वंडी दूजा रै साथै बीत्या करै ! जे आ नाकुछ बात ई मिनख री समझ में नीं आवे तो पछे उणसूं मूरख जिनावर दूजौ फेर कुण व्हे सकं ! के तो मिनख रै आ बात हमेसां रै वास्तै समझ में आय जाणी चाहीजै के उरणे हमेसां रै वास्तै आपरी अकल री घमंड करणी छोड देवणी चाहीजै ।

किणी नै कीं बोलतां नीं देखनै राजकंवर वाने भांड वाळी वा बात सावळ मांडनै बताई । सगळी बात बतायां पछे वो कह्यो — वो भांड साधू रा भेख री उत्ती मरजादा निभाई के पगां पड़ियोड़ी ओडियां रै मूंड री माया नै धूळ रै उन-मान ठोकर मार दी । कांई मिनख जमारा रै खोलिया री मरजादा साधू रा भेख सूं कीं कम है ! थें लोग सगळी ऊमर मिनखां रै साथै ठगाई करी । आपरा पेट री खातर अणगिण मिनखां रा गळा वाढ़िया । धन रा लोभ में अणगिण मिनखां साथै खोसा-लूटौ करियौ ! म्हें तो जाणतौ के इण विध मिनखां

री हित्यावां अर खोसा-लूटी करण वाळा ठगां रं अंक री ठोड़ लाख पेट व्हेला । बत्तीस दांतां री ठोड़ अलेखूं दांत व्हेला । वं बिना माथा रा खईस व्हेला । पण अठे आयां पती पड़ियो के दूजा मिनखां री गळाई थारं फगत अंक पेट ई है । जबाड़ा में फगत बत्तीस ई दांत है । फगत आपरी अंक पेट भरण वास्तै थाने इत्ता पाप करणा पड़ें ! काई टंक रो हजार मण धान खायां बिना थारी ओ पेट भरीजें कोनीं । ठगाई री मरजादा री गुमेज बखाणती वगत थारा कांन उण गुमेज नै सुणै कोनीं काई ? थोड़ी घणी तो विचारं करी के चोरी करणा सूं किणी दूजा मिनख रै जीव में कळेस उपजै वो कळेस अर संताप ठगाई अर धाड़ा सूं ईं उपजें । थारी ठगाई सूं काईं ठगीजण वाळा रो काळजो ठरै जकी थें उणरी मरजादा री ठौर जतावो । थाने ठगाई री मरजादा री तो इत्तो घमंड है अर मिनख जमारा री मरजादा नै खिरियोड़ा पांन बिचे ई घणी अकारथ समझौ ! थाने ठगाई री मरजादा री गुमेज बखाणतां इत्तो ई विचार को आवै नीं । मिनख रा पण नै ई जकी बात तुरत समझ में आय जांणी चाहीजें, वा बात थारा मगज में ई नीं बैठे, बड़ा अचुंभा री बात है ।

ठगां री सिरदार होळें होळें अटकती बोल्यो — राजकंवर, इण में इत्ता अचुंभा री काई बात ! मिनख री समझ तो सम-झायां बणें ! आपरी मां री सीख मुजब आप आचरण करी अर म्है म्हांरें माईतां री सीख री आखर आखर पाळण करां । थें थारी सीख में कमी नीं पड़ण दी अर म्है म्हांरी सीख में कमी नीं पड़ण दां । आपरी सीख तो आ है के ठगाई करणा

सूं मिनख जमारा रौ खोलियो लाजे अर म्हाने जलम सूं ई आ सीख मिळी के जकी नांमी ठगाई नीं कर जाणं वी मिनख ई कांई । म्है म्हांरा टाबरां नै ई आ सीख देवां । माईतां री सीख नै नीं म्है लोपी अर नीं म्हांरी सीख नै म्हांरा टाबर लोपे । राजकंवर ! इण में इत्ता इचरज री कांई बात । आ बात कैतां ई सिरदार री आंख्यां सूं ठळाक ठळाक आंसू ढळ-कण लागा ।

ठगां री सिरदार रोवती रोवती ई बोल्यो— म्है इत्ता दिन आंख्यां में आंसू लावण वाळा मिनख नै मिनख ई को गिणतौ नीं । पण आज ठा पड़ी के आंख्यां में आंसू आयां बिना कोई मिनख ई नीं बणे सके । आप बताई जेड़ी बातां री म्हनै सपनो ई आ जातो तो म्है अं अकरम नीं करतो । पण आज दिन तांई म्हांने अं बातां कोई बताई व्हे तो ! मतं म्हांनै उपजी कोनीं । म्हनै पक्को विस्वास है के म्हारा माथा में अकल री ठोड़ कोई मोटी भाटी है अर काळजा री ठोड़ ई कोई भाटी घड़ियोड़ी है । आपनै विस्वास नीं व्हे तो अबारूं चीरनै बतावू । जे म्हांरी अकल अर काळजा री ठोड़ भाटा नीं व्हेता तो म्है अं पाप करता ? अबं अक बात फेर ऊंधी पजगी । इत्ता दिन समझ में नों आई जित्तै अं अकरम करता रह्या । आज आपरै समझायां समझ में आयगी तो अबं लारला अकरमां री लेखी देखनै अक घड़ी ई जीवण वास्तै मन नीं मानै । अबं कांई करूं, कांई नीं करूं ! आप म्हनै इणरी सावळ म्यांनो बतावो ।

राजकंवर वानै लाड सूं समझावतां कह्यो— आ बात

समझ में आतां ई थारो मरण तो पैला ई व्हेगो । अबे तो ओ नवो जलम है । जे उण माथा में वा इज अकल अर उण काळजा में वै इज भावनावां रेंवती तो मरणो वाजब हो । पण सगळी बातां पलटियां पछे जीवणी वाजब है । अबं तो सगळो ऊमर भलाई करनें ई मिनख जमारा रो साव लें सकौ !

ठगां री सिरदार कह्यो—म्हारा मन में तो इण वगत अंडी जच के आपनै म्हारै खांधे बिठाणनै वतूळियो व्हे ज्यूं सगळी दुनियां में भरणाटे फिरतो रेंवू । पछे देखजो के थोड़ा दिनां में ई दुनियां री कंडी रंगत बदलै !

पछे टीलोड़ी री गळाई मुळकतो कह्यो—इण गुड़ा रो तो म्है आपनै पूरण विस्वास दिराबूं के आज सूं दुनियां में ओ भलाई रो गुड़ी ई बाजैला । आपनै फगत म्हारी आ इज अरज है के आप किणी अक ठोड़ ई मत ढबिया करो । सगळी दुनियां ई आपरो घर है । वगत वगत माथे सगळै ई साळ-संभाळ राखो तो आ दुनियां तर तर सुधरती ई जावैला ।

राजकंवर ई पाछो मुळकनै जबाब दियो, जाणै चांद मुळ-कियो । कह्यो—ओ तो आपरो बडापणो है । पण अक बात हमेसां याद राखो के मिनखां री दुनियां किणी अक मिनख रें भरोसें को रेंवें नीं, वा तो हर मिनख रें भरोसें है ।

अबकी सिरदार री घरवाळी बोली—म्हां जंड़ा मिनखां रें भरोसें आ दुनियां रेंगी तो इणरो बंगो ई विणास व्हेला, इण में कीं मीणमेख नीं ।

राम् जाणै काई सोचनै ठगां री सिरदार जोर सूं खिल खिल हंसनै कह्यो—आप चलायनै खुद ठगीरण सारू आया तो

आ बात ई आपरी पार पटकूला ।

पछे आपरी घरवाळी सांमी देखने कह्यो—बोल, आपरें साथे बेटी री ब्याव करदां तो कैड़ोक ऊंची ठगाई रैबै ।

आ बात कयने वो खुद ई मन रें मते हंसण लागी, जाणे गिलगिली करियां कोई टीलोड़ी हंसे ।

धणी री हंसणौ ढबियो तो उगरी घरवाळी कह्यो—महने तो म्हारी बेटी रें करमां माथे पूरौ विस्वास हो । इणरें करमां रा जोर सूं म्है सगळा घरवाळा ई तिरग्या !

लाज रें मारी बेटी ऊठने मंडी सूं बारें गी परी । उणरें गियां पछे राजकंवर सिरदार रें सांमी देखने कह्यो—खुद मते चलायने ठगीजण सारू तो म्हैं आयो हो, पण म्हैं आप लोगां ने ई ठग लिया । काई इण बूता माथे ई ठगां रें गुड़ा रा सिरदार बाजता हा !

सिरदार जीवणा हाथ सूं आपरी सोनौ ठोरने कह्यो—म्हारा बूता री तो आपने अबै ठा पड़ेला । आप देखता जावो !



सातवो राजकंवर

परसेवा में घांण ब्हियोड़ी सातवो राजकंवर आपरें मारग चालतो सोचण लागो के ओ सूरज उजास रै साथै इण भांत रो बासदी नीं बरसावै तो कांई व्है ? पण बिना तपियां अर बासदी में सिकियां उजास कठे ? मारग में अेक नाडी आई तो वो बिसाई खावण वास्तै ढबियो । पाळ रा नींबड़ा री छीयां हेटे बैठतां ई उणरा मन में विचार आयो के वो तपसी रै अठै पाछो जावै जित्तै अेक बरस तांई हरियो नींबड़ी बण जावै तो कैड़ीक उम्दा काम बणै । केई पंछी म्हारी डालियां में आळा घालेला । आळां में पंछी इंडा देवैला, इंडा सेवैला । पछै कंवळा कंवळा बिचिया नवा जीवण री चैचाट करैला । मारग चालतो बटाऊ म्हारी छीयां में बैठने आपरो थाकेलौ मिटावैला । सरवर रो ठाडी निर-मळ पांणी पीयनै जद वो म्हारी छीयां तळै बैठैला तो उणरा डोल री सगळी बळत तुरत मिट जावैला । अं रूख, अं झाड़-बांटका सूरज रै तपणा रो ई परताप है । इण तपणा रै कारण ई तो रूखड़ां में जीवण सांचरै जको आपरो ठाडी छीयां सूं पाछो बळत मेटै । बापड़ा नाकुछ मिनख री कांई जिनात के वो कुदरत रा किणी काम में खांमी काढ़ सकै ।

थोड़ी ताळ बिसाई खायां पछै सरवर रा पांणी माथै पगल्या धरतो धरतो अेक ठाडी क्षोलौ आयो । सगळा डोल रै मांय ठाडीळाई वापरगी । पवन रा परस सूं थिरकता सर-वर रै सांमी देखनै राजकंवर सोचण लागो—इण पवन री

गति रो कुण काई मुकाबली कर सकें ! ओ सरवर रा पांणी माथे चाले, गैगाट करती नदियां रे माथे चाले, समंदरां रा अथाग अर अच्छेही पांणी माथे चाले, खूबड़ां रा पांन पांन माथे सरणाट दौड़तो बेवं, कांटां अर सूळां माथे निसंक चाले, भाखरां नें लांघती चाले, बलबलता धोरां माथे चाले अर वासदी रा जगजगता खोरां रो परस करती चाले । ओ बायरियो तो कठेई किणी ठोड़ चालतो ढबे नीं । बरसां चालतो रेंवे, जुगां लग चालतो रेंवे । बिसाई खावणा में तो समझे ई नीं । थाकेला रो नांव नीं जाणें । पछें म्हैं चालतां चालतां बिसाई क्यूं खाई ? थाकेलो मिटावण रो मोह क्यूं करियो ? इण बायरा सूं म्हने पाठ सीखणो चाहीजे । चालणो, लगतो ई चालणो । आडी, अंवली अर अबखी ठोड़ां माथे चालणो, बिना किणी रुकावटां रे चालणो । नीं विकट जागा सूं डरणो अर नीं आरांम रो ठोड़ ठमण रो मोह करणो । समझे जिणनं इण बायरिया रो तो फगत आ इज सीख है । राजकंवर भचकें ऊभो व्हियो । उण तपती लाय में ई आपरें मारग चालण दूको ।

रात दो अेक घड़ी ढली जद मारग में अेक गांव आयो । फिळा माथे ई अेक कुमार रो घर हो । उठे ढोल-ढमंकां रा तापड़घिन्न उडता हा । राजकंवर नें तिरस लागोड़ी हो । सोच्यो — दूजी ठोड़ कठे हेला मारतो फिरंला । अेक बार पांणी पीयां पछें नेखम । ठाडी रात रा खासो भली पेंडो पार बहै जावेला । वो फलसो खोलनं ग्वाड़ी रे मांय वड़ियो । चांतरी माथे डोकरी बैठो ही । उणनं पाखती ई किणी आदमी रो सबकी पड़ियो तो होळे सूं पूछ्यो — कुण बहै ई ?

राजकंवर कह्यो—मारग चालतो अक बटाऊ ! तिरस लागी , इण खातर पांगी पीवण नै आयो ।

डोकरी कह्यो—भलां आयो बेटा , भलां आयो । मारग चालतो बटाऊ तो परमेसर री ठोड़ है ! बेटा आ तो बता के थूं ब्याळू कठे करियो ?

राजकंवर कह्यो—जंगल में कंदमूळां री किसी कमी है मां , कुदरत रें अखूट भंडार सूं अलेखूं जीवां री पेट भरीजें , पछे म्हारा ब्याळू री उरणे काई भार ।

डोकरी बोली—कुदरत री होड तो कुदरत ई कर सकें , पण बेटा मिनख रें पांगी-लूंणी री मिनख नै ई कीं भार कोनीं । कुमारां री ग्वाड़ी रें पाखती निकळती बटाऊ आडै दिनां ई बिना रातवासो लियां अर बिना ब्याळू करियां सपना में ईं धकें नीं जा सकें । पण थूं तो खास टांगो साजियो । म्हारी बेटो सात दिन धिह्या परणीजनै आयो । दो पखवाड़ां ताईं उणरा लाड कोड व्हेला । म्हारी ग्वाड़ी सूं कोई जिनावर ई भूखो तिरसो नीं जावें । थूं बिना ब्याळू करियां जावें तो म्हनै सगळी रात ई नींद नीं आवेला ।

राजकंवर कह्यो—ढबणी तो नीं चावती हो , पण अबै मां री मनवार कीकर टाळूं ।

डोकरी घणा आदर अर घणा लाड सूं राजकंवर नै ब्याळू करायो । राजकंवर नै आपरी मां री याद आयगी । सोचण लागी—मां सूं सिरें अर पवित्तर चीज तीनूं लोकां में ईं फेर काई व्हे सकें ! मां रा खोळा में निसंक सूवणा सूं वत्ता आणंद री कल्पना तो देवता ई नीं कर सकें ।

ब्याळू करियां पछे राजकंवर डोकरी रें पाखती बँठी बींदणी रें बघावा रा ढोल-ढमंका सुणतौ रह्यो । आची ढळियां पछे सगळा घरवाळा सूता ।

आंगणा में डोकरी रें पाखती ई राजकंवर री मांची ढळियोड़ी हो । घड़ी डोढ़ घड़ी बातां-विगतां करतां करतां ई दोनां नै नींद आयगी ।

डोकरी सूं वंतळ करने राजकंवर सूतो तो सपना में आपरी मां सूं बातां करण लागी । बेटा रा आंसू पूछने मां कूवण लागी—बेटा, म्हारी याद में इत्तौ झूरण री कांई काम । दुनियां री सगळी मातावां नै म्हारें सस्तें ई जांण । अेक मां रा घाटा बदळै म्हें थनै सगळी मातवां सूप दी । पछे म्हनै याद करण री जरूरत !

के इत्ता में राजकंवर नै दो तीन वळा बेटा बेटा री आवाज जोर सूं सुणीजी । वी झिझकनै आख्यां खोली । आख्यां खोलतां ई मां ती अदीठ व्हेगी । पाखती रा दुखलिया माथे सूतोड़ी डोकरी हेला मारती हो । राजकंवर पूछ्यो—कांई बात है मां, म्हनै हेला मारिया कांई ?

डोकरी बोली—हां बेटा, थनै काची नींद सूं जगायौ, जिणरी माफी चावूं । इण कुबदी ऊंदरिया नै दो तीन वळा व्ही म्हारा पगां री आंगळियां कुरटें । अबकी औ म्हारा हाथ में झिलग्यो । म्हनै रातिदो है, दीसें कोनीं । म्हारा दुखलिया रें कनै विलोवणी पड़ी है, इए ऊंदरिया नै मांय घालनै माथे परात दे दे । झांझरके बींदणी विलोवणी मांडेला जद इणनै बाढ़ा रा बिलां में छुडाय देवूला । कांई करूं थनै फोड़ा घालूं ।

राजकंवर कह्यो—इण में फोड़ा री काई बात मां ! आ कयने वो डोकरी रा हाथ सूं ऊंदरा नै ले लियो । पछे डोकरी ज्यूं कह्यो त्यूं विलोवणा में घालने माथे परात उथांम दी ।

राजकंवर नै सूवतां ई पाछो नींद आयगी । पण इण वळा पाछो मां री सपनो नीं आयो । वो नेखम सूतो हो ।

झांझरके आंगणा में बींदणी रै आंवळां री आवाज सुणनै डोकरी कह्यो—बेटी, रात रा म्हारी आंगळियां नै दो तीन वार ऊंदरियो कुरटो तो म्हैं उणनै विलोवणा में घलायने माथे परात री ढकणी दिराय दियो । इण ऊंदरा नै झालनै थूं बाड़ा रा बिलां में छोडिया । दिनूंगा इणने सिरावण कराय देवूला ।

बींदणी परात री ढकणी आगो लेयने ऊंदरा नै झालण सारू हाथ घालियो तो जोर सूं बोबाड़ी करियो । बोबाड़ा रै समचे ई वा तो तड़ाच खायने विलोवणा रै पाखतो गुड़गी । पाछो चुस्कारो ई नीं करियो । हाथ मांय घालतां ई सांप फुफ्फकारो करने उणरा अगूठा नै तोड़ लियो । अगूठा रै बटकी भरतां ई उणरा माथा में जोर सूं बटीड़ी ऊठियो । उणी ठोड़ वा प्रांण मुगत व्हेगी ।

बींदणी री बोबाड़ी अर उणरो पड़णी सुणनै डोकरी हळफळाई बैठी व्ही । राजकंवर ई भचके मांचा सूं ऊभो व्हियो । दीवटीयो लेयने विलोवणा रै मांय देख्यो—अक गोरियावर सरप गूचळी मारचां बैठी हो । राजकंवर कह्यो—मां, इण विलोवणा में तो ऊंदरा री ठोड़ सांप है ।

डोकरी अरड़ां अरड़ां रोवण लागी । उणरो बेटी ई दौड़नै आयो । बींदणी नै झंझेड़ी तो वा माटी सस्त पड़ी हो ।

इत्ती ताळ में ई आ काई अणहोणी प्रगटी !

रोवणी रोंकणी अर खटापट री आवाजां सुणने सांप बिलौ-
वणा सूं बारें निकळियो । सरर सरर करती मोड़ा री थळी
सांमी चालण लागी । राजकंवर डोकरी नें थावस देवतां कहाँ—
मां, म्हें आछी तरें देख-भाळने विलौवणा में ऊंदरी घालियो
है । उणरी सांप कीकर बणियो, बड़ा अचुंभा री बात है ।

डोकरी रोवती रोवती ई कह्यो—काळ रा केई रूप व्हे
हैं बेटा । म्हारी बींदणी री इण मिस ई काळ आवणी है । अब
रोयां ई काई सांधी लागं ।

राजकंवर कहाँ—मां म्हें सांप रें लारें जायने इणरी सोय
करुंला, इणरी पूरो भेद जाणूला । पाछी आवूं जित्तें बींदणी
री लास नें जाब्ता सूं राखज्यो । थानें म्हारी आ इत्ती इज
भुळावण है । अब म्हें इण सांप रें लारें जावूं हूं । म्हारा
कैणा नें लोपजो मती ।

आ कैयने वो तो उण गोरियावर सांप रें लारें री लारें
वहीर व्हेगो । किणी मिनख नें आपरो लारी करतां देख सांप
सरणाटं दौड़ण लागी । राजकंवर ई उणरें बिरोबर खाथी खाथी
चालण लागी । गांव रें गोरवें जावतां ई सांप अक भरपूर ऊंट
बणग्यो । राजकंवर ऊंट री ई लारो करियो । थोड़ी ताळ में
अक राईको सांमी धकियो । वो उण छुट्टा ओठारू नें इण विध
अटकती देख उणरें मोहरी घाल दी । राजकंवर हाकी करने
कीं बोलणी चायो तो ई उणसूं बोलीजियो कोनीं । राईको ऊंट
ने शेकाणनं बिना पिलाण ई माथे बैठग्यो । वो अड लगा-
यने जोर सूं मोहरी री तणकारी दियो तो ऊंट अणूती तेज

दौड़ियो । राजकंवर उएने पकड़ण सारू अर राईका नै पालण सारू घणी ई खपियो पण ऊंट हाथे नीं आयो । सांमी जावतो दीसै पण छेती नीं भागै ।

अचाणक ऊंट री मोहरी तूटगी । अंवळी खायने ऊंट तापड़ बाई के राईकी नीचे धरती माथे पड़तो ई दीस्यो । ऊंट छाती माथे गोडी देयने उण राईका नै ठोड़ ठोड़ सूं तोड़ न्हा-कियो । राईका नै मारियां पछे वो ऊंट अेक वेलिया री रूप धारण कर लियो । राजकंवर वेलिया रें लारें खाथो खाथो चालण लागो । थोड़ी दूर जातां ई अेक बाळदियो सांमी धकियो । वो सूना मारग माथे इण विध अेकला बळद नै छुट्टो फिरतां देख उणरें नाथ घालदी । हाथ में राहड़ी झालने वो बळद रें आगें वहीर ब्हियो । राजकंवर अणूता वेग सूं दौड़ने बाळदिया रें कने पूगो । हांफतो हांफतो कह्यो — भाई, इण बळद री राहड़ी छोड़ दे । पैला वो ऊंट बणने अेक राईका नै मारियो । उणसू पैला ऊंदरा री सांप बणने बींदणी नै मारी । थने ई ओ अवस हांण पुगावैला । म्हारी कणो मान अर इण बळद रें लारें छूड़ वगा ।

बाळदियो मन में जाण्यो के ओ मिनख इण बळद नै उचकावणी चावै । आज पैली कदेई ऊंट री बळद बणियो है ? म्हने ओ कांई झांसी देवें । मुळकने कह्यो — बावळा, म्हैं बाळ-दियो हूं, थारे जेड़ा ठग तीन सो तिरैपन देख्या हूं । म्हने हांण पुगावै तो छो पुगावतो, थूं घाटो पूरजै मती ।

के इत्ता में वो बळद जोर सूं उए बाळदिया रा मोरां में भेटी दी । तीखो तच्च सींगड़ी मोर पार करने सीधी पेट

रै बारै निकळग्यौ । सींगड़ा में पोयनै वो माथो ऊंचो करियौ ,
 दो तीन भरणाटियां देयनै बाळदिया नै नीचै पटक दियो ।
 अक ओडो रै मूंडे उणरा पेट सूं आंतड़ियां बारै आय पड़ी ।
 पड़ियां पछे वो तो चुळियो ई कोनीं । राजकंवर रै देखतां
 देखतां अक ई पलक में सगळी बात व्हेगी । उणरो कीं जोर
 नीं चाल्यो । दो तीन वार आखूंड़नै बळद जोर जोर सूं घड़ूका
 करिया । पछे उठा सूं दौड़ियो । राजकंवर ई उणरै लारै
 दौड़ियो ।

देखतां देखतां वो बळद अक रूपाळी हिरण बणग्यो ।
 लारली सगळी बात नै बिसराय वो तो चाव सूं जंगळ में
 घास चरण लागो । फुर फुर करती आपरी पूंछ हिलावती जावं
 अर घास चरती जावं ।

के इत्ता में अक दूजी राजकंवर घोड़ा री असवारी करियां
 उण हिरण रै पाखती आयो । वो अक जंगो सूअर री सिकार
 सारू चढ़घो हो । चरता हिरण रै गळाकर नीसरनै वो थोड़ी
 सो घकं निकळियो के वो हिरण अक केसरी सिंघ री रूप
 धारण कर लियो । मलापनै सिकारी राजकंवर रै माथे हत्थळ
 बाई । राजकंवर तो लुढ़कनै तुरत घोड़ा सूं हेट पड़ग्यो ।
 दूजी हत्थळ वो सिंघ उण घोड़ा रै मेली जको घोड़ी तो उठे ई
 ढिगली व्हेगी ।

लारो करता राजकंवर रै सांमी अक वार देखनै वो सिंघ
 उठा सूं मलापियो । राजकंवर उणरै लारै री लारै दौड़ियो ।
 दौड़तां दौड़तां वो सिंघ थोड़ी ताळ में अक रूपाळी अपछरा
 री रूप धारण कर लियो । अपूठी फिरनै अक पीपळी दै

हेटै ऊभगी ।

के इत्ता में अक राजा सिकार रमतौ उण पीपळी रै गळाकर नीसरियो । उणरी मोट उण अपछरा रै माथे पड़ी । मन में कह्यौ—आज रौ ओ सिकार तो नांमी भरे पड़ियो ।

अपछरा मुड़नै राजा रै सांमी मूंडी कर लियो । मधरी मधरो मुळकण लागी । जाणं किरत्यां रौ झूमकौ हंसियो । पछे राजा रै हरख रौ तो कांई पार !

राजकंवर दौड़तौ दौड़तौ उण पीपळी रै पाखती आयो । हांफती हांफती राजा नै लारली सगळी बात बताई । कह्यौ—आप इण अपछरा रौ लोभ मत करी । तुरत घोड़ी बगडायनै अठा सूं दौड़ जावो । आ अपछरा नीं आपरी मोत है !

राजा हंसनै कह्यौ—जे मोत अँड़ी रूपाळी है तो पछे उणसूं डरण री कांई जरूरत ! म्हैं तो खुसी खुसी इण मोत नै वखंला ।

राजकंवर कह्यौ—म्हारौ कैणौ मानौ । आप इण अपछरा रै लारै धूड़ वगायनै अठा सूं तुरत जावो जकी बात करी ।

राजा मन में सोच्यौ के इण अपछरा नै देख्यां ती देवतावां रा ई मन डिगे, पछे मिनखां रौ कांई जिनात । ओ बापड़ी कणाकली इणरी लारौ करै है । म्हारै थकां इणरी बस कद चालै, इण सूं म्हनै जावण री अरदास करै । कह्यौ—आ अपछरा तो राजमैलां में ई सोभा देवै, थारी झूपड़ी में ओपे कोनीं । अबै थूं इणरी तिथ छोड दै । इण अपछरा रा भाग के म्हैं वगत माथे आयग्यो ।

अपछरा राजा रें सांमी देखनं फेर मुळकी । राजा ती उणरा रूप आगें बावळी व्हेगो । अपछरा दौड़नं उणरा घोड़ा रें पाखती आई । राजा उणनं खांचनं आपरें लारें बिठाण ली । घोड़ा रें अड लगाई । घोड़ी ती पछें पवन रें वेग उडियो । राजकंवर ई घोड़ा रें लगटगं दौड़ण री चेस्टा करी । थोड़ी ताळ में ई राजा रें लारें बंठी वा रूपाळी अपछरा अक सूअर री रूप धारण कर लियो । राजा रा पसवाड़ा में दातळी जरकाई जकी आंतड़ियां बारें लाय फेंकी । राजा ती उठे ई झूड़ भेली । घोड़ी उठे ई आपरा घणी री लास सूंघती रह्यो । ठळाक ठळाक रोवण लागी ।

राजा नं मार परो नं सूअर ती उठे ढबियो ई कोनीं । राजकंवर ई उणरो लारो नीं छौडियो । आ काई माया है ? इणरो पूरो उकरास लगावणी चाहीजें । वो सूअर ती थोड़ी ताळ में अक विकराल भेंसी बणग्यो । केरड़ा री छीयां में मस्त होयनं ऊभग्यो । दौड़ती दौड़ती राजकंवर उणरें पाखती आय-ग्यो । भेंसी अक हाथ लांबी जीभ काढ़नं राजकंवर रें सांमी देखियो । बोल्थी—कुमारी रा घर सूं लारो करतां थारा पगां में पांणी पड़ग्यो दीसं । सेंठी ती थूं ई अणूंती रह्यो ।

राजकंवर जबाब दियो—नीं तो म्हनं पगां रें पांणी री सोच है, नीं मरणा री कीं चिंता है । ऊंदरा सूं लेय भेंसा तक री इण माया री लेखी जाणणी चाबूं ।

भेंसी कह्यो—राजकंवर हाल आपनं इण सुभट माया री जाच नीं व्ही । इण में भेद री किसी बात ! जकी बातां आंख्यां सूं देखी, उणरें सिवाय कीं दूजी माया नीं है । कुमारी

री बींदणी सूं लेय इण सिकारी राजा तक म्हें जित्तां नै मारिया, बांरो काळ आयग्यो ही । काळ रा जिण रूप सूं वाने मरणी हो, म्हें वगत माथे वो ई रूप धारण कर लेवती । बां सगळा रूपां नै आप निजरां देख्या हो । मरणा रे सिवाय काळ री तो कीं दूजी माया कोनीं । इण में आपने भेद अर इचरज री बात काईं लखाई । जलम मरण बिना तो अेक पल वास्तं ई दुनियां री काम नीं चाले ।

राजकंवर कह्यो—पण इण भांत री अकाळ मौतां बिना दुनियां री काम नीं चालती व्हे तो नीं सही । बरसां परवाण बुढ़ापा में मौत व्हे जावें, तो इण में कीं दुख री बात नीं, पण रमतां, दोड़तां, सिकार करतां अर विलीवणी करतां यूं अणचींती मौत आयनै प्राण काढ़ लेवें तो सगळा जलम नै ई विफळ कर न्हाकं । पंछी, जिनावर अर मिनखां री जूण में जलम री अेक मापी, अेक वगत अर अेक मंगळ घड़ी है, पण थारी इण मौत रो तो कीं मापी अर कीं वगत कोनीं ।

आपरी आख्यां रा मोटा मोटा ढोळां नै भंवायनै भेंसो केवण लागो—म्हें जमराज री सत्रारी री भेंसो हूं । केई जुग बीत्या म्हनै मौत री माया देखतां नै । आज काले मौत री गिणती इण विध बधगी के जमदूत पूग ई नीं आवें । खुद जमराज अर म्हनै ई न्यारो न्यारो दूतां री काम करणी पड़ें । पण मौत रो ओ सगळो रासो मिनख अर जीव खुद आपरा हाथ सूं बिगाड़ियो । अबे सुधरतो नीं दोसे तो वो जमराज में कसूर काढ़ें । वगत परवाण वनस्पति रा घूटा ऊर्ग, सगळा झाड़, बांटकां अर खूंखड़ा री फबती ऊमर है । पण जिनावर

वाने आपरा पेट रो खातर चरै, जिनावर जिनावरां रो भक्सण करै, मिनख आपरै हाथां अणमाप रूखड़ा वाढ़ै, हरियाळी रो खातमो करै, धरती रै अणगिण जीवां रो सिकार करै अर पांणी रो अलेखूं मछळियां नै मारै, जद जमराज रो आघा सूं वत्तो कांम जिनावर अर मिनख खुद सारण लागगो तो पछे जमराज वाने ई काळ रो अवतार मान लियो । करमां सूं करमां रो लेखो जुड़तो गियो । मिनख रो करणी आगे खुद जमराज ई नीं पड़प सकिया । जे आपरा कांम में अबे थोड़ी घणो ई जमराज ढील बरतै तो मिनख खुद जमलोक रो राजा बन जावै । इण डर सूं जमराज नै अणूतो सावचेत रेणो पड़े । अकाळ मौतां रो सरूआत जमराज नै मिनख रा डर सूं ई चालू करणी पड़ी, नींतर वारो कदेई जम-पद खुस जातो । मौत रा माप नै बिगाड़णिया थें मिनख ई हो । जमलोक में अठी-उठी रा भणकारां सूं अे थोड़ी घणो बातां जाणूं हूं जको आपनै बतावूं । आं बातां रो खरो अर पुस्ता म्यांनो तो खुद जमराज ई दे सकै । थें चालणी चावो तो म्है धानै जमलोक ले जा सकूं । खुद जमराज केई बरसां सूं किणी मिनख सूं भेटणो चावै । पण वाने मिनख रो डर ई अणूतो लागै । म्हने केई बार छानै छानै भुळावणा दी के किणी जीवता मिनख नै अकर जमलोक लावूं । पण आज दिन तक कोई जीवतो मिनख इण वास्ते त्यार नीं व्हियो । जमपुरी रो नांव सुणतां ई उएने मौत आवै । थूं पेली बार इत्ती हीमत करने म्हारो इत्ती लारो करियो । सागै रो सागै काळ रो इण माया रो उकरास ई लगावणी चावै । सेवट जमराज रो मंसा केई बरसां सूं आज

पूरण तो व्ही । थूं मन में किणी बात री डर मत आंणै ,
 म्हैं थनै जमलोक तक अेल ई नीं आवण दूं । थूं निसंक
 होयनै म्हारै माथे बैठ जा । सूरज री किरणां रें वेग म्हैं थनै
 ठेट जमराज तक पुगाय देवूला । आज दिन ताईं म्हारी पूठ
 माथे जमराज रें बिना कोई देवता ई असवारी नीं कर सकियो ,
 म्हैं थनै आज वो आदर देवूं हूं । म्हनै बिस्वास है के जम-
 राज इण बात सारू म्हारै माथे नाराज नीं व्हेला । बोल ,
 थूं इण माया री पुस्ता भेद जाणणी चावै तो म्हारी पूठ माथे
 निसंक बैठ जा ।

राजकंवर कह्यो—इण में डरण री काईं बात ! अणमाप
 खुसी रें कारण म्हारा मूंडा सूं कीं बोल ई नीं निकळे जिणरी
 तो म्हैं ई काईं करूं । अबं तो थूं अेक पलक ई अठे फालतू
 मत गंवा ।

आ कैयनै राजकंवर उचकनै भेंसा री पूठ माथे बैठग्यो ।
 बैठतां ई भेंसो तो आंधी री काळी गोटी ऊठे ज्यूं सीधो ऊपर
 ऊठियो । अरजण रें हाथां छूटघा तीर रें वेग सणण सणण
 करतो वो हवा नै चीरतो ऊंचो उडतो ई गियो । राजकंवर
 रें कानां रा पड़दा जाणै फाटण लागा । उणरा फीफड़ा जाणै
 चीरीजण लागा । थोड़ी ताळ वास्तै तो उणारी आंख्यां सांमो
 अंधारी छायग्यो , पण पछे वो आपे ई वेग रें हेवा व्हेगो ।
 दो तीन बार पलकां झपायनै वो आपरी लोक देखण सारू
 नीचें भाळियो—नदियां तांणी रा डोरा रें उनमान पतळी
 अर मकड़ी रा जाळा रें उनमान धोळी दीखती ही , भाखर
 घरकूल्यां रें उनमान छोटा छोटा उभरियोड़ा दीखता हा । रूखड़ा

तौ जाणै हरियाळी री टिपकियां, समंदर जाणै माटी री परात में भरियोड़ी पांणी अर राजावां रा किला परकोटा कीड़ियां रै धोळा ईडां ज्यूं लागता हा । राजकंवर मन में सोच्यो के म्हारी दुनियां री आ काई रंगत बदली ? इत्ती ऊंचाई माथे आयां म्हारा लोक रा सगळा भेद लोप व्हेगा । जमलोक इत्ती ऊंचो है काई !

भेंसो पूछ्यो — कीं डर तो नीं लागे ?

राजकंवर कह्यो — ऊं, हूं किणी बात री डर नीं लागूं । थूं वेगा सूं वेगो पुगावें जकी बात कर । अबै राजकंवर नै कीं मगसो दीखण लागो । आख्यां फाड़नै वो फेर आपरी दुनियां नै ध्यान सूं देखण री चेस्टा करी । अबकी उएनै नीं तो घरकूलिया निगं आया, नीं तांणी रा धोळा डोरा निगं आया, नीं हरियाळी री टिपकियां ई दीसी अर नीं पांणी सूं भरघा खबोचिया ई निगं आया । उणनै तो फगत दातळा री गळाई अक पतळी अर भंवियोड़ी चीज दीसी । वो भेंसा नै पूछ्यो — म्हने आ दातळा जेड़ी अक पतळी अर भंवियोड़ी चीज काई दीसे ?

भेंसो हंसनै जबाब दियो — अठै आयां रावळी दुनियां री सरूप अंडी ई दीस्या करै । अबै अपां खासा ऊंचा आयग्या । हां थोड़ी ताळ फेर नेठाव राखी । अबै तुरत ई काळी बोळी अंधारी आवण बाळी है । आप उणसूं डरजो मती । इण अंधारा सूं ई जमपुरी री सींव सरू व्हेला । म्हांरा लोक में बारूं ई मास अंधारी रेवै ।

अंधारा री बात करतां ई अंधारी सरू व्हेगो । राज-

कंवर नै दीखणो मुळगो बंद व्हेगो । कांनां में फगत वेग रै कारण सणण सणण रो आवाजां आवतो ही ।

अचाणक भेंसो बोल्यो—आपनं अेक तकलीफ करणी पड़ेला । आप पूठ सूं उतरनं म्हारो पूछ झाल लो । पूठ माथे आपनं चढ़ोड़ा देख जमराज अणूतो खीज करेला । अबै तो थोड़ी सी भांय है ।

राजकंवर कह्यो—अपारै खोज वाळी बात करणी ई क्यूं । पूछ झालणा में म्हारो किसी कुरब-कायदो घटे ।

आ बात सुणतां ई भेंसो आपरो पूछ ऊंचो करियो । राजकंवर पूछ झालनं नीचे टिरग्यो ।

राजकंवर रा कांनां में अचाणक रोवणा-रींकणा रो अण-गिण आवाजां सुणीजी । वो पूछ्यो—रात रा ओ रोवणो-रींकणो कुण मांडियो । म्हारो जीव काचो अंत इज घणो है । म्हें किणी रो रोवणो नीं सुण सकूं ।

भेंसो कह्यो—अबै आपरं अठा रा दिनां रो बात तो साव पांतर ई जावो । म्हें आपनं पैला ई कह्यो के अठे जमपुरी में दिन व्हे ई कोनीं । अर जमपुरी में ई थाने रोवणो-रींकणो नीं सुणीजैला तो पछे कठे सुणीजैला । अेक दिन तांई मरियोड़ी काया रो जीव अठे जमपुरी में रह्या करे । अठा सूं सुरग-नरक रो फरमाण निकळियां जीव आपरे ठायें जावें । नित अणगिण प्रांणी मरें । वां मरियोड़ा प्रांणियां रा जीव आपरा घरवाळां नै याद कर करनं रोवें । अठा सूं बारै निकळियां बे आपरो लारली सगळी दुनियां नै बिसर जावें । अठे फगत जम-राज रै घरवाळा अर जमदूत हंसणो जाणें । बाकी सगळा जीव

अस्टपौर कूकें ।

राजकंवर कह्यो—महँ तो किणी रो रोवणो-रीकणो बर-
दास्त नीं कर सकूं । आ जमपुरी तो थारा जमराज नै ई
सोभा देवें ।

भेंसी बीच में ई बोल्यो—सोभा देवें नीं देवें, इण लोक
रा देवता तौ जमराज ई रैवैला पण अबं जमराज रो दरबार
आवण वाळी है, थें कीं बोलो-चालो मती थारो सगळो रोस
पछै म्हारै माथं उतरैला ।

राजकंवर नें मन रें माडांणी ई बोलो रैवणो पड़्यो ।
भेंसी अेक ठोड़ आयनं ढबियो । सांमी अेक उजास रो पुंज
झबाझब करती हो । भेंसी उण पुंज रें सांमी माथी निवायनं
कैवण लागो—भगवन्, अतलोक सूं अेक भलो आदमी अठे
आवण रो मंसा दरसाई तो म्हें पूंछ पकड़ायनं अठे लें आयो,
अबै आपरो ज्यूं इच्छा व्है ज्यूं करी ।

जमराज कीं दूजा ध्यान में हा । पूरी बात सावळ सुणी
कोनीं । कह्यो—इण में किसी नवी बात । अतलोक सूं रोज
ई अणगिण मिनख आवं है । खोडां में फेंक दें । कालै सुरग
नरक रो फरमाण निकळियां वो मतं ई आपरें ठायें जावें
परोला ।

भेंसी कह्यो—राजन्, आप सही फरमावो । अठे नित
अणगिण मिनख आवं तो है, पण वें मरियां पछै आवें । म्हें
आज जीवता मिनख नें लायो हूं ।

जीवता मिनख रो नांव सुरातां ई जमराज ई अेकाअेक
झिझकिया । वारे उजास रो पुंज वत्तो झबाझब करण लागो ।

डरता डरता कह्यो—मरियोड़ा मिनखां री जीव ई म्हनें बात बात में पजावें, पछे ओ जीवतौ मिनख तौ म्हारी राळ ई पाड़ देवैला ।

भेंसी पाछी जबाब दियो—इणरी तो म्हें ई कांई करूं । आप केई वार मंसा दरसाई, म्हनें भुळावणां माथें भुळावणां दो के किणी जीवता मिनख नें अठे लावूं, आपनै केई बातां-विगतां करणी है । म्हें तो आपरें हुकम री ताबेदार हूं । आप नाराज व्हो तो म्हें अबारूं पाछी पुगायने आय जावूं । जातां कांई जेज लागे ।

भेंसा रें कंतां ई जमराज नै लारली बातां याद आयगी । याद आतां ई मन में अणूता डरिया, पण ऊपरला मन सूं खुसी दरसावतां कह्यो—नीं नीं, बावळा इण में नाराजगी री कांई बात ! म्हें तो किणी दूजी बात रा विचार में पजियोड़ी हो । इणसूं ध्यान देयनं थारी बात सावळ सुणी कोनीं । ओ तो थूं नांमो काम करियो । केई बरसां रें पछे आज म्हारी मंसा पूरण व्हो । जीवता मिनख रें वास्तें तो म्हारा मन में इंदर भगवानं सूं ई वत्तो आदर है । इण करामाती जीव सूं मिळनै म्हारी मन अणूतौ राजो व्हियो ।

पछे राजकंवर रें सांमी देखनै कह्यो—आप अठे म्हारें जोड़े पघारो । मोत्यां जड़्या इण सोना रा आसण माथें बिराजो । ओ तो आपरो घर है । मन में किणी बात री कोई संका मत राखजो ।

राजकंवर कह्यो—संका राखनै म्हनै अठे करणी ई कांई है । म्हें तो आप नें सवाला री कांयस कर करनै काया

कर देवूला । म्हारी बातां रा खरा अर पुस्ता जबाब तो देवणा ई पड़ेला ।

जमराज नै मिनखां रै आं सवालां री ई तो अणूंतो डर लागतो हो । अर ओ मिनख तो आवतो ई सीधी सवाल पूछण री ई बात करी । पाछा खरा अर पुस्ता जबाब नीं मिळिया तो ओ भूंडी बितावेला । जमराज री अेक मोटी कमजोरी आ ही के वें आपरी बेटी नै पूछघां बिना कीं काम नीं करता । वें अेक जमदूत नै खास सांनी करी तो वो जमराज री बेटी नै बुलायनै लायी ।

बेटी रै चारुमेर ई उजास री पुंज दमकती हो । राज-कंवर उणरो रूप देख्यो तो देखतो ई रंग्यो । गावा घी री सुद्ध पावन जोत रै उनमान पळपळाट करती जम री बेटी राज-कंवर रै जोड़ आयनं बैठगी । राजकंवर री उणियारो देखनं उणरो ई माथो अेकर ठणकियो । उणरै रूप री जोड़ री कोई मिनख मिळियो तो खरी । अर वो ई अतलोक में बसण वालो । बासदी रा परस सूं जिण भांत मेण पिघळे, उणी भांत राजकंवर री रूप देखनं जम री बेटी री गुमेज मांय री मांय पिघळण लागी । जमराज आपरी बेटी रै अंतस री इण बात नै सावळ समझी कोनीं । वें उणरै सांमी देखनं मुळकता थका कह्यो—देख तो बेटी अपारी इण जम-पुरी में आज पैली वार कोई जीवती भली मिनख आयी । अर वो आवतां ई सवाल-जबाबां रा फंद में फालतू अळूझणी चावें । म्है कंवू के अठे आया हो तो कीं आराम करी, इण लोक री कीं आणंद ली, सवाल जबाब तो जिण दिन चावांला

उणो दिन संपूरण भै जावैला । बोल, बेटी थारी काई मरजी है ?

जमराज रै इण सवाल री जबाब देवणी ई बेटी रै वास्ते भारी पड़ग्यो । आज पैली वा कदैई किणी बात वास्ते नों अटकी । वा कीं जबाब देवणी चावती ही के उणनै लखायो — गूंद री गळाई कोई चीज उणरा गळा में सेंठी चिपगी है । उण सूं तो बोलणी ई नों आवै । वा उण चीज नै गिटण री चेस्टा करी ।

राजकंवर उण वगत उणरै मूंडा सांमी देख्यो । कमोद भै जैड़ा निरमळ पांणी रै आरपार कीं चीज दीखै ज्यूं जम री बेटी रै गळा मांय उतरती चढ़ती थूक सुभट दीखती ही । राजकंवर दो तीन बार सावळ उणरी छिब नै निहारी । अंडी लखायो के जाणै मीठा पांणी री कोई अथाग झील उणरै चारूं-मेर छोळां मारै है ।

वा अटकती अटकती बोली — अठे पधारचा हौ तो घणी आछी बात । काले आपनै सवालां रा जबाब मिळ जावैला ।

धरमराज बीच में बोल्थो — आप कीं हिसाब-किताब ई देखणी चावो तो मुनीमजी कना सूं दिखाय देवूला । आपरै खपतां वै हिसाब ठीक राखण सारू खासी माथा फोड़ी करै है, पण तो ई आप अेकर निजर बारै काढ़ लिराजो । कोई गलती व्हेला तो तुरत सुधार व्हे जावैला ।

राजकंवर कह्यो — म्हनै हिसाब किताब कीं नों देखणो । सीधो आप सूं ई काम है । काले माथे बात पड़ी तो काले निपट लेस्यां ।

भेंसो आपरो भोडक हिलायनं कह्यो—आप अतलोक रें दिनां रें भरोसं मत रेंजो । अठे दिन लांठा ब्हिया करे, आपनं पैला कंदूं ।

जमराज रीस में झिड़कतां कह्यो—थारो कित्ती बार माजनी पाड़्यो तो ई हाल समझ में नीं आई । थूं फालतू बीच में क्यूं पंचायती करे । अतलोक रा दिन अतलोक में काम आवे अर अठा रा दिनां सूं अठे काम सरें । अ थारें जंडा मूरख कोनीं जको आपनं आ छोटी सी बात ई याद दिरावणी पड़े ।

राजकंवर अंतावळ दरसावतो कह्यो—आ तो मौका माथें ठोक याद दिराई । म्हनं अठा रा दिनां री कांई जाणकारी । म्हनं पाछो म्हारा लोक में जावणो बोन जरूरी है । कुमारी रें घर रा सगळा आदमी म्हनं उडोकता व्हेला । नींतर तो म्हें आप कैवता जित्ती ठेर जाती ।

जमराज राजकंवर नें तो कीं नीं कह्यो, पण भेंसा रें सांमी घसळ करनं कह्यो—थूं अठे ऊभो ऊभो कांई वागोलें है, थारी गडाळ में क्यूं नीं जावें । पाछो कोई नवो काम नीं भुळावूं जित्ते उठे ई बंठो रेंजो । घणा दिन व्हेगा भारणी उतरियां नें, जिए सूं माथो सूजग्यो दीसं ।

भेंसो मोळी पड़नं उठा सूं वहीर तो व्हेगो, पण जावतां जावतां ई राजकंवर रें सांमी देखनं होळें सूं बोल्यो—थोड़ी घणो वगत मिळें तो अेकर आप म्हारा सूं फेर मिळज्यो ।

जमराज जावता भेंसा सांमी थोड़ी ताळ तांई खारी निजर सूं देखता रह्या । पछे नरमाई सूं राजकंवर रा नांव-घांम पूछनं कह्यो—म्हें अबारूं पाछो हाजर व्हेवूं, जित्ते आप राज-

कंवरी सू बंतळ करी । इण जेडी सरूपवान अर समझदार बेटी
तो म्है तीनू लोका में ई नीं देखी । इणरी बातां सुणने आपरी
मन अणूतो राजी व्हेला ।

उठा सू वहीर होयने घरमराज सीधा आपरं मुनीम
चित्रगुप्त रं पाखती गया । अक कोठरी रं मांय बूढ़ी खंखर
चित्रगुप्त सूखोड़ी खेलरी व्हे ज्यूं अक लांबी बही रं माथे
निजर गडायां बंठी ही । जमराज वतूळिया रं वेग कोठरी रं
मांय वड़िया । आखता पड़ने कंवण लागा — मुनीमजी, म्है
पूछू जकी बातां फटाफट बतावी, अक अंडी ई कावळ बात
पजगी है ।

पछे वे चित्रगुप्त ने राजकंवर री नांव-घाम बतायने
कह्यो — इण नांव री खाती निकाळी, इणरं करमां री विगत-
वार लेखी बतावी के ओ कंडीक आदमी है ।

घरमराज री खाथाई देखने मुनीम जी रं पसीनी आयग्यी ।
वे हळफळिया अठी-उठी पांनां पलटण लागा । परसेवा रा दो
तीन छांटा बही माथे पड़ग्या । घरमराज चिड़ने कह्यो —
म्हारो डील तो बरफ री गळाई ठाडी है अर थाने इत्ती तपत
कीकर लखावे । सो वार के दियो के बहियां ने हिफाजत सू
राख्या करी, कदेई मिनख रं हाथ फंसग्या तो छुडावणी दूभर
व्हे जाबेला । पसीनी पूंछण वास्तं थाने अक गमछी ई हाथ
नीं आवे । हिसाब-किताब री ती भूंडी पोखाळी करियो ।
अबे ई फुरती सू बतावी जकी बात करी ।

मुनीमजी फड़ाफड़ा पांनां उथलण लागा । अचाणक खुद
घरमराज री निजर उण बही माथे पड़ी तो वे जई देतां

कह्यो—मुनीमजी थांरौ माथी तो नीं भंवग्यो दीसै ? इण नांव री खातो रोजनांमचा में कीकर लाधेला ! फुरती सूं खाता बही निकाळी ।

मुनीमजी फीटा पड़नै होळें सूं बोल्या—आपरी घसळ सुणतां ईं म्हें तो चेताचूक व्हे जावूं । पछें तो म्हारी मगज ईं काम नीं करे । आप निरांत सूं थोड़ी ताळ बिराजो, म्हें अबारूं सही सही बातां बांचनै सुणाय देवूला ।

धरमराज धम्म देती रा बहियां री अेक थप्पी माथें बैठग्या । सेवट हेरतां हेरतां मुनीमजी नै राजकंवर रै नांव री खातो मिळियो । थूक उछाळतां कह्यो—मिळग्यो हुकम, मिळग्यो । हाथां खतावणी करियोड़ी खातो जावें तो जाय कठे । म्हने तो आछी तरं इण खाता री ध्यान हो । आप फरमावो तो सगळी पड़नै सुणावूं ।

धरमराज कह्यो—पूरो री पूरो खातो सुणूं जित्ती म्हने वगत कोनीं । फटाफट बतावो के ओ आदमी कंड़ीक है । घणो कुबदी व्हे तो उण ढंग सूं बात करूं अर स्यांणी व्हे तो दूजा हिसाब सूं बात करूं ।

मुनीमजी पांनां रै माथे नाक रगड़ता रगड़ता सगळी खातो निजर बारें काढ़ियो । पछें कह्यो—अैड़ा नेक अर भला मिनख तो दुनियां में ईं बिरळा है । आठूं ईं भाई वत्ता सूं वत्ता है । हुकम, थोड़ी याद फरमावो तो आपनै ईं तुरत ध्यान बंध जावैला के गई साल विस्पू भगवानं जिण रांणी रा जीव वास्तै आप सूं लड़िया, वा इण राजकंवर री ईं मां ही । उण रांणी री वो पैलौ जीव हो जको अठे आयां रोयो कळ-

पियो कोनीं । उणरा जीव नै अक दिन अठे ढाबनै सीधो विष्णू लोक नीं पुगावण वास्तै भगवानं कित्ता नाराज ब्हिया । म्है अर आप दोनूं हाथ जोड़नै माफी नीं मांगी जित्तै वारी रीस नीं उतरी । भलां उण रांगी री कूख सूं जाया बेटा कीकर कुबदी भै सकै । अं तो किणी माछर डांस नै ई अंल नीं पुगावै । इत्ती ताळ आप यूँ ईं खोटी ब्हिया, म्है तो बिना खातो देखियां ईं सगळो बातां बताय देतो । संजोग सूं इण जमपुरी में आदमी आयो तो ई लाखां में टाळकौ । सावळ निरांत सूं बात-चीत करो तो आपरो खासो भलो धयो मिट सकै । कोई अलांम अर कुबदी मिनख आय जातो तो अठे जमपुरी में कुचमादां री लाय सिळगाय जातो ।

चित्रगुप्त रै पाखतो आयां पैला जमराज ओ विचार करियो के राजकंवर कुबदी अर कपटी ब्हियो तो नरमाई सूं बात करैला । स्याणो अर नेक ब्हियो तो रुतबा अर करड़ावण सूं बात करैला । पण चित्रगुप्त सूं सगळो बातां सुणियां पछे वारी विचार बदळग्यो । सोच्यो — नीठ तो जमपुरी में जीवतो मिनख आयो है ! अर वो ई निहायत स्याणो अर नेक । इणनै सावळ समझायां सगळी बातां संवर सकै । इणरै साथै साफ, खरी अर साची बातां ईं करणी सावळ है ।

मुनीमजी री कोठरी सूं पाछा जावतां धरमराज नै अँड़ी लखायो जाणै वारा माथा सूं भार री भाखर अळगो व्हेगो । बे हंसता मुळकता राजकंवर रै पाखती आया । राजकंवर धरम-राज री बेटो नै आपरै लोक री बातां बतावतो हो । वा तो जकी बात सुणती उण साथै ई अचुंभो करतो । धरमराज नै देखतां

ई वारै सांमी दीड़ी । कोयल रें उनमान मीठी वांणी में पूछ्यो — अतलोक रा बारा में इत्ता दिन अपां तो साब ऊंधी बातां जाणता हा । सुरग में ई रात-दिन अतलोक री भूँडायां सुण सुणनै म्हारा तो कांन पाकग्या, पण इत्ता दिन जकी बातां सुणी वैं साव झूठी अर बेपींदा ही । राजकंवर जकी बातां म्हनै बताई वानै सुणियां तो बापड़ी सुरग अतलोक रें सांमी हजार वार पांणी भरै ।

धरमराज बेटी नें पुचकारतां लाड सूं कह्यो — थारा सगल में तो कोई बात जचणी चाहीजै, पछे तो उणरा बखांण री की अंत ई नीं । हाल थारो टाबरपणी गियौ कोनीं । थोड़ी घणी नेठाव राखणी सीख बेटी !

पछे राजकंवर रें सांमी देखनै कह्यो — म्हारी मंसा तो थोड़ा दिनां ताई आपरी सरबरा करण री ही, पण आप अणूंतो आंचो दरसायो तो आपरो ओ आदेस ई सिर-आख्यां माथै । फरमावो आप काई सवाल-जबाब करणी चावो ।

पछे राजकंवर निरांत सूं गाढ़ रें सागें कुमारी रा घर सूं लेय भेंसा रा रूप तक सगळी बात मांडनै विगतवार बताई । दोनूं बाप बेटी ध्यान सूं सगळी वारता सुणी । अंत में राजकंवर पूछ्यो — आप धरमराज बाजो अर आपरा राज में इज अधरम बरतीजै, ओ कठा री न्याव, ओ किसौ धरम ? आपनै म्हांरो दुनियां रें जलमां री कीं ध्यान है के नीं ? म्हैं आपरा लोक रा बारा में कीं नीं जाणूं । म्हांरी दुनियां में चाहै बनस्पति व्हो, चाहै पंछी जिनावर व्हो, चाहै जळचर व्हो अर चाहै भिनख व्हो, सगळां रें जलम री अेक मापौ

है, अक सनेसी है अर अक वगत है परा थारें इण मरणा री नीं तो कोई वगत है, नीं कीं सनेसी है अर नीं कोई मापो है । जलम सूं पैला मर जावें, जलमतां मर जावें अर जलमणा रें सो बरसां पछें मर जावें । छिण पैला ई आपरें इण मरणा री पुख्ती सनेसी नीं मिळें । मौत री ओ अंधार-खाती अबें घणा दिन नीं चालैला, आ बात आपनं साफ कैदू ।

आ कैयनं राजकंवर धरमराज अर वारो बेटी रें सांमी जोयी । उजास रा दो पुंज झबाझब करता हा । बेटी बोलण सारू आखती व्ही तो धरमराज कह्यो—इण बात री जबाब म्हनै ई देवण दें बेटी । थूं किणी अबखा सवाल री जबाब दीजें ।

पछें धरमराज राजकंवर रें सांमी देखनं कह्यो—बाप व्हेतां थकां ईं म्हनै आ बात कबूल करतां अणूतो मोद व्हे के म्हारी बेटी म्हारा सूं घणी वत्ती समझदार है । जठें म्हारी मगज अटकें, उठे आ दाछंट पार व्हे जावें ।

आपरो बखाण सुणनं लाज रें कारण उणरो मूंडी राती व्हेगो, जिणसूं उजास रा पुंज में ई गुलाबी झांई सुभट दीखण लागी ।

धरमराज कैवण लागा—म्हारो अर म्हारा राजा री इण बात सारू कीं कसूर व्हेती तो म्है सतरें वळा कांन पकड़नं ओळबा री झेलू व्हेती, परा मौत रा बारा में आप जकौ अंधार-खाती दरसायो उणरो कसूरवार खुद मिनख है । मिनख रा डर सूं आपरा स्वारथ री खातर म्हने ई अणूता अधरम करणा पड़े, जे अं अधरम नीं करूं तो संकड़ूं बरसां पैलो ई इण जमलोक मारथे मिनख री कब्जो व्हे जातो । पैला विगत-

वार म्हारी सगळी बातां सुणी अर पछे म्हांमें ओळबो काढी ।

थोड़ी ताळ रुकन जमराज धकै फेर कैवण लागा —
हजारूं बरसां पैली री बात है जद मिनख पैलपोत इण धरती
माथे आपरो आपो संभाळियो, पगां माथे ऊभो व्हियो, भुजदंडां
रो करार अजमायो अर अटपटी वांगी में बोलणी सरू करियो
तद म्हांरी खुमो रो पा नीं हो । म्है जमपुरी रा लोग अर
सुरग रा वासी पूरा सो बरसां लग इण बात री खुसियां मनाई
के अबे मिनख इण धरती नै कीं री कीं बणाय देवैला अर
सगळां जीवां रो जान्ती राखेला । वो ज्यूं ज्यूं लाळसा करो त्यूं
त्यूं उणरी समझ बधाई । अठीनें उणरी मंसा जागी अर उठीनें
उणरी आस पूरीजी । म्हांनें उणरी समझ अर उणरा बळ
रो पूरी भरोसी हो । सरूपोत में अतलोक, सुरग-लोक
अर जमलोक तीनूं ई न्यारा न्यारा हा । आपस में मदत अर
भाईचारा रो नाती हो । म्है दोनूं लोक उण वगत पूरा
बढ़्या-चढ़्या हा । म्हांरें ग्यान-विग्यान रो छेह नीं हो,
इण खातर निबळा मिनख नै आपरो आपो संभळावण वास्तें
म्है घणा कोडाया होयनें उणरी सब तरफ सूं मदत करी ।
पण अबे तो घणा ई पिछतावां के उण नुगरा जीव नै क्यूं आपरें
आपें करियो ? म्हांरी मदत रो वो पाछो इण रूप में भुग-
तान करेला, म्है आ बात सपना में ई नीं जांणी हो । पण
हाथां करनें वो आपरी समझ अर हुंस्यारी रा जाळ में अळू-
झियो जको अबे मरियां ई उणरी छुटकारी नीं व्हेला । म्हांरें
साथे धोखी करियो तो वो खुदई सवायो धोखो खायो । म्हांनें
घणा घणा फोड़ा भुगताया तो वो आज खुद रात-दिन फोड़ा

भुगतै अर ताजिदगी तर तर वत्ता फोड़ा भुगतैला । म्हारै साथे छळ करने वो आपरे साथे ई छळ करियो । म्है मांनां के आज वो म्हारा सूं घणी अपरबळी व्हेगो है, आज वो म्हारा सूं घणी बातां में बढ़चो चढ़चो है, पण आंगळी कित्ती ई सूर्जे तो वा देवळ रो थांभो नीं बण सकं । उणरी केई नसां म्हारा सिकंजा में इण भांत झिलियोड़ी है के थोड़ी सी कसतां ईं उणनै भूँडे ढाळें डाडणो पड़ें । उणरा छळ, उणरा कपट, उणरा ग्यान, उणरी समझ उणरी विद्या अर उणरी करामातां सूं ईं खुद उणरी कदेई ऊपरलो पांनो नीं आवेला । थाने कांई कांई बतावूं अर कठा सूं बतावूं, म्हारै कीं समझ बैठें नीं । म्हनै सावळ तरतीब वार बोलणो ईं तो को आवे नीं । म्हारी बेटी बतावती तो आपनै घणा फबता ढंग सूं बतावती । मिनख म्हने आपरा छळ में इण भांत कावळ पजायो के म्है कदेई सुख अर आराम सूं सास नीं ले सकूं, पण म्हारे साथे रो साथे वो खुद ईं कांई सुख रो सांस लेंलें ।

घरमराज नै ढबण री सांनो करने बेटी राजकंवर रें सांमी देख्यो । बीच में ईं बोली—आप आं बातां रो घणी ख्याल मत करज्यो । वाभोसा नै रीस आयां पछें बोलण री सोजी को रेंवे नीं । जुगां जूनी रीस है । आज आप हर्तुं चढ़ग्या तो सगळी आंमनो आप माथे ईं दरसावणो चावें । घरमराज अंगां अणूता भोळा है । पण रीस में आयां तो आपरो चेतो ईं बिसर जावें । म्है आपनै निरांत सूं सगळी बातां सावळ समझावूं ।

घरमराज रोवणकाळा व्हेगा । कह्यो—अब ईं म्हनै मिनख री करतूतां माथे रीस नीं आवे तो इण रीस रो कांई

अचार घालूं । थूं म्हने बोलतां पाल मती, नीं बोल्यो तो अमूं-
झनं बेचेतं व्हे जावूला, म्हने अंडो लखावें । थूं जाणती व्हेला
के यूं रीस में बकियां म्हारी कोजी लागेला, इणरी थूं रत्ती भर
ई चिंता मत कर । म्हें मुनीमजी नें सगळी बातां पूछने आयो
हूं । आप जेडा सालस, स्याणा अर नेक आदमी सगळा अतलोक
में ई बिरळा है । अं म्हारी बातां री कीं ख्याल नीं करेला ।

राजकंवर मुळकने कहाँ—म्हें तो आपरें सांमी अवूझ
टाबर री गळाई हूं । म्हारी हाल तांई इत्तो होसलो नीं बघियो
के म्हें आपरी बातां री ख्याल करूं !

धरमराज री रोवणकाळी उणियारी अकदम झबाझब
करण लागी । कहाँ—म्हें तो थने पैला ई कं दियो ही के
बेटी आप म्हारी बातां री कीं ख्याल नीं करेला । म्हारा
अंतस में हजरूं बरसां री बूबी दटियोड़ी है, थूं म्हने आज
मन चायी अपळ-गपळ बोलण दें । आप अणूता समझदार
आदमी है, मतं ई साची बात री सार निकाळ लेवेला ।

बेटी आदर भाव सूं बोली—आपरी मरजी ! भलां म्हें
आपने ओड़ी कीकर दें सकूं ! आपरी ज्यूं इच्छा व्हे ज्यूं स्त्री
मुख सूं फरमावो ।

बेटी रा मूंडा सूं आ बात सुणने धरमराज गळगळा
व्हेगा । कहाँ—अबें तो म्हें जमलोक री काम करतां करतां
ठेट गळा तांई धापग्यो हूं । थूं ओ काम संभाळ लेवें तो
म्हारी फंद कटें । म्हें अबें काठी आंती आयग्यो हूं । रीस
तो अंडी आवें के अतलोक रें मिनखां री अक छिण में पापो
काट न्हाकूं ! दुस्ती म्हने कंडी बांधन बाळियो !

जमराज री आख्यां जळजळी व्हेगी । वांरो गळी संघयी ।
बेटी दौड़ने इमरत री तासळी भरने लाई । आदर भाव सूं
बोली—आप थोड़ीक ताळ निरांत राखी तो म्है थोड़ा में
सगळी बात समझाय दूं ।

घरमराज गपळ गपळ सगळी इमरत पीगा । कीं मगज
ठाडो व्हियौ । बोल्या—थारी मरजी व्हे तो थूं ईं समझा ।
म्हने रीस रे आगे कीं सूझें नीं ।

राजकंवर रे सांमी देखने बेटी कैवण लागी—म्हारी
घणी बोलण री आदत कोनीं । आप थोड़ा में ईं घणी समझ
लिराजौ ।

पछे वा नेठाव सूं मीठी वांणी में कैवण लागी—किण
सांमी रीस करणी चाहीजे के नीं करणी चाहीजे, आ बात
दूजी है, पण वाभौसा री रीस है साव साची । पेला अत-
लोक रे साथे म्हांरो अर सुरग रा वासियां री सिवाय मदत
देवणा रे कीं दूजी घणी नाती नीं हौ । पण जद मिनख
हाथ जोड़ने क्ह्यो के अबे भगवानं ने बणायां बिना उणरो
काम मुळगी ई बंद व्हेगी तो उणरे कैणा मुजब म्है भगवानं
रो ठागो बणायो । वो सावळ आपरी बात म्हांने समझाई के
भगवानं ने बणायां बिना वो आपरी दुनियां में धके कीं बघापी
नीं कर सकें । सगळा मिनख अके सरीखा कोनीं । वो
म्हांने समझायो के घणकरा मिनख जिनावरां सूं ईं हीण अर
अधम है । वाने गुलाम बणायने काम लियां बिना अबे दुनियां
में काम ईं नीं चाले । फगत भगवानं रा आंकस सूं वाने काबू
करिया जा सकें, नींतर वे भवे ईं धारे कोनीं । म्है उणरा

कैणा माथै पूरौ विस्वास करियो । दोनूं लोकां रा वासी म्है बरसां तक सोच विचार करनै भगवानं री थापना करी । म्है तद मिनख नै समझायो के अबै इण भगवानं री आव-आदर अर कुरब-कायदो थारै हाथ है । अंडो नों व्है के कदैई भगवानं री पोचापो लाग जावै । अेकर बणियां पछै कदैई आंरी गादो खाली नीं रैवैला । आंरी पूजा अर आंरै सनमानं री जिम्मी अबै थारो है । मिनख विस्वास दिरायो उण मुजब ई वो थोड़ा ई बरसां में आपरा अतलोक में भगवानं री अंडो ठागो जमायो के म्हांरो ई मगज चकरीजग्यो । कदैई भेद पर-गट नीं करण वास्तै माहौमाह वाचा ब्हिया । म्है आज दिन तांई उण वाचा री खंडण नीं करियो । पछै अतलोक में भगवानं री भेद जाणण री वा लगन लागी के हाल तांई उणरो थाग नीं आयो अर कदैई थाग आवैला ई कोनीं । थोड़ा बरसां पछै वो अेक दिन फेर अरदास करी के फगत अेक भगवानं सूं अबै कांम चालणो दोरो है । भगवानं रै जोड़ै केई नवा देवता बणाणा पड़ैला । वो आपरी बात सावळ समझाई । म्है दोनूं लोक रा वासी फेर मिळजुळनै विचार करियो अर मिनख रा कैणा मुजब देवतावां री थापना करी । वो ज्यूं कहचो त्यूं म्है जमलोक अर सुरग में हेराफेरी करी । म्है उणरा कैणा री कदैई अभरोसो नीं करियो । पण जद भगवानं अर देवतावां रा नांव माथै अतलोक में माहौमाह तणातणी व्हो तद म्है उणनै इण बात री म्यांनो पूछ्यो । वो जबाब दियो के दुनियां में बधापो करण सारू आ तणातणी जरूरी है, इणरै बिना कांम री चाल आगे बधै ई नीं । इण तणातणी रै

साथै करम, आतमा अर मुगती रा जाळ बिछावणा ई जरूरी है । वो म्हाने मांडने नरक अर सुरग री सगळी खाकी सम-झायी । करम, आतमा, मुगती, नरक अर सुरग रा बारा में उणरा नवा विचार सुणने म्हारे अचुंभा री तो पार ई नीं रह्यो । मिनख री समझ अर उणरा ग्यान माथे म्हाने ई गुमेज व्हियो । केई बरसां लग मिनख री समझ अर उणरा कैणा मुजब म्है सगळी बातां रा रूप संवारिया । माहोमाह आपस में घणा ई वाचा व्हिया के कोई किणी रे साथे छळ नीं करेला अर आं बातां री किणी रे आगे भेद परगट नीं करेला । म्है खुद आं सगळी चीजां री थापना करने भूलण री चेस्टा करण लागा । सगळा लोग मिळजुळने जिण जिण चीजां री थापना व्ही, वारी ओक दूजा ने जिम्मी संभळायी । विष्णु भगवान सुरग री काम-काज देखेला अर धरमराज जमलोक री काम-काज संभाळेला । मिनख अतलोक री मरजादा सूं कदैई बारें नीं निकळेला ! वो जीवती कदैई जमलोक अर सुरग में प्रवेश नीं पा सकैला । मिनख रे कैणा सूं ईं म्है सगळी बातां रा पंपाळ सरू करिया अर वो तो म्हाने पंपाळ क्षिलायां पछे अठीने पाछी मूंडी ई नीं करियो । म्है तो हाल ताई वां पंपाळां में अळूझियोड़ा हां । अर मिनख वां पंपाळां रा नांव माथे अतलोक में अंड़ा अकरम करणा सरू करिया के पछे तो म्हारे लाख बरजियोड़ी ई नीं ढबियो । आपरा मतलब सारू बातां बातां में तो वो म्हारी पूजा करतो अर काम आपरे जचें ज्यूं करतो । उणरा कैणा मुजब ई म्है उणरे करमां री ई अठे हिसाब-किताब राखां, नरक सुरग री फंसलो करां । पण वो तो म्हारा

सगळी कांम री पोखाळी कर न्हाकियो । उण दिन विस्णु भग-
वानं रें सांमी सुभट तें व्ही ही के मिनख जलम-मरण रा
कांम में किणी भांत री पंचायती नीं करेला । वो तो आपरा
कांम सूं कांम राखेला । करमां रें हिसाब सूं सगळी लेखी-
जोखी म्हें ईं करालां । पण वो तो आपरी बात माथें रत्ती
भर ई पाबंदी नीं राखी ।

राजकंवर इचरज सूं पूछ्यो—तो कांई, अं भगवानं,
करम, आतमा, मुगति, नरक, सुरग अर देवी देवतावां रा
पंपाळ खुद मिनख आपरा हाथ सूं सरू कराया ?

दोनूं बाप बेटी अेकण सागें जोर सूं हांमळ भरी । राज-
कंवर री तो अकल ई कह्यो नीं करियो । बेटी धकें फेर
कंवण लागी—पण मिनख तो मारण री सगळी कांम आपरा
हाथ में झेल लियो । इण पंला मोत री मापो ही, वगत
ही अर सनेसो ई ही । पण मिनख तो माहोमाह लड़ाइयां
लड़नं लाखू मिनखां नें मारणा सरू कर दिया । करमां री
लेखी-जोखी कीं कांम नीं दियो । अठे हिसाब राखणो मुस्कल
व्हेगो । नरक सुरग रा फंसला में गब्दोळा पड़ण लागा ।
अेकला चित्रगुप्त सूं कांम संभाळणो मुळगो ईं दूभर व्हेगो ।
जमदूतां बिना ई मिनख खुद अणगिण मिनखां नें मारणा चालू
कर दिया, जिणरा म्हांनं आज दिन तक समंचार ईं नीं न्हिया ।
नीं म्हांरा लोक में इत्ता जमदूत ई है के मिनख रें हाथां
करियोड़ी अणगिण मोतां नें पूग ई आवें । मिनख रें कंणा
मुजब म्हें तो नीं जमदूतां री आंकड़ी बधा सकिया अर नीं
चित्रगुप्तजी री ठोड़ वत्ता मुनीम ईं राख सक्या । म्हांरें मापा

रो काम हौ जित्तै तो सगळा काम ठीक हा । पण मिनख म्हारें मापा रो अंडी रुळियो करियो के अबे संभाळियां ई संभळे कोनीं । मुनीमजी तो छकड़ी भूलग्या । हिसाब-किताब में अंडी घोटाळी बधियो के जिणरो नांव काई । विष्णु भगवान रो लतेड़ां सुण सुणनै म्है तो अठे निसंडा व्हेगा । पण जद मिनख वारा जलम रा काम में पंचायती करण लागी तो वारी ई आख्यां उघड़ी । वानें मिनख रो करतूतां रो थोड़ी घणो पती पड़ियो । उण पछे वै ई लतेड़ां कम करदी अर मिनख सूं पूरा डरण लागा । घरमराज अर विष्णु भगवान दोनूं ई आपरें छक्कै-पंजें सावचेत व्हेगा । वानें औ पक्की निस्चै व्हेगो के मिनख नें उणरें लखणा मुजब सावळ नीं बरतियो तो वो दोनूं लोकां माथें देखतां देखतां कब्जो कर लेवेला । मिनख आपरा हिसाब सूं लड़ाइयां करै अर आपरा हिसाब सूं अणगिरा मिनखां नें मारै तो घरमराज ई आपरा हिसाब सूं मन रै मतै मिनखां नें अणचींत्या मारण लागा । नींतर अबे मिनख घरमराज नें धारें ? मिनख आपरें मन मतै मिनखां नें मारण लागा तो घरमराज ई आपरें मन मतै मिनखां रो अकाळ मोतां करण लागा । जे वै अकाळ मोतां रो जुगत नीं बिठावता तो मिनख कदैई जमलोक माथें कब्जो कर लेती । आपरें हाथां थापी जको बातां नें वो मुळगो ई पांतरग्यो ! आपरी बातां रें खंडण मंडण में अळूझग्यो । अेक दिन खुद ई तो आपरी मरजी सूं भगवान नें बणायो अर अबे खुद ई उणनै भांगै ! अेक दिन खुद ई तो करम, आतमा, मुगति, नरक अर सुरग रा पंपाळ रचवाया, अबे खुद ई आं सगळां रो खंडण करण

लागौ । आपरा छळ में वो खुद ई अळूझग्यो अर कदैई वो इण छळ सूं छुटकारो नीं पा सकला । सेवट मिनख रा डर सूं विस्णु भगवानं अर धरमराज अेक अैड़ी अटकळ विचारो के मिनख कदैई उण अटकळ नै समझ नीं सके अर कदैई आपरा जाळ सूं छूट नीं सके । वा अटकळ है मिनखां नै माहोमाह लड़ावण री । मिनख मिनख अेक दूजा नै अेक सरीखा नीं जाणै । माहोमाह छोटा मोटा जाणनै वै हरदम झगड़ता रैवै । नीं कदैई वारो झगड़ी खतम व्हेला अर नीं कदैई जमलोक अर सुरग माथे राज करण रो वाने वगत ई मिळैला । वै खुद ई अेक दूजा माथे राज करण री अर अेक दूजा नै गुलाम बणावण री जुगतियां में ई ताजिदगी आफळता रैवेला । अर म्है दोनूं लोक रा वासी बळतै काळजै मिनख नै सराप दियो के वो आपरै हाथां बणायोड़ा भगवानं, करम, आतमा, मुगति, नरक अर सुरग रो कदैई पार नीं पा सकला । आं सगळां रा बारा में वो नित नवी नवी जुगतियां बणावती रैवेला अर भांगती रैवेला । अेक दूजा माथे राज करण रा अर अेक दूजा नै गुलाम बणावण रा सुभाव रै कारण उणरी लड़ाइयां रो कदैई अंत नीं आवैला । म्हारै लोकां रो पोखाळो करियो तो वो आपरा लोक नै ई कदैई सुधार नीं सकला । म्हारै साथे करियोड़ी छळ उणनै ताजिदगी फोड़ा घालेला ।

जमराज खुसी में उछळता कह्यो — म्हारी बेटी कांई सुथ-
राई सूं सगळी बातां सुभट बताई के म्है चावूं तो ई सावळ
बखाण नीं कर सकूं । म्हनै खुदनै अैड़ी लखायो के म्है पेली
वार अे बातां सुणी हूं ।

पछे वं राजकंवर रं सांमी देखनै कह्यो — आपरो दियोड़ी ओलबो म्हें पाछो हाथोहाथ आपनै ई सूपूं के थें मिनख लोग ई मौत री मापी, मौत री सनेसी अर मौत री बगत आपरें हाथां ई नस्ट करियो तो अबे उणारी फल चाखता दौरा क्यूं व्हो ? अबे म्हें इण बात री जबाब तलब करणी चावूं के थें म्हारा काम में बिना पूछ्यां क्यूं पंचायती करी । अर हाल पंचायती करता ई जावो । थें अतलोक में जावो तो म्हारी तरफ मू लोगां नै साफ कै दीजो के माहीमाह मिनखां रं हाथां मरियोड़ा आदमियां री म्हारें अठे कीं हवाली नों है । करमां री लेखी जोखी ई सगळी गब्दोळा में पड़ग्यो है ।

राजकंवर अेक ऊंडो निस्कारो न्हाकनै कह्यो — म्हें आयो तो सांमी ओलबो देवण सारू हो, पण उलटो ओलबा में झिल-ग्यो । अबे आप फरमावो ज्यूं करूं । कीकर ई करनै जलम री गळाई मौत री जुगत पाछी उणी भांत बंठ जावे तो पछे अतलोक रं आणंद री पार ई नों । अर आपनै ई सुख अर आराम मिळें । धरमराज म्हारी गलतियां बगसो अर मौत री जुगत सावळ बिठावो ।

धरमराज कह्यो — लारली गलतियां नै तो फेर माफ कर सकूं, पण आईदा मौत रा बारा में मिनख कीं पंचायती करी तो पछे म्हारें जेडो मूंडो नों है । थें सावळ नेक रास्ता माथे चालो तो तोनूं लोकां री सुधारी व्हे सकें । ईड अर लड़ाई में तो सगळी बातां छाजें । म्है दोनूं लोकां में रात-दिन मिनख अर अतलोक रा बारा में भूंडायां फैलाता रैवां, जिणसूं म्हारें अठा री वासी मिनखां सू किणी भांत री परीत नों राखें ।

जद इज आपरी बातां सुणनं बेटी इणरो म्हनै म्यांनो पूछयो ।
अबै उणरे ई आछी तरै समझ में आयगी व्हेला ।

बेटी मुळकनं कह्यो—म्हारी समझ में तो फेर घणी
घणी बातां आई, आप किण किण री म्यांनो बतावोला ।

राजकंवर कह्यो—म्हैं जिण लालमा सूं अठे आयी, वा
पूरण व्ही । म्हारे खपतां म्हैं मिनखां ने पूरा समझावूला के
वे मारण रा कांम में किणी भांत री पंचायती नीं करे ।

घरमराज बीच में ई आखता पड़नं कैवण लागा—जे
आपरी आ बात अतलोक रा मिनख सावळ समझग्या तो
मौत री जुगती आपे ई बंठ जावैला । म्हारो नांव लेयनै
मिनखां ने समझावण री कोसिस करज्यो के वे सगळा मिनखां
ने बिरोबर समझें । मिनख ई मिनख माथे राज करण री
अर वांनै गुलाम बणावण री चेस्टा करो तो वे कदेई सुखी
नीं व्हे सकैला । जठा लग मिनख सगळा जीवां ने आपरे
सस्तै नीं जाणं तठा लग वो मरण रा कांम में पूरी पूरी
पंचायती करैला, अर जद तक मारण रा कांम में उणरी
पंचायती रंवेला जित्तं मौत री जुगत कदेई सावळ नीं बैठ
सकैला । मौत री जुगत बंठावणी फगत थां मिनखां रें ई
हाथ है ।

राजकंवर कह्यो—अेक कांम तो आप मिनख रें परबारी
ई कर सकी । जलम री गळाई जे मिनख ने मौत री सनेसो
पैला मिळ जावे तो उणरो मरणो अणचींत्यो नीं व्हे ।

घरमराज री बेटी कह्यो—राजकंवर ! दुनियां में घणकरी
बातां तो अंडी व्हे के वांनै जाणणा सूं सुख उपजें अर घण-

करी बातां अँड़ी व्हे के वाने जाणणा सूं भयंकर दुख उपजे । तद समझदार मिनख ने चाहीजे के वो जाणण वाळी बातां न ई जाणे अर नीं जाणण वाळी बातां सपना में ई नीं जाणं । मौत रो सनेसो पैला मिळियां तो थां मिनखां रो जीवणो ई हरांम व्हे जावेला । धरमराज सूं आ ई वीणती करो के वे मौत न हमेसां अजाण ई राखे ।

धरमराज घणा लाड सूं कह्यो—बेटी ! जे थारी अकल म्हारा में व्हेती तो म्हें मिनखां रो अकल कदेई ठाणे कर देतो ।

राजकंवर कीं अटकतां अटकतां कह्यो—बींदणी री लास न म्हें जाब्ता सूं राखण वास्तं कह्यो, पाछो उठे गियां म्हें कांई जबाब देवूला ! अतलोक में कोई इण बात माथे विस्वास नीं करेला के धरमराज रे पाखती गियां ई आ बात नीं बणी !

धरमराज कह्यो—अठे जीव नीं आतो तो सगळी बात म्हारा हाथ में ही । अठे पांच सातेक जमदूत विष्णु भगवान रा खास जामूम है । सगळी बातां रा समंचार वाने जायने हाथोहाथ पुगावे । अठा रा गब्दोळा सूं विष्णु भगवान नीं तो ई पूरा नाराज है । जे आ बात ठा पड़गी तो म्हनें अणूतो लतेडंला । बींदणी रा जीव रे बदळे कोई राजी खुसी सूं आपरो जीव सूपे तो म्हें छाने ओले आ बात कर सकूं ।

राजकंवर कह्यो—इण में इत्ती सोचण जेड़ी कांई बात, म्हें राजी खुसी सूं म्हारी जीव दे सकूं । आप कीकर ई करने बींदणी री जीव तुरत पाछो भेजावो तो म्हारी अठे

आवणो सारथक व्हे ।

धरमराज री बेटी मुळकनै कह्यो—फगत इण बात सूं ई आपरो अठे आवणो सारथक नीं व्हे !

पछे वा धरमराज रं सांमी देखनै कह्यो—वाभौसा, आप म्हनै केई वार फरमायो के म्हें म्हारी खुसी सूं म्हारी वर चुणूं । अंडी वर फेर कठे हेरती फिखला । आप म्हानै आसीर-वाद दो ।

धरमराज री मंडी काळोमिट्ट पड़ग्यो । कह्यो—बेटी जोग वर में तो कीं खांमी कोनीं, पण म्हें अठे बात बात में पजूं, वगत माथें म्हारी कुण मदत करेला । म्हनै इण बात री पूरी चिंता है ।

बेटी कह्यो—याद करतां ई म्हें आपरें पाखती हाजर व्हे जावूला । आप इण बाबत किणी बात री चिंता मत करो ।

धरमराज गळगळा कंठ सूं कह्यो—बेटी, कठेई अंडी नीं व्हे के थूं ई अतलोक में गियां मिनखां जेड़ी नुगरी व्हे जावै ।

बेटी अपूठी फिरनै होळे सूं जबाब दियो—अतलोक रा मिनख ई सगळा किसा अेक सरीखा व्हे !

पछे धरमराज मतलब री अेक खास बात करी । कह्यो—म्हारें अेकाअेक बेटी है । इणरा दायजा में जमलोक री सगळी संपत्त देवूं तो ई थोड़ी है । पण इणरें उपरांत म्हें दायजा में अेक जीव देवणी चावूं । आप फरमावो तो देवलोक सूं आपरी मां री जीव पाछो मंगवायनै आपनै संप दूं । अतलोक में जातां ई आपरी मां जीवती व्हे जावैला ।

राजकंवर कह्यो—अक जीव ई सूपणी है तो पछे म्हने कुमारी री बीदणी वाली जीव ई सूपी । म्है उणरा घर में रातवासो लियो अर वाचा देयने आयो हूं ।

धरमराज खुसी में उछळता कह्यो—जे अतलोक रे मिनखां री सुमत आप जेड़ी व्हेती तो क्यूं तीनूं लोकां में कळेस अर संताप उपजतौ ! म्है खुसी खुसी म्हांरा दोनूं ई लोक मिनख नै सूप देता , पण मिनख तौ आपरै नुगरापणा री कीं पाछ ई नीं राखी । आप अतलोक में पाछा जाय उणने सुमत दिरात्री तो बात दूजी है । सावळ पाधरा मन सूं कांम करै तो म्हाने मिनख री समझ अर उणरै ग्यांन री पूरी भरोसी है ।



आठवो राजकंवर

तपसो रा आस्रम सूं वहीर होयनै आठवो
राजकंवर लांणी कूट सांमी वहीर ब्हियो तो
उणनै मां री याद रै सागे दो बातां ई याद आयगी । मां
आठूं बेटा नै नित रात रा नसीयत री बातां बतावती ही ।
छठा राजकंवर री गळाई इणनै ई साधू रा भेख री मरजादा
निभावण वाळा भांड री अेक बात फेर याद आई । आ बात
तद सूं ई उणरा काळजा माथे चित्रांम री भांत कुरियोड़ी
है । वा दूजोड़ी बात यूं ही—सेठ रै अठे साधू री भेख
लायां पछे वो भांड अेक राजा रा दरबार में पूगी । वो भांड
सगळा मुलकां में चावो ही । साधू रा भेख वाळी वा बात
ई राजा रा कानां में पूगगी ही । भांड व्हेतां थकां ई वो
राजा आपरा मन में उणरो आदर करतो ही । राजा री देखा-
देखी सगळा राज-दरबारो ई उणरो अणूतो कायदो राखता ।
भांड सुभराज करण सारू दरबार में हाजर ब्हियो उण वगत
डाकणियां अर जोगणियां री चरचा चालती ही । इण चरचा
रें बिचाळें ई भांड हाजर ब्हियो तो सगळा ई घणा राजी
ब्हिया । अेक मंत्री राजा नै अरदास करी के आपरो हुकम
व्हे जावै तो इण भांड सूं डाकण री स्वांग निजरां देख
सकां । अेड़ी मौकी फेर कद आवेला ।

दूजा दरबारो ई इण बात री ताईद करी । सगळा दर-
बारियां री आ मरजी देखी तो राजा भांड नै आदेस करियो
के वो काले डाकण री स्वांग लावै ।

भांड डरतां डरतां कह्यो—अंदाता री हुकम सपना में ईं नीं टाळूं, पण गरीब भांड री अक अरदास है, उण माथे राज ध्यानूं सूं विचार करे । स्वांग तो म्हें दुनियां री हर चीज री ला सकूं । भाटी बणने मारग माथे पड़ जावूं तो कोई मारगू इण बात री सनागत नीं कर सकें । आपरी दया सूं म्हांरा बडेरां ने ओ सित्रजी री वरदान है । आप फरमावो तो म्हें डाकण री ई स्वांग ला सकूं, पण पछे देखणियां ने ओ स्वांग घणो मूघो पड़ जावैला । स्वांग रे सागें म्हें डाकणियां वाळा चाळा नीं पोखूं जित्तें स्वांग री रंगत पूरी नीं बणै । डाकण रा स्वांग में किणी मिनख री आंतड़ियां चोर उणरा लोई सूं खप्पर भरने नीं पीवूं जित्तें स्वांग अधूरो रैवै । म्हें अधूरो स्वांग नीं लाया करूं । स्वांग रे पैला अर पछे तो म्हें फगत रावळो भांड हूं पण स्वांग रे बिचाळें म्हें मुळगो आपरी चेतो बिसर जावूं । उण वगत भेख रे मिस म्हें असलो री जूण में पूग जावूं । दूजी तीजी बातां री म्हने कीं ध्यान नीं रैवै । आपरे हुकम सूं म्हें हंसतौ हंसतौ सूळी चढ़ जावूं, पण अंदाता म्हने आप डाकण रा स्वांग वास्तं आदेस मत करी ।

राजाजी तो ई उणरो बात नै सावळ को समझ सक्या नीं । राजा होवण वास्तं मोटी बुद्धि जरूरी है । वं रोब सूं पूछ्यो—क्यू ? थूं डाकण री स्वांग क्यू नीं ला सकें ?

भांड कह्यो—अंदाता, म्हें साफ अरज करी तो ई आपरे जची कोनीं । डाकण री स्वांग देखण वाळां मांय सूं उण वगत कोई म्हांरे घकें आयग्यो तो उणरा लोई सूं डाकण री खप्पर भरीजैला अर उणरी छाती माथे गोडो देयने वा उणी

ठोड़ गट गट वी खप्पर पूरी पीवैला । राम जाणै उण वगत कुण सांमो आवै । म्हनै स्वांग रै बिचाळें अंदाता री ई ध्यान नौ रेंवैला । डाकण रै कांई गनो ? इणी खातर आपरें पगां पड़ूं के डाकण रा स्वांग वास्तै गरीब भांड नै माफी बगसो तो सावळ है । हूं तो म्हैं आप लोगां री कमीण भांड पण म्हारा रिजक री मरजादा सूं म्हैं कोई ऊंची मरजादा नौ गिणूं । अबै ज्यू अंदाता री मरजी व्है हुकम फरमावै । म्हैं तो फगत आपरी पगरखियां री चाकर हूं ।

दरबारी कह्यो — अंदाता, अँ तो रिजक री अटकळ-बाजियां है । भांड इण भांत री थोथी भोपाडफरियां नौ करै तो वो भांड ई कांई । पछे ओ तो मुलकां चावो भांड है । बांणिया रै अठे साधू रा भेख वाळी बात भरै पड़्यो तो अबै सगळें ई उणी ठग-विद्या सूं बरतणो चावै । राजावां रा दरबार में इणरो घणौ सौभाग नौ सजियो दीसै । ज्यू थारी मरजी व्है ज्यू करजै । इणो बात मायें थनै काले डाकण री स्वांग लाणो ई पड़ैला । देखां कीकर काळजो फोड़नै खप्पर भरै । इणनै इण बात री सोजी होवणी चाहीजै के मिनखां रा काळजा आटा रा बणियोड़ा नौ व्है ।

दरबारियां रै देखादेख राजाजो ई कह्यो — हां, थनै काले री काले डाकण री स्वांग लाणो पड़ैला । उण वगत म्हैं धकै आय जावूं तो थूं म्हारो ई काळजो चीर न्हाकजै । थनै सो ई गुना माफ है । बोल, पछे कांई चावै ।

भांड कह्यो — आप जैड़ा भूपतियां रै सांमी कमीण-कारुवां री कांई तो चावणो अर कांई नौ चावणो । म्हैं तो अरज

करी ही के आप हुकम फरमावो तो म्हैं गाल बजावतो बजावतो सूळी माथै चढ़ण सारू तयार हूं । अबारूं आप नीं मांनो जको तो म्हैं ईं कांईं करूं, पण काले धके आयोड़ा री काळजो चीरीजग्यो तो सो ई गुना माफ है । पछे म्हामें चूक मत काढ़जो ।

दीवाण कह्यो—तो इण बात वास्तै कांईं राजाजी सूं तांबा-पत्तर लिखावेला ? बापजी आपरा स्त्री मुख सूं फरमाय दियो के थने काल रा स्वांग वास्तै सो ई गुना माफ है, पछे फालतू भांड वाळी झिकाळ बयूं करे ! डाकण री स्वांग नीं लाय जाणतो व्हे तो बात दूजी है ।

इण पछे भांड रे कीं कैवणा वास्तै बात बची ई कोनीं । वो खाकां अर गाल बजायने कह्यो—ज्यू बड़भागियां री इच्छा, रावळी भांड तो बोटी बोटी छूनी तो ई तयार है ।

बात रे हवा सूं ईं तेज पग व्हे । दरबार में बात संपूरण व्हियां पैली ई सगळा नगर में ठा पड़गी के काले भांड डाकण री स्वांग लावेला । स्वांग रे बिचाळ आपरा तीखा नखां सूं किणी मिनख री काळजो चीरने वो खप्पर भरेला । पछे उठे ऊभो ई सगळा दरबारियां रे सांमी पूरो री पूरो खप्पर अके ई घूंट में पी जावेला । नगरवासियां मांय सूं राजदरबारी डाकण रे भख सारू उण आदमी ने छांटेला । सो इण खातर नगर मांय सूं तो अके चिड़ी री जायो ई उठे नीं पूगो । फगत राज घरांणा अर दरबारियां रे घर वाळां सिवाय कोई दूजो मिनख भांड री स्वांग देखण सारू उठे नीं आयो ।

राणियां, राजकंवरीयां, डावड़ियां अर लुगायां झिरोखां में बैठी बाट जोवती ही अर दरबार में बैठा सगळा दरबारी भांड री उडीक में उतावळा ब्हियोड़ा चारूंमेर निजर घुमावता हा के इत्ता में हाथ भर लांबी जीभ लटकायां अेक डाकण फूफां फूफां करती दरबार में आई । जिण स्वांग री उडीक में सगळा बैठा हा, वै डाकण नै देखतां ई स्वांग री सगळी बात भूलग्या अर मते मते मन पड़े उठीनै ई दौड़ण लागा । दरबार में खलबल माची तो वा माची के बात छोड़ी । आ तो कोई सांचेली डाकण ई आयगी । स्वांग रै बिचाळें नांमी मौकौ जोयो । हाथ भर लांबी जीभ सू टपाक टपाक लोई झरै । लट्टियां बिखरि-योड़ी । नख अँड़ा लांबा अर तीखा के भाटा नै जरड़ देतो री चीर न्हाके, कुबदी भांड कठैई सांचेली डाकण नै ई ती सिखाय नीं मैल दी । देखतां देखतां राजदरबार साव सूनी ब्हाँगी । राजाजी तो सबसूं आगे न्हाटा । दो तीन वळा आखड़ आखड़ने पड़्या तो ई वै लारै मुड़ने नीं जोयो के डाकण कित्तीक आंतरै है । पड़तां ई झपकै ऊठने दौड़ण री करता । ऊमर में पेली बार वारै दौड़ण री कांम पड़ियो हो । दौड़णा री आ कीमत तो वै आज ई जाणी । अबे नित हमेस सवार-सिन्ध्या दौड़ण री रफत करैला । किरण वगत कांई मार्ये आय पड़े, इणरी किरणै ठा पड़े । सगळी राणियां नै ई दौड़णी सिखावैला ।

चिड़कलियां री ढूल गोफण सू छूट्योड़ी कोपरियो पड़तां ई जिण भांत अेक छिण में कांनी कांनी उड जावै, उणी भांत सगळा दरबारी तो बख लागी उठीनै दड़बड़ दड़बड़ न्हाय छूटा, पण राजाजी रा साळा सू दौड़णी नीं आयी । वो दारू में चूंच

ब्हियोड़ी उणी ठोड़ जमियो रह्यो । लोगां नं दीड़तां देख अंकर दीड़ण रो ई मतो करियो जित्तं डाकण माथे उणरो निजर पड़गी । वो तो जाणं है जठे ई चिपग्यो । फांफ रा फटकारां सूं पांन हिले ज्यूं वो थर थर धूजण लागी । डाकण रो जीभ देखनं उणरी ई जीभ निकळगी । डाकण तो खावूं खावूं करती राजाजी रा माळा रे सांमी ई दीड़ी । कोई बरजणियो के पकड़-णियो आडो नीं आयो । वा तो सीधी उणरी छाती माथे चढ़ती इज निगं आई । तीखा नखां सूं जरड़ देतो रो उणरो काळजी चीर न्हाकियो । धकळ धकळ लोई छूटण लागी । उणरो खप्पर तो हांकरतां भरग्यो । खप्पर भरीजियो जित्तं वा दो तीन बार लपरका लिया । उणरो सगळी मूंडी ई लोई सूं भरीजग्यो । वा हा हा करने जोर सूं हंसी । पण उणरी हंसी देखणियो उठे कोई नीं हो । पछे लोई सूं भरघो खप्पर ई गट गट पीगो । खप्पर पीयने घमाघम नाचण लागी । लौ रो चूड़ी अर लौ रो नेवरियां खनाखन बाजण लागी ।

निरी ताळ नाच्यां पछे वा डाकण ढबी । चारुंमेर निजर घुमायने देख्यो । कोई व्हे तो दीसे ! पछे डाकण रो स्वांग उतारने भांड गाल बजावतां कह्यो—अंदाता, ओ तो म्हें भांड हूं । आप सगळा बडभागियां रे कैणा सूं ई डाकण रो स्वांग लायो अर देखण वास्तं अक ई नीं ढबियो ! जिणरो तो म्हें ई काई करूं । म्हारा स्वांग में कीं खांमी व्हे तो बतावो । पिरथीपाळ, अबे रावळा भांड ने राजी होय बगसीस दिरावो ।

डाकण रो स्वांग उतरतां ई दरबार में तो मार कूकारोळी मचग्यो । चारुंमेर पाछी हाकादड़बड़ अर खळवळ

होवण लागी । दीवांण हाकी करने कह्यो—चंडाळ फेर बग-सीस मांगे । पकड़ी, पकड़ी, कठई न्हाट नों जावे ।

हाकी सुणतां ईं अेक री ठोड़ पच्चास आदमी छूटा । भांड ने राहड़ियां सूं बांध काठी जरू कर दियो । राजाजी री साळी तो इण लोक री भरपूर आणंद लेयने परलोक री सोय करी । उठा रा आणंद री ईं साव लेणी जरूगी हो ।

रांणीजी भाई री मरणी सुणियो तो चंडी री विकराळ रूप धारचां दरबार में दौड़ता आया । लोगां जाण्यो के भांड भळे कोई दूजो स्वांग लायो दीसें । पण भांड तो काठी बंधि-योड़ी हो । अे तो रांणीजी है ! भाई रे पाखती बैठने अरड़ां अरड़ां रोवण ठूका । भांड रे सांमी देखने किड़किड़ियां चाबतां कह्यो—इण राकस रे लोई रा खप्पर भरने कुत्तां ने नों पावूं जित्तें म्हें पांणी ईं नों पोवूंला ।

पाछी दरबार जमग्यो । भाई री लास ने रांणीजी रे मंलां पुगवाई । सगळा मंत्री अर दीवांण कह्यो—अंदाता, जुलम व्हेगो । पण जोर कांई करां । अबे तो इण दुस्ती रा लोई सूं खप्पर भरने हिड़किया कुत्ता ने पावां तो इणरी बग-सीस आधादूधी चूकें । अंदाता, जल्दी हुकम फरमावो ।

भांड कह्यो—म्हारा लोई सूं खत्पर भरण वास्ते अंदाता रे हुकम री कीं जरूरत कोनीं, म्हें म्हारा मन सूं खुसी खुसी ओ कांम कर सकूं । पण इण बात माथे तो अंदाता री ठोड़ खुद भगवान री हुकम व्हे तो ईं म्हें मानण वास्ते तयार कोनीं । अर यूं राज रा हाथ लांबा है, म्हारे सगळा घरवाळां रा माथा कलम करवाय सकें ! काले रा बचनां ने इत्ता जल्दी

भूलग्या । म्हें घड़ी घड़ी हाथ जोड़नें अरज करी ही के अंदाता डाकण रा स्वांग सारू माफी बगसावी । आप तो म्हनें सौ ई गुना माफ करियो हो । म्हें सुभट अरज करदो ही के उण वगत खुद अंदाता ई घके चढ़ग्या तो डाकण किणी भांत री गनो नीं पाळला । तद आप सगळा ई म्हारी बात नें मजाक में उडाय दी । म्हारी साची वीणती ने रिजक री अटकळ अर थोथी भोपाडफरी बताई । पछे म्हें कांई जिद्द करतो । म्हें आप लोगां नें पंला ई साफ नीं कै दियो के म्हें रिजक री मरजादा सू ऊंची मरजादा किणी री नीं गिणू । जद देस री घणी ई बचनां री मरजादा खुटावे तो पछे दूजो कुण उणनें निभा सकें । इण पछे ई अंदाता बगसीस रें बदळे म्हनें मारण री हुकम फरमावे तो रावळी मरजी । घणी री घणी कुण ?

राजाजी कीं जबाब नीं दियो । बोला बोला बैठा रह्या । अर उठीनें मैलां रें मांय राणीजी हठ झेल्यां बैठा के भांड रें पछे वारा भाई नें दाग दिरीजेंला ! राजाजी वास्तं म्हारा भाई सू ई वत्तो भांड कीकर व्हेगो !

पण राजाजी नीं तो राणी रें सवाल री सुभट जबाब दे सक्या अर नीं भांड री बात री ई साफ पडूत्तर दे सक्या । कांई करे अर कांई नीं करे, वारे कीं समझ बैठी नीं । राणी री बात नीं माने तो आफत, बचनां री मरजादा नीं निभावे तो आफत । राजा रा जीव नें किस्ती आफतां है !

राहड़ियां में जरू व्हियोड़ी भांड कह्यो—अंदाता, कांई हुकम फरमावे ?

पण अंदाता री ती जाणें मगज ई ठस व्हेगो व्हे । वे

तो कीं जबाब नीं दियो । कठपुतली री गळाई घड़ी घड़ी मंत्रियां री मूंडी जोवता ।

के इत्ता में राजाजी रें मूंडे लाग्यो अक नाई बोल्यो—
अंदाता, म्हनै हुकम दिरावो तो अक बात बतावूं ! बचन री मरजादा ई निभ जासी अर रांणीजी री बात ई निभ जासी ।

राजाजी खुसी में उछलता बोल्यो—आ कीकर ? आ कीकर ?

खवासजी गडकां सूं कैवण लागा—इण भांड नै रिजुक री मरजादा री इत्ती घमंड है तो पछे आप इणनै आज री आज सती री स्वांग लावण री हुकम फरमावो । डाकण रा स्वांग में खलकां रें लोई सूं खप्पर भरणा में इणरा घर री कांई जावें ! पण सती रा स्वांग में ओ अँड़ी ई मरजादा निभावें तो जाणूं । सती री स्वांग लायां पछे दोनूं स्वांगां री बगसीस भेली ई मिळ जासी ।

खवास री बात सुणनै सगळा ई दरबारियां रा मूंडा पळक पळक करण लागा, पण राजाजी रें बात सावळ समझ में नीं आई । तद दीवाण वानें सावळ बात समझाई । समझ में आतां ईं राजाजी अणूता राजी व्हिया । खुसी में उछलतां कह्यो—नाईड़ी तो म्हारी लाज जबरी बचाई !

पछे वैं भांड रें सांमी देखनै कह्यो—अबै थूं सती रा स्वांग वास्तै नट नीं सकला । नटै तो पछे जाणै जेड़ी करुंला । बोल अबै तो थनै कीं उजर नीं । सती रा स्वांग पछे म्हैं थनै दोनां री भेली ई बगसीस देवूला, थूं डर मत !

भांड कह्यो—अंदाता, डर तो चोरी अर जारी री लाग्या

करै । इण में डरण रो किसी बात ? सती रा स्वांग पछे म्हें फगत आप सूं इण बगसीस री आस करूं के म्हारी भस्मी नै किणी रें हाथ म्हारै घरें ठाणें करवाय दीजो अर म्हारा टाबरां नै म्हारी तरफ सूं ओ समची पुगाय दिराजो के रिजक री मरजादा सबसूं ऊंची मरजादा है । वं इणी भांत इणारी निभाव करै !

आठवा राजकंवर नै आपरी मां रा वं बोल आछी तरै याद हा । इत्ती बात कह्यां पछे वा कैवती — म्हारा लाडला बेटां, आगें बात सुणनै थें डरजो मती । बात रो खास सार तो इण में इज है । पछे सिद्ध्या रा वो भांड सती री स्वांग लायो । नगर री सगळो मानखो उणरा स्वांग नै जोवरण सारू आयो । देखतां देखतां चन्नण री चिता सजी । सती माता निसंक भाव सूं चिता माथे बैठी । उणरै सत रा जोर सूं मर्त ई चिता में अगन देवता चेतन ब्हिया । सती री स्वांग पूरो ब्हियो । वो भांड साधू रा भेल री मरजादा निभाई, ओड्यां रें मूंडे पगां पड़ियोड़ी माया नै ठुकराई । राजा रा दरबार में डाकण रा स्वांग री मरजादा निभाई अर पछे सती रा स्वांग री मरजादा निभावण वास्तै चिता में बल्लियो । अर बलियां पछे ई राजाजी कना सूं फगत इण बात री बगसीस मांगी के वं उणरी भस्मी नै घरें पुगाय देवें । अर बेटां नै उणारी तरफ सूं आ सीख देवें के वं इणी भांत रिजक री मरजादा निभावे । सती रा स्वांग में बलियां पछे राजाजी नाई नै ऊंची ओहदी दियो । उणनै मोत्यां सूं भरने सोना री ओक थाळ बगसीस में दियो । राजा राजी ब्हियो के साळा री

मौत री बदळी ई लिरीजगी अर बचनां री मरजादा ई निभगी । रांणी ई अणूती राजी व्ही के उणरा भाई री बदळी ई लिरी-जगी अर राजाजी नै आपरै बचनां सूं ई नीं डिगणी पड़्यो ।

मारग चालता राजकंवर नै मां री वांणी जाणें सुभट सुणीजी — बेटा, मरजादा री घमंड दूजी बात है अर मरजादा री साचो निभाव दूजी बात है । थें सती रा स्वांग रें मिस भांड नै मारण वाला राजा री गळाई मरजादा री कूड़ी निभाव मत करज्यो । भांड वाली मरजादा नै कदे मत बिसराज्यो । फगत सती रा स्वांग री मरजादा नै निभावण वास्तै उण भांड नै बळणो पड़्यो तो सोचली के मिनख जमारा री मरजादा नै निभावणी कित्ती दोरो है । म्हारी नसीयतां रा बोल थानें सगळी ऊमर याद नीं रैवें तो कीं बात नीं, पण थें उण भांड नै ताजिंदगी आपरो गुरू मानजो । इण बात नै नीं भूल्या तो समझली के थारो मिनख जमारी सुफळ व्हियो ।

राजकंवर मारग चालतो चालतो ई मन में बड़बड़ायो — मां, म्है नीं तो थारी नसीयतां नै भूलां अर नीं उण भांड नै गुरू मानणी ई भूलां । थूं ई बता थारी नसीयतां नै म्हें कीकर भूल सकां । जे वानें भूलग्या तो भांड री गुरुपणी पैला भूलीजैला ।

चालतां चालतां मारग माथे अेक लांठी सरवर आयो । राजकंवर पांणी पीवण सारू पाळ माथे चढ़्यो । पांणी री सरूप देखतां ई राजकंवर री मन हर्यो व्हेगी । दुनियां में सगळी माया पांणी री तो है । के इत्ता में पाळ सूं उतरतां राज-कंवर नै बड़ला री अेक खोखाल में चीं चीं री दरदनाक

आवाज सुणीजी । आ तो मरणा रें पैली री आवाज है । राजकंवर आवाज री सोय करती उण बड़ला सांमी भर-णाटे उडियो ।

उण बड़ला री खोखाल में अक म्याळमिन्नो अक कमेड़ी नै मूंडा में लियां रोसतो ही । कमेड़ी चीं चीं करती ही । किणी मिनख ने आपरें सांमी दोड़ती देख्यो तो म्याळमिन्नो खोखाल सूं बारें निकळनं दोड़्यो । कमेड़ी पांखां फड़फड़ावती फेर वत्तो चीं चीं करण लागी । राजकंवर हळफळायी बड़ला रें पाखती पूगी । धूजता हाथां सूं कमेड़ी नै बारें काढ़ी । खोखाल में ठोड़ ठोड़ पांखां बिखरियोड़ी ही । कमेड़ी री घांटो माथे, पंजां माथं अर पांखां रें हेटं ठोड़ ठोड़ दांत अर पंजा मंडियोड़ा हा । कमेड़ी टुकर टुकर राजकंवर रें सांमी भाळियो । हाल ताईं उणरी धूजणी नीं मिटी ही ।

राजकंवर उण कमेड़ी नै साथे लियां जंगळ में जड़ी-बूटियां हेरतो रह्यो, उणनं चुग्गी-पांणी करावतो रह्यो । दिन रा हरदम हाथां री हथाळियां में बिठाणियोड़ी राखती । रात रा छाती रें चेप, उणनं अणूता जाब्ता सूं राखती । भोळी कमेड़ी बोलती नीं कोई चालती, फगत चिरमी जैड़ी छोटी आंख्यां सूं राजकंवर रें मूंडा सांमी जोवती रेंवती । कमेड़ी री पाटा-पीड़ अर उणरें चुग्गा-पांणी वास्तै राजकंवर कीं पाछ नीं राखी । खुद तकलीफ पाय लेती पण कमेड़ी नै कियी भांत री अंल नीं आवण देती । वा ज्यू ज्यू ठीक व्हेती राज-कंवर री मन अणूती राजी व्हेती । पूरा इक्कीस दिनां पछ कमेड़ी पूरी सावळ व्ही । झड़ियोड़ी पांखां रा ठोड़ उणरें नवी

पांखां आयगी । राजकंवर मन में इत्तो राजी ब्हियो जाणें उगाने ई नवी जमारी मिलियो । कमेड़ी री पांखां माथे हाथ पंपो-लने कह्यो—रूपाळी कमेड़ी ! थूं साजी होयने म्हारी लाज बचायली । म्हारी पाटापीड़ सूं ठीक नीं व्हेती तो सगळी ऊमर म्हारी मन कुंद रेवती । म्है थारी ओ ओसाण जीवूं जित्ते नीं पांतलूं । तकदीरां सूं ईं मिनख रे अँडा मोका सजिया करे ।

राजकंवर री ओ कैणी ब्हियो अर वा कमेड़ी ठमक ठमक तीन वळा उणरे च्यालूं कानी परकमा द्री । राजकंवर उणरी ठुमका सूं चालणो निरखती रह्यो । घांटी माथे काळी चकरियो, काळी टूंच, गोळ सफ़ैट माथो, काळी आंख्यां, छोटा अर फबता पंजा अर बादल-वरणी कंवळी पांखां । तीजी परकमां देवतां ईं वा कमेड़ी अँक परी रो रूप धारण कर लियो अर हाथ जोड़्यां राजकंवर रे सांमी ऊभने मुळकरा लागी । जाणें बीजळी मुळकी । परी रो रूप अर वेस देखने राजकंवर रे तो इचरज रो कोई पार ईं नीं रह्यो । भोळी कमेड़ी अणचींती आ कांईं माया रची ! माया रा जोर सूं परी बणगो तो कांईं, कमेड़ी वाळी भोळप तो सागे री सागे उणियारा माथे झळके । राजकंवर री आंख्यां रे सांमी जाणें रूप रो समंदर हिलोळां मारण लागी ।

राजकंवर ने इण भांत इचरज सूं जीवतां देख परी थोड़ी सी मुळकी, जाणें दूध री सरवर मुळकियो । बोली—म्है इंदर लोक री परी हूं । म्है अँकर परियां रे झूलरा रे सागे अतलोक में विचरण सारू आई । म्हारी दूजी साथणियां ने तो ओ लोक सुहायो कोनीं, इण सूं वे दूजी वार आवण

रो हर नीं करी, पण म्हें तो उण दिन पछे नित आपरा लोक में विचरण करण सारू आवूं । इंदर भगवान मया देदे तो म्हें हमेसां रें वास्तं अठे ई बस जावूं । म्हें अेकर अठे नीं आवूं तो पछे सगळे दिन चैन नीं पड़े । आज इण सरवर री पांणी पीवण वास्तं पाळ री ढाळ में ठुमक ठुमक चालती ही के म्याळमिन्नी लारा सूं भच देणी री पकड़ली । म्हें अतलोक में कमेड़ी री रूप घरन आवूं, जिणसूं म्हनें कोई पिछांण नीं सकें । आप नीं आवता तो मरणा में कीं कसर बाकी नीं ही । घणा ई चीं चीं करिया पण वो म्याळमिन्नी तो म्हारी चीं चीं न सुणी ई नीं । म्हारी जाण में तो वो साव बोळी व्हेला । घाव सावळ नीं व्हिया जित्ते म्हें पाछो म्हारो रूप धारण नीं कर सकती । आप म्हारे वास्तं कांई कांई फोड़ा भुगतिया उणनें दरसावण वास्तं म्हारा लोक में वैड़ी कीं भासा ई कोनीं । नीं तो म्हारा लोक में कीं दुख, संताप, रोग अर विपदा उपजै अर नीं म्है अेक दूजा रें काम आवां । इण खातर भलाई, सेवा बंदगी अर मदत जैड़ी बातां न दरसावण वास्तं म्हारी बोली में ओपता सबद ई कोनीं । भलांई वो म्याळ-मिन्नी म्हनें रोसजो अर भलांई आपरें आवण री संजोग सघजो । मिनका रा मूंडा सूं छूट्यां पछे ई बचणा री आस नीं ही । आपरें हाथां री परस पातां ई मन में जचगी के अबे मौत ई म्हारो कीं नीं बिगाड़ सकें । पाटा-पीड़ रा इण लारला पख-बाड़ा में म्हें जित्ती बातां समझी हूं, उत्तो म्हें म्हारो सगळो ऊमर में ई नीं समझी । आपरी सेवा न देख केई वार मन में आ जची के पाछो परी री रूप धारण ई नीं करूं । सारी

ऊमर कमेड़ी बणनै ई आपरा हाथां में बिताय दू । पण आपरी अनोखी बातां सुणियां पछै म्हारा सूं ढबीजियौ कोनीं, म्हनै असली रूप धारण करणौ ई पड़ियो । म्हारा लोक में नीं तौ कोई मरे अर नीं कोई बूढ़ो व्है । आप म्हनै नवौ जलम दियो तौ ऊमर में पंली वार आज ठा पड़ी के नवा जलम रौ आणंद काईं व्हिया करे ! म्हारी समझ में नीं बैठे के म्है आपरी ओ ओसांण कीकर चुकावूं । कदैई ओ चुकीज सकैला के नीं ।

राजकंवर मुळकनै कह्यौ—म्है तौ पेला ई म्हारी भोळी कमेड़ी नै अरज करदी ही के उणरौ ओसांण म्है खुद कीकर उतार सकूला । म्हारी मां तौ म्हानै हमेसां आ ई सीख दीवी के दुख अर बिखा में किणी री मदत करण वाला रौ कीं ओसांण नीं व्हिया करे, सांमी जिणनै मदत दी जावै उणरौ ओसांण व्हिया करे के वो मदत करण रौ वंडी मौकौ दियो ।

परी खिल खिल हंसी, जाणै दूध रा सरवर में उफांण आयो । बोली—आपरी तौ सगळी बातां अनोखी है, सुण सुण नै अचुंभी करण लाग जावूं तौ बावळी व्हियां सरे । आप म्हारी पांखां नै पंपोळता, म्हारा पंजा नै सहळावता सह-ळावता जद आपरा सीना माथै चपनै रात रा सूवता तौ म्है रात भर पिछतावौ ई करती रेंवती के इंदरलोक में सगळी जूण अंळी गमाई । थोड़ी सौ खुड़की व्हैतां ई आपरी आंख खुल जाती के कठैई म्है अठी-उठी उड ती नीं गी । म्हारी टूंच माथै आंगळी फेरचां पछै आप पाछा नेखम सूय जाता । अर म्है जागती ई रेंवती ।

राजकंवर कह्यो—इंदर लोक में कदास फालतू री बातां अणूती व्हिया करे ! इण नाकुछ गांगरत नै छोड़ी अर कीं दूजी चरचा करी । म्हारो बात मानो तो अेक बात कैवू ।

परी आखती पड़ने पूछ्यो—बोलौ, काई ?

राजकंवर कैवण लागी—थें म्हारा लोक में नित विचरण करण सारू आवो, इणरें साटे म्हने ई अेकर थारो इंदर लोक तो बतावो ।

परी अभरोसा रा भाव सूं पूछ्यो—काई साचांणी आप म्हारा लोक में चालण वास्तै त्यार ही ! पछे तो चाहीजै ई काई ! इंदर भगवानं इण बात वास्तै म्हारें माथें बेहद राजी व्हेला । केई बरसां सूं वारी अणूती लाळसा है के कोई अतल-लोक री वासी अठे आवें । म्हारें माथें आपरो ओ दूजी ओसांण व्हेला । आपने लें जायां इंदर लोक में म्हारी मानता सब परियां सूं सवाई व्हे जावैला ।

राजकंवर मुळकनै कह्यो—पण आप माथें ओ दूजी ओसांण करणी कीकर आवें ? म्हें तो पांच हाथ ऊंचो कूदतां ई पाछो जमीं माथें पड़ जावूं ।

परी कह्यो—आपरो हाथ झालियां म्हें ठेट इंदर लोक तक आपने लें चालूंला । आख्यां में अेक खास मंजन सारियां पछे नीं तो आपनै किणी भांत री डर लागैला अर नीं किणी भांत री कोई दूजी तकलीफ ई व्हेला । उण मंजन सूं आपनै रात रा ई दिन रें उनमानं दीखैला ।

आठवो राजकंवर सगळा भाइयां सूं थोड़ी घणी अचपळी हो । कह्यो—तो पछे इण सुभ काम वास्तै किणी जोसी कना

सूं मोरत निकाळणी पडंला काई ? आपरी बातां सुणियां पछे म्हारा सूं तो अक पलक ई अठे ढबणी नीं आवें ।

राजकंवर री आख्यां में मंजन सारियां पछे परी उणरी हाथ झालने ऊंची उडी उण वगत रात दो अक घड़ी ढळी ही ।

थोड़ी सौ ऊंची उडियां पछे राजकंवर हंसने कहाँ — उण म्याळमिन्ना री भी भी ई भली व्हो के उणरे कारण ओ अमोलक संजोग सजियो । उण वगत तो अंडी भळकी आई के उणरी टांग पकड़ने गिड़ा माथे पिछांट न्हाकूं । पण अबे सोचूं के जे वो अकरम कर देतो तो म्हारी वो पाप समंदरां रा सगळा पाणी सूं घोवतो तो ई नीं धुपतो । मिनख ने आंचा-आंच में कीं काम नीं करणी चाहीजें ।

आ बात करियां पछे राजकंवर आपरी दुनियां ने निरखण सारू नीचे भाळियो तो वा अंधारा रा खोळा में कुडियोड़ी सूतो ही । थोड़ी ताळ पछे वो फेर नीचे देखियो तो अकदम झिझकने इचरज सूं पूछयो — ओ काई ! आभा सूं तूटने कठई ओ चांद तो नीचे नीं खिरग्यो । अर खिरतां ई ओ इत्तो मोटो कीकर व्हेगो ।

परी खिल खिल हंसी । हंसती हंसती ई बोली — म्हने तो आपरी अकल खिरियोड़ी दीस । खुद री दुनियां ने ई नीं ओळखो ! चांद री गळाई चिमकती आ रावळी दुनियां हे ! इत्तो ऊंचो आयां पछे आ इण भांत ई दीख्या करे । चांद ने देखणी चावो तो ऊंचो देखो ।

परी रे केतां ई राजकंवर ऊंचो देखियो — अक लांठा गोळ बादळा री गळाई चांद दीखतो ही । उण में उजास अर

चिमक री लवलेस ई नीं हो । मांय तीन चारेक काळी काळी टेकरियां ज्यूं कीं दीखती हो । तारां नै जोवण सारू वो चारुंमेर घांटी घुमाई—रुई रा धोळा फूबदा ज्यूं ठोड़ ठोड़ बिखरियोड़ा लखाया । वां में ईं खिवण अर चमक री जात नीं ही ।

राजकंवर अभरोसा रा भाव सूं पूछ्यो—औ कोई दूजो चांद तो नीं है ! अंडी काई ? अ तारा ई कोई दूजा गिगन रा दीस ! नीं तो खिवे अर नीं चिमके !

परी फेर हंसी । कह्यो—आकास में चांद तो फगत ओ अक इज है । तारा ई वं सागं है । अठे आयां अ इणी भांत रा दीस । अठा सूं इंदरलोक घणी आंतरै कोनीं । दस बार पलकां झपे उण सूं ईं पंला पूग जावांला । अबे उजास री भळभळती समंदर आवेला । उठा सूं ईं म्हांरा लोक री सींव सरू व्हे । अकर तो आपरी आख्यां अणूती चूधीजैला । पछे थोड़ी ताळ में आपे ईं हेवा व्हे जावेला । म्हांरा लोक में अंधारी देखण रा तो आपनै पूरा भटका ई आवेला ।

अचाणक राजकंवर नै अंडी लखायो के जाणं अकण सागं हजार सूरजां री उजास छोळां भरती सांमी उडती आवं है । अकर तो उणनै उण भळकता चिळका आगं सूजणी ई मुळणो बंद व्हेगी । पण होळें होळें उणरो आख्यां सूं उजास री किरणां फूटण लागी । अर वो उण उजास रा समंदर नै आख्यां सूं पीवण लागी ।

के इता में परी कह्यो—आपनै थोड़ी ताळ बारें ढाबनै म्हें पंला इंदर भगवान नै आपरै आवण री बघाई देवण

सारू जाबूला । जित्त आप अणगिण परियां रा रूप नै निर-
खता रंजो । म्हनै बताजो के आपनै सबसूं रूपाळी परी किसी
लागी । देखूं आपरी पारख कैड़ीक है !

राजकंवर कह्यो—आपनै ओ वेम कीकर ब्हियो के म्हें
रूप रो पारखी हूं ! रूप नै निरखण वास्ते तो म्हें मुळगो
ई आंधो अर अबूझ हूं । म्हांरी मां तो म्हांनै फगत मन री
पारख करणी ई बताई । रूप री पारख करणी जरूरी व्हेतो
तो वा म्हांनै अवस सिखावती । वा सिखावण री जरूरतु नों
समझो तो म्हें अबं सोखणी ई नों चावूं । आप ई म्हनै बताय
देजो के सबसूं रूपाळी परी किसी है । म्हें तो आप कंवोला
जकी ई बात मान लेवूला ।

परी हंसनै जबाब दियो—म्हें तो कैवूं के म्हें ई सब
परियां सूं रूपाळी हूं, तो आप मानो ?

राजकंवर कह्यो—ज्यूं नों मानूं ! इण में नों मानण
जिसी काई बात ?

इंदरलोक री धरती माथं पग धरतां ई राजकंवर नै अंडी
लखायो के उण में हजार गुणा वत्तो बल आयग्यो । पण वो
भार में फूल सूं ई हलको व्हेगी । उणनै आपे ई परियां री
भांत उडणी आयग्यो । वा भौळी कमेड़ो इंदर भगवानं नै बधाई
देवण सारू गी जित्त वो बगीचा में अणगिण परियां रं साथे
ऊभो रह्यो । फूलां माथं फूदियां उडै ज्यूं सगळी परियां अठी-
उठी उडती ही, पण जद वाने इण बात री भणक पड़ी के
अतलोक री कोई मानवी जीवतो अठे आयो है तो वै डरनै
सगळी री सगळी बगीचा सूं देखतां देखतां तुरत लोप व्हेगी ।

अेक ई परी लारै नीं ढबी ।

इंदरलोक री घूळ ई सोना चांदी सूं ई सवाई चिमकती हो । कांकरां री गळाई हीरा, मोती रळियोड़ा पड़्या हा । सोना रा खूंख, सोना रा फूल अर हीरा-मोत्यां रा झूमका । सरब पंछी सोना रा । झरणा, नदियां, सरवर, समंदर सगळा ई दूध अर इमरत रा । इमरत री ई बिरखा बरसै । अतलोक में जंडी सुणता वंडो ई इंदरलोक री थाट हो ।

के इत्ता में भोळी कमेड़ी रै साथे खुद इंदर भगवान दौड़ता दोस्या । अणूती अंतावळ रै कारण वांरी नग जड़ियोड़ी सोना री अेक पगरखी लारै छूटगी तो ई वै परवा नीं करी । पग में अेक पगरखी पैरियां वै हळफळाया राजकंवर रै सांमी आयनं ढबिया । बिना किणी आव-आदर अर कुसळ-खेम रै वै आंमनी जतावता, आतां ई अरळ-विरळ बोलण लागा — जुगां रै पछे थें आज म्हांरी साळ-संभाळ करण वास्तं आया । म्हनै सपना में अंडो आस नीं हो के थें म्हारे साथे इण भांत री विस्वासघात करीला । आपरै कैणा मुजब ई तो विष्णु भगवान इण इंदरलोक री रचना करी । उण दिन तो थें मिनख लोग इत्ता रोया कळपिया के इण लोक रें बिना अेक पलक वास्तं ई थारी दुनियां री कांम नीं चालै । परलोक री भरम बतायां बिना लोग धीजै ई कोनीं । अर रचना व्हियां पछे थें इत्ता जुगां रै उपरांत इण लोक नै चितारियौ । के तो अेक पलक वास्तं ई कांम नीं चालती हो अर के जुगां तक म्हांरी पूछ ई नीं करी ।

इंदर भगवान जाण्यौ के वांरी गळाई राजकंवर ई सगळा

अतलोक री राजा है । इण खातर अतलोक री सगळी बातां री जिम्मी आरौ इज है । वै आपरा बाळां नै लारै फट-कारता फेर धकै कंवण लागा—खुद तो मौत री वरदान लेयनै म्हानै अमरता री सराप सूपग्या । मौत सूं सिरै चीज तीनूं लोकां में ई कीं कोनीं । आप तो अतलोक रा सगळा मिनख मरणा री आणंद लेवौ, अर म्है तो अमरता री इण लाय में सिळगां । लाळसा तो अस्टपीर थें अमरता री करो पण म्हारा दुख में हाथ बंटावण सारू आज दिन ई कोई आयो ? फगत थारै कैणा सूं ई म्है अमरता री इण अधम अरहीण बात नै कबूल करी, पण थें तो उणरै नैड़ाकर ई नीं निक-ळिया । अठै हीरा, मोती, सोना, चांदो री दाळिदर गळै घालनै थें भाटा, कांकरा अर धूळ जेड़ी अमोलक चीजां में मछरां करी । म्हानै भरमावण वास्तै बुढ़ापा नै थें मिनख जाणै जित्ती भांड्यो अर खुद बुढ़ापा री आणंद भोगी । थें मिनख लोग आपस में ई अेक दूजा रै सागै छळ करियो अर म्हारे साथे ई छळ करियो । थें अेक मोती सूं दो चिड़ियां री निसांणो साधियो अर दोनां नै ई ढायली ।

इंदर भगवान री ओ अणचींत्यो ओळबौ सुणनै राज-कंवर हाक्यो-बाक्यो व्हेगो । उणसूं पाछी अेकाअेक जबाब देवणी ई नीं आयी । सेवट नीठ हीमत करनै पूछ्यो—काई आपरो ओ इंदरलोक मिनख री इच्छा अर मिनख रा कैणा मुजब रचीजियो ?

इंदर भगवान रीस में पग पटकता बोल्या—छळी तो म्हैं ई घणी हूं, पण थां मिनखां रा छळ नै कुण पूग सकै ! म्हानै इत्ता जुगां तक फंसाया राखनै अबै अबूझ टाबर री

गळ्हाई पूछी के ओ इंदरलोक मिनख री मंसा परवाण रची-
जियो काई ? रोस तो अंडी आवं म्हारा वजर सूं दुनियां
रा सगळा मिनखां री घांटियां कलम कर न्हाकूं । धोखा री
कोई हद व्हे ! कपट री कोई माठ व्हे ! भला आदमियां
म्हारी हालत माथे थोड़ी घणो तो विचार करियो व्हेतो के
जुगां तक कोई नाच गांणा में कीकर मगन रं सकं ! अठे कोई
नवो जलम व्हे नीं अर लाखूं बरसां में ईं कोई मरं खूटे
कोनीं, कीकर इण लोक में बसणी आवं ! म्है व्हेयनं अठे
हजारूं बरस काट लिया, थें मिनख लोग अठे अेक बरस ईं
रंयनं तो बतावो । बिना दुख रं कोई सुख री साव कीकर
लं सकं ! बिना तोटा रं माया री ओ अखूट भंडार काईं
काम री ! बिना विखा अर बिना फोड़ां रं ओ नाच गांणा
कीकर आछा लागं ! बिना बुढ़ापा रं इण अखूट जवांती री
काईं मोल ! अठा रा रूप सूं म्हानं अपचो व्हेगो है, फूटी
आख्यां ईं देखणी नीं सुहावे । थारी मंसा परवाण म्हानं सब
कुछ देयनं जबरदस्त दुखो कर दिया अर थारा खुद रा अत-
लोक मे माहोमाह मिनखां सूं सब कुछ खोसनं, म्हारा लोक
री भरम बतायनं वानं अणूंता दुखी कर दिया । थां मिनखां
जंडो विस्वासघाती अर जाळसाज फेर दूजो कुण व्हेला ?
थारी इज बोली में थानं सावळ समझावूं तो कैणो पड़ला के
सांप नं मारिया री पाप लाग सकं पण थां मिनखां नं मारणा
री कीं पाप नीं लागं । म्हारं साथे तो छळ करियो जको
करियो ईं पण थें माहोमाह ईं नीं चूकिया !

पछे इंदर भगवानं गळगळा कंठ सूं कह्यो — म्है इण लोक

रा आदमी तो जीवता जीवता ई काया ँहैगा, अकर थांरा लोक सूं मौत नै तगड़ अठा री मारण बतावो तो म्हांरो कों कल्याण ँहै । माळा तो रात दिन अमरता री अर इंदर-लोक में बसणा री फेरो पण साची बात तो आ है के थें अमरता सूं पल्लै ई भेटणी नीं चावो । थें अँड़ा भोळा कोनीं जको अमरता रा इण नरक नै भोगो । म्हें आपरें पगां पड़ूं म्हने अकर मौत री आणंद बगसावो, म्हें जीवणा रें आगें काठो आंती आयग्यौ हूं । अठा रा बाकी लोगां रें लारें धूड़ बाळी, पण म्हने कीकर ई मरण री अटकळ बतावो तो इण नरक सूं म्हांरो छुटकारो ँहै । म्हें अठा री परियां सूं, अठा रा नाच गांणा सूं, अठा रा होरा मोत्यां सूं, अठा रा सुख सूं, अठा री अमरता सूं अर अठा री अखूट जवांनी सूं ठेट चोटी ताईं धापग्यौ हूं, म्हने इण नरकवाड़ा सूं उबारो । अठा री राज-काज आज सूं ई आप संभाळी अर म्हने अतलोक में भेज दो । म्हें तो उठा रा राज री ई चावना नीं करूं । म्हने अतलोक री माछर ई बणायनं भेज दो । म्हें आपरी कदेई गुण नीं भूलूं । कीं न कीं निपटारी करियां बिना म्हें अठा सूं आपनै पाछा भवें ई नीं जावण हूं । जुगां रें उपरांत नीठ बखड़ी में आया हो ।

आ कैयने इंदर भगवानं साचांणी ई राजकंवर रा पग पकड़ लिया । राजकंवर तो इण झमेला में भूंडो पजियो । माडांणी पग छुडायने इंदर भगवानं नै आपरें जोड़ें बिठांणिया । अणूता आदर रा भाव सूं कैवण लागी—आपरी तो ओ बडा-पणी है के म्हांरा अतलोक में बसण री आप मंसा दर-

सावो । म्हां भ्रतलोक रा मिनखां वास्तै आप देवता हो । म्हे आपरो पूजां करां । भगतां रै आगं निवणी फगत भगवानं नै ई छाजै । आपरो म्हांरा लोक में बसणी व्हे तो पछै चाहीजै ई काई ! म्हे घणी उमंग अर अणूता कोड सूं अठै आयो हो , पण अठा री रंगत देखनै म्हारो तो आतां ई मन बुझग्यो । म्हे भ्रतलोक रा वासी आपरो निजर में कित्ता ई अघम अर हीण व्हे सकां पण आपरा लोक में म्हे पूरो अेक दिन ई सुख सूं नीं बिता सकां । आपरा लोक री तो फगत चावना ई फूठरी लागं । म्हनै अचुंभो व्हे के आप लोग अठै कीकर जुगां तक बिना उलटफेर रै बोला बोला जीवता रैगा । म्हनै दीस के आप लोगां रा मन में बळ कोनीं , हाथां में करार कोनीं । आपरो लोक छोड़नै किणी दूजा लोक में गियां कीं बात नीं बणैला । आप जठै बसो उणी लोक री सुघारो करो । हाथ पग हिलावो , डील रै कीं पसोनी अणावो । थें चावो तो अै नाच गाणा बंद नीं व्हे सकं ? आराम सूं पड़िया पड़िया भोगण री सुभाव छोडी अर हाथां निपजावो । पछै थें देखो के हाथां निपजायोड़ा नै भोगणी कित्ता आणंद री बात है !

इंदर भगवानं माथा नै खुजळावता कह्यो—आपरो बातां सूं नवो जोस बधै , मन में कीं करण री हूंस ई तड़का तोड़ै , पण कठैई म्हांरै साथे आपरो ओ कोई नवो छळ तो नीं है । मिनखां री किणी बात माथे म्हनै कीं भरोसो नीं व्हे ।

राजकंवर मुळकनै जबाब दियो—आपनै आपरै खुद माथे ई भरोसो कोनीं , इणरी तो कोई काई कर सकं ! आप खुद छळ री निजर सूं मिनखां नै देखो तो आपनै वारै मांय खुद

रो छळ ई निगं आवं । जिण दिन आपरा मन सूं आपरो छळ अळगो व्हे जावला, उण दिन आपनै किणी में किणी भांत रो छळ सोध्योड़ी ई नीं लावला । आपरा इंदर लोक में दुख फगत इणो बात रो है के आप सगळा पड़ियो भोगी । ओ सुभाव राखियां तो थें कठ ई मुखी नीं व्हे सकौला । थें बिना कीं करियां थारा लोक में तब्दोली चावो आ कोकर व्हे सकें ! पैला थें लोग बदळो—पछे देखी के थारो लोक मत ई बदळ जावला । जे थां लोगां नै सुखी होवण रो थोड़ी-घणो चावना है तो आज सूं इण बात रो प्रण करलो के हाथां कमायां बिना थें किणी चीज रो भोग नीं करौला । जुगां पैला मिनख थारै साथे छळ करग्यो तो फगत रात दिन रोवणा सूं ई कीं गरज नीं सरें । लारला छळ नै भूल जावो अर आपरें जोग नवा मारग बणावो, नवो जुगतियां रचो अर नवा करतब करो । पछे देखी के थारो लोक कालें रो कालें कीं दूजो ई व्हे जावला । अठा सूं भागण रो बात सपना मे ई मत लावो । म्हांमें दोसण काढ़णा सूं पैला म्हनै इण बात रो जबाब दो के आपरा लोक में उलटफेर करण वास्तं थें कांई कांई काम करिया ?

इंदर भगवान मोळा पड़नै जबाब दियो—सिवाय सुख भोगण रें म्हे अठें काम तो कीं नीं करां ।

राजकंवर कह्यो—थारें दुखी होवण रो कारण फगत ओ इज है । मिनखां साथे व्हियोड़ी पुराणो बातां नै भूल जावो अर हाथां में नवा नवा काम करण रो करार बधावो ! फगत अेक बात रो पूछड़ी पकड़नै थें जुग रा जुग बिताय दिया, बड़ा इचरज रो बात है । अंदी अर अघोरी तो थें इंदरलोक रा

वासी ई कम नीं हौ ।

इंदर भगवान ने राजकंवर री बातां सूं खासो भली धीजी ब्हियौ । ती ई सावचेती बरतता उणनं पूछ्यो—जे आपरं कैणा मुजब कांम करियां पछे म्है सुखो नीं ब्हिया तो म्है अतलोक में आ जावांला अर आप सगळां नं अठे म्हांरा लोक में आणो पड़ैला, पैला म्हनं इण बात री विस्वास दिरावो । केई जुगां पछे तो देठाळो दियो अर पाछा जुगां ताईं नीं आवो तो म्हांरो काईं दोन व्हे ।

राजकंवर कह्यो—आप जैड़ा निबळा अर अपंग लोगां री जको दोन व्हेणो चाहीजं वो ई दोन व्हेला । थें म्हांरो उडो-कणी छोड खुद अतलोक में आवण री अर आपरी नवी मंसावां मुजब जीवण बितावण री मन में हूंस राखो अर उण मुजब कांम मे जूझ पड़ो तो सगळी बातां सिरं व्हेला ।

अबकी वा भोळी कमेड़ी खिल खिल हंसी । कह्यो—कोरी मन री मंसा अर खाली हूंस सूं ई कीं नीं व्हे । केई बातां री संजोग जरूरी है । जे म्हैं के कोई दूजी परो आपनं पाछा अतलोक में नीं पुगावें तो आपरो मंसा अर हूंस काईं कांम आवे ?

राजकंवर मुळकनं कह्यो—आ ई बात आपरी आंख्यां सूं देख लीजी के म्हारी मंसा अर म्हारी हूंस काईं कांम आवे अर काईं कांम नीं आवे !

इंदर भगवान कह्यो—आ ई कदे व्हे । जुगां रे पछे आप म्हनं नवी सुमत दी, नवी बातां बताई । सुणनं म्हारा मन में घणो थाबस बंधियो । आपरो बातां सुणनं जुगां रे

उपरांत आज पंली वार म्हारा मन री दाझ बुझी । म्हैं अणूता आदर अर सनमान रै सागं आपनै अतलोक पुगावूला । पछे वै भोळी कमेड़ी रं सांमी देखनै कह्यो—आपनै अठे लायनै थूं जकी म्हारो कल्याण करियो इण बदळे थारी इच्छा व्है सो मांग । म्हैं आज हजारूं बरसां पछे पंली वार राजी ब्हियो हूं ।

परी नीचो धूए करनै होळें सूं बोली—दुनियां में केई बातां अंडी व्है के मांगणी कैणा सूं ई सोरें सास मांगीजे कोनीं । आप इण लोफ रा देवता ही । म्हारा मन री इच्छा न मते ई समझ जावो । मांगणा वास्तै कांई मंडा सूं बोलणी जरूरी है ?

इंदर भगवान कह्यो—बावळी, इत्ती बात समझण री म्हारो बूतो व्हैतो तो म्हैं खुद जुगां तक इण भांत दुख में वयूं कळपतो । व्है जकी बात म्हनै बोलनै जता । म्हारो बातां जोग ई म्हामें तो अकल कोनीं, पछे म्हैं थारा मन री बात बिना कहां कीकर समझ सकूं ।

भोळी कमेड़ी अपूठी फिरनै चालती चालती ई होळें सूं कह्यो—राजकंवर नै हठ करनै म्हैं ई तो अठे लाई अर म्हैं ई आपनै पाछा अतलोक में पुगावूला । आप सूं फगत ओ छोटी सो वर मांगूं के म्हनै अतलोक में ई रंवण री मया बगसावो । अबे म्हैं अठे अेक पलक ई नीं रंवणी चावूं ।

इंदर भगवान अेक ऊंडो निस्कारो न्हाकनै कह्यो—ज्युं थारी मरजी ! पण म्हनै ई कोई मांगण सूं अतलोक में रंवण री वरदान देवण बाळी व्हैतो तो आज म्हारै सुख री पार नीं ही ।

गिरस्ती रौ आलम

तपसी सूं सीख अर आदेस लियां पछै आठूं
राजकंवर तौ न्यारी न्यारी दिसावां में अणूता
कोड अर हरख सूं वहीर व्हेगा पण खुद आदेस देवणिया तपसी
रौ जीव घणा घणा जंजाळां में पजग्यौ । आपरी परतख दीठ
रें सांमो वी साचांणी ई वानें सांप्रत जावतां देख्या तौ उणरी
मन नंदी रा भंवारा रौ गळाई गणण गणण घूमतौ चकरी चढ़-
ग्यौ । उणरी आख्यां सांमी डोलर हींडा रें उनमानं धरती
हींडण लागी । ऊभौ रैवणी दूभर व्हेगौ । जटा में आंगळियां
घालनं हेटें बंठग्यौ । सूरज तर तर तवा रौ गळाई काळी-
मिट्ट पड़तौ गियो । देखतां देखतां सूरज रौ सगळी उजास काळा
अंधारा रौ जांमो पेर लियो । तिवाळी खायनं तपसी नीचें
गुड़ग्यौ । तपसी रें गुड़तां ई उणरी सगळी माया ई लोप
व्हेगौ । ठीक उणी वगत आठूं भाई मुड़नं लारे जोयी तौ नीं
वानें तपसी ई निगं आयौ अर नीं उणरी कीं माया ई निजर
आई । वारें समझ नीं बैठी के अचांणक ओ काई अणचींत्यो
चाळी ब्हियो । भगवानं रें लगैटगं पूगणिया तपसी बिना कदैई
अं बातां बण आवें ? देखतां देखतां सगळा जंगळ में माया
रची अर देखतां देखतां पाछी लोप करदो । निमो है तपसी नें
अर तपसी रौ करामातां नें ! सगळा भाई आदर सूं उणनं
सीस निवायो । उण वगत वी मुंडत ऊंची पाळी रें ओलें
बेचेतं ब्हियां पड़चौ हो । तपसी नें लखायो के जाणें कोई
सांमळा रौ लगां देयनं उणरा माथा री नसां ऊंची लेवें है ।

जाणै कोई तीखी गेंतियां सूं धमाधम उणरा माथै नै खोदै है ।
अचाणक माथा में जोर सूं धमाकी सुरणीजियो—कदास कोई
सुरंग छूटी दोसै । माथो जाणै किळी किळी होयनै बिखरग्यो ।

दो घड़ी रै उपरांत पाछो चेतो बावड़ियो । जाणै किळी
किळी व्हियोड़ी माथो मतें ई चिपग्यो व्है ज्यूं । थोड़ी सी
पलकां उघाड़ी । सूरज तपसी री इण हालत माथै हंसती सी
लखायो । मन ई मन कीं गिरणावतो तपसी बेठो व्हियो ।
थोड़ी ताळ बेठो बेठो ई चारूंमेर घांटी घुमाई । आपरी मजबूत
जंगी जड़ियां रै आपै विकराळ बड़लौ ऊभो हो । झूमती साखां,
राता भड़ोलिया अर अणगिण लीला पांनड़ा । केई आंघियां
माथाकर निकळगी । पण बड़लौ तो भाखर ज्यूं पग रोप्यां
नेखम ऊभो । धरती में ऊंडी जमियोड़ी जड़ियां रै आपै ।
जड़ियां खोळी पड़्यां के जड़ियां नै वाढ़्यां अेक पलक ई बड़लौ
आपा माथै नीं ऊभ सकै । तपसी बारै बरस तापनै फगत
आकासां ऊंचो चढ़ण रा जतन करिया पण जड़ां धरती में नीं
जमी । झोला रा फटकारा बिना ई आपरा भार सूं ई नीचै
गुड़ग्यो । बारै बरसां री तापणो इण विघ निरफळ कीकर
व्हियो । तप अकारथ व्हियो सो व्हियो पण बारै बरस अँळा
गिया , जका पाछा कीकर बावड़ें ?

कड़ियां माथै हाथ देयनै तपसी ऊभो व्हियो । उणरो डील
थर थर घूजती हो । मरियोड़ी हाडक्रियां माथै मोट न्हाकतां ई
बांनै जीवती करण वाळा तपसी री ओ कांई ढाळी व्हियो ?
जीवतां थकां आज तो जाणै उणरो सत ई निकळग्यो व्है
ज्यूं ! भरम रा गाढ़ री सेवट आ इज गत व्है । कोई अेक

दो दिन के पांच दस पखवाड़ां तक नीं पूरा बारें बरसां ताईं वो तप करियो । निरणी, तिरसो रैनने बारें बरसां ताईं मून अवचल समाध राखी । माथे उदई रो ठेबो खिड़कीजग्यो तो ई उणने चेतो नीं रह्यो । अक पलक झपे इत्ती ताळ में बारें बरस बीतग्या । पण अबे तो अक पल बितावणो ई बारें बरसां जित्तो भैगो ।

राजकंवरों रो आचरण अर सुभाव देखने तपसी तो भंवर रा आटां में झिलग्यो । काई तपसी रे तप रो फल आं राज-कंवरों रे हाथ आयग्यो । बारें बरसां रा तप रे पछे ई रीस अर मद माथे वो काबू नीं पा सक्यो अर अे आठूं रा आठूं भाई राजकंवर होयने ई रीस अर मद रे नैड़ाकर ई नीं निकलिया । रीस अर मद तो राज-घरांणा रा लोई में ईं घुलियोड़ा रेवं, आंरे बिना तो वे सास ई नीं ले सकें, उण घरांणा में पलियोड़ा अे कंवर तो जांणे इत्याद गुणां रा पर-तख पूतळा इज । आं में नीं है जका सगळा ओगण अर आं में है जका सरब गुण ।

बारें बरसां रो मून समाध में तपसी रा ओगणां ने आपरे बधणा सारू पूरी छूट मिळगी । अर तपसी रो अजांण में जांणे वे तो आपरी छोळां माथे आयग्या । पछे इण तप अर इण समाध रो सारथकता ! काई आं थोड़ी घणी नाकुछ करामातां अर आं अजोगता हुनरां वास्तै मिनख जमारा रा अे बारें बरस अैळा गमाया ! बारें बरसां में मिनख चावे तो गिगन रो अेक अेक तारी बीण सकें ! मन में भरम अर विस्वास हो जित्तै तो अणहोणी करामातां ईं पूरो साथ दियो,

पण विस्वास रें हिलतां ईं वै सगळी करामातां धूड़ भेळी व्हेगी । आंख खुलतां ईं जिण भांत सपनी लोप व्हे उणी भांत विस्वास री आंख झपतां ईं सगळी करामातां लोप व्हेगी । बारै बरसां री अमोलक घड़ियां अँळी गमायनै करामातां री नाकुछ छळ थोड़ी ताळ वास्तै हाथ लागी अर थोड़ी ताळ ईं में हाथ सूं छूटग्यो । आं आठ राजकंवरां रा आचरण सूं तपसी रें भरम री जाळी कटग्यो । राजकंवर साथै रह्या जित्तें तो तपसी नै आं बातां री फेर ईं घणी चेतो नीं व्हियो, पण वारें अळगा व्हेतां जाणें मून समाध रें ओला री थोबलियां ईं अळगी व्हेगी अर अधर छायोड़ी ओली हांकरतां हेटै आय पड्यो । तपसी तो भूंडो भरम-जाळ में फंसियो !

चेतो बावड़तां ईं अेकर तो तपसी री मन व्हियो के लारें दोड़ने वां सगळा ईं राजकंवरां नै पाछा बुलाय लेवे, पण उण वगत दोड़ण री काया में सत ईं नीं हो । वो दोड़ने वानें कंवणी चावतो के वारी संगत बिना वो अेक छिण वास्तै ईं अेकलो नीं रें सकै । किणी भांत रा कोई दूजा डर रें कारण नीं, उणनै तो फगत खुद आपरो ईं डर अणूंतो लागे । वो खुद ईं खुद सूं डरण लागी । उणनै आपरें माथे ईं रत्ती भर भरोसो नीं रह्यो । उणनै अँडो लखायो जाणें वो खुद आपरा हाथां सूं आपनै ईं मार न्हाकैला ।

वो तांगियां खावतो बड़ला री छीयां हेटै आयो । माथे भांत भांत रा पंछी मीठी मीठी आवाजां काढ़ता हा । तपसी नै वै आवाजां अणूंतो अळखावणी लागी । जाणें कांई सोचनै वो बड़ला माथे दनादन कोपरिया वगावण लागी । सगळा

पंछियां नै उडायां पछे ई उणरा मन में नेहचौ नीं व्हियो । बांदरा री गळाई बड़ला माथे चढ़ने सगळा पंछियां रा आळा खोस खोसने नीचे वगाय दिया । माथे अेक ई आळो नीं रेवण दियो । आळां रै पड़णा सूं ईंडा मते ई फूटग्या जकी ती फूटग्या , पण पछे साबत बचियोड़ां नै ई वो साबत नीं रेवण दिया । भाटा अर ढगळां सूं तपसी सगळा ईंडां नै फोड़ न्हाकिया । पंछियां रा सगळा बिचियां नै मार न्हाकिया । बड़ला सूं उडियां पछे आपरै आळा अर बिचियां री आ हालत देखने पंछी चारुमेर उडता कुरळावण लागा तौ तपसी ताळियां बजाय अर हा हा करने वाने अळगा तगगड़ दिया । अेक ई ईंडो-बिचियो साबत नीं रहचौ अर अेक ई पंछी री आवाज नीं सुणणा में आई तद तपसी रा मन में कीं सांयत वापरी ।

आपरो ई निजर सूं हरिया व्हिया रूखड़ा तपसी नै देखियोड़ा ई नीं सुहावता । वो मन में घणी ई वार सोचतौ के उणरी निजर में थोड़ी ताळ वास्ते ई लाय लगावण री करामात आय जावै तौ वो सगळा जंगल नै ई बाळ न्हाके । हरियाळी री अेक पांन ई हरियो नीं रेवण दै । अेड़ी निजर हाथ नीं आवणा सूं वो मन में घणी ई कळपतौ । जचतौ जणा ई वो खमखरियां खायने रूखड़ां अर बांटकां रा पांन सूंतण लाग जावतौ , पण यूं सूंतणा सूं जंगल री हरियाळी कद निठै ?

नाडी माथे संपाड़ी करण सारू के पांणी पीवण सारू जावतौ तौ वो भाटां सूं मींडका नै मारतौ । किणी दूजा जीव जिनावर के पंछी नै पांणी को पीवण देतौ नीं । कदैई कदैई

सगळे दिन ई नाडी माथे बैठौ रैवतौ, किणी पंछी जिनावर नै पांणी नीं पीवण देतौ ।

खिरगोसिया अर हिरणां नै मारण सारू वो घणो ई वारं लारै दौड़तौ पण वै उणरी बखड़ी में नीं आवता जकौ नीं इज आवता । वो वारं माथे घणी ई किड़कड़ियां चाबतौ, पण जोर काई करै । उठा सूं हारघो थाक्यो वो फेर सीधौ नाडी माथे आवतौ अर अणगिण मींडकां नै चिगद न्हाकतौ ।

हरदम सूतां बैठतां वो हिरण अर खिरगोसियां नै मारण री अटकळां विचारतौ । सेवट खपतां खपतां वो आपरै मतै ई तीर कबांण बणाया अर थोड़ा दिनां में वो अंडी पारंगत व्हेगी के किणी दौड़ता जिनावर री तीर रै समचं ई ढिगली कर देवतौ । वाने मारियां पछे ई तपसी नै नेहचो नीं व्हेतौ । मरियोड़ा जिनावरां री टांगा पकड़ पकड़ने वाने पिछांटतौ, पछे अगदो-बगदो, किटकलियां अर लकड़ियां भेली करने वाने दळ्ळतौ । वारी सिळगती देह सूं चरड़ चरड़ री आवाजां आवतौ तौ उणरी मन अणूतौ राजी व्हेतौ । सगळे दिन वो तपसी तीर कबांण लियां जिनावरां नै मारण सारू भंवतौ फिरतौ । निसांणा में तौ अंडी प्रवीण व्हियो के कंडा ई उडता पंखेरू नै ढाय लेतौ । वो मन में पिछ्छतावो करतौ के जीवन रा बारै बरस यूं ई तप में बिरथा गंवाया । आज दिन ताई तौ मार मारने पंछी जिनावरां रा भाखर खिड़क देतौ ।

तपसी नै रात रा सावळ नींद ई नीं आवतौ । घड़ी दो घड़ी नीठ आख्यां झपती । सपनां रै मांय ई वो जिनावरां नै मारतौ । अेकर उणनै सपनी आयो के उणरी निजर

रा जोर सूं सगळी दुनियां में लाय लागगी है । धपळ धपळ सगळी धरती सिळगै । ठेट आभा तांई झाळां पूगी । काळा पड़ पड़नें सगळा तारा गिगन सूं खिरग्या । चांद ई तूट तूटनें तड़ाक तड़ाक जमीं माथे आय पड़चो । तिड़क तिड़कनें आभो ई हेटे आय पड़चो । तपसी खुद ई झाळां री दाझ सूं दुख पावे, पण तो ई जोर जोर सूं हंसती रह्यो । तीनूं लोकां में हाय-त्राय मचगी । देवता सगळा ई उणरें पगां पड्या तो ई वो लाय बुझावण वास्ते राजी नीं व्हियो । सेवट अणूंती बळत रें कारण तपसी खुद न्हाटण री चेस्टा करी । सरवर समंदरां न्हाटती फिरियो तो ई उणरें कठई ठोड़ हाथ नीं आई । समंदर ई धपळ धपळ सिळगता हा । भाखरां री गुफावां में लुकण रा जतन करिया तो ई अकारथ । सगळा भाखर झाळां चढ़चोड़ा हा । अबे करे तो कांई करे । तपसी खुद उण लाय में दाझण लागी । बळत रें कारण जोर जोर सूं डाडियो । झिझकनें बंठी व्हियो । अेक पलक में सगळी लाय बुझगी । फगत सूरज री किरणां उणरा उघाड़ा ठील री परस करती ही ।

तपसी नै इण बात री पिछतावो व्हियो के सगळी दुनियां लाय में सिळगती क्यूं बची । सूरज नै भसम करण सारू वो आंख्यां फाड़ फाड़नें निरी ताळ उणरें सांमी भाळती रह्यो । निजर सूं भसम नीं व्हेतां देखियो तो पछे सूरज रें निसांगी ताक ताकनें पैला तो घणा ई भाटा वगाया पछे सणण सणण अणगिण तीर छोड्या । पण सूरज रें तो कठई कीं खंडत नीं व्ही । सेवट जूझळ खायने वो रूंखड़ां रा गोड वींधणा

चालू करिया जकौ खासी ताळ ताईं बीधती ई रह्यो । पछे धंदूणी खायने पंछी जिनावरां रे माथे किड़कने पड़्यो जकौ दटाक दटाक घणां री ढिगलियां करदी । बारें बरसां री विरथा समाध में कैड़ा अमोलक दिन गमाया । जीवण रो खास आणंद तो जीवां नें मारणा में इज है । तपसी नें अबे मिनख जमारा रो धूम मारग मिलियो, इत्ता बरस तो फालतू ऊजड़ भटकती फिरियो । तपसी रे संतोख अर हरख दोनां री पार नीं हो ।

तपसी मन में आ सोचने घणी ई हंसियो के बापड़ा आठू रा आठू राजकंवर हाल भरम-जाळ में अळखियोड़ा है । बरस रे पैला ई पाछा आय जावे तो वाने जीवण रो सांतरी अर सिरें मारग बतावूं । उण वगत म्हारे काई ऊंधी जची जकौ वाने कावळ आदेसां में अळझाय दिया । म्हारे केणा मुजब बापड़ा कैड़ा कैड़ा फोड़ा भुगतैला । पण कोई बात नीं । बारें मईनां ताईं ऊजड़ दौड़्यां पछे इण धूम मारग माथे चालणा रो वाने अणूतो आणंद आवैला । म्हारे साथे भिळ जावे तो हांकरतां दुनियां री खातमो करदू, बैगी ई आपरें ठाणें लगाय दूं । माथा में कैड़ी फालतू घत झिली जकौ लारला अं अमोलक बरस भगती अर समाध रा झबळकुंड में घोळ दिया । म्हारे जेड़ी ई मूरख इण दुनियां में फेर कोई न्है ! पण सुमत आई जद ई आछी ! कदास ओ बारें बरसां री मून समाध रो इज परताप है ! जद तो वा तपस्या अेली नीं गो ।

इण भांत तपसी रा अमोलक दिन बीतता हा के बिचाळे अक अणचींत्यो रांझी पजग्यो । समाध वाळा बड़ला सूं थोड़ी

सौ आंतरै बगदा अर किटकिलियां रै मांय तपसी अक मोर नै पांखां सूधी दळूंझती हो के दो लुगायां उण सांमी आवती दीसी । तपसी रा आस्रम में पैली बार लुगायां री आवणी ऋह्यो हो । तपसी तो लारला बरसां सूं भूल इज गियौ के इण दुनियां में लुगायां ई बसिया करै । सीधी आपरै सांमी यू लुगायां नै निसंक आवती देखी तो वो हाब-गाब व्हेगी । बेरा में थरकीजतां मन बैठे ज्यूं उणरो मन बैठण लागो । के अणछक उणरा मन में जची के अ लुगायां मोरिया नै इण विध दळूंझतां देख मन में काई ख्याल करैला ! कंड़ी अंवळो जोग सजियो ! आ सोचतां ई वो सांमी चलायनै हचां हचां वारै कांनी वहीर ऋह्यो । पाखती आयनै चिड़ती थकी बोल्यो — म्हारा इण आस्रम में लुगायां री आवणी मुळगी ई निखेद है, पछे थै अठे क्यूं आई ? किणनै पूछनै आई ?

अक जणी जबाब दियो — आई तो म्है म्हांरा कांम सूं म्हांरै मतै ई हां ! आपनै कीं जाणकारी व्हे तो म्हांनै सोय बतावो । बारै बरसां री मून समाध सूं ऊठणिया तपसी री इण बड़ला हेटै आस्रम हो, वं किण दिस सांमी रमग्या, म्हांनै वारा बावड़ बतावो । म्है घणी अळगी भांय सूं वारा दरसणां वास्ते आई हां ।

तपसी गतरासा में पड़ग्यी । उणरा हाथ में तीर कबाण हा । उघाड़ डील जंगळिया री गळाई दीखती हो । थोड़ी भांय आंतरै ई मोरियो झाळां में सिकती हो । इण बात नै छिपा-वणी ई कीकर आवे । जे वो इण वगत बड़ला हेटै माळा फेरती लाधती तो कंड़ी नामो कांम जमतो । इण वगत ई

उणनै औ ऊंधी कांम करणी हो अर अबूझ लुगायां नै इण वगत ई दरसणां वास्तै आवणी हो । जे इण हित्यारा सिकारी सूं डर परी नै अ पाछी दोड़गी तो कुण आनै आडो फिरनै सावळ समझावेला ।

वो डरतां डरतां पूछ्यो—पण उण तपसी सूं थानै कांम कांई व्हे सकै, म्हारे तो कीं समझ में नीं आई ।

अक लुगाई तो जाणै काठी मून धारचां ऊभी ही । वा तो बोली नीं कोई चाली । पैला वाळी लुगाई ई जबाब दियो—उण तपसी रै पाखती म्हानै आठ राजकंवरां रा खास बावड़ ब्हिया, म्हानै वारां सूं कांम है । चलायनै इण कांम वास्तै ई म्है अठै आई । बड़लौ तो लोगां निसाण-पतांण बताया जकी सागं ई निजर आवै, पण तपसीजी जंगळ में घूमण सारू गया व्हे तो आप म्हानै वा ई बतायदो, म्है आवै जित्तै वानै अठै ऊभी ई उडीकां ।

तपसी रा हाथ में तीर कबांण हा । भूंडै ढाळै जटा बिख-रियोड़ी । खत में रेत अर परसेवो झिलियोड़ी । सांवळो डील । उघाड़ो । अबै इण तीर कबांण नै लुकावे तो ई कठे लुकावे ! थोड़ी सी मोळी पड़नै बोल्यो—जे म्है केवू के वो तपसी म्है इज हूं तो थें इण बात मार्यै भरोसी करौ ।

अबकी दूजोड़ी लुगाई बोली—भरोसी क्यूं नीं करां । रमता जोगी मन करे ज्यूं ईं भेख बदळता रैवै ।

आ बात सुणतां ई तपसी नै अक अटकळ सूझी । बोल्यो—बात तो आपरी साव साची है । दरसणां वास्तै आवण वाळा लोग भगती में रांझा घणा पटकै इण खातर वारा डर सूं

जंगलिया री भेख धारचां रैवूं । किणी नें म्हारी पती पड़ण नीं दूं । म्हनें मित्रखां री आवणी जावणी घणी सुहावे कोनीं । आपरी बात दूजी है । राम जाणै किती भांय सूं चलायनै अठे आया हो ! आप सूं तो चोज कीकर राखणी आवै । अचुंभा री बात देखी के अेक सिकरो मोरिया नें रोस न्हाकियो । म्हें घणी ई पाटा-पोड़ करी पण उणनें बचा नीं सकियो । उणरी दाह क्रिया करतो हो के इण बिचाळे आप आयग्या । फरमावो वां राजकंवरं सूं आपरें कांई कांम है ? वांनें तो अठा सूं गियां आज पूरो अेक पखवाड़ी ब्हियो । पूरो बरस ब्हेतां ई वें अेकर अठे आवेला ।

पेला तो तपसी लुगायां नें देखतां ई अणूतो डरियो । पण होळे होळे बात-चीत करणा सूं उणनें डर जंड़ी बात तो कीं नीं लखाई । सास्तर रा सास्तर लुगायां री ताड़णा सूं भरचा पड़चा है, अँड़ी तो आं में कीं खांमी अर कीं भूँडायां निजर नीं आवै । आंरी संगत सूं तो सांमी मन हरखै ! इणी खातर आंरी इत्तो निखेद बतावणी जरूरी ब्हियो दोसै !

तपसी रा मन में अचाणक अेक बावळी सी बात आई — अे दोनूं लुगायां बरसां तांई अठे यूं ई ऊभी रैवे अर म्हें इणी ठोड़ ऊभी आंनें निरखतो रैवूं तो कंड़ी आणंद बणें ! पण आ बात ई कोई ब्हेणी है ! भगवानं री वासी लुगायां नें छोड कठेई दूजी ठोड़ नीं ब्हे ! अर जे लुगायां में भगवानं नीं है तो पछें आ बात ऊठी जठा सूं ई झूठी ।

तपसी रा मूंडा सूं आ बात सुणतो ई के राजकंवर अठे पाछा पूरो बरस बीत्यां आवेला — वा दूजोड़ी लुगाई तो ऊंडो

निस्कारो न्हाकने बोली—म्हारे वास्तै तो अबे अक घड़ी काटणी ई दूभर व्हेगी, पूरो बरस कद आवे । अबे तो आपघात करनै मर जाऊं तो सांयत मिळे ।

आ बात कैयने वा जमीं माथे हेटे बैठगी अर दुस्किया भर भरनै रोवण लागी । साथे वाळी लुगाई उणनै समझावण री घणी ई चेस्टा करी तो ई उणरी रोवणी नों ढबियो ।

आपरा हाथ सूं नित हमेस अणूता पंछी जिनावर मारण वाळा तपसी नै उण लुगाई रें खुद रें ई हाथां आपघात कुरनै मरजावण री बात घणी आहंजी लागी । आ फालतू क्यूं मरणी चावें ? मरणी कोई आछी काम थोड़ी ई है । मरणा में ई कीं सार व्हे तो कुदरत इत्ता जीवां नै बिरथा ई जलम देवे । वो थोड़ी सो पाखती आयनै कैवण लागी—बरस बीततां कांई जुग लागं । मरण जेड़ी कांई बात है । भगवान रा नांव माथे म्हारा आस्रम में अ मरणा-वरणा री बातां मत करी । म्हनै व्हे जकी बात बतावो तो कीं जुगत ई विचारां ।

पछे थोड़ी सो मुळकनै यूं ई बात नै संवारतां कैवण लागी—बाज के सिकरा अठे म्हारा आस्रम रें पाखती भोळा पंछियां नै नीं मार सकैं अर केई हिंसक जिनावर खिरगोस अर हिरणां नै नीं मार सकैं, इण खातर अस्टपोर म्हारे कनै ओ तीर कबांण राखूं । अेकर जीव निकळियां पछे आगला जलम में ई पाछी जीव मिळणी किसी सारै री बात है । किणी ई जीव री हिफाजत करणी मिनख री ओ सबसूं मोटी करतब है ।

आ बात कैयने तपसी मन में विचार करण लागी के

झूठ सूं मीठी अर सिरं चीज इण दुनियां में दूजी कीं नीं है । झूठ नीं व्है तो आ दुनियां रैवण जोग ई नीं बण सकें । झूठ तो दुनियां री खास सिणगार है । इत्ता बरस वो किण जंजाळ री सोय में हकनाक गमाया अर खुद भगवानं रै आवण री अठे निखेद करियो ! आज तो भगवानं आपे ई चलायन आस्रम में आया । भरम मिटियो जको ई सावळ । वो थोड़ी भगवानं रै फेर पाखती आयनं कैवण लागी—थें मन में सोचता व्होला के अठे किण तपसी रा आस्रम में आयनं फंसग्या ! ओ तो तीर कबाण सूं भोळा पंछी जिनावरां री रिच्छा करे । बिना जाणिया किणी रै मन री बात री पती ई नीं लगा सकें । वो तपसी तो निजर फेंकतां ई मरियोड़ा पंछी जिनावरां नें पाछा जीवाड़ देतो । तीनू लोकां री उणनं अक ठोड़ बेंठां ई ठा पड़ती । वो तपसी कठे अर ओ जंगलियो कठे ! पण म्है जाण करनं म्हारी खुसी सूं वै सगळी करामातां छोडी हूं । म्हनै वांमें कीं अणूती सार लखायी नीं । म्हारी जीव तो वां छळछदां सूं घणो कळपतो । वां करामातां नें छोडियां म्हनै पूरी सांयत मिळी । साचो तपसी वो इज है जको घणो ऊंचो नीं लखावै । उण में अर दूजा मिनखां में घणो फरक नीं व्हैणो चाहीजै । म्है तो इत्ता बरसां रा तप में फगत आ इज बात सीखी हूं । थें म्हनै निसंक थांरें पेटा री भेद बतावो । बणती बात म्है अवस थांरी विपदा मेटूला । आपघात सूं मोटी पाप इण दुनियां में नीं है । अंडी बात तो मूंडा सूं परगट ई नीं करणी चाहीजै ।

आपघात करण वाळी लुगाई तो कीं बोली नीं कोई

चाली । वा साथ वाळी लुगाई कैवण लागी — अँ आठूं राज-
कंवर आपरा सावका बेटा है । भोळप गिणी के अबूझपणी
गिणी कीकर ई रांणीजी रा मन में कुमत सांचरी के वां माखण
रा पूतळां नै देस निकाळी दिरवाय दियो । कुमत तो कुमत
इज है, इणरी कांई माठ, रांणीजी छळ सूं अँक डावड़ी नै
मरदानो भेख करवायनै वानै मारण रो ई प्रपंच रचियो पण
खुद भगवानं जिणरै विळू व्है उणरी कुण कांई बिगाड़ सकै !
उण डावड़ी रो आज दिन तांडं कीं पती नीं । जे रांजकंवरों
रै कीं व्है जातो तो पछे सिवाय आपघात रै कीं दूजो मारग
नीं हो ।

तपसी बीच में ई बोल्यो — म्हनै आं सगळी बातां रो
पूरी जाणकारी है । वै आठूं राजकंवर ई म्हारी समाध तुड़-
वाई । उण वगत तो म्है खुद दूजो भगवानं हो । बारै बरसां
रो समाध सूं आंख खुलतां ई, म्हारी दीठ रा जोर सूं सगळा
सूखा ब्रच्छ हरिया व्हैगा, मरियोड़ा पंछो जिनावरां रो हाड-
कियां निजर पड़तां ई पाछो आपरो जीव धारण कर लियो ।
देखतां देखतां केई अजगर, केई सांप, केई सूवा, तीतर, कबूड़ा,
कागला, गिरजड़ा, चीता, सूअर, सिंघ, स्याळ, छाळी नारिया,
बळद, गायां अर घोड़ा इत्याद भांत भांत रै जिनावरां रो मेळी
मचग्यो । हाथी म्हनै सूंड सूं प्रणाम करण लागा, नवो जीव
बावड़िया सिंघ म्हारै पगां में लुटिया, सरप अर अजगर म्हारै
माथे छतरियां तांणी । म्हारी दीठ रा इण अजब नजारा सूं
सगळा ई राजकंवर चकन-बकन व्हैगा । देखतां देखतां गिगन
में बादळा उमड़-धुमड़ चढ़ आया । पळापळ करती बिजळियां

चिमकण लागी । मोरिया छतरियां तांण तांणनै नाचण ठूका । कोयलां कुहकण लागी । आभा सूं इमरत पांणी बरसियो । अर म्हैं अंगड़ाई मोड़ने ऊभौ व्हियो । आठूं ई राजकंवर म्हारे सांमी आदर भाव सूं हाथ जोड़्यां ऊभा हा । म्हैं वानं देखतां ई बिना कह्यां सगळी बात समझग्यौ । वा डावड़ी तो आपरी करणी री हाथौहाथ फळ पाय लियो । धोखा सूं विस रा लाडू खायनै आपरै ठाणें लागी । तो ई सालस राजकंवर उणनै सनमानं रै सागें दाग दियो । उणरी आतमा रा कल्याण वास्तं जाचना करी । पण म्हने रांणी री करतूतां अर राजा रा अबूझपणा माथें अणूती चंडाळी छूटी । म्हैं राजकंवरां नै पूछ्यो के वें मंसा परगट करे तो म्हैं अठा सूं निजर फेंकनै वां दोनां नै भसम कर दूं । पण राजकंवर म्हने इण बात सारू घणा ई पालिया । वें म्हने कह्यो के माईतां रै मरण सूं पेला तो वारो खुद री मरण व्है । माईतां री आदेस ई वारें वास्तं सुख है ।

तपसी नै उण वगत आपरी दोठ री नजारौ देखने जित्ती हरख नीं व्हियो, उणसूं सो गुणा वत्ती हरख उणनै आज उण नजारा नै पाछो दरसावतां व्हियो । वो अणूती उमायो होयने आपरी बखांण करण लागी । पण राजकंवरां री बात सुणनै रांणी वत्ती रोवण लागी ।

रांणी री रोवणी सुणनै तपसी चळ-विचळ व्हैगौ । आपरी बखांण छोडनै वो राजकंवरां रा आचरण नै बिड़दावती कंवण लागी—अंड़ा सालस अर समझणा बेटा तीनूं लोकां में ई बिरळा लाधे । बारै बरसां री समाध में जको बात म्हारै हाथ नीं लागी, वा वें राज घरांणा में जलम लेयनै कीकर सीख्या,

म्हारे हाल ताईं समझ में नीं आई । वांरा गुण देखनै म्है म्हारा मन में वांनै म्हारा गुरू थरपिया । वांरा सुभाव सूं म्है घणी ई बातां सीखी । सगळी करामातां रो त्याग म्है वांरै कारण ई करियो हूं ।

तपसी रो बातां मुण सुणनै रांणी तो फेर वत्ती रोवण लागी । वा साथ वाळी लुगाई कैवण लागी—औ सगळी रोवणी ई तो राजकंवरां रें गुणां लारै है । जे वै कुमां-णस व्हेता तो सगळा दुख ई मिट जाता । वांरै राज सूं बारै जातां ई जको उदंगळ मचियो के कुण ई उण माथे काबू नीं पा सकियो । राजकंवर वहीर व्हेतां नगरवासियां नै समझाया तो उण वगत तो वै समझग्या, तुरत वांरो कैणो मानग्या । पण दूजै दिन ई नगरवासियां अर राज रो सगळी रेंयत रें मांय जाणै काईं भेरूं परगटिया के वै तो सगळा राज नै ई माथे उंचाय लियो । छिड़ियोड़ा काळिंदर बस में रैवै तो वा रेंयत बस में आवै । सेवट राजाजो नै रांणी रें सगळा कपट-जाळ रो साचो उकरास लाधग्यो हो, पण वै तो वांरा रूप आगै कीं बोल ई नीं सकिया । रांणीजी आपरी कूख रें जायां वास्तै राज रो हिफाजत करणी चावता हा, पण वां आठूं राजकंवरां रें गियां पछे सगळा राज रा जावणां में ई कीं कसर बाकी नीं री । रेंयत तो उछाळी करियो जको किणी रें कंणा सूं नीं मांनी । राजाजी तो चितबंगिया व्हेगा । रांणीजी रो अकल ई ठाणै आयगी । वै आपरी करतूतां रो घणी ई पिछ-तावी करियो । सेवट रांणीजी ई अक उपाव सोचियो । वै हाथ जोड़नै सगळी रेंयत सूं माफी मांगी । खुद अक डावड़ी नै साथै

लेय सगळा राजकंवरां नै पाछा मनायनै लावण रो जिम्मी लियो । राजकंवरां नै आपरै हाथां दुख दियो जको वे खुद ई बदळा में दुख पावैला । फगत अेक डावड़ी रै साथै पाळा जावैला । साथै खावण-पीवण रो कीं सराजांम नीं राखैला अर राज-कंवरां नै कीकर ई मनायनै लावैला । रैयत इण बात वास्तै मानगी । राजाजी घणो ई कह्यो तो ई वैं खाली हाथ म्हारै साथै पाळा ई व्होर व्हिया । सेवट हेरतां हेरतां आपरै आस्रम रा म्हानै पुख्ता बावड़ व्हिया तो म्है दोनूं जणियां अणूता कोड सूं अठे आई, पण अठा रा समंचार सुणतां ईं रांणीजी रो तो काळजी ई बैठग्यो । राजकंवरां नै साथै लियां बिना वैं राज में पग ई देवणी नीं चावैं । अबै करां तो कांई करां ।

तपसी कह्यो—आठूं ई राजकंवर न्यारी न्यारी आठ दिसावां में गिया है । बरस रै पैला वारो पतो लगावणी ई दूभर है । म्हैं हाथां करनै करामातां रो त्याग कर दियो, नींतर म्हारै वास्तै वानै अेक ई पलक में अठे बुलावणी कीं मुस्किल काम नीं ही । पण अबै चावूं तो ई म्हैं उण बात ने पाछी हासल नीं कर सकूं । म्हैं आपनै पैला ई कह्यो के बरस बीततां किंसा जुग लागै । वैं पाछा आवैं जित्तै आप दोनूं इण आस्रम में बिराजी । आपरो ई घर है । राज-मैलां में तो सगळी ऊमर ई बीती अर बीतैला, पण जंगळ रो टपरियां रै रैवास रो साव ई तो थोड़ी लेयनै तूमार तो जोवो. के रैयत आपरा दिन कीकर तोड़्या करै ।

अबकी रांणीजी बोल्या—म्हारा बेटां नै साथै लियां बिना तो म्हैं मरियां ई पाछो नीं जावूं । वारै सागै बारै मईना तांई

म्हैं ई देस निकाळी भुगतूला ! देस निकाळा रें साथे जे आपरी संगत री संजोग सज जावे तो पछे पूछणो ई काई !

रांगी रा मूंडा सूं उठै रैवण री बात सुणियां पछे तो जाणै तपसी री खुसी री कोई पार ई नीं हो । वो मन में सोचण लागो के उणरी तपस्या अर बारें बरसां री समाध री साचो फल ओ इज मिळियो है । तपस्या निरफळ तो नीं गो । पण हरख रें सागै सागै वो मन में कीं डरण ई लागो । लुगायां री संगत री उणरा जीवण में ओ पेळी ई मोको हो । वो तो खुद अक तपसी नै काठ रा मजूस रें मांय नंदी में बेवतो मिळियो हो । उण दिन सूं वो तपसी ई उणनै पाळ पोसनै मोटी करियो । भगती, धरम, आतमा, कल्याण अर भगवान री बातां बताई । थोड़ा दिनां में ई वो तो आं बातां में पारंगत व्हेगो । आपरा चेला री प्रवीणता देखनै तपसी नै अणूतो मोद व्हियो । वो खुसी सूं समाध में आपरो खोलियो छोड दियो । उण दिन सूं तपसी इण आस्रम में अकली ई रैवण लागो । अर बरसां लग अकली ई रह्यो ! अक दिन समाध में बैठी जको बारें बरसां ताई बैठी ई रह्यो । राजकंवर आयनै उणरी समाध नीं तोड़ता तो वो नीं जाणै कित्ता बरसां ताई बैठी रैवतो, इगारी कीं जाच नीं । पण वारें आंणा सूं उणरी आतमा री साचेली कल्याण व्हियो । दूजा घणा ई उणनै आळ-जंजाळ आवता, पण लुगायां तो वो सपनां में ई नीं देखी । वो सोचण लागो के दुनियां कंड़ी मूढ़ अर बावळी है जको लुगायां नै छोड भगवान री कामना करै ! बापड़ा भगवान री काई जिनात के वो लुगायां

री होड कर सकें ।

तपसी डरती डरती वारा उणियारा जोवण सारू आपरी मीट नै पितलाई । उणरो अंतस बरफ री गळाई पिघळण लागी । उणनै लखायो के उणरो सगळी डील पिघळनै धूळ में रळ जावैला । नीठ हीमत करनै वो बोल्यो—चालो आस्रम में चालां ।

तीनूं जणा आस्रम में आया । तपसी रा मन री अजीब ई हालत ही । कदैई उणनै लखावती के वो वेगवानं नंदी रे मांय गुड़कती जावै है, कदैई लखावती के बादळां रें भेळी घुळनै वो खुद घरती माथे पांणी री छांटां बणनै बरसे है, कदैई लखावती के वो लाय री झाळां बणनै सिळगै है । जे थोड़ी ताळ अळगो नीं व्हियो तो वो जाणें किणी भाव जीवती ई नीं रें सकैला । तुरत अेक उपाव काढ़ियो । होळें सूं बोल्यो—म्हारै नितनेम री वगत टळै, म्हैं अबारुं नंदी माथे संपाड़ी करनै पाछो आवूं ।

वो तो पडूत्तर सुणियां बिना ई उठा सूं अणच्छक वहीर व्हेगी । चेताचूक व्हियोड़ी खाथो खाथो हालती ई गियो, हालती ई गियो । खासी भांय आयां पछे उणनै ध्यान बंधियो के वो तो नंदी रें साव उलटी बाजू आयग्यो । अब ! तो ई वो पाछो नीं मुड़ियो । अणूतो गोती खायनै वो नंदी माथे पूगी । नंदी आपरी मस्ताई में गंगाट करती बैवती हो । तपसी ढावा माथे जायनै चमगूंगी व्हे ज्यूं बैठग्यो । सूनी आंख्यां सूं बैवती नंदी नै देखती रह्यो । नंदी बैवती ठमे तो उणरा अंतस री भावनावां री वेग ई बैवती ठमे । समंदर में पूग्यां पछे नंदी

रै वेग री तो माठ आय जावै, पण तपसी री भावनावां रै वेग री माठ कठे ? तपसी ने रांणी बिचै डावड़ी रो उणि-यारी घणी लुभावणी लागी । उणरा मन में भरम उपजियो के समाध रै बिचाळै अेक अैड़ी ई उणियारी झबाझब करती हो । तपसी ने नंदी रै मांय डावड़ी जैड़ा अणगिण उणियारा बैवता निगै आया । जठीने निजर करती उठीने ई वै उणियारा हंसता मुळकता निगै आवता । बांटकां रा पांन पांन में, घूळ रा कण कण में उणने डावड़ी रो उणियारी दीखण लागी । सरूपोत में उणने दो दो जोड़ै उणियारा दीखता हा, पण होळै होळै अेक उणियारी लोप व्हेगी । वो इण नजारा सूं कायी होयने आंख्यां मींची तो ई डावड़ी रो उणियारी दीखतो बंध नीं व्हियो । इण माया-जाळ रो तपसी ने अेक खास आणंद लखायो जको आज पेली कदैई नीं व्हियो । आणंद रै साथे अेक खास किसम रो पीड़ रो दरद ई उणरा काळजा में सालियो । उण आणंद में अेक दरद हो अर उण दरद में अेक आणंद हो । दरद अर आणंद रो अैड़ी मेळ तो वो कदैई अनुभव नीं करियो ।

आपरी इण हालत माथै तपसी ने अणूती जूंसळ छूटी । वो खमखरी खायने अणछक नंदी में घेंग देदी । पांणी में छिमकी मारने आंख्यां मींची तो ई उणियारी लोप नीं व्हियो । अेक ई उणियारा रा अनेक रूप । नंदी रै सांमी-पांणी तपसी तिरती ई गियो, तिरती ई गियो । आज उणरा मन में रांम जाणै कांई हूस ही जको ढाळ में तिरण सारू तो उणरी मन ई नीं करियो । थाकने अधमरियो व्हियां पछे वो ढावा माथै

आयो । डावड़ी रै उणियारा रा अणगिण रूप उणरै सांमी देखनं खिल खिल हंसै । तपसी आख्यां मींचनं कांतां में आंग-ळियां घाली तो ई उणियारा सुभट दीखता हा अर बांरो हंसणो सुभट सुणीजतौ हो । तपसी आभा में ऊंची भाळियो—सूरज री ठोड़ उण डावड़ी री उणियारो चिमकतौ हो । आभा आभा में सगळे वै इज उणियारा ।

तपसी मन में पक्की ठांगली के आं दोनूं लुगायां नै आस्रम सूं बारै काढ़ियां बिना उणनै किणी बात री चैन नीं पड़ैला । जावूं अबारूं तगड़नै बारै करूं । आ सोचनं वो पाछो आस्रम सांमी खाथो खाथो वहीर ब्हियो ।

दोनूं जणियां कुटिया रै बारै ऊभी तपसी नै उडीकती हो । वै इत्ती ताळ में फूस वाईदौ काढ़नै आस्रम री रंगत ई बदळ दी । तपसी नै दूजा मारग सूं आवतां देख्यो तो दोनूं जणियां विचार करियो के तपसी गया तो दूजे मारग हा पण आया दूजा मारग सूं । पाखती आतां ई डावड़ी मुळकनं पूछ्यो—आप गया तो इण दिस में हा, पण आया साव उलटी दिसा सूं, आ बात कीकर व्ही । हाल तक आप केई करामातां जांणी !

डावड़ी रा मूंडा सूं बात सुणतां ई तपसी तो आपरी बची-खुची सुघ-बुध ई पांतरग्यो । वो तो उणरी बात री कीं जबाब नीं दियो । उणरी मुळक तो उणनै सूरज रा उजास सूं ई सवाई निगै आई । के तो वो बां दोनूं जणियां नै आस्रम सूं माडांणी बारै काढ़ण सारू आयो हो, पण आतां ई वो साव ऊंधी ई बात करग्यो । कह्यो—अक बरस

इण जंगल में काढ़णो आपरै वास्तै दूभर व्हे जावैला, आप फरमावो तो म्है सोय करने राजकंवरां नै सोध लावूं ।

रांणी कह्यो — नीं, नीं आपनै फोड़ा भुगतण री कीं जरू-
रत कोनीं । म्हारी तो इण आस्रम में पूरो मन रमग्यो ।
जे राजकंवर अणचींत्या पैला ई आय जावै तो ई साल भर
रै पछे ई म्है म्हारा राज में जावण री मतो करियो । आपरै
गियां पछे म्हारा राज री अक राईको अठाकर नीसरियो । म्है
उणरै साथै राजाजी नै पूरा विगतवार समंचार भेज दिया ।
आठूं बेटां रै साथै बरस रै पछे ई आवण री कंवाड़ियो ।
आप म्हारी चिंता मुळगी ई मत करो । इण आस्रम में तो
म्हानै राजमैलां सूं ई वत्तो आणंद लखायो । राजाजी अर बेटां
री बिछोव अवस खटकै, पण इणरो तो कोई उपाव ई नीं ।
हाथां काम बिगाड़ियो, फल तो म्हने ई भोगणो पड़सो । आप
जंडा तपसी री सेवा री मौको म्हानै फेर कद बण आवैला ।
सगळी ऊमर दूजां कनां सूं सेवा करवाई, अबै सेवा करण री
सोभाग नीठ हाथ आयो अर वो ई आप टाळणी चावो ।
आपरा तप में वाधा पूगती व्हे तो बात दूजी है ।

तपसी री सगळी जूझल अर रीस तो जाणै बरफ रा
भाखर हेटे दबगो । वो डाफाचूक व्हियोड़ी अठी-उठी देखतो
होळे सूं बोल्यो — आप म्हारी बात सावळ समझिया कोनीं ।
म्हने तो अठे कीं वाधा कोनीं, पण आप लोगां री बात दूजी
है ।

अबकी डावड़ी फेर मुळकनै कह्यो — आपरा आस्रम में लुगायां
नै देख लोग कांई कांई भरम करै, कदास आपनै इण बात

रो डर लागे दीसै । पण आप जेड़ा तपसी नै आं छोटी मोटी बातां माथे ध्यान ई नीं देवणी चाहीजै । भाटा री पूतली सूं किणी बात री डर व्हे तो आप सूं म्हांनै डर व्हे । म्हांरै वास्तै तो आप किणी बात री ख्याल मत करौ ।

तपसी तौ आज कावळ पजियो । बारै बरसां री वा मून समाध कित्ती सौरी ही । बिना खायां-पोयां अर नितनेम करियां ई वै बारै बरस तो घड़ी पलकां रें उनमान बीतग्या । पण आज री ओ अेक अेक पल जुग जुग जित्ती लांठी व्हेगी । इणो खातर सगळा रिसी मुनी लुगायां सूं डरतां वारौ सास्तरां में इत्ती निखेद करियो, तपसी रें आ बात आछी तरै समझ में बंठगी । तपसी रा मन में फेर अेक उपाव सूझियो । वो कीकर ई मिस करनें वारां सूं अळगी न्हाटणी चावतौ हो । कह्यौ—आप जद अठे ठेरण री ई पुस्ता विचार कर लियो तद कुटिया तौ रैवण जोग बणाणी पड़सी । म्हें जंगळ सूं लांबो वळियां, खीपड़ी अर आकतड़ियां भेली करनें लावूं । जित्तै आप निसंक अठे बिराजज्यो ।

आ कैयनें वो तौ पड़ूत्तर सुणियां बिना ई उठा सूं वहीर व्हेगी । राणीजी लारा सूं हेलौ पाड़नें कह्यौ—आप म्हांरै वास्तै फालतू फोड़ा भुगतौ । कुटिया तौ नांमो ठावको है ।

पण तपसी तौ वारी बात सुणी अणसुणी करदी । वो तौ तर तर घणी खाथी चालण हूकौ । डावड़ी तपसी री बात खासी भली समझगी तौ ई दरसाई कोनीं ।

तपसी री तौ फेर वा इज नंदी वाळी गत व्ही । उठा

सूं तो मिस करने अळगो आयग्यो पण अळगो आयां पछे ई झख कठे ? खुदोखुद आप सूं तो वो अळगो नीं जा सकें ! आप सूं दोड़ने अळगो व्हियां बिना उणरा जीव ने भवे ई सांयत नीं मिळ सकें । अळगो आतां ई आपरा मिस ने तो वो मुळगो ई पांतरग्यो । अकेली ई मन में बड़बड़ायो—जे इण उणियारा ने पावण सारू बारा बरस री ठोड़ हजार बरस ई तप करणी पड़े तो करूला ! निरणो-तिरसो रेणो पड़े तो रैवूला । समाध लेणी पड़े तो ई लेवूला !

तपसी अठी-उठी यू ई जंगळ में भंवती फिरियो । अकेलेके उणरा मन में जची के पैला वाळी करामातां सूं इण डावड़ी ने खांधा मार्ये बिठायने तारा बिचाळ जायने बस जावूं तो पछे किणी बात री डर कोनीं । वो उण उणियारा ने पाछो देखण सारू आस्रम कांनो वहीर व्हियो । भरम रा अणगिण उणियारां सूं उणरा मन में संतोख नीं व्हियो ।

तपसी ने खाली हाथां आयो देखने डावड़ी पूछ्यो—आप तो कुटिया ने सावळ छावण वास्ते खीपड़ी, आकतड़ियां अर वळियां लावण ने गया हा, पण पाछा साव खाली हाथ ई कीकर पधारिया ?

आ बात तो तपसी रे चेता सूं ई उतरगी ही । थोड़ी मोळी पड़ने जबाब दियो—हां, म्हेँ गियो इणी काम वास्ते हो, पण पछे जरूरत नीं समझी । आपरा आराम सारू क्यूं घड़ी घड़ी हरिया रूख, बांटकां ने संतावणो ।

तपसी ने पक्की बिस्वास व्हेगी—भगवान री वासो फगत दोय चीजां में है—अके तो लुगायां में अर दूजो झूठ में ।

अड़ो सुथरी अर सांयत री ठोड़ छोड़नै भगवान हूजी ठोड़ बसए री कीकर मन कर सकै ।

तपसी पाखती गियां पछै घणी ई चेस्टा करी पण डावड़ी रा उणियारां सांमी वो देख नीं सकियो । देखणी तो अळगो, वारै पाखती लभणी ई दूभर व्हेगो । अबकी मिस रा ख्याल सूं नीं, साचा भाव सूं वो कह्यो—महैं बावळा री गळाई दूजी-तीजी बातां री तो फालतू सोच करूं, पण सोच करण वाळी बात री हाल ध्यांन ई नीं करियो । आपरा भोजन सारू कंद-मूळ अर फळ-फूलां री कीं बंदोबस्त ई नीं करियो । महैं अबारूं छाब भरनै पाछो आवूं, आप किणी बात री डर मती करज्यो ।

तपसी आयी ज्यूं ई पाछो वळग्यो । इण बात री बिल-कुल ई पांतरी नीं पड़्यो । सुथराई सूं छाब बणाई । अणूता कोड सूं कंद-मूळ अर फळ-फूल तोड़नै भेळा करिया । फळ तोड़ती वगत विचार करियो के हड्डुमानजी री गळाई, हथाळी माथे भाखर री भाखर उंचायनै लेय जावूं तो कैडोक उम्दा काम बणै । वो अणूतो कोडायो होयनै झांपळियां भरती फळ तो घणा ई तोड़िया पण खुद खायो अेक ई नीं । भाखर री ठोड़ हथाळी माथे छाब घरनै जद वो आस्रम सांमी पाछो वहीर च्हियो तो वो फूल री जात हळकी व्हेगो हो । खुद नै कड़का करती भूख लागी तो ई वो आपरो मन नीं विट-ळायो । वो मन में सोच्यो के वारै बिना परपूठ अेकलो खावणो आछो काम नीं । मारग में अेक ठोड़ उणनै पांच सात सूवटा जमीं माथे बंठा निगै आया तो वारै सांमी खासा फळ वगाय

दिया । मन में बड़बड़ायो—थारै पांती रा फळ म्हैं छाब भरनं लै जाय रह्यो हूं, म्हैं थाने कीं नीं दियो । थारा हक रा फळ है, धाप धापनं खावो । आसम पूगो जित्तै वो इण भांत आधी छाब खतम करदी । आज वो अणूंतो राजी हो । चीलां अर गिरजड़ा भूखा ब्रैता तो आपरा डील री मांस चुगाय देतो ।

तपसी ने इण बात री अणूंतो इचरज व्हियो के अंका-अंक उणरा मन सूं जीवां नै मारण री भावना कीकर लोप ब्रैगी । मारण री ठोड़ दया री भावना कठा सूं आयगी ?

वो छाब लेयनं आसम पूगो जित्तै उणरो मन बादळां रै पांणी री गळाई निरमळ ब्रैगी हो । हंसतो थकी बोल्यो—अठे तपसी रा आसम में तो आ ई सरबरा बण आवें ! आप ई कांई जाणोला के किणी तपसी रा आसम में वासी लियो तो हो !

रांणी आदर भाव सूं जबाब दियो—कुदरत रा भंडार सूं अंडा अंडा इमरत फळ हाथ आय जावें तो पछे चाहीजै ई कांई । म्हारै खातर आपनं खासा फोड़ा भुगतणा पड़्या । आपरो ओ ओसांण कद उतरैला ।

तपसी मुळकनं कह्यो—किण री ओसांण किण माथै है, इणरो लेखो तो जाणण बाळी ई जाणं । आपनं अर म्हनं इण बात री कीं साबळ ठा कोनीं ।

तपसी घणो ई हठ झेल्यो पण दोनूं जणियां उणरै बिना अकली फळ खावण वास्तै तयार नीं ब्रै । रांणी कह्यो—लुगायां रै घरम में इण बात री पूरो निखेद है । वे आदमी

नै खवाड़ियां बिना मर जावै तो ई कोई चीज मूंडा में नीं चाले । साथे खावणौ ई वारा घरम में कोनीं । पण आप घणौ हठ झेलौ तो पछे साथे खावण नै राजी बहै सकां, पण म्हे अकलो तो भवै ई नीं खावां । आप घड़ी घड़ी हठ करौ तो ओड़ी देतां म्हानै ई सरम आवै ।

सेवट तपसी नै मानणौ पड़्यो । तीनूं ई फळां रो भेळा बैठनै सिरावण करियो । चोखा अर पाका फल किणो रै ई हाथ में आवता तो अक दूजा रो मनवार करता ।

के इत्ता में डावड़ी शिक्षकने कह्यो — देखो कैड़ी विकराळ आंधी आवै है ।

तपसी अर रांणी दोनूं ई उठिनै भालियो । आथूण दिसा सूं काळो-बोळी आंधी अलंघां सूं उडियोड़ी आवतो ही । तपसी अकर डावड़ी रै मूंडा सांमी देखनै आंधी रै सांमी फेर देख्यो । तद उणनै लखायौ के उणरा मन में उणसूं ई विकराळ आंधी मार घमरोळ मचाय राखी है, पण वा किणी रै ई निगं नीं आवै । उणरा काळजा में आंधी रा गोट माथे गोट ऊठण लगा । वो फेर चितबंगियो बहैगो । आंधी सांमी देखनै वो अक बावळी सी बात पूछी — कांई आ आंधी किणी रै रोक्यां रुक सकै ।

डावड़ी जबाब दियो — आप जैड़ा करामातो तपसी चावै तो इणसूं ई विकराळ आंधी नै रोक सकै !

तपसी जोर सूं बोल्थो — झूठी बात, साव झूठी बात ! खुद भगवान चावै तो ई इण आंधी नै नीं रोक सकै, पछे बापड़ा तपसियां रो जिनांत ई कांई ! थें तो इणनै रोकण री

बात करो म्हैं तो इण आंधी में खिरियोड़ा सूखा पांन री गळाई उड जावूं । भलां अँड़ी आंधियां री कुण सांमनो कर सकैं ।

पछे थोड़ी ताळ रुकने कँवरण लागो—घणकरी आंधियां अदीठ व्हिया करै । वै आं दीखती आंधियां सूं हजार गुणा वत्ती विकराळ व्हे ।

अबकी रांगीजी बोल्या—आप फरमावो तो व्हेला ई ! पण वँड़ी अदीठ आंधियां कदास तपसियां री निजर सूं ई दीख्या करै । म्है नाकुछ मिनख वां आंधियां नै नीं देख सकां ।

पछे तपसी सीत में बकै ज्युं बकण लागो—आज म्हारा अंतस में वँड़ी ई अदीठ आंधी रा गोठ ऊठै है । थें सगळा ई आंधा हो, थानै म्हारा मन री वा अदीठ आंधी सूझ कोनीं, सूझ कोनीं ।

आ कैयनै वो बाबळा री गळाई बड़बड़ाटा करतो आंधी रै सांमी तांगियां खावतो दीङण लागो । दीङतो दीङतो आंधी में ई अदीठ व्हेगो । सांय सांय करने भयंकर खेंखाड़ कूकण लागो । हाथ नै हाथ सूझणी बंद व्हेगो । डावड़ी अर रांगीजी दोनू साव अड़ौअड़ ऊभा हा, पण अेक दूजा नै देख नीं सकिया । रांगीजी री बिखरती आवाज होळें सूं सुणीजी—तपसीजी रै कँणा मुजब केई आंधियां अदीठ व्हे जको व्हे इज है, पण इण आंधी री फेट में आवैं जका ई अदीठ व्हे जावैं । म्हैं थनै नीं देख सकूं, थूं म्हनै नीं देख सकैं ।

पछे थोड़ी ताळ रुकनै रांगीजी फेर कँवरण लागा । अबकी वारी बिखरियोड़ी आवाज में थोड़ी हंसी ई सुणीजी । डावड़ी

रा कानां में भणक पड़ी—कदास अ तपसीजी भगती में बावळा व्हेगा दीस !

डावड़ी होळी सीक हुंकारो भरियो—हां, बात तो म्हने कीं अंडी ई जचे ।

पण डावड़ी रांणीजी री बात री फगत हुंकारो ई भरियो हो, मन में जाणती जकी साची बात परगट नीं करी । कदास वो उणरो हळाहळ वेम ई व्हे सके !

रांणीजी रा ख्याल सूं भगती में बावळी व्हियोड़ी तपसी सगळी आंधी नै आपरा डील माथे झेली । आंधी रें पछे मूसळाधार बिरखा बरसी । रांणीजी अर डावड़ी तो कुटिया में वड़गी । रांणीजी कह्यो—तपसीजी रांम जाणे कठे बिरखा में भोजता व्हेला । नंड़ा दीखै तो हेलो ई मारां ।

डावड़ी बोली—अंडा अघोरी तपसियां री आंधी अर मेह कीं बिगाड़ नीं सके । आप किणी बात री चिंता मत करो ।

पछे डावड़ी हंसने मसखरी रा भाव सूं फेर धकै कैवण लागी—तपसीजी नै इत्ता बरसां में ई लुगायां री संगत सूं कांम नीं पड़चो । अपां रें आतां ई आंरें तप री सगळी जड़ां खोळी पड़गी । ओ बावळापणी आंनै अपांरें दरसणा सूं ई उपजियो । हाल तो पूरो दिन ई नीं व्हियो, बरस कीकर बीतैला ।

रांणीजी ई पाछी मसखरी करी । कह्यो—चोर रा मन में चांदणी व्हे । कठई थारो मन तो तपसीजी नै देख्यां खळडिखळ नीं व्हेगो । थारा मन री चोर थूं वारें मांय क्यूं

सोधे ? तपसीजी माथे वेम करियां थनै पाप लागेला ।

डावड़ी कह्यौ—अ तपसी लोग तीनू लोकां री बात जाण सकै, घट घट रो पती लगाय सकै, आंरी होड ती कुण करै ! पण अक मिनख रै मन री बात चाहै वो तपसी व्हौ, चाहै जोगी, चाहै वो अक धूरत ठगोरो ई व्हौ, कंडी ई गेली गूंगी लुगाई सूं छांनी नीं रै सकै, इण में कीं मीणमेख नीं ।

रांणीजी पाछी कीं जबाब देवण वाळा हा के इत्ता में बिरखा में कूटीजियोड़ी तपसी कुटिया रै मांय आयी । उणरी जटा अर उणरा खत सूं टप टप पांणी झरती हो । सगळा डील माथे छांटां रा मोती जड़ियोड़ा हा । वो ती आवती ई दाछंट बोल्यौ—आंधी नै देख्यां म्हनें लखायौ के म्हारा मन में आंधी रा अदीठ गोठ ऊठे है । इण बिरखा नै देख्यां म्हनें अंडी लखावे के म्हारा अंतस में ई इणी भांत अदीठ बिरखा बरसें है । मिनख रो मन कुदरत री देखादेखी यूं क्यूं बद-लिया करे, आप म्हनें इण बात रो म्यांनो बता सकौ काई ?

रांणीजी जबाब दियौ—म्हारी काई हस्ती के म्है आपरो बातां रो म्यांनो बता सकां । तपसियां री माया अपरंपार व्है । कदास आ आंधी आपरा मन री अदीठ आंधी री ई रूप व्है अर ओ मेह आपरा अंतस री बिरखा री रूप व्है । तपसियां री इण माया नै आप तपसी लोग ई जाणो ।

इण बार तपसी कीं चिड़ती थकी बोल्यौ—थें गिरस्ती लोग इण बात नै क्यूं भूल जावो के लाख तपसी, रिसी अर मुनि व्हेतां थकां ईं म्है सगळा मिनख हां । मिनख रा गुण अवगुणां सूं म्है कदैई ऊंचा नीं उठ सकां ! थें म्हाने काई

समझ राख्या हो ? थां लोगां री समझ म्हारै तो कीं समझ बैठी नीं ।

अबकी डावड़ी मैणी रा भाव सूं बोली — जद म्हां नाकुछ मिनखां री समझ आप जैड़ा तपसियां री समझ में नीं बैठे तो पछे आपरो बातां म्हारै कीकर समझ में आय सके । आप सावळ सुभट समझावो तो म्हां निरमतियां रै थोड़ी घणी समझ में आवै !

तपसी तो भूंडा भंवर-जाळ में फंसियो । आपरा मन री बात वो खुद हाल तक सावळ नीं समझियो तो आंनै कीकर सुभट समझावै । वो तो फगत आ बात जाण के आज उणरा मन री गत भूंडी बदळी, पण उणरो म्यांनौ वो कीकर समझावै । उणरा भूंडा सूं उणरी अजाण में फगत अै बोल निकलिया — म्हैं तपसी पछे हूं, पैला मिनख हूं, फगत नाकुछ कोरी मिनख ! थें आ बात सावळ समझलो तो पछे सगळी बातां सुभट समझ में आय जावला ।

बड़ला रा पांनड़ां माथे तड़ातड़ छांटां बाजती हो । तपसी कह्यो — देखो अै छांटां ई म्हारो बात री हुंकारो भरै के म्हैं पैला मिनख हूं अर पछे तपसी ! म्हारै ई आ बात इत्ता बरसां पछे समझ में आई । म्हैं अबै अठे अेक पलक ई ऊभो नीं रे सकूं । म्हारो नस नस में लाय सिळगै है । म्हैं थोड़ी ताळ में ई भसम व्हे जावूला । सगळी रात बिरखा में भीज्यां बिना म्हारो आ बळत मिट नीं सके । आप अठे आराम करी अर म्हने आखी रात बिरखा में भीजण दो । नींतर म्हैं आपरै देखतां देखतां भसम व्हे जावूला ।

आ कैयनै तपसी तौ आंधी रै वेग कुटिया सूं पाछो बारै निकळग्यो । उणनै जावतां कोई नीं बरजियो ।

खासी ताळ ताईं कोई किरणी सूं बात नीं करी ।
अचाणक रांणीजी बोल्या—थूं मानै तौ अेक बात केवूं ।

डावड़ी कह्यो—आपनै कैवण री जरूरत कोनीं । बिना कहां ईं म्है आपरी बात मानण नै त्यार हूं । आपरी मरजी री खास डावड़ी होयनै मूंडा सूं केवाडूं तौ पछे सगळी बात ईं खूटगी । आपरी आदेस म्हारे सिर-आख्यां माथे ।

रांणीजी पाछो कीं जबाब नीं दियो । बड़ला रा अणगिणै पांनां माथं अणगिण छांटां तड़ातड़ करती नाचती ही । तपसी सगळी रात बारै ऊभो उण मूसळाधार बिरखा में भीजती रह्यो । पळापळ करती अर किड़कती बीजळियां नै देख वो सोचती के म्हारा मन में ईं इणी भांत बीजळियां पळापळ करै है, अर इणी भांत बीजळियां किड़के है । गरजता बादळां री आवाजां सुणनै वो बड़बड़ावतौ के उणरा अंतस में ईं इणी भांत बादळा गरजै है । बिरखा अर अंधारी दोनूं ईं होडाहोड बरसता हा । असूझता अंधारा री ध्यान आतां ईं वो बड़बड़ावतौ के उणरा मन में इण सूं ईं वत्ती अंधारी है ।

तपसी सगळी रात इण विध बड़बड़ाटा करती रह्यो अर बिरखा में भीजती रह्यो । आज री आ रात तौ उणनै समाध रा बारै बरसां सूं ईं घणी वत्ती लखाई । तपसी नै तो भलाई कीं लखायो व्हे, सूरज तौ आपरा वगत माथं ऊगी इज । चारुं दिसावां में मधरो उजास पाथरग्यो । तपसी नै लखायो के इणी भांत उणरा अंतस री अंधारी ईं लोप व्हेगी । वो

कुटिया में चालण सारू वहीर ब्हियो ।

डावड़ी अर रांणीजी दोनूं बारै ऊभा तपसी नै उडीकता हा । पाखती आतां ई रांणीजी पूछ्यो—आपरं कांई घत शिली जको सगळी रात बिरखा में भीजता रह्या । म्हनै आज सावळ ठा पड़ी के तपसी आधा बावळा ब्हिया करै ।

तपसी कह्यो—म्है तो बारै बरसां तांई बिरखा में भीज्यो अर आपनै फगत अेक रात इज लखाई । पछै बावळो म्है हूं के आप । बारै बरसां री उण तपस्या सूं आ तपस्या घणी दौरी लखाई ।

रांणीजी मुळकनै कह्यो—इण तपस्या री फळ भोगण वास्तै आपनै अेक तकलीफ तो करणी ई पड़ैला ।

तपसी अंतावळी दरसावती बीच में ई बोल्यो—आप फर-मावो तो सगळा आभा नै चांद, तारा अर सूरज समेत तोड़नै नीचै अपांरी धरती माथै लै आवूं ।

रांणीजी मुळकता थका कैवण लागा—वो तो म्हनै आपरी करामातां माथै भरोसो है । पण हाल इत्ती जबरदस्त करा-मात बतावण री जरूरत कोनीं । अेक छोटो सौ काम है । इण बड़ला री परली बाजू आपनै अेक नवी कुटिया बणाणी पड़ैला । म्हारा राज में पूगां जित्तै घीजौ राखता तो म्है आपरी धूमधाम सूं ब्याव रचावती, पण अठै तो तपसी रै जोग ई ब्याव बण आवेला । बांमण-पिरोहितां री ठोड़ म्हनै ई सगळा जोग बरतणा पड़सो । इण डावड़ी रै ई लारला भी री तपस्या करियोड़ी दीसै जको आपरै जैड़ा तपसी री इण भी में जोग सजियो । आपरै तप री तो आपनै हाथोहाथ

इणी जलम में फळ मिळग्यो ।

लजाळू डावड़ी लाज में दीवड़ी होयनं कुटिया है मांय वड़गी । राणीजी तपसी सूं वळें मसखरी करी । कह्यो — आज री ओ दिन तो आपने फेर बारें बरसां जित्तो लखावैला ।

तपसी नवी कुटिया री सराजांम लावण सारू जंगळ में वहीर ब्हियो जणा उणनं अंडी लखायो के आज नवी दुनियां री निरमाण व्हे है । तपसी न सगळी कुदरत मगन अर हुळसती निर्ग आई ।

सिंझ्या रा नवी कुटिया संपूरण व्ही जद राणीजी तपसी नै कह्यो — इण कुटिया रें बिचाळें आभा री चांद अर चारूं-मेर गिगन रा तारा जड़नं बतावो तो आपरी करामात जाणूं ।

तपसी कह्यो — आज तो गिगन रा सगळा देवता आ हर करता व्हेला के इण कुटिया री घास-फूस गिगन में जड़ जावें तो वांरी अणचींती लाळसा पूरीजें । बापड़ा चांद-तारां री कांई जिनात के इण कुटिया में सोभा देवें ।

चंवरी मांडनं राणीजी आपरा हाथ सूं दोनों री हथळेवो जुड़ायो तद तपसी नै अंडी लखायो के जाणें तीनूं लोक उणरी मूठी में आयग्या है । उणरी हरख वांणी रा आंखरा रें परें हो ।

सूरज री उगाळी तपसी कुटिया सूं बारें आयो जणा उणने इण भेद री सुभट उकरास लाघो के ओ सगळी उजास उणरा अंतस री किरणा री इज है ! वो आपरा मन में बड़बड़ायो — काले वाळी वा रात तो बारें बरसां सूं ईं लांठी लखाई, पण आज री रात तो पलक झपे उण सूं ईं पैला बोतगी ।

अर इणी भात पलक झपे इण सूं ई पैला आखी बरस बीतग्यौ । जाणै पांखां लगायनै अक ई पलक में बरस उडनै अदीठ व्हेगी व्हे ज्यूं ।

तपसी रा आस्रम में जळवा पूजण री मंगळीक दिन अर राजकंवरां रै आवण री संजोग अकण सागै ई सजियौ । फंगत अक रात री अंधारौ बाकी हौ । रांणी बाळी कुटिया में ई सगळा जणा बैठा हा । जच्चा-रांणी रा खोळा में चांद सूरज रै उणियार दोनूं बाळ-गोपाळ हांचळ चूधता हा । रांणीजी रा मन में आठूं बेटां सूं मिळण री कोड तो अणूतो हौ, पण आ बरण रात बीतै जद ! कांई ठा किए बेटा में कांई बीती व्हेला !

रांणीजी अक ऊंडौ निस्कारौ न्हाकनै बोल्या—आज म्हारै वास्तं तौ आ रात बारै बरसां सूं ई लांठी व्हेगी । कठई अंडी नीं व्हे के काले सूरज भगवान ऊगै ई नीं ।

तपसी रांणीजी नै थावस देवतां कह्यौ—आप किणी बात री चिंता मत करौ । म्हनै सुभट दीस के सूरज भगवान आठूं राजकंवरां नै आपरी किरणां माथे बिठांणनै लावैला ।

तपसी नै आ बात सुभट दीसो के नीं दीसी इणारी साची भेद तौ वौ ई जाणै, पण जिण दिन आठूं राजकंवर न्यारी न्यारी आठ दिसावां में वहीर ब्हिया हा, पूरा अक बरस उप-रांत वां इज दिसावां सूं ऊगता सूरज रै सागै पाछा उणी आस्रम में आवता दीस्या, जाणै आठूं भाई साचांणी सूरज री किरणां माथे ई बैठनै आया व्हे !

वै गया तौ फगत आठ जणा हा, पण पाछा आया

घणा । पैला राजकंवर रै साथै नागकिन्या अर भूवाजी हा । दूजा राजकंवर रै साथै राजा री बेटी अर सिंघ ही । तीजा रै साथै राजा री बेटी, मच्छोमार अर जंगलियो ही । चोथा राजकंवर रै साथै दैत री बेटी अर कुमारी रै घर रा दोनूं ई डोकरा डोकरा हा । पांचवा राजकंवर रै साथै चांयली दैत, मूंडकी वाला बैन अर उणरी घणी अर राजा री बेटी ही । छठा राजकंवर रै साथै ठगां रा सिरदार री बेटी, खुद सिरदार अर उणरी घर वाला, उणरी बेटी, अक सूवटी, अक हिरण, अक कबूड़ी, अक खिरगोसियो अर अक मिनकी ही । सातवा राजकंवर रै साथै धरमराज री बेटी, अक भेंसी अर वा कुमारी-मां ही अर आठवा राजकंवर रै साथै इंदरलोक री परी ही ।

वै सगळा जणा सांमला चौराया तक आवैं उण पैला ई तपसी वारैं सांमी दौड़ियो । आठूं राजकंवरां रै पछे सगळा ई तपसी रा पगां में माथा निवायनै दंडोत करी । तपसी री आख्यां अणूता हरख रै कारण जळजळी व्हेगी । उणसूं सावळ बोलीजियो ई कोनीं । गळगळा कंठ सूं पूछथी—थें सगळा रह्या तौ सावळ ।

राजकंवर कहाँ—आपरी दया सूं म्हांनै किणी बात री तकलीफ नीं व्ही ।

पछे तपसी कंवण लागी—थें गया जद औ तपसी री आस्रम हो, पण अबै गिरस्ती री आस्रम बणग्यी । म्हेँ थानै आज भेद री बात बतावूं के गिरस्ती री आसण भगवान सूं ई ऊंचो व्हे । म्हारा मन में बातां रा केई बादला गरजै

है, पूरा बरसियां ई बानै सांयत मिळैला । थारै गियां रै पंद्रे दिन पछे ई रांणीजी थानै हेरता हेरता इण आस्रम में आया जको थानै आखी रात सूं वें उडीकं है ।

राजकंवर हरख अर इचरज सूं पूछ्यो—काई म्हाारी मां अठे इण आस्रम में है ?

तपसी रै हुंकारौ भरतां ई सगळा अकण सागै मां मां कैवता न्हाटा । मां मां रो आवाजां सुणतां ई रांणीजी कुटिया सूं बारै निकळनै राजकंवरां सांमी दौड़िया । वारी आख्यां सूं हरख रा आंसू ढळकण लागा । बेटां बेटां रै सिवाय वारा गळगळा कंठ सूं दूजी कीं बात नीं निकळी ।

आठूं राजकंवर घड़ी घड़ी मां रा पगां में माथी निवा-यनै बंदगी करो । कह्यो—म्हारै कारण आपनै किणी बात रो संताप के कळेस ब्हियो ब्हे तो म्हांनै माफ करो मां !

मां बेटा अक दूजा रै सांमी निरी ताळ देखनै छबरा छबरां रोया । वांणी रा निरजीव आखरां सूं पार नीं पड़ी तो वानै आंसुवां रै आखरां सूं बातां-विगतां करणी पड़ी ।

सगळां रो ई आख्यां जळजळी ब्हेगी, पण वो चांयली देंत तो भूं भूं करने रोवण लागो । पांचवी राजकंवर घणो ई समझायो तो ई वो नीं ढबियो । सगळां रा ई मन भाखरां रै उनमान भारी ब्हेगा । इण भार नै हळको करण रो मंसा सूं तपसी रांणीजी रै सांमी देखनै कह्यो—ठेट कुटिया रै मांय अणचींत्या रूप सूं राजकंवरां नै मिळावण रो बात तै ब्ही ही, पण आप सूं इत्ती ताळ वास्तै ई ढबीजियो कोनीं । सेवट बारै आयां ई आपनै नेहचो ब्हियो ।

रांणीजी माडांणी मुळकण रो चेस्टा करता थका जबाब दियो — पंला कौल ती आप तोड़ियो । कुटिया में आयां पंली ई आप बात तो सगळी बताय दी । मां मां रो आवाजां सुणियां पछै म्हारा सूं नीं ढबणी आयी ।

के इत्ता में कुटिया रें मांय दो पिचियां रो कें कें करने रोवणी सुणीजियो । रांणीजी हरख अर कोड रें सागै कंवण लाग़ा — आ खुस खबरी ती थाने बताई कोनीं । तपसोजी रें बेळी व्हियो । आज जळवा पूजण रें मंगळीक दिन ई थारें आवण रो सुभ संजोग सजियो । जच्चा रांणी नै गीत गावण वास्तै गीतेरणियां खासी भेळी व्हेगी ।

सिद्ध्या रा तपसी रा आत्मम में पूरी हथाई मंडी । तपसी रा मूंडा सूं आत्मम री पूरी बातां सुणियां पछै आठूं ई राजकंवर आप आपरी बातां पूरा रूप में मांडने बताई ! चित्रांमां री गळाई सगळा ई अेक दूजा री बातां सुणता रह्या । सगळी बातां सुणियां पछे ई सगळा निरी ताळ तांई चुप रह्या ! कुण ई किणी रें सांमी तक नीं जोयी । अचां-णक वो चांयलौ देंत टोलोड़ो रो गळाई हंसती कंवण लाग़ो — पांचवा राजकंवर संकोच रें कारण आपनै आगलो बात नीं बताई । वा म्है बताय दूं । इण मूडकी वाळी बेन नै म्है अेक राजाजी रें दीवांण रा घर सूं उचकायने लायी हो । चंवरी बैठी बींदणी नै उचकावण रें कारण पाछो इणरी ब्याव आपरें साथै ई व्हियो ।

मूडकी वाळी बेन रें धणी सांमी हाथ री सांनी करने

वो घकै फेर कैवण लागी—पण म्हारी आ बैन राजाजी री बेटी री साथण ही । आ राजाजी री बेटी नै पांचवा राजकंवर री सगळी बातां सुणाई । बातां सुणतां ई वा ती प्रण कर लियो के ब्याव करुंला ती राजकंवरजी रे ई साथे, नींतर तार्जिदगी कंवारी ई रैवूला । सेवट राजकंवरी रो प्रण भरै पड़ियो । आपरा मूंडा सूं आपरी बडाई करतां राजकंवर नै संको आवै, इण खातर वै आगै री बात नै बीच में ई बोच न्हाकी । पण म्हें ती सगळो बातां जाणूं हूं ।

आ कैयनै वो फेर आपरा मंया दांत काढ़ती जोर जोर सूं हंसण लागी । बातां छिड़गी ती पड़ै छिड़ती ई गी । जाणै कांई सोचनै जच्चा रांणी चोथा राजकंवर रे सांमी देखनै पूछ्यो—आपरी लाडली बेटी बिना उण देंत नै अेक पलक ई नीं आवड़ती हो, पछे वो लारै कीकर रह्यो, म्हारे आ बात समझ में नीं आई ।

जच्चा रांणी रे मूंडा सूं औ सवाल सुणतां ई चोथा राजकंवर री आख्यां में आंसू आयगा । वो भारी गळा सूं कैवण लागी—जळवा पूजण री खुसी रे कारण म्हें आगै री बात कैवणी नीं चावती हो । जिण बात री डर हो सेवट वा इज बात व्ही । कांई बतावूं ! बतावणी नीं आवै ।

पछे वो अटकती अटकती कैवण लागी—साचांणी वो देंत आपरी बेटी री अैडो ब्याव रचायो के कदास तीनूं लोकां में ई वैडो ब्याव नीं व्हियो व्हेला । सगळा जानियां नै हीरा मोत्यां सूं सोना री अेक अेक कळस भरनै दियां पछे वो सगळां नै ई आदर सूं आप आपरै ठिकाणे पुगाया । उण दिन उणरी

खुसी रौ पार नीं हो । छेला जानी नै पुगायने आयी जद उणने अक भंवारा में होळे होळे किणी रं रोवणा रा डुस्किया सुणीजिया । वो भरणाटे उठीने ई दौड़घो । अक लुगाई भंवारा में आंगणै पड़ी रोवणा रं साथै—म्हारी बेटी, म्हारी बेटी, करने वेलती ही । देंत उणी घड़ी सगळी बात समझग्यो । समझतां ई जोर सूं चिराळी करी । वो अध-बावळी सो व्हेगो । भूँडै ढाळै कूकण लागो—म्हारी बेटी रं ब्याव रौ सगळो घाट अकारथ व्हेगो । अबे म्हें इणरा बेटा नै कठा सूं लावूं । ताळेर री काची गिरियां नै चाबं ज्यूं म्हें तो इणरा बेटा नै सगळो ई चाबग्यो हो । हाडकी रौ अक तुस ई बारें व्हेतो तो म्हें इमी रा कूपला सूं उणने जीवाड़ देतो । पण वो तो पचने म्हारा लोई में रळग्यो । अबे इण मां नै उणरो बेटी कठा सूं लायने दूं ।

के अगछक उण देंत नै अक उपाव सूझियो । वो इमी रौ कूपली लेयने म्हारें पाखती आयी । हंसतो थको कैवण लागो—म्हारा मन में अबे कीं लाळसा बाकी नीं है । म्हारी बेटी रौ भूमधाम सूं ब्याव रचीजग्यो । म्हारा जीवणा में अबे कीं सार नीं । इण मां रा आंसू म्हारा सूं देखणी नीं आवे । इणरें बेटा रौ अंस म्हारा लोई में रळियोड़ी है । म्हारें माथे इमी रा छांटा पड़तां ई वो बाळक जीवती व्हे जावैला । थें वो बाळक उण डुस्किया भरती मां नै सूप दीजो । म्हारा जीवण री इण सूं लांठी सारथकता फेर कांई व्हे सकं !

आ कैयने वो खुसी में उछळतो उण इमी रा कूपला नै आपरें माथे ऊंघाय दियो । अकाअक म्हांरी आंख्यां नै

विस्वास नीं व्हियो—उण विकराळ देंत री ठोड़ अक जल-
मती बाळक कें कें करती रोवती सुणीजियो । उण बाळक रें
साथें थोड़ी ताळ म्है दोनूं ई रोया । पछे देंत रा कंणा
मुजब म्है डुस्किया भरती मां नें उणरो बेटी सूप दियो ।
मां री तो रोवणी ढबग्यो पण म्हांरो रोवणी नीं ठमियो ।
अर हाल तांई उणरी याद आतां ई आख्यां में आसू आय
जावें । जे उण देंत रें बिना मरियां कीकर ई मां नें आपरो
बेटी मिळ जातो तो कंड़ी उम्दा काम बरातो । पण देंत तो
आगे सोचण री मोकी ई नीं दियो ।

राजकंवर री आ बात सुणाने सगळां री ई आख्यां में
आंसू ढळक आया । चायली देंत आपरी कूंधां जेड़ी आख्यां
सूं आंसू पूंछतो कंवण लागी—इण में रोवणा री कांई बात !
अंड़ी मरण री मोकी आवें तो म्हें हंसती हंसती हजार वळा
मर जावूं । आपरी देह सूं टाबर नें जलम देय वो देंत तो
हमेसां रें वास्तें अमर व्हेगो । मरण री वंड़ी सुक्यारथ मोकी
फेर कद कद हाथ आवें ! भगवानं करे अंड़ी मोकी म्हार
भाग में ई लिखियोड़ी व्हे !

ठगां री सिरदार कह्यो—बातं तो साव साची है । उण
बाळक रें नवा जलम री अपानें खुसी मनावणी चाहीजें ।

आ कैयनं वो आपरी चूंघी आख्यां नें पूंछण लागी ।
इण बार जमराज री भेंसी आपरी भोडक हिलावती बोल्यो—
म्हें अतलोक रें अणगिण मिनखां रा प्राण हरिया । म्हें तो
सेवट इण काम सूं काठी आंती आयनं राजकंवर रें साथें
अठें अतलोक में आयग्यो । जे उण देंत री गळाई म्हनें ई
छ. ६२

मरण री वंडी मौकी हाथ लाग जावें तो पछे चाहौजै ई कांई ।
अणगिण जीवां नै मारण री पिरास्चित ई व्है जावें अर
भेंसा री इण जूण सूं पिंड ई छूट जावें । जमलोक में जुगां सूं
काळ री कांम करतां करतां म्हनै म्हारा खुद रा जीवण सूं
ओक्या बैठगी । उण देंत जंड़ी मौत री संजोग सज जावें तो
म्हें लाख लाख जलम भरपाया !

जच्चा रांगी कह्यौ—इण नवा जलम रा बधावा रै बिचाळै
म्हनै आं मरणा-वरणा री बातां री डर अणूतो लागे । म्हारो
जीव साव काचो है, कोई दूजी बातां करो ।

अबकी रांगीजी बोल्यो—म्हारा बेटां नै पाछा मनावण
सारू वांरी सोय में अठे आई हो । बरस रै लगेटगे वांरी
बाट जोई । आज वांनै इण विध कुटम कबीला रै साथै देख
म्हारा हरख री कोई पार नीं है । म्हनै राज री अबै कीं
लोभ नीं । पण राजाजी री खातिर जावणो ई पड़सी । वै
आज सूं आंख्यां फाड़ फाड़नै म्हांरी बाट जोवता व्हेला ।
म्हारो मंसा है के म्हांरा इण कुटम कबीला रै साथै तपसीजी अर
जच्चा रांगी ई चालं तो पछे म्हारा मन में लारं कीं खुड़को
नीं रैवै । म्हें जाणूला के आज रै दिन म्हारै आठ बेटां री
ठोड़ दस बेटा है ।

तपसी कह्यौ—म्हनै अबै इण आस्रम सूं घणौ कीं मोह
कोनीं । म्हें खुद आप लोगां री साथ नीं छोडणी चावूं । आठूं
राजकंवरां री बातां सुणियां पछे अर म्हारो खुद री अनुभव
जाणियां पछे म्हनै जकी ग्यांन व्हियौ वो म्हें आप लोगां नै
बतावणी चावूं । बिना बतायां म्हारो उफांण सान्त नीं व्हेला ।

डावा हाथ सूं बड़ला री अक झूमती साख नै झालियां पछे तपसी केवण लागी—बाजण नै तो म्हें तपसी बाजू, आप सगळा म्हनै गरू करने आदरी । पण म्हें म्हारा खास गरू आं आठूं राजकंवरां नै मानूं । आंरा आचरण अर सुभाव सूं म्हारी तो काया ई पलटगी । परा म्हें उण पलटियोड़ी काया री सावळ जाब्तौ नीं कर सकियो । आंरी संगत छूटतां ई म्हारी देह में सूती अक अंडी कसाई चेतियो के म्हें तो सुध-बुध ई पांतरग्यो । इण आस्रम में म्हें अणगिण जीव-जिनावरां नै मारचा—जको म्हें आप सगळां नै विगतवार बताय चुक्यो हूं । इकलापी मिनख री आ इज गत ब्रिह्या करे । मिनख तो संगत अर भेळप सूं सुधरै । अकलौ आदमी तो जिनावर सूं ई गियोबीतो है । मानो तो थाने अक अंडी भेद री बात बतावूं जको थें सगळा उणनै जांणी तो हो, पण मानो कोनीं । गिरस्ती सूं ऊंचो दुनियां में कीं तप नीं है, कोई इण सूं ऊंचो आस्रम नीं है । अपारं इण कुटम कबीला री दूजो नांव ई भगवान है । दुनियां में सबसूं ऊंचो रिण म्हारी निजर में है तो वो फगत काया री रिण है । काया री रिण फगत काया सूं ई उतरै । आपरं माईतां सूं काया री रिण लेयनं वो पाछो किणो दूजो काया रा रूप में नीं उतरै तो उणसूं वत्तो पापी इण दुनियां में दूजो कोई नीं । वो कुटम कबीला रा भगवान रें सांमी हमेसां पापी रैवैला । सगळी दुनियां रा सास्तर अर धरम जिणनै भगवान केवै म्हें उणनै कुटम रा नांव सूं ओळखूं । जको मिनख आपरा कुटम नै इत्तो लांठी करने माने के उणरै ओले दुनियां रा

बाकी कुटम लोप व्हे जावें—वौ निपट आंघौ है, पापी है अर देंत है । अर जको मिनख आपरै कुटम रै जोड़ें दुनियां रा सगळा कुटमां नै अेक सरीखा देखें वौ तपसी है । फगत आ निजर पावण वास्तै ई उणनै भगती अर तपस्या करणी है । इणरें अलावा जकी तपस्या है वा पाखंड अर छळछंद है । इण कुटम कबीला रै तप री छेली माठ है—सगळी दुनियां नै ई आपरी कुटम मानणी । आं राजकंवरां अर रांणीजी रा राज में जायनै अपानै अेक अंडा राज री थापना करणो है जठे सगळा कुटमां री अेक सरीखी बघापी व्हे, कोई किणी रा कुटम नै हांण नीं पुगावें, कोई किणी रा कुटम माथे राज नीं करै । उण राज री वौ संदेस दुनियां रा घर घर में पूगें अर आखी दुनियां ई अेक घर बण जावें !

[इति आठ राजकंवरां संपूरण । मिति जन्माष्टमी २०२०]



लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, पुस्तकालय
L B S. National Academy of Administration, Library

मुससूरी

MUSSOORIE

यह पुस्तक निम्नांकित तारीख तक वापिस करनी है।

This book is to be returned on the date last stamped

| दिनांक Date | उधारकर्ता की संख्या Borrower's No. | दिनांक Date | उ की संख्या Borrower' No. |
|----------------|---|----------------|------------------------------------|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |



GL H 398 2
 DET



121882

H
 398.2
 देधा
 भाग 3
 वर्ग स
 Class No
 लेखक
 Author
 शीषक

अवाप्ति स०
 ACC No. 15162
 पुस्तक स
 Book No
 देधा, 1 ज न
 नर नर नर ।

H
 398.2 LIBRARY 15162
 LAL BAHADUR SHASTRI

देधा
 भाग 3
 National Academy of Administration
 MUSSOORIE

Accession No 121882

- 1 Books are issued for 15 days only but may have to be recalled earlier if urgently required
- 2 An over-due charge of 25 Paise per day per volume will be charged
- 3 Books may be renewed on request, at the discretion of the Librarian
- 4 Periodicals, Rare and Reference books may